

॥ द्वाणं सूत्र ॥

[एगद्वाणं.]

श्री सुधर्मा स्वामी जंबूनामा शिष्य प्रते
छे—

अर्थ—सु० सांभळ्युं मे० मे आ० हे आयुष्मन्
तां आउपावंत शिष्य ते० ते श्री महावीर
० ज्ञानवंते ए० एम अ० कहुं वार परिखदा
गल

सुयं मे आउसं तेणं भगवया. एवं
क्खायं ॥

भावार्थ—सुधर्मास्वामि पोताना जंबू ना-
ना शिष्यने कहेता हवा के हे चीरंजीवी
वू ? श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देवे ठाणां-
शास्त्रनो अर्थ आ प्रमाणे कहेल छे
हुं तुज प्रत्ये कहुंहुं ते तुं सांभळ ? (इहां
रेरंजीवी शब्द कहेल छे ते जीवतव्य ना-
दीक १० प्रकारे होय छे ते कहे छे.

१ नाम जीवतव्य, २ स्थापना जीवत-
व्य, ३ सचेतनादीक द्रव्य जीवतव्यना हेतु-
पायी द्रव्य जीवतव्य, ४ नारकीयादीनुं
शेष विना आयु ते द्रव्य मात्र सामान्य
जीवतव्य, ५ नारकीयादीक भव ते विशेष
हित जीवतव्य ते भवजीवतव्य, ६ पूर्वभ-
नुं तुल्य जातिपणे जीवीत ते तद्भव जीव-
व्य, ७ चक्रवर्त्यादीकनुं भोग जीवतव्य, ८
साधुनुं संयम जीवतव्य, ९ यशजीवतव्य,
१० किति जीवतव्य, ए दश प्रकारनुं जीव-
व्य कहेल छे, ते मांही इहां सुधर्मास्वामीए
जंबूस्वामिनुं यश १ किति २ संयम ३ ए त्रण

प्रकारनुं जीवतव्य भळं ने घणुं होवाथी हे
आयुष्मन् शिष्य ? एम गुरुए शिष्यने आमंत्रण
वचन कहेल छे, त्यां महावीरदेवनुं पुर्वोक्त
जीवतव्य इच्छेल छे.)

अर्थ—ए० एक आ० आत्मा समुच्चय थकी
१. एगे आया ॥ १ ॥

भावार्थ—चैतन्यलक्षण रूप तथा ज्ञानद-
र्शन चारित्ररूप आत्मा एकज छे.

अर्थ—ए० एक दं० दंड
एगे दण्डे ॥ २ ॥

भावार्थ—दुष्ट मन वचन कायाये करी
जीव दंडाय ते रूप दंड एकज छे.

अर्थ—ए० एक कि० किया
एगा किरिया ॥ ३ ॥

भावार्थ—मन वचन कायाथी पाप लाग-
वा रूप क्रिया एकज छे.

अर्थ—ए० एक लो० एक चौद राजलोक
एगे लोए ॥ ४ ॥

भावार्थ—छ द्रव्यनुं स्थानक चौद राज
रूप लोक एकज छे.

अर्थ—ए० एक अ० अनंतो अलोक
एगे अलोए ॥ ५ ॥

भावार्थ—जेहमां अनंतो आकाश छे एह-
वो अलोक एकज छे.

अर्थ—ए० एक ध० धर्मास्त्रिकाय
एगे धर्मे ॥ ६ ॥

भावार्थ—दरेक जीवाजीवने चलण सहाय-
यरुप धर्मास्तीकाय एकज छे.

अर्थ—ए० एक अ० अधर्मास्तीकाय

एगे अधम्मो ॥ ७ ॥

भावार्थ—सर्व जीवाजीवने स्थीर सहाय-
रुप अधर्मास्तीकाय एकज छे.

अर्थ—ए० एक वं० वंध

एगे बन्धे ॥ ८ ॥

भावार्थ—कपायादीक प्रकृतियोथी कर्म
बंधावा रूप वंध एकज छे.

अर्थ—ए० एक मो० मोक्ष

एगे मोक्षे ॥ ९ ॥

भावार्थ—सर्व कर्म क्षय रूप मोक्ष एकज छे.

अर्थ—ए० एक पु० पुन्य

एगे पुण्णे ॥ १० ॥

भावार्थ—वैतालीस प्रकारे शुभ कर्म प्रकृ-
ति भोगववारुप पुन्य एकज छे.

अर्थ—ए० एक पा० पाप

एगे पावे ॥ ११ ॥

भावार्थ—व्याशी प्रकारे अशुभ कर्म प्रकृति
भोगववारुप पाप एकज छे.

अर्थ—ए० एक आ० कर्म आवे ते आश्रव

एगे आसवे ॥ १२ ॥

भावार्थ—वैतालीस प्रकारे अशुभ कर्म आ-
ववारुप आश्रव एकज छे.

अर्थ—ए० एक सं० कर्म आवतां रोके ते

संवर

एगे संवरे ॥ १३ ॥

भावार्थ—अशुभ कर्म आवतां रोकवारुप
सनावन प्रकारे संवर एकज छे.

अर्थ—ए० एक वे० कर्मतुं भोगववृं ते वेदना

एगा वेयणा ॥ १४ ॥

भावार्थ—जीवने आठ कर्म भोगववारुप
वेदना एकज छे.

अर्थ—ए० एक नि० कर्म टालवारुप निर्जरा

एगा निज्जरा ॥ १५ ॥

भावार्थ—वार प्रकारनी तपश्चर्यावडे आ-
त्माना प्रदेशथी थोडां थोडां कर्मक्षय थवारुप
निर्जरा एकज छे.

अर्थ—ए० एक जी० जीव पा० प्रगट वादरं
स० शरीरे प्रत्येके जुजूए शरीरे जीव

एगे जीवे पाडिकएणंसरीरणं ॥

भावार्थ—प्रत्येक (जुदां जुदां) शरीरनो
धरनार प्राणधारी जीव एकज छे (अहिआं
प्रत्येक शरीर कहेवानुं कारण एटलुंज के सा-
धारण शरीरी जीव तमाम कर्मक्षय करी शक-
ता नथी ने प्रत्येक शरीर जीव सर्व कर्मक्षय
करी शके छे तेथी प्रत्येक शरीरी जीव
कहेल छे.)

अर्थ—ए० एक जी० जीवने अ० वाहिंग्ला
पुद्गल अणलाधे वि० विकुर्वणा पुद्गल

एगा जीवाणं अपरियाइत्ता विउ-
व्वणा ॥ १ ॥

भावार्थ—देवता वाहीरनां पुद्गल प्रथा वि-
ना भवधारणी शरीर बांधे ते प्रत्येके एकज
बंधाय पण घणां बंधाय नही, ते आश्री जी-
वने एकज विकुर्वणा छे.

अर्थ—ए० एक म० मन जाणीए जेणेते

एगे मणे ॥ २ ॥

भावार्थ—संज्ञी पंचेंद्री जीवना व्यापाररुप
मन एकज छे.

अर्थ—ए० एक व० वचन समुचय थकी

एगा वई ॥ ३ ॥

भावार्थ—अनेक प्रकारे वांलवा रूप वचन
एकज छे.

अर्थ-ए० एक का० काया वा० व्यापार
एगे कायवायामे ॥ ४ ॥
 भावार्थ-उदारीकादीक सात प्रकारे का-
 याना व्यापाररूप काया एकज छे,
 अर्थ-ए० एक उ० उपजवुं
एगा उप्पा ॥ ५ ॥
 भावार्थ-एक समये उपजवुं एकज छे,
 अर्थ-ए० एक वि० मरवुं
एगा वियई ॥ ६ ॥
 भावार्थ-एक समये विनाश एकज छे,
 अर्थ-ए० एक वि० विचर्चा ते मुवानुशरीर
एगा वियञ्जा ॥ ७ ॥
 भावार्थ-जीवने परभवे उपजतां उदारीक
 तथा वैक्रिय शरीर एकज छे,
 अर्थ-ए० एक ग० गती
एगा गई ॥ ८ ॥
 भावार्थ-मनुष्यादीकमांथी नरकादीके ज-
 वारूप गती एकज छे,
 अर्थ-ए० एक आ० आगती
एगा आंगई ॥ ९ ॥
 भावार्थ-नर्कादीकमांथी मनुष्यादीकमां
 आववारूप गती एकज छे,
 अर्थ-ए० एक च० मरण
एगे चयणे ॥ १० ॥
 भावार्थ-देवतानुं मर्ण ते चववुं एकज छे,
 अर्थ-ए० एक उ० उपजवुं
एगे उववाए ॥ ११ ॥
 भावार्थ-देवता नारकीनो जन्म ते उपजवुं
 एकज छे,
 अर्थ-ए० एक त० विचारणा
एगा तका ॥ १२ ॥
 भावार्थ-भस्तक प्रमुख खजवाळवादीक

विचार करवारूप वितर्क एकज छे,
 अर्थ-ए० एक स० संज्ञा
एगा सन्ना ॥ १३ ॥
 भावार्थ-श्रवणादीक कर्या पळी विचार
 करवारूप संज्ञा एकज छे,
 अर्थ-ए० एक म० बुद्धि
एगा मन्ना ॥ १४ ॥
 भावार्थ-सुक्ष्म अर्थ विचारवानी बुद्धि ते
 मति एकज छे,
 अर्थ-ए० एक वि० पंडित
एगा विन्नू ॥ १५ ॥
 भावार्थ-पंडीतपणुं ते विज्ञान एकज छे,
 अर्थ-ए० एक वे० वेदना ते कर्म भोगववुं
एगा वेयणा ॥ १६ ॥
 भावार्थ-ज्वर प्रमुख कर्म वेदना (भोगववुं)
 एकज छे,
 अर्थ-ए० एक छे० छेदवुं
एगे छेयणे ॥ १७ ॥
 भावार्थ-खडकादीक शस्त्रेथी करी शरीर
 प्रमुखतुं छेदवुं ते एकज छे,
 अर्थ-ए० एक भे० भेदवुं
एगे भेयणे ॥ १८ ॥
 भावार्थ-भालादीकेकरी भेदवुं ते एकज छे,
 अर्थ-ए० एक म० मरण अ० चरम सा०
 शरीरने
एगे मरणे अन्तिमसारीरियाणं ॥ १९ ॥
 भावार्थ-छेळ्ळुं शरिर मुकी तेहज भवे
 मोक्ष जाय ते जीवने एकजवार मर्ण छे,
 अर्थ-ए० एक सं० कपाय रहित संशुद्ध
 अ० नथाभूत प० पात्र शुद्ध चारित्र्यनुं पात्र
एगे संमुद्धे अहाभूए पते ॥ २० ॥
 भावार्थ-जे तत्वना जाण केवळी तीर्थ

करतेहज उत्तम पात्ररूप शुद्ध चारित्र्यीयो
एकज छे.

अर्थ-ए० एक दु० दुःख जी० जीवने

एगे दुक्खे जीवाणं ॥ २१ ॥

भावार्थ-जे जन्मयां मोक्ष जवानुं होय ते
जीवने छेछा भवतुं दुःख एकज छे.

अर्थ-ए० एक भू० भूत प्राणी

एगे भूए ॥ २२ ॥

भावार्थ-सर्व जीवन्तो आत्मारूप स्वभाव
एकज छे.

अर्थ-ए० एक अ० अधर्मनी प० प्रतिज्ञा जं०
जेणे से० करी आ० आत्मा प० अतिशे क्लेश
पामे

एगा अधम्मपडिमा जं से आया
परिकिलेसइ ॥ २३ ॥

भावार्थ-जे अधर्मथी आत्मा क्लेश पामे ने
दुःख भोगवे ते पापरूप अधर्म करनार शरीर
एकज छे.

अर्थ-ए० एक ध० धर्मनी प० प्रतिज्ञा जं०
जेणे क० करी आ० आत्मा जीव प० पर्याय
उपना निर्मल थाय ते

एगा धम्मपडिमा जं से आया प-
ज्जुवज्जाए ॥ २४ ॥

भावार्थ-जे धर्मे आत्मा ज्ञानादीक गुण
पामीने सुखी थाय ते धर्म जे शरीरे करीये
ते धर्मनुं शरीर एकज छे.

अर्थ-ए० एक म० मन दे० देवता अ० भव
नपती म० मनुष्यनुं तं० ते तं० ते स० समय
यने विषे मन एक

एगे मणे देवापुरमणुयाणं तंमि
तंसि समयंसि ॥ २५ ॥

भावार्थ-भवनपती १. वाणव्यंतर २. जो-

तिपी ३. वैमानीक ४. ए चार जातीना दे-
वता मनुष्यने दरेक समय समय प्रत्ये शुभ के
अशुभ मनोयोग एकज छे, अर्थात् एक समये
शुभ के अशुभ वेमांहीथी एकज मनोयोग होय
छे पण वे योग होय नहि.

अर्थ-ए० एक व० वचन दे० वैमानीक अ०
भवनपती म० मनुष्यनुं तं० ते तं० ते वोल्-
वाना सं० समयने विषे

एगा वई देवासुरमणुयाणं तंसि तं-
सि समयंसि ॥ २६ ॥

भावार्थ-देवता मनुष्यने दरेक समय स-
मय प्रत्ये शुभ के अशुभ वचनयोग एकज छे
(अर्थात् एक समये शुभ के अशुभ एकज भाषा
बोलाय पण वे भाषा बोलायज नहि.)

अर्थ-ए० एक का० कायानो वा० व्यापार
दे० देवता अ० भवनपती० म० मनुष्य तं०
ते तं० ते० स० समयने विषे.

एगे कायवायामे देवासुरमणुयाणं
तंसि तंसि समयंसि ॥ २७ ॥

भावार्थ-देवता मनुष्यने दरेक समयसमय
प्रत्ये शुभ के अशुभ काययोग एकज छे (अ-
र्थात् एक समये एकज काययोग होय पण
वे योग होय नहि.)

अर्थ-ए० एक उ० उठवुं क० कर्म ते चालवुं
प्रसुष व० शरीरनुं समर्थपणुं वी० वीर्य ते
जीवथी उपनुं पु० पुरुषकार अहंकार प० प-
राक्रम दे० देवता अ० भवनपती म० मनु-
ष्यने तं० ते तं० ते स० समयने विषे.

एगे उट्ठाणकम्मवलवीरियपुरिसका-
रपरकमे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि
समयंसि ॥ २८ ॥

भावार्थ-उट्ठाण ते गमेने कार्य करवा उठवुं
१. कर्म ते प्रमाणादीक क्रिया २. बल ते श-

रीरनी समर्थाइ ३, विर्यने जीवतुं वळ एटले धारेळुं कार्य पुर्ण करवानी हिंमत ४, पुरुषाकार पराक्रम ते, अहंकारथी उपन्युं पोतानुं पराक्रम ५, ए पांचे वस्तु देवता मनुष्यने दरेक समय समय प्रत्ये एकज होय छे (अर्थात् एक सभे वे होय नहीं.)

अर्थ-ए० एक ना० ज्ञान

एगे नाणे ॥ २९ ॥

भावार्थ-ज्ञानावर्णि कर्मना क्षय थकी उत्पन्न थयेळुं ज्ञान केवळज्ञान एकज छे.

अर्थ-ए० एक दं० दर्शन

एगे दंसणे ॥ ३० ॥

भावार्थ-दर्शनावर्णि कर्मना क्षयथकी उत्पन्न थयेळुं सामान्यथी जाणवुं ते केवळ दर्शन एकज छे.

अर्थ-ए० एक च० चारित्र

एगे चरित्ते ॥ ३१ ॥

भावार्थ-सामान्यथी देशवितिं सर्व वितिं रूप चारित्र एकज छे.

अर्थ-ए० एक स० समयकाल

एगे समए ॥

भावार्थ-जेहमां वीजो भेद नथी ने समयथी सुक्ष्मकाल मान वीजुं नथी एवो समय काल एकज छे.

अर्थ-ए० एक प० प्रदेश

एगे पएसे ॥ १ ॥

भावार्थ-एक मांहीथी वीजो भाग थाय नही ते धर्मास्ति काय १ अधर्मास्ति काय २ आकास्तिकाय ३ जीव ४ अजीव ५ ए पांचिना अवयवते प्रदेश एकज छे.

अर्थ-ए० एक प० परमाणु

एगे परमाणू ॥ २ ॥

भावार्थ-एकना वे भाग थाय नही ते

परमाणु पुदगळ एकज छे.

अर्थ-ए० एक सि० सिद्धसिला

एगा सिद्धी ॥ १ ॥

भावार्थ-पीस्तालीस लाख जोजन प्रमाणे सिद्ध सिल्ला एकज छे.

अर्थ-ए० एक सि० सिद्ध

एगे सिद्धे ॥ २ ॥

भावार्थ-सर्व सरीखा स्वरूपे सिद्धना जीव एकज छे.

अर्थ-ए० एक प० अतिशे णि० निर्वाणक हेता स्वस्थ थापवुं.

एगे परिणिठ्वाणे ॥ १ ॥

भावार्थ-फरी दुःखमां आववुं नही ने सर्वे मुखनी प्राप्ति थवी केजे कर्मरूपी दावानल ओलवी शितली भुत थवा रूप निर्वाण पद एकज छे.

अर्थ-ए० एक प० अतिशे णि० दुःख रहित थावुं.

एगे परिणिठ्बुए ॥ २ ॥

भावार्थ-सर्व प्रकारे शरीर अने मननी अशांतानुं रहितपणुं ते मोक्ष एकज छे.

अर्थ-ए० एक स० शब्द

एगे सद्दे ॥ १ ॥

भावार्थ-जीवनो शब्द १ अजीवनो शब्द २ मिश्रनो शब्द ३ एत्रणे मळी काननो विषय ते शब्द एकज छे.

अर्थ-ए० एक रु० रूप

एगे रूवे ॥ २ ॥

भावार्थ-कालो, १ पीळो, २ धोळो, ३ रातो, ४ लीलो, ५ ए पांचेरंग मळी आंखनो विषय ते रूप एकज छे.

अर्थ-ए० एक ग० गंध

एगे गन्धे ॥ ३ ॥

भावार्थ—मुर्गंध. १ दुर्गंध. २ ए वे मळी नाशीकानो विषय ते गंध एकज छे.

अर्थ—ए० एक र० रस

एगे रसे ॥ ४ ॥

भावार्थ—खाटो. १ मीठो. २ तीखो. ३ कडवो. ४ कसायलो. (हरम्यो.) ए पांचे मळी जीभनो विषय ते रस एकज छे.

अर्थ—ए० एक फा० फर्श

एगे फासे ॥ ५ ॥

भावार्थ—हळवो. १ भारे. २ टाहो. ३ उष्ण ४ खरखरो. ५ मुहाळो. ६ लुखो. ७ चोपडयो. ८ ए आटे मळी कायानो विषय ते स्पर्श एकज छे.

अर्थ—ए० एक मु० मनोज्ञ स० शब्द

एगे सुब्भिमहे ॥ ६ ॥

भावार्थ—मधुर वचन बोलवा रूप भलो शब्द एकज छे.

अर्थ—ए० एक दु० अमनोज्ञ स० शब्द

एगे दुब्भिमहे ॥ ७ ॥

भावार्थ—कडवुं वचन बोलवारूप भुंडो शब्द एकज छे.

अर्थ—ए० एक मु० मनोज्ञ रू० रूप

एगे सुखे ॥ ८ ॥

भावार्थ—चित्तने हरण करे एवुं भलुं रूप एकज छे.

अर्थ—ए० एक दु० अमनोज्ञ रू० रूप

एगे दुखे ॥ ९ ॥

भावार्थ—चित्तने उद्वेग करे एवुं भुंडुं रूप एकज छे.

अर्थ—ए० एक दी० लावु

एगे दीहे ॥ १० ॥

भावार्थ—त्राकडीनी पेरे लावु संस्थान (आकार) एकज छे.

अर्थ—ए० एक र० हुंकुं

एगे रहस्से ॥ ११ ॥

भावार्थ—हुंको आकार एकज छे.

अर्थ—ए० एक व० वाटळु पुदगळ

एगे वट्टे ॥ १२ ॥

भावार्थ—लाडवाने आकारे गोल आकार एकज छे.

अर्थ—ए० एक तं० त्रिपुणो

एगे तंसे ॥ १३ ॥

भावार्थ—सीधोडोने आकारे त्रीखुणीयो आकार एकज छे.

अर्थ—ए० एक च० चौपुणो

एगे चउरंसे ॥ १४ ॥

भावार्थ—चोरसाने आकारे चौपुणो आकार एकज छे.

अर्थ—ए० एक पि० पंहोळुं

एगे पिहुले ॥ १५ ॥

भावार्थ—विस्तारवंत पंहोळो आकार एकज छे.

अर्थ—ए० एक प० परिमंडल बलयाकार

एगे परिमण्डले ॥ १६ ॥

भावार्थ—हाथनी चुडीने आकारे गोल आकार एकज छे.

अर्थ—ए० एक कि० कालो

एगे किण्हे ॥ १७ ॥

भावार्थ—सर्व जातिनो कालो वर्ण (रंग) एकज छे.

अर्थ—ए० एक नी० लीलो

एगे नीले ॥ १८ ॥

भावार्थ—सर्व जातिनो लीलो वर्ण एकज छे.

अर्थ-ए० एक लो० रातो

एगे लोहिए ॥ १९ ॥

भावार्थ-सर्व जातिनो रातो वर्ण एकज छे.

अर्थ-ए० एक हा० पीलो

एगे हालिहे ॥ २० ॥

भावार्थ-सर्व जातिनो पीलो वर्ण एकज छे

अर्थ-ए० एक सु० थोलो

एगे सुक्किले ॥ २१ ॥

भावार्थ-सर्व जातिनो धोलो वर्ण एकज छे.

अर्थ-ए० एक सु० सुगंध

एगे सुब्भिगन्धे ॥ २२ ॥

भावार्थ-ऋस्तुरी प्रमुख सर्व जातिनी सु-
गंधी एकज छे.

अर्थ-ए० एक दु० दुर्गंध

एगे दुब्भिगन्धे ॥ २३ ॥

भावार्थ-हींग प्रमुख सर्व जातिनी दुर्गंधी
एकज छे.

अर्थ-ए० एक ति० तीपो

एगे तिच्चे ॥ २४ ॥

भावार्थ-मरी प्रमुख सर्व जातिनो तीखो
रस एकज छे.

अर्थ-ए० एक क० कडुओ

एगे कडुए ॥ २५ ॥

भावार्थ-कालीजीरी प्रमुख सर्व जातिनो
कडवो रस एकज छे.

अर्थ-ए० एक क० कसायलो

एगे कसाए ॥ २६ ॥

भावार्थ-दळदर प्रमुख सर्व जातिनो कसा-
यलो रस एकज छे.

अर्थ-ए० एक अं० पाटो

एगे अम्बिले ॥ २७ ॥

भावार्थ-लींबु प्रमुख सर्व जातिनो खाटो
रस एकज छे.

अर्थ-ए० एक म० मीठो

एगे महुरे ॥ २८ ॥

भावार्थ-शेलडी प्रमुख सर्व जातिनो मधुरो
रस एकज छे.

अर्थ-ए० एक क० खरखरो फरस जा०
यावत लु० लुखो.

एगे ककखडे जाव लुखे ॥ २९ ॥

भावार्थ-पापाणादिक सर्व कठण स्पर्श
एकज छे. एमज हळवो. १ भारे. २ टाढो.
३ उष्ण. ४ खरखरो. ५ सुंहाळो. ६ लुखो.
७ ए सर्व स्पर्श एकेकज छे.

अर्थ-ए० एक पा० प्राणातिपात हिंसा.

ए० एक सु० मृपावाद जूट्ट ए० एक अ० अद-
त्तादान ते चोरी. ए० एक मे० मैयुन ते
खीसेवा जा० थावत् ए० एक प० परिग्रह ते
धन.

एगे पागाइवाए जाव एगे प-
रिग्रहे ॥ १ ॥

भावार्थ-प्राणातिपात जीवहिंसा. १ मृपावाद
(जुट्ट) २ अदत्तादान अणदीधेडुं लेकुं ते
चोरी ३ मैयुन (विपय) ४ परिग्रह ५ ए सर्वे
एकेकज छे.

अर्थ-ए० एक को० क्रोध ए० एक मा०
मान ए० एक मा० माया जा० यावत् ए०
एक लो० लोभ

एगे कोहे जाव लोभे ॥ २ ॥

भावार्थ-क्रोध (रिस) अंहकार कपट
लोभ ए सर्व एकेकज छे.

अर्थ-ए० एक पे० राग

एगे पेज्जे ॥ ३ ॥

भावार्थ-स्नेह रूप प्रेम एकज छे.

अर्थ-ए० एक टो० द्वेष जा० यावत ए०
एक प० पारको प० अपवाद

एगे दोसे जाव एगे परपरिवा-
ए ॥ ४ ॥

भावार्थ-द्वेष रूप द्वेष ते एकज छे. एमज
कलेश. १ अभ्याख्यान. (आळदेवुं ते)
२ पीथुन (चाडी करवीते) ३ पारकी नींघ्या
४ ए सर्व एकेकज छे.

अर्थ-ए० एक अ० अरती २० रती.

एगा अरइरई ॥ ५ ॥

भावार्थ-अरति (उद्वेग) १ रती (आनं-
दहर्ष) २ ए एकेकज छे.

अर्थ-ए० एक मा० माया मो० मृषा

एगे मायामोसे ॥ ६ ॥

भावार्थ-ऋषट सहित जुटुं वोळवुं ते एकज छे

अर्थ-ए० एक मि० मिथ्यात्व द० दर्शन
स० सत्य

एगे मिच्छादंसणसले ॥ ७ ॥

भावार्थ-शल्य (कांटो) नीपेरे दुःखदाइ
ते मिथ्यात्वदर्शन शल्य एकज छे. (ए अठार
पाप स्थानक जाणवा.)

अर्थ-ए० एक पा० प्राणनु पाडवो तेथी वे०
विरमवुं जा० यावत प० परिग्रहथी वे० विरमवुं

एगे पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्ग-
हवेरमणे ॥ १ ॥

भावार्थ-जीवहिंसाथी निवर्तवुं ते एकज छे.
एमज मृषावाद. १ अदत्तादान. २ मैथुन.
३ परिग्रह. ४ एहर्था निवर्तवुं ते सर्व
एकेकज छे.

अर्थ-ए० एक क्रो० क्रोधनो वि० त्याग
जा० यावत मि० मिथ्यात्व द० दर्शन स०
सत्य वि० त्याग

एगे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसण-
सल्लविवेगे ॥ २ ॥

भावार्थ-क्रोधनो त्याग करवो ते एकज छे.
एमज मान. १ कपट, २ लोभ, ३ राग.
४ द्वेष. ५ लेश. ६ कलंक. ७ चुगली.
८ निंघ्या. ९ रती. १० अरती. ११ कपट
सहित जुटुं वाक्य. १२ मिथ्यात्व दर्शन
सत्य. १३ ए सर्वे पापथी निवर्तवुं ते सर्वे
एकेकज छे.

अर्थ-ए० एक ओ० अवसर्पिणी काल

एगा ओसर्पिणी ॥ १ ॥

भावार्थ-जीहां आयुष प्रमुख सर्व भाव
दीनप्रतिदीन हांणी पामताजाय ते अवसर्पिणी
(पडतो) काल एकज छे.

अर्थ-ए० एक मु० सुपमा मु० सुपमा
पेहेलो आरो जा० यावत ए० एक दू० दुपमा
दु० दूपमा छडो आरो

एगा सुमसुसमा जाव एगा दू-
समदूममा ॥ २ ॥

भावार्थ-ए अवसर्पिणी कालमां छ आरा
होय छे, ते मांही पहला आरामां मुखनी अं-
दर पण अत्यंत मुख. १ वीजामां एकलुं सु-
खज. २ वीजामां मुख वणुं ने दुःख थोडुं.
३ चोथामां दुःख वणुं ने मुख थोडुं. ४ पां-
चमामांही एकलुं दुःखज. ५ छडामांही
दुःखनी अंदर पण अत्यंत दुःख. ६ ए सर्वे
छ आरा एकेकज छे.

अर्थ-ए० एक उ० उन्सर्पिणी काल

एगा उस्मापिणी ॥ ३ ॥

भावार्थ-जीहां आयुष्य प्रमुख सर्वभाव
दीनप्रतिदीन चडताजाय ते उन्सर्पिणी काल
एकज छे.

અર્થ-૧૦ એક દૂ૦ દુપમા દૂ૦ દુપમા પહેલો આરો જા૦ યાવત ૧૦ એક સુ૦ સુપમા સુ૦ સુષમા છઠો આરો.

**૧૦ દૂસમદૂસમા જાવ સુસમસુ-
સમા ॥ ૪ ॥**

ભાવાર્થ-૧ ઉત્સર્પિણીકાલમાં છ આરા હોય છે, તે માંહી પહેલા આરામાં, દુઃખમાં અત્યંત દુઃખ. ૧ વીજામાં એકલું દુઃખજ. ૨ ત્રીજામાં દુઃખ ઘણું ને સુખ થોડું. ૩ ચોથામાં સુખ ઘણું ને દુઃખ થોડું. ૪ પાંચમામાં એકલુ સુખજ. ૫ છઠામાં સુખની અંદર પણ અત્યંત સુખ. ૬ ૧ સર્વ છ આરા એકેકજ છે (દશ ક્રોડાક્રોડી સાગરોપમનો ઉત્સર્પિણી કાલ અને દશ ક્રોડાક્રોડી સાગરોપમનો અ-વસર્પિણીકાલ ૧ વે મઝી વીસ ક્રોડાક્રોડી સાગરોપમનું એક કાલચક્ર કહેવાય છે.)

અર્થ-૧૦ એક ને૦ નારકીનો વ૦ સમુદાય.

૧૦ નેરહયાણ વર્ગગણા ॥ ૧ ॥

ભાવાર્થ-સાતે નર્કના નારકી જીવની વર્ગગણા (સમુદાય) એકજ છે.

અર્થ-૧ એક અ૦ અસુર કુમારનો વ૦ સમુદાય વ૦ ચત્વીસ દંડકનો સમુદાય જા૦ યાવત ૧૦ એક વ૦ વૈમાનીકનો વ૦ સમુદાય

**૧૦ અસુરકુમારાણ વર્ગગણા । ચ-
ત્વીસદ્વંડઓ જાવ ૧૦ વૈમાણિ-
યાણ વર્ગગણા ॥ ૨ ॥**

ભાવાર્થ-અશુરકુમાર. ૧ નાગકુમાર. ૨ સુવર્ણકુમાર. ૩ વિશુત્કુમાર. ૪ અગ્નીકુમાર ૫ દ્વીપકુમાર. ૬ ઉદ્ધીકુમાર. ૭ વિજાકુમાર ૮ વાસુકુમાર. ૯ સ્થનીતકુમાર. ૧૦ ૧ દગ્ગે પ્રકારના ધુવનપતિ દેવતાની વર્ગગણા એકેકી-જ છે. ૧મજ પૃથ્વી. ૧ પાણી. ૨ અગ્ની. ૩

વાયુ. ૪ વનસ્પતિ. ૫ વે ઈંદ્રીજીવ. ૬ તેઈં-દ્રીજીવ. ૭ ચૌંદ્રીજીવ. ૮ તિર્યંચપચેદ્રી. ૯ મનુષ્યપચેદ્રી. ૧૦ વાણવ્યંતર ૧૧ જોતિષી. ૧૨ વૈમાનીક. ૧૩ નારકીથી માંડી વૈમા-નીકસુધી ચોવીસ દંડકના સર્વે જીવની વર્ગગણા એકેકીજ છે.

અર્થ-૧૦ એક ભ૦ ભવ્યજીવનોવ૦ સમુદાય

૧૦ ભવસિદ્ધિયાણ વર્ગગણા ॥૩॥

ભાવાર્થ-જે અનંતે ભવે પણ છેવટ મોક્ષ જશે તે ભવ્ય જીવની વર્ગગણા એકજ છે.

અર્થ-૧૦ એક અ૦ અભવ્ય જીવનો વ૦ સમુદાય.

૧૦ અભવસિદ્ધિયાણ વર્ગગણા ॥૪॥

ભાવાર્થ-જે અનંતેભવે પણ કોઈ વસ્તુ મોક્ષનેવિષે નહિ જાય એવા અભવ્ય જીવની વર્ગગણા એકજ છે.

અર્થ-૧૦ એક ભ૦ ભવ્યજીવ ને૦ નાર-કીનો વ૦ સમુદાય.

**૧૦ ભવસિદ્ધિયાણ નેરહયાણ વ-
ર્ગગણા ॥ ૫ ॥**

ભાવાર્થ-ભવ્ય સિદ્ધિક નારકીની વર્ગગણા એકજ છે.

અર્થ-૧૦ એક અ૦ અભવ્યજીવ ને૦ નાર-કીનો વ૦ સમુદાય ૧૦ એમ જા૦ યાવત ૧૦ એક ભ૦ ભવ્યજીવ વ૦ વૈમાનીકનો વ૦ સમુદાય.

**૧૦ અભવસિદ્ધિયાણ નેરહયાણ વ-
ર્ગગણા । એવં જાવ ભવસિદ્ધિયાણ
વૈમાણિયાણ વર્ગગણા ॥ ૬ ॥**

ભાવાર્થ-અભવ્ય સિદ્ધિક નારકીની વર્ગ-ગણા એકજ છે. ૧મ યાવત્ વૈમાનીક સુધી ચૌ-

विस दंडकना सर्व भव्यसिद्धिकजीवनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ-ए० एक अ० अभव्य जीव वे० वैमानीकनो व० समुदाय.

एगा अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वर्गणा ॥ ७ ॥

भावार्थ-एमज चोविस दंडकना वैमानीक साथे सर्वे अभव्यसिद्धिक जीवनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ-ए० एक स० सम्यग द्वि० द्रष्टी जीवनो व० समुदाय.

एगा सम्मद्द्विष्टियाणं वर्गणा ॥ ८ ॥

भावार्थ-मिथ्यात्व मोहनी कर्मना क्षयोपशमयी जीनप्रणीत वचन सत्य करि जाणे ते सर्वे समकित द्रष्टि जीवनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक मि० मिथ्या द्वि० द्रष्टी जीवनो व० समुदाय.

एगा मिच्छद्द्विष्टियाणं वर्गणा ॥ ९ ॥

भावार्थ-मिथ्यात्व मोहनी कर्मना उदयथी जीनप्रणीत वचनने विप्रीत रीते माने ते मिथ्यात्वी जीवनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक स० सम्यग मि० मिथ्या द्वि० द्रष्टी जीवनी व० वर्गणा समुदाय.

एगा सम्मामिच्छद्द्विष्टियाणं वर्गणा ॥ १० ॥

भावार्थ-जेने जीनप्रणीत वचन उपर राग नहां तेम द्वेष पण नहीं ने सर्वे धर्मना कथन सत्य करि माने ते मिश्रद्रष्टि जीवनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक० स० सम्यग द्वि० द्रष्टी जीव ने० नारकीनो व० समुदाय.

एगा सम्मद्द्विष्टियाणं नेरइयाणं वर्गणा ॥ ११ ॥

भावार्थ-समकितद्रष्टी नारकीनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक मि० मिथ्यात्वद्वि० द्रष्टी जीव ने० नारकीनो व० वर्गणा.

एगा मिच्छद्द्विष्टियाणं नेरइयाणं वर्गणा ॥ १२ ॥

भावार्थ-मिथ्यात्वद्रष्टी नारकीनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक स० सम्यग मि० मिथ्या द्वि० द्रष्टी ने० नारकीनी व० वर्गणा. ए० एम जा० यावत थनितकुमारनो समुदाय.

एगा सम्मामिच्छद्द्विष्टियाणं नेरइयाणं वर्गणा । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ १३ ॥

भावार्थ-मिश्रद्रष्टी नारकीनी वर्गणा एकज छे. एमज दशे भुवनपति देवता समकित. १ मिथ्यात्व. २ मिश्र. ३ ए त्रणे द्रष्टीवाळा जीवनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ-ए० एक मि० मिथ्यात्वी पु० पृथ्वीकार्डयानो व० समुदाय ए० एम जा० यावत व० वनस्पतीकायना जीवने जाणवो.

एगा मिच्छद्द्विष्टियाणं पुढविकाइयाणं वर्गणा । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ॥ १४ ॥

भावार्थ-मिथ्यात्वद्रष्टि पृथ्वीकाय जीवनी वर्गणा एकज छे. एमज मिथ्यात्वद्रष्टि पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिकाय जीवनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ-ए० एक स्र० समकित द्वि० द्रष्टी वे०
वेइन्द्री जीवनो व० समुदाय.

एगा सम्मद्दिष्टियाणं वेइन्दियाणं
वर्गणा ॥ १५ ॥

भावार्थ-समकित वमतो वेइन्द्रि मांही आवे
ते वारे उपजती वेळाए छ आवळीका सुधी
सास्वादान समकित होय, ते समकितद्रष्टि
वेइंद्री जीवनी वर्गणा एकज छे. (छ आव-
ळीका पछी जरूर मिथ्यात्वद्रष्टि थइ
जाय छे.)

अर्थ-ए० एक मि० मिथ्यात्वी वे० वेइ-
न्द्रीजीवनो व० समुदाय ए० एम ते० तेइन्द्री
ने वि० पण जाणतुं च० चउरिन्द्रीनी वर्गणा
वि० पण एमज से० वीजा ज० जेमने० नार-
कीनी पेरे जाणवा जा० यावत ए० एक
स० सम्यग मि० मिथ्या द्वि० द्रष्टी वे०
वैमानीकनी व० वर्गणा त्रणेते एक.

एगा मिच्छद्दिष्टियाणं वेइन्दियाणं
वर्गणा । एवं तेइन्दियाण वि चउरिन्दि-
याण वि । सेसा जहा नेरइया जाव
एगा सम्मामिच्छद्दिष्टियाणं वेमाणि-
याणं वर्गणा ॥ १६ ॥

भावार्थ-मिथ्यात्वद्रष्टि वेइंद्री जीवनी व-
र्गणा एकज छे. (वेइंद्रीमां मिश्रद्रष्टी होय
नही.) एमज समकितद्रष्टि तेइंद्री जीवनी
एक वर्गणा. मिथ्यात्वद्रष्टि तेइंद्री जीवनी
एक वर्गणा. समकीवद्रष्टि चौइंद्री जीवनी
एक वर्गणा. मिथ्यात्वद्रष्टि चौइंद्री जीवनी
पण एक वर्गणा छे. शेष ते गर्भज तिर्यच
पंचेद्री. १ तथा मनुष्य. २ व्यंतर. ३ जो-
तीपी. ४ वैमानीक ५ ए सर्वमां नारकीनी
पेरे समकितद्रष्टि. ६ मिथ्यात्वद्रष्टि. ७ मिथ-

द्रष्टि ३ ए त्रणे भेदनी एकेकी वर्गणा छे.
अने ए सर्वमां सम्यकदर्शन. १ मिथ्यात्वद-
र्शन. २ मिश्रदर्शन. ३ ए त्रणे दर्शन छे.

अर्थ-ए० कि० कृष्ण प० पक्षिया जीवनी
व० वर्गणा.

एगा किण्हपक्षियाणं वर्गणा ॥
॥ १७ ॥

भावार्थ-जेहने अर्ध पुदगळ परावर्तनथी
अधीको संसार परिभ्रमण करवातुं होय ए-
टले व्होळा (घणा) संसारीजीव ए कृष्ण-
पक्षीया जीवनी वर्गणा एकज छे.

(इहां अर्ध पुदगळ परावर्तन कहेल छे
ते आ प्रमाणे कहेवाय छे.

उदारीक. १ वैक्रेय. २ तेजश. ३ का-
र्मण. ४ मन. ५ वचन. ६ सासोश्वास. ७
ए सात प्रकारना पुदगळ परावर्तन छे ते द्रव्य-
थी. १ क्षेत्रथी. २ काळथी. ३ भावथी. ४
ए चार प्रकारे चौविस दंडकना सर्व प्राणी
करे ते चौवीस दंडके १३४ वर्गणा थाय ते
हना नाम कहेछे. एकेंद्री जीवनी २१ वर्गणा
ते. पृथ्वी. १ पाणी. २ अग्नी. ३ वनस्पती.
४ ए चारेने उदारीक. १ तेजश. २ कर्मण
३ सासोश्वास. ४ ए चार वर्गणा तेथी चार
चोकुं १६ थइ अने वायुने पुर्वोक्त चार अने
एक वैक्रेय ए पांच वर्गणा मली कुल २१ तथा
साधारण वनस्पतिने उदारीक. १ तेजस.
२ कर्मण. ३ ए त्रण वर्गणां, ए कुल मली
२४ एकेंद्रीनी वर्गणा.

वेइंद्री १. तेइंद्री २, चौइंद्री ए त्रणेने उदा-
रीक १. तेजश २ कर्मण ३. सासोश्वास ४.
ए चार चार वर्गणा गणनां वार वर्गणा वि-
गलेंद्रीनी (इहां विगलेंद्रीने भाषा छे पण
असंही होवार्थी गणी नथी.)

नारकी १. दशभूवनपति ११. वाणव्यं-
तर १२. जोतीपी १३. वैमानीक १४. ए
चौदेने उदारीक वर्जिने छ छ वर्गणा गणतां
चौदेछके ८४ थइ. मनुष्य १ तिर्यचने २
सान सात वर्गणां गणतां १४ थइ कुल सर्वे
मळी १३४ वर्गणा जाणवी.

ए १३४ वर्गणाए करीने लोकमांही पु-
र्वोक्त सात प्रकारना जेटलां पुद्गळछे तेदलां
लइलइने मुके तेवारे एक द्रव्यथी वादर पुद्गळ
परावर्तन थाय, अने एज १३४ वर्गणाये क-
रिने अनुक्रमे लोकमांहीथी पुद्गळ ग्रहीग्रहीने
मुके पण वचे वीजा पुद्गळ लीये ते न गणवां
तेहने शुष्म पुद्गळ परावर्तन कहीये. ए द्रव्य-
थी पुद्गळ परावर्तन कथुं. ?

हवे क्षेत्रथी पुद्गळ परावर्तन कहे छे.

क्षेत्रथी पुद्गळ परावर्तनना वे भेद, शुष्मने
वादर, तेमांही वादर ते जंयूद्रीपना मध्यभागे
मेरु पर्वत छे, ते मेरुना मध्यभागे आकाशना
आठ रुचक प्रदेश छे, ते रुचकप्रदेशथी दिशी
ने विदिशी लोकना अंतमुथी मंडाणी तिहां
जेटला आकाश प्रदेश छे तेदला भव करे
तेहने क्षेत्रथी वादर पुद्गळ परावर्तन कहीये?
अने जे रुचक प्रदेशथी माडीने अनुक्रमे दरेक
प्रदेशे प्रदेशे भव करे तेहज लेखांमां गणाय,
पण अनेरे अनेरे प्रदेशेभव करे ते गणवीमां
नहीं तेहने क्षेत्रथी शुष्म पुद्गळ परावर्तन
कहीये २.

हवे काळथी पुद्गळ परावर्तन कहेछे.

इहां त्रयमकाळनुं प्रमाण कहे छे. षडपथी
आंस विंचिने उयाडे तेमांही असंख्याता स-
मय जाय. ते असंख्याता समयनी एक आ-
वळीका थाय ? मंख्यानी आवळीकाए एक
उधाम तथा निधाम थाय. २ एक उधाम
निधामे एक प्राणु थाय. ३ सात प्राणुए एक

थोव थाय. ४ सात थोवे एक लव (घासनी
पुळी पकडी तिषण दातरदाये षडपथी एक
कडलो कापे ते) थाय. ५

सीतोतेर लवे एक मुहुर्त (वे घडी)
थाय, अथवा ३७७३ भासोभासे एक मुहुर्त
(वे घडी) थाय. ६ त्रीस मुहुर्ते एक अहो
(दीवस) रात्री थाय. ७ पन्नर अहो रात्रीए
एक पखवाडीयुं थाय. ८ वे पखवाडीये एक
मास थाय. ९ वे महीने एक स्तु थाय. १०
त्रण स्तुये एक अयन थाय ११ वे अयने
एक वरस थाय. १२ पांच वर्षे एक युग
थाय. १३ विस युगे सो वर्ष थाय. १४

हवे पल्योपम सागरोपमनुं प्रमाण कहे छे.

अनंता मुष्म परमाणुए एक व्यवहार
परमाणुं थाय. १ अनंता व्यवहार परमाणुं
ए एक उस्नसण्हियो थाय. २ आठ उस्नस-
ण्हिये एक सण्ड सण्हियो थाय. ३ आठ सण्ड
सण्हिये एक उर्दरेणुं थाय. ४ आठ उर्दरेणुंये
एक त्रसरेणुं थाय. ५ आठ त्रसरेणुंए एक
रथरेणुं थाय. ६ आठ रथरेणुंये एक त्रण
पल्योपमना आयुपवाळा देवकुरु उत्तरकुरु
युगळीया मनुष्यनो एक वाळाग्र थाय. ७
आठ देवकुरु उत्तरकुरु युगळीया मनुष्यना
वाळाग्रे, वे पल्योपमना आयुपवाळा हरि-
वास रम्यक्वास युगळीया मनुष्यनो एक
वाळाग्र थाय. ८ आठ हरीवास रम्यक्वास
युगळीआ मनुष्यना वाळाग्रे एक पल्योपमना
आयुपवाळा हेमवय, एरणवय, युगळीया
मनुष्यनो एक वाळाग्र थाय. ९ आठ हेमवय
एरणवय युगळीआ मनुष्यना वाळाग्रे, पूर्व
पश्चिम म्हाविदेहनां सात दीवसनां जन्मेलां
मनुष्यनो एक वाळाग्र थाय. १० तेहवा पूर्व
पश्चिमना मनुष्यना आठ वाळाग्रे एक लीय
थाय. ११ आठ लीये एक जुं थाय. १२

आठ जुंये एक जवनो मध्यभाग थाय. १३ आठ जवना मध्यभागे एक उत्सेधांगुळ थाय. १४ एवां छ उत्सेधांगुळे एक पगनुं पहोळपणुं थाय. १५ एवां वे पगे एक वेंत थाय. १६ वे वेंते एक हाथ. १७ वे हाथे एक कुक्षी थाय. १८ वे कुक्षीए एक धनुष्य थाय. १९ वे हजार धनुष्ये एक गाउथाय. २० चार गाउए एक जोजन थाय. २१ तेवा एक जोजन प्रमाणे लांबो पोहोळो एक कुवो कल्पीए. एक वाळना असंख्याताखंड (कडका) कल्पीए. तेवाळाप्रे ते कुवो टांसीटांसी भरीए ते एटले मुधीके ते कुवाउपर अक्रवर्तिनुं सैन्य ८४ लाख हाथी, ८४ लाख घोडा, ८४ लाख रथ, ९६ करोड पायदल जाय तोपण दबाय नहीं, पळी ते कुवामांथी सोसो वरसे अकेको वाळग्र काढतां जेवारे ते कुवो तदन खाली थाय ते वारे एकपल्योपम थाय. एवा दशक्रोडा क्रोडी पल्योमे एक सागरोपम थाय. एवा दशक्रोडा क्रोडी सागरोपमे एक उत्सर्पिणी अने एक अवसर्पिणी काल थाय, एवां वीस क्रोडाक्रोडी सागरोपमे एक कालचक्र थाय. हवे कालथी पुद्गळ परावर्तन तेहना वे भेद सुक्ष्मने वादर तेमांही वादर ते उत्सर्पिणीना पहेला समयथी ते अवसर्पिणी ना छेला समय मुधी एटले एक कालचक्र ना जेटला समय थाय तेदला भवकरे तेहने कालथी वादर पुद्गळ परावर्तन कहीये. १ उत्सर्पिणीना जेसमे पहेलो भवकरे ते अवसर्पिणीना वीजे समे भवकरे तेज लेखमां गणाय पण अनेरेसमे भवकरे ते गणत्रीमां नही तेहने कालथी सुक्ष्म पुद्गळ परावर्तन कहीये. ३

हवे भावथी पुद्गळ परावर्तन कहे छे.

भावथी पुद्गळ परावर्तनना वे भेद. सुक्ष्मने वादर तेमांही वादर ते जीवना प्रणामना

असंख्यातां स्थानक छे ते अकेक प्रणामने स्थानके भव करे तेहने भावथी वादर पुद्गळ परावर्तन कहीये. १ अने सुक्ष्म ते जीवना एहज प्रणामना स्थानके अनुक्रमे लगता भव करे तेहज लेखामां गणाय पण अनेरे प्रणामे भव करे ते गणत्रीमां नही, तेहने भावथी सुक्ष्म पुद्गळ परावर्तन कहीये. ४

चौविस दंडकना सर्व जीवे अतीतकाले साते प्रकारना पुद्गळ परावर्तन अनंतअनंतवार करीं, अने आगळ कोइ करशे ने कोइ नही करे, करशे तेजधन्य एक वे ने त्रण उत्कृष्टा अनंता करशे.

अनंताकालचक्र जाय त्यारे एक कार्मण पुद्गळ परावर्तन थाय. १ अनंताकार्मण पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक तेजस पुद्गळ परावर्तन थाय. २ अनंता तेजस पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक उदारीक पुद्गळ परावर्तन थाय. ३ अनंताउदारीक पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक श्वासोश्वास पुद्गळ परावर्तन थाय. ४ अनंताश्वासोश्वास पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक मन पुद्गळ परावर्तन थाय. ५ अनंतामन पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक वचन पुद्गळ परावर्तन थाय. ६ अनंतावचन पुद्गळ परावर्तन जाय त्यारे एक वैक्रेय पुद्गळ परावर्तन थाय. ७

एक कार्मण पुद्गळ परावर्तनमांही अनंताकालचक्र वहीजाय तथा तेमांज एक तेजस पुद्गळ परावर्तन वहीजाय. १ एक श्वासोश्वास पुद्गळ परावर्तनमांही अनंताउदारीक पुद्गळ परावर्तन तथा अनंता कारमण पुद्गळ परावर्तन वहीजाय. २ एक उदारीक पुद्गळ परावर्तनमांही अनंतातेजस पुद्गळ परावर्तन वहीजाय. ३ एक श्वासोश्वास पुद्गळ परावर्तन-

ओ पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं मणु-
स्साणं छ लेसाओ जोइसियाणं एगा
तेउलेसा वेमाणियाणं तिण्णि उवरिम-
लेसाओ ॥ २३ ॥

भावार्थ—कृष्णलेस्यावाळानारकीनी वर्गणा
एकजछे. एमज निललेस्या, कापुतलेस्याळा
नारकीनी पण एकेकीज वर्गणा छे.
(नारकीने वीपे ए त्रणज लेस्या छे.)
एम जे दंडकमां जेटली जेटली लेस्या होय
तेटली तेटली एकेक नामे वर्गणा जा-
णवी. भूवनपती. १ वाणव्यंतर. २ एहने
विपे प्रथमनी चार लेस्या छे. पृथ्वी. १
पाणी. २ वनस्पतीमां उपजती वेळाए अप्र-
जाप्ता वेळाए प्रथमथी चार लेस्या छे अने
प्रजाप्तामां त्रण लेस्या छे. १ तेउकाय.
२ वायुकाय. ३ वेइंद्री. ४ त्रेइंद्री. ५
चौइंद्रीमां प्रथमनी त्रण लेस्या छे. पचेंद्री
त्रीर्यच अने मनुष्यमां छ लेस्या छे. जोती-
पीमां एक तेजुलेस्या छे. वैमानिकमां तेजु.
१ पद्म. २ शुक्ल ३ ए त्रण लेस्या
छे. तेमांही पहिले वीजे देवलोकें एक
तेजुलेस्या छे. त्रीजे, चोथे ने पांचमे
देवलोकें एक पद्मलेस्या छे. छठा देव-
लोकथी नवग्रिवेयक मुथी एक शुक्ललेस्या
छे. पांच अनुंतरविमानमां पर्मे शुक्ललेस्याछे.

अर्थ—ए० एक कि० कृष्ण लेस्याना भ०
भव्य जीवनी व० वर्गणा.

एगा किण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं
वग्गणा ॥ २४ ॥

भावार्थ—कृष्णलेस्यावंत भव्य जीवनी
वर्गणा एकज छे.

अर्थ—ए० एक कि० कृष्णलेस्याना अ-
भव्यजीवना व० वर्गणा. ए० एम छ० छ
वि० विपे ले० लेस्याने विपे दो० वे दो०
वे प० पद भव्य, अभव्यना भा० जाणवा.

एगा किण्हलेसाणं अभवसिद्धिया-
णं वग्गणा । एवं छसु वि लेसासु दो दो
पयाणि भाणियञ्जाणि ॥ २५ ॥

भावार्थ—कृष्णलेस्यावंत अभव्य जीवनी
वर्गणा एकज छे. एम छए लेस्यामां भव्य अने
अभव्य ववे भेदनी एकेकी वर्गणा जाणवी.

अर्थ—ए० एक कि० कृष्ण लेस्याना
भव्य जीव ने० नारकीनी व० वर्गणा

एगा किण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं
नेरइयाणं वग्गणा ॥ २६ ॥

भावार्थ—कृष्ण लेस्यावंत भव्य सिधिक
नारकीनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ—ए० एक कि० कृष्ण लेस्याना अ०
अभव्य जीवने० नारकीनी व० वर्गणा.
ए० एम ज० जे दंडकने ज० जेटली ले०
लेस्याछे त० तेहने त० तेटली भा० जाणवी
वर्गणा जा० यावत वे० वैमानीक लगे.

एगा किण्हलेसाणं अभवसिद्धियाणं
नेरइयाणं वग्गणा । एवं जस्स जइ
लेसाओ तस्स तत्तियाओ भाणियञ्जा-
ओ जाव वेमाणियाणं ॥ २७ ॥

भावार्थ—कृष्ण लेस्यावंत अभवसिधिक
नारकीनी वर्गणा एकज छे. एम चीवीस दं-
डकमुथी जेजे दंडकमां जेटली जेटली लेस्या
होय तेटली तेटली भव्य सिधिक अने अभव्य
सिधिकनी एकेकी वर्गणा जाणवी.

अर्थ-ए० एक कि० कृष्ण लेश्यानो स०
सम्यकदृष्टी जीवनी व० वर्गणा

एगा किण्हलेसाणं सम्मद्दिट्टियाणं
वग्गणा ॥ २८ ॥

भावार्थ-कृष्णलेस्यावाळा समकितद्रष्टीवं-
तनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक कि० कृष्ण लेश्याना मि०
मित्थ्यात द्रष्टीनी व० वर्गणा.

एगा किण्हलेसाणं मिच्छद्दिट्टियाणं
वग्गणा ॥ २९ ॥

भावार्थ-कृष्णलेस्यावाळा मिथ्यात्वद्रष्टीवं-
तनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक कि० कृष्ण लेश्याना स० समा
मित्थ्या द्रष्टीनो व० समुदाय. ए० एक छ०
छ वि० पण ले० लेश्याने विपे जा० यावत
वे० वैमानीक लगे जे० जेहने ज० जेटली
दि० दृष्टी छे तेटली वर्गणा.

एगा किण्हलेसाणं सम्मामिच्छद्दिट्टि-
याणं वग्गणा । एवं छसु वि लेसासु
जाव वेमाणियाणं जेसिं जइ दिट्ठीओ
॥ ३० ॥

भावार्थ-कृष्णलेस्यावाळा मिश्रद्रष्टीवंतनी
वर्गणा एकज छे. एमज नील १, कापुत २,
तेजु ३ पदम ४ शुक्ल ५ एलेस्याने विपे चौ
बिस दंडकसुधी त्रणे द्रष्टीमां जेहने जेटली
जेटली द्रष्टी होय तेहने तेटली तेटली वर्गणा
जाणवी. पांच एकेद्रीमां एक मिथ्यात्वद्रष्टी छे,
त्रण विगलेंद्री नवग्रवेगमां समकित अने मि-
थ्यात्व ए वे द्रष्टी छे, पांच अनुतरविमानमां
एक समकितद्रष्टी छे, बाकी तमाममां त्रणत्रण
द्रष्टी छे.

अर्थ-ए० एक कि० कृष्ण लेश्याना कि०
कृष्ण पक्षीयानी च० वळी व० वर्गणा.

एगा किण्हलेसाणं किण्हपक्खियाणं
च वग्गणा ॥ ३१ ॥

भावार्थ-कृष्णलेस्यावाळा कृष्णपक्षीया
जीवनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ-ए० एक कि० कृष्ण लेश्यानो सु० शुक्ल
पक्षीया जीवनी व० समुदाय जा० यावत वे०
वैमानीक लगे जाणवो ज० जेहने ज० जेटली
छे० लेश्याहोय तेटली वर्गणा ए० ए अ०
आठ वोल च० चउवीसे दं० दंडके जाणवा.

एगा किण्हलेसाणं सुक्कपक्खियाणं
वग्गणा जाव वेमाणियाणं जस्स जइ
लेसाओ एए अट्टचउवीसदण्डया ॥
३२ ॥

भावार्थ-कृष्णलेस्यावाळा शुक्लपक्षीया जी-
वनी वर्गणा एकज छे. एम वैमानीकसुधी
चौवीस दंडकमां जेहने जेटली जेटली लेश्या
होय तेहमां तेटली तेटली कृष्णपक्षीया ने शु-
क्लपक्षीया जीवनी एकेकी वर्गणा जाणवी.
पहेलो समुचय चौवीस दंडकना नामरूपनो
वोल १ भवी अभवीनो २. द्रष्टीनो ३ कृष्ण
शुक्लपक्षीनो ४ लेश्यानो ५ लेश्या साथे भव्य
अभव्यनो ६ लेश्या साथे द्रष्टीनो, लेश्या
साथे पक्षीनो ८ ए आठ वोल चौवीस दंड-
कपर पुर्वोक्त प्रमाणे जाणवा.

अर्थ-ए० एक ति० संयथापना कीधा
पछी मुक्ति गया तेनी व० वर्गणा.

एगा तित्थसिद्धाणं वग्गणा ॥ ३३ ॥

भावार्थ-तिर्थकरदेवने केवलज्ञान उत्पन्न
यया पछी साधु १ साध्वी २ श्रावक ३ श्रा-
चीका ४ ए चार तीर्थनी स्थापना कर्यापछी

मुक्ति जाय ते तिर्यसिद्धा कहीये. जेम रूप-
भदेव भगवंतने केवळज्ञान उत्पन्न थया पळी
पुंढरिक त्रण गणधरादीक मुक्ती गया एवा
तिर्य सिद्धा जीवनी वर्गणा एकज छे. १

अर्थ-ए० एक अ० अतिर्यसिद्धनी व० वर्गणा
ए० एक जा० यावत ए० एक सि० सिद्धनी
व० वर्गणा अ० अनेक सिद्धनी व० वर्गणा

एगा अतित्यसिद्धाणं वर्गणा ।
एवं जाव एकसिद्धाणं वर्गणा अणे-
कसिद्धाणं वर्गणा ॥ ३४ ॥

भावार्थ-तिर्य स्थाप्यां पहेलां जाति स्म-
र्णादिक ज्ञान थये पुर्व जन्म जोइ केवळज्ञान
पामि ऋषभदेव भगवंतनी माता मरुदेवीनीपेरे
मुक्तीजाय एवां अतिर्यसिद्धा जीवनी वर्गणा
एकज छे. २

एम तिर्येकर भगवंतसिद्धनी वर्गणा एकज
छे. ३ अतिर्येकर ते सामान्य केवळी सिद्ध-
नी वर्गणा एकज छे. ४ पोतानी मेळे तत्व-
ज्ञान पामी मोक्ष जाय तेवा स्वयंबुधसिद्धनी
वर्गणा एकज छे. ५ कांडपण वस्तु देखी त-
त्वज्ञान पामी मुक्ति जाय एवा प्रत्येक बुद्ध-
सिद्धनी वर्गणा एकज छे. ६ गुरुपासे प्रति-
बोध पामी मुक्ति जाय ते बुद्धबोही सिद्धनी
वर्गणा एकज छे. ७ स्त्रीलिंग (आकार) ८
पुरुषलिंग ९ नपुंसकलिंग १०. ए त्रणे लिंगे
सिद्धनी वर्गणा एकेहीज छे. (इहां लिंग ते
स्त्री पुरुष नपुंसकपणाना विषयविकारथी र-
हीत फक्त आकारमात्र जाणतुं. जेम कोइ नदी
माहेथी पाणी सुकाइजवाथी फक्त आकारमात्र
नदी कडेवाय तेनीपेरे आपण समजतुं) मुख-
पती रजोहरणादीक जैनमुनीना वेस सहित
मुक्ति जायते स्वर्लिंगे सिद्धनी वर्गणा एकज
छे. ११ अन्य लिंग ते तापशवेशे वल्कलची
वरपारी सिद्धनी वर्गणा एकज छे. १२ मरु

देवी प्रमुख ग्रहस्थलिंग सिद्धनी वर्गणा एकज
छे. १३ (इहां अन्यलिंग तथा ग्रहस्थलिंग
कहेल छे ते कोइ जैनधर्मनो द्वेषी राजा जैन-
मुनीने कहे कांतो तमारो धर्म छोडो नहीतो
जीवथी मारवा हुकम करेल होयते वस्तते ए
उपशर्ग सहन करवा समर्थ होय ते मुनी तो
प्राण जवा कुरवान करे पण संयमथी डगे
नहि, पण जे मुनीथी ते सहन थइशके नहि
ने संयमनुं रक्षण करवा पूर्ण अभिलाषा होय
ते मुनी माथे फेंटो वांधवो विगेर ग्रहस्थनो
वेश तथा अन्यधर्मि तापस विगेरेनो वेश प-
हेरि, अंदर मुनीनी क्रियामां प्रवर्ति ते राजा
ना राज्यनी सीमाओ बधी जतां ते रस्तामां
हीज केवळज्ञान उत्पन्न थये कोइ मुक्तिमां
जाय ते आश्री ग्रहस्थलिंगे तथा अन्य लिंगे
सिद्धा कहेल छे, पण ग्रहस्थी तथा अन्य-
लिंगि सिद्धा कहेल नथी. भगवतीमां संज्याने
अधीकारे अन्यलिंगे तथा ग्रहस्थलिंगे पांच
लाभे ते पण पुर्वोक्त अपेक्षायेज कहेल छे,
तथा अशोच्या केवळी ते जीनेंद्रमणीत एक
वाक्य पण वीलकुल श्रवण करेल न होय
एवा अन्य धर्मना कोइ तापसादीक घणी
निर्वध कर्माणी करतां विभंग ज्ञान उत्पन्न
थाय तेमांथी समकीत पामवे अवधीज्ञान उ-
पजे ने तेमांथी तत्काळ आयुष्यनी समाप्तीये
केवळज्ञान उपजवे मुक्तिमां जाय, आयुष्य
पुर्ण थवानी नैयारीये आ सर्वे ज्ञान उत्पन
थये मुक्तीमां जाय तेथी ते अन्य धर्मनो वेश
वदलवानो वखत मळे नही ते आश्री पण
अन्य लिंगे सिद्धा कहेल छे.) एक समे
एकज मुक्तिमां जाय ते सिद्धनी वर्गणा ए-
कज छे. १४ एक समे उन्कृष्टा एकसोने आठ
मुक्तीमां जाय ते अनेक सिद्धनी वर्गणा ए-
कज छे. १५ ए पंचर भेदे सिद्ध कशा.

अर्थ—ए० एक अ० अग्रथम स० समय सिद्धनी व० वर्गणा ए० एम जा० यावत् अ० अनंतसमय सिद्धातेहनी व० वर्गणा.

एगा अपदमसमयसिद्धाणं वर्गणा ।
एवं जाव अणन्तसमयसिद्धाणं वर्गणा ॥ ३५ ॥

भावार्थ—वि०हकाळ व्यतित तथा वाढ प-हेलो जे जीव मुक्तिमां जाय ते प्रथम समयना सिद्धनी वर्गणा एकज छे. तेमज वीजे वीजे यावत् संख्याता असंख्याता अनंता समय सुधी जे जीव मुक्तिमां जाय ते अग्रथम समयना सिद्धनी वर्गणा एकज छे.

अर्थ—ए० एक प० परमाणु पो० पुद्गळनी व० वर्गणा ए० एम जा० यावत् ए० एक अ० अनंत प० प्रदेशिक ख० खन्धनी व० वर्गणा.

एगा परमाणुपोग्गलाणं वर्गणा ।
एवं जाव एगा अणन्तपएसियाणं खन्धाणं वर्गणा ॥ ३६ ॥

भावार्थ—हवे द्रव्यथी पुद्गळ कहे छे जे शस्त्रथी छेदाय नहि, अग्निमां वळे नहि, पाणीमां पलळे नहि, चर्म चक्षुनी नजरे आवे नहि, एवा परमाणुं पुद्गळनी वर्गणा एकज छे. वेपरमाणुं भेगा थाय ते द्विप्रदेशी स्वंधनी तेमज वीप्रदेशी, चौप्रदेशी, यावत् संख्यात असंख्यात अनंत प्रदेशी स्वंधनी एकेकीज वर्गणा छे.

अर्थ—ए० एक ए० एक प० प्रदेशी गा० अवगाही रहा पो० ते पुद्गळनी व० वर्गणा जा० यावत् ए० एक अ० असंख्याता क्षेत्र प० प्रदेश गा० आश्री रहा ते पो० पुद्गळनी एक व० वर्गणा.

एगा एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वर्गणा जाव एगा असङ्खेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वर्गणा ॥ ३७ ॥

भावार्थ—हवे क्षेत्र आश्री पुद्गळ कहे छे. जे पुद्गळ एक प्रदेश जग्या रोक्री रहेल एवा पुद्गळनी वर्गणा एकज छे. एमज वे त्रण यावत् असंख्यात पुद्गळ जग्या रोक्री रहेल एवा पुद्गळनी वर्गणा एकेकीज छे. चौद राजलोक क्षेत्रना असंख्यात प्रदेश छे तेथी अनंतप्रदेश रोक्री रहेल पुद्गळनी वर्गणा होय नहीं.

अर्थ—ए० एक ए० एक स० समयनी द्वि० स्थिति छे, ते पो० पुद्गळनी व० वर्गणा जा० यावत् अ० असंख्यात समयनी द्वि० स्थितिना पो० पुद्गळनी व० वर्गणा.

एगा एगसमयद्विइयाणं पोग्गलाणं वर्गणा जाव असङ्खेज्जसमयद्विइयाणं पोग्गलाणं वर्गणा ॥ ३८ ॥

भावार्थ—हवे काळथी पुद्गळ कहे छे. परमाणुंपणे तथा क्षेत्रना एक प्रदेश आश्रीतपणे एक समयनी स्थितिवाळा पुद्गळनी वर्गणा एकज छे. एमज वे, त्रण यावत् असंख्याता समयनी स्थितिवाळा पुद्गळनी वर्गणा एकेकीज छे.

अर्थ—ए० एक ए० एक गु० गुणकाला पुद्गळनी व० वर्गणा जा० यावत् ए० एक अ० असंख्यात गुणकाला पुद्गळ व० वर्गणा

एगा एगगुणकालगाणं वर्गणा जाव एगा असङ्खेज्जगुणकालगाणं वर्गणा ॥ ३९ ॥

भावार्थ—हवे भावथी पुद्गळ कहे छे, जेव

पाणीतुं वासण भरेल होय तेमांही काळा रंगतुं एक टीपुं नाखीये ते अल्पथी काळाश होवाथी जणाय नही, पण अंदर काळोरंग छे, एवां एक गुण काळा पुद्गळनी वर्गणा एकज छे, एमज वे गुण, त्रीगुण यावत असं-
ख्यात गुण काळा पुद्गळनी वर्गणा एकजछे.

अर्थ-ए० एक अ० अनंतगुणकाला पुद्गळनी व० वर्गणा ए० एम व० वर्ण ग० गंधर० रस फा० फरस ए आटेनी एकेकी वर्गणा भा० जाणवी० जा० यावत ए० एक अ० अनंत गुण लु० लुखा पो० पुद्गळनी व० वर्गणा.

एगा अणन्तगुणकालगाणं वर्गणा ।
एवं वण्णगन्धरसफासा भाणियव्वा
जाव एगा अणन्तगुणलुक्खाणं पोग्ग-
लाणं वर्गणा ॥ ४० ॥

भावार्थ-एक अनंतगुण काळां पुद्गळनी वर्गणा एकेकीज छे. एमज एज रीते, पीळां, धोळां, रातां, लीलां पुद्गळ, मुगंधी, दुर्गंधी ए वे गंधना पुद्गळ खाटो १ मीठो २ तीखो ३ कडयो ४ कसायलो (हरम्यो) ५ ए पांचे रसना पुद्गळ, हलको १ भारे २ टा-
हो ३ उष्ण ४ लुखो ५ चोपडयो ६ खर-
खरो ७ मुंहाळो ८ ए आठे स्पर्शना पुद्गळ ए सर्वे पुद्गळनी काळां पुद्गळनी पेरे एके-
कीज वर्गणा छे.

अर्थ-ए० एक ज० जधन्य प० प्रदेशिक स्व० खन्धनी व० वर्गणा.

एगा जहन्नपएसियाणं खन्धाणं व-
र्गणा ॥ ४१ ॥

भावार्थ-जेहमां परमाणुंआ थोडा होय ए-
वां वे प्रदेशी स्वंधादीक जधन्य प्रदेशनी वर्-
गणा एकज छे.

ए० एक उ० उतकष्ट प० प्रदेशिक ते अ-
नंता परमाणुआनो स्व० खंध तेहनी व० वर्-
गणा.

एगा उकोसपएसियाणं खन्धाणं व-
र्गणा ॥ ४२ ॥

भावार्थ-जेहमां अनंता परमाणुंआ प्रदेश
होय ते उत्कृष्ट प्रदेश स्वंधनी वर्गणा एकजछे.

अर्थ-ए० एक ज० मध्यम प० प्रदेशिक
स्व० खन्धनी व० वर्गणा.

एगा जहन्नकोसपएसियाणं खन्धा-
णं वर्गणा ॥ ४३ ॥

भावार्थ-मध्यम प्रदेश स्वंधनी वर्गणा ए-
कज छे.

अर्थ-ए० एम ज० जधन्य उ० अवगा-
हनाना उ० उत्कृष्टी अवगाहनाना अ० मध्य-
म प्रदेशावगाढ ज० जधन्य एक समय टि०
स्थितिना पंधनी एक वर्गणा उ० उत्कृष्ट
असंप्यातासमय टि० स्थितिना खंधनी अ०
मध्यम टि० स्थितिना प्रदेशनी वर्गणा ज०
जधन्य गु० गुण का० कालापरमाणुना उ०
उत्कृष्ट गुणकाला पुद्गळनी अ० मध्यम
गुणकाला प्रदेशनी एक वर्गणा ए० एम व०
वर्ण गं० गंधर० रस फा० फरसनी एकेकी व०
वर्गणा भा० जाणवी जा० यावत ए० एक
अ० मध्यम गु० गुण लु० लुखा पो० पुद्गळ-
नी व० वर्गणा.

एवं जहन्नोगाहणगाणं उकोसोगाह-
णगाणं अजहन्नकोसोगाहणगाणं जह-
न्नद्विइयाणं उकोसद्विइयाणं अजहन्नको-
सद्विइयाणं जहन्नगुणकालगाणं उकोम-
गुणकालगाणं अजहन्नकोमगुणकाल-

गणं। एवं वण्णगन्धरसफासाणं वग्गणा
भाणियव्वा जाव एगा अजहन्नुक्कोसगु-
णलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा ॥४४॥

भावार्थ—एम जधन्य अवगाहना (थो-
हामां थोडा प्रदेश रोकरी रहेल) ना स्वंधनी
? मध्यम अवगाहना स्वंधनी २ उत्कृष्ट अ-
वगाहनाना स्वंधनी ३ वर्गणा एकेकीज छे
ए क्षेत्रथी कहुं. काळथीजधन्य एक समय-
स्थितिनां स्वंधनी वर्गणा एकज छे. एम
मध्यम स्थितिना स्वंधनी २ उत्कृष्ट स्थिति-
ना स्वंधनी वर्गणा एकेकीज छे. एमजध-
न्य एक गुण काळा प्रदेश (पुदगळ) परमा-
णुआनी १ मध्यम गुण काळा प्रदेशनी. २
उत्कृष्ट अनंत गुण काळा प्रदेशनी वर्गणा ए-
केकीज छे. एम शेष चार वर्णनी, वे गंधनी,
पांच रसनी, आठ स्पर्शनी, ए सर्वेनी काळा-
नी परेजधन्य, मध्यम, उत्कृष्टनी वर्गणा एके
कीज छे.

अर्थ—ए० एक ज० जंबूद्वीप नामे द्वीप स०
सर्व दी० द्वीप स० समुद्रने जा० यावत मध्य
भागे अ० अर्द्ध अंगुल च० वली कि० कांडक
वि० विशेषाधिक प० परिधि एहवो एकज छे.

एगे जम्बुद्वीवे सव्वदीवसमुद्दाणं
जाव अद्धङ्गलं च किंचिविसेसाहिं-
परिकखेवेणं ॥

भावार्थ—जे सर्व द्वीपथी नानो जंबूद्वीपे
करीने सहित तेलना पुढलाने आकारे तथा
पुन्यमना चंद्रमाने आकारे गोळ, एक लाख
जोजननो लांबो ने पहोळो, जेहनी त्रणलाख
सोळ हजार वसने सतावीस जोजन, त्रण
गात्र, एकतोने अठावीस धनुष्य, साडानेर
आंगुल, एक जव, एक लु, एक लांब, छ-

वाळाग्र झाजेरी परिधी छे, एवो सर्व द्वीप
समुद्रने मध्यभागे जंबूद्वीप नामे द्वीप एकज
छे. (वीजा जंबूद्वीप तो घणाय छे पण आ-
टला प्रमाणवाळो सर्वेने मध्यभागे तो आ
एकज जंबूद्वीप छे वीजो नथी.)

अर्थ—ए० एक स० श्रवण भ० भगवंत
म० महावीर इ० आ ओ० अवसर्पिणीकाले
च० रूपभादिक चोवीस ति० तिर्थकरमांही
च० छेहला ति० तिर्थकर सि० कृतार्थ थया
बु० केवली मु० कर्मथी मुक्काणा स० सर्व दु०
दुःखथकी प० रहीत थया एकलाज मोक्ष
गया.

एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे
ओसर्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं
चरिमित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते सव्वदु-
क्खप्पहीणे ॥

भावार्थ—आ अवसर्पिणी काळमां ऋषभा-
दिक तेवीस तिर्थकर निर्वाण पधार्या वाद
चौथा आराना त्रण वर्ष अने साडाआठ मास
वाकी रखा ल्यारेछेछा चोवीसमा तिर्थकर
श्रमणभगवंत श्री महावीरदेव तत्वज्ञान पामी
कर्मथी मुक्त थइ कर्मरूप दावानळ ओळवी
शीतलीभुत थइ, सर्व दुःखथी रहित थइ ए-
कलाज सिद्ध थया (तेविस तिर्थकरनीसाथे
वीजा घणाय जीवो मुक्ति गया छे पण महा-
वीरदेवनी साथे वीजुं कोइ मुक्ति गयेळ
नथी.)

अर्थ—अ० अनुत्तर वेमानना दे० देवतानी
काया ए० एक र० हायनी उ० उर्ध्व उ०
उंचपणे प० कही.

अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं एगा र-
यणी उइ उच्चतेणं पन्नत्ता ॥

भावार्थ—पांच अनुत्तरविमान ते विजय १
वैजयंत २ जयंत ३ अपराजीत ४ ए चार
विमानना देवतानी काया एक हाथनीज उं-
ची छे अने पांचमा स्वार्थसिद्ध विमानना दे-
वतानी मुंडा हाथनी काया छे.

अर्थ—अ० आद्रा न० नक्षत्रनो ए० एक
तारो प० कळो. १ चि० चित्रा न० नक्षत्रनो
ए० एक तारो प० कळो. २ सा० सांति न०
नक्षत्रनो ए० एकतारो प० कळो. ३

अहानक्वत्ते एगतारे पन्नत्ते ॥ १ ॥

चित्तानक्वत्ते एगतारे पन्नत्ते ॥ २ ॥

साइनक्वत्ते एगतारे पन्नत्ते ॥ ३ ॥

भावार्थ—आर्द्रा १ चित्रा २ स्वाती ३ ए
त्रणे नक्षत्रनो अकेकोज तारो छे.

अर्थ—ए० एक प० प्रदेश आश्री गा०
रक्षा ते परमाणु पो० पुद्गल अ० अनंता प०
कळा ए० एम ए० एक स० समयनी द्वि०
स्थितिना पुद्गल ए० एक गु० गुणकाला
पो० पुद्गल अ० अनंता प० कळा छे. जा०

यावत ए० एक गुण लु० लुपा पो० पुद्गल
अ० अनंता प० कळा तिर्यकरे.

एगपएसोगाद्वा पोगगला अणन्ता
पन्नत्ता । एवं एगसमयद्विड्यार् एग-
गुणकालगा पोगगला अणन्ता पण्ण-
त्ता जाव एगगुणलुक्खा पोगगला अ-
णन्ता पण्णत्ता ॥

भावार्थ—एक क्षेत्र प्रदेशे आश्रीत रहेलां
परमाणुरूप स्कंधरूप पुद्गल अनंता छे. एम
एक समयनी स्थितीनां पुद्गल, एक गुण का-
ळां पुद्गल भगवंते अनंता कहेल छे. एम
यावत् शेष चारे वर्णनां, वे गंधनां, पांच र-
सनां, आठ स्पर्शनां एक समयनी स्थितीना
पुद्गल अनंतां भगवंते कहेल छे.

ए० एक द्वा० ठाणुं नामे अध्ययन स०
संपूर्ण थयुं.

॥ एगद्विषणं समत्तं ॥

(इतिश्री ठाणांगमूत्रना प्रथम ठाणांनो
भावार्थ संपूर्ण थयो.) १.

॥ दुद्विषणं ॥

[दुद्विषणस्य प्रथमो उद्देशो ।]

अर्थ—ज० जे पदार्थ अ० छे. ण० विषे
लो० लोकने तं० ते स० सर्व दु० वे प्रकारे
छे तं० ते वे प्रकार ज० फहे छे.

जदत्थि णं लोगे तं सुखं दुपडो-
यारं । तं जहा ॥ ? ॥

भावार्थ—सृष्टमार्त्तनामी पोताना जंयू ना-

मना शिष्यने कहेता हवा के हे जंयू ? आ
लोकने विषे सर्व पदार्थ वे प्रकारे छे ते कहुं छुं.

अर्थ—जी० जीव चेतना लक्षण चे० निश्चे
अ० अजीव चेतना रहित चे० निश्चे.

जीवा चैव अजीवा चैव ॥ २ ॥

भावार्थ—चेतन्य लक्षण रूप जीव अने चै-
तन्य लक्षण रहित अजीव.

अर्थ-त० त्रस वेइन्द्री प्रमुप चे० निश्चे
था० थावर पृथ्वी प्रमुप चे० निश्चे.

तसा चेव थावरा चेव ॥ १ ॥

भावार्थ-हरता फरता वेइन्द्रियादीकत्र
सजीव १ स्थीर रहे ते पृथ्वी १ पाणी २
अग्नी ३ वायु ४ वनस्पति. ५ ए पांच स्था-
वर जीव. २ एवा वे प्रकारना जीव छे.

अर्थ-स० योनि सहित संसारी जीव चे०
निश्चे अ० सिद्धना जीव चे० निश्चे.

सजोणिया चेव अजोणिया चेव ॥ २ ॥

भावार्थ-एक योनी सहीत संसारी चौ-
रासीलाख जीवा जोनीना जीव १ बीजा
योनीरहीत सिद्धना जीव. २ एवा वे प्रकारे
जीव छे.

अर्थ-सा० आऊपा सहित चे० निश्चे
अ० सिद्ध आऊपा रहित चे० निश्चे.

साउया चेव अणाउया चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ-एक आयुष्य सहीत संसारी
जीव. १ बीजा आयुष्य रहीत सिद्धना जीव
२ एवा वे प्रकारे जीव छे.

अर्थ-स० इंद्री सहित संसारी चे० निश्चे
अ० अनेंद्री कहेतां सिद्ध चे० निश्चे.

सइन्दिया चेव अणिन्दिया चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ-एक इंद्रियो सहीत संसारी जीव
१ बीजा इंद्रियो रहीत सिद्धना जीव २ एवा
वे प्रकारे जीव छे.

अर्थ-स० वेद सहित जीव चे० निश्चे अ०
वेद रहित सिद्ध चे० निश्चे.

सेवेयगा चेव अवेयगा चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ-एक स्त्री, पुरुष, नपुंसक ए त्रण
वेद सहीत संसारी जीव १ बीजा वेद रहीत
सिद्धना जीव २ एवा वे प्रकारे जीव छे.

अर्थ-स० शरीर सहित संसारी जीव चे०
निश्चे अ० अरूपी सिद्ध चे० निश्चे.

सरूवी चेव अरूवी चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ-एक शरीरादिके करी रूपी सं-
सारी जीव. १ बीजा शरीरादिके रूप रहीत
सिद्धना जीव. २ एवा वे प्रकारे जीव छे.

अर्थ-स० पुद्गल सहित संसारी चे०
निश्चे अ० अपुद्गली सिद्ध चे० निश्चे.

सपोग्गला^१ चेव अपोग्गला चेव ॥ ७ ॥

भावार्थ-एक कर्मादिक पुद्गल सहीत
संसारी जीव. १ बीजा कर्मादीक पुद्गल रहीत
सिद्धना जीव २ एवा वे प्रकारे जीव छे.

अर्थ-सं० भवतुं करवुं छे ते जीव चे०
निश्चे अ० नथी भव करवा ते सिद्ध चे० निश्चे.

संसारसमावन्नगा चेव असंसारसमा-
वन्नगा चेव ॥ ८ ॥

भावार्थ-एक संसारे आश्रीत् भवभ्रमण
रूप संसारी जीव. १ बीजा भवभ्रमण रहीत
असंसारी सिद्धना जीव २ ए वे प्रकारे छे.

अर्थ-सा० सास्वतां सिद्ध चे० निश्चे अ०
संसारी चे० निश्चे.

सासया चेव असासया चेव ॥ ९ ॥

भावार्थ-एक जन्म मर्ण रहीत सास्वता
सिद्धना जीव. १ बीजा जन्म मर्ण सहीत
असास्वता संसारी जीव ए वे प्रकारे छे.

अर्थ-आ० आकाशस्तिकाय चे० निश्चे
नो० धर्मास्तिकायप्रमुप पाच चे० निश्चे.

आगासे चेव नोआगामे चेव ॥ १० ॥

ए प्रमाणे जीवना भेद कथा, ह्ये अजी-
वना भेद कहे छे.

भावार्थ-धर्मास्तिकाय. १ अधर्मास्तिकाय.

२ पुद्गळास्तिकाय. ३ जीवास्तिकाय. ४ काळ. ५ ए पांच जेहने विषे वीलकुल नथी ते आकास्तिकाय. १ अने जेहने विषे धर्मास्तिकाय प्रमुख पांच छे तेनो-आकास्तिकाय, एवा वे प्रकारे अजीव छे.

अर्थ-ध० चालता आधार आपे तथा विरतिरूप धर्म चे० निश्चे अ० स्थिर रापे ते अथवा पाप चे० निश्चे.

धम्मे चेव अधम्मे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ-पाणीमां जग्या नहीं छतां म-च्छने जेम हरवा फरवानी मदद मळी शके छे तेज प्रमाणे आ चौदराज लोक जीव अने अजीवे करि संपूर्ण भरेला छे. कांइ पण जग्या खाली नथी तेनी अंदर जीव अजीवने हरवा फरवा वास्ते मदद करे छे एवा प्रकारनो आ लोकमां एक पदार्थ छे तेनुं नाम धर्मास्तिकाय १ अथवा विरतीरूप ते व्रत पचखाणरूप धर्म. १ सर्व वस्तुने स्थीर राखवा मदद करे तेवो आ लोकमां एक पदार्थ छे ते अधर्मास्तिकाय. २ अथवा पापने अधर्म०२ एवा वे भेद छे.

अर्थ-व० कर्मनो वंध चे० निश्चे मां० कर्मनो छोडवो चे० निश्चे

बन्धे चेव मोक्षे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ-जीवना असंख्यात प्रदेशे कर्म पुद्गळना संचयनुं मजबुत थवुं ते वंध १ अने ते कर्म पुद्गळनुं आत्म प्रदेशथी मुक्त थवुं ते मोक्ष. २ ए वे भेद छे.

अर्थ-पु० दानादिक चे० निश्चे पा० द्वि-मादिक चे० निश्चे.

पुण्णे चेव पापे चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ-दानादिक शुभ कृत्ये करी मुक्तरूप शुभ कर्मनां पुद्गळोनो संचय ते पुण्य.

१ जीव हिंसादीक अशुभ कृत्ये करी दुःस्वरूप अशुभ कर्मनां पुद्गळोनो संचय ते पाप. २ ए वे भेद छे.

अर्थ-आ० कर्मनुं आवयुं चे० निश्चे सं० कर्मनो रंघवो चे० निश्चे.

आमवे चेव संवरे चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ-वीस तथा वेंताळीस प्रकारे कर्मनुं आवयुं ते आश्रव. १ वीस तथा सतावन प्रकारे करी आवतां कर्मने रोकवुं ते संवर. २ ए वे भेद छे.

अर्थ-वे० कर्मनी पीडा चे० निश्चे नि० तपे करि कर्मनुं सडवुं ते चे० निश्चे.

वेयणा चेव निज्जरा चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ-ज्वरादिक कर्मनी पीडानुं भोगवयुं ते वेदना १ वार प्रकारनी तपश्चर्याएकरी आत्माना प्रदेशथी थोडां थोडां कर्मनुं दूर थवुं ते निर्जरा. २ ए वे भेद छे.

अर्थ-दा० वे कि० क्रिया प० कहीछे तं० ते ज० कहेछे जी० जीवनो व्यापार छे जिहाते जीव क्रिया चे० निश्चे अ० अजीव क्रिया चे० निश्चे.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ । तं जहा । जीवकिरिया चेव अजीवकिरिया चेव ॥ १ ॥

भावार्थ-जीवां जीवनो व्यापार छे ते जीवकीया १ कर्म पुद्गळनुं परगमयुं ते अजीवकीया. २ एवा वे प्रकारनी क्रिया श्री भगवंते कही छे.

अर्थ-जी० जीवनी क्रिया दु० वे प्रकारे प० कही तं० तेज कहे छे स० साचा तत्वनुं सदायुं ते चे० निश्चे मि० पोटानत्वनुं सदाह-पुं ते चे० निश्चे.

जीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता । तं
जहा । सम्मत्तकिरिया चेव मिच्छत्त-
किरिया चेव ॥ २ ॥

भावार्थ—जीवक्रिया (जीवनो व्यापार ते)
वे प्रकारे श्री भगवंते कहेली छे ते कहे छे
साचा तत्वतुं श्रद्धतुं ते सम्यक्त्वक्रिया ? खो
टा तत्वतुं श्रद्धतुं ते मिथ्यात्वक्रिया. २ एवी वे
प्रकारनी जीवक्रिया जाणवी.

अर्थ—अ० अजीव क्रिया दु० वे प्रकारे पं०
कही तं० तेज० कहे छे इ० मार्गे चालवानी
क्रिया चे० निश्चे सं० संजलना कपायनी
क्रिया चे० निश्चे.

अजीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता । तं
जहा । इरियावहिया चेव संपराइगा
चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ—अजीवक्रिया (अजीवनो व्या-
पार) ते वे प्रकारे श्रीभगवंते कही छे ते कहे
छे, मार्गे चालतानी क्रिया ते इर्या पथीकी
क्रिया कहीए (चालतां कर्म वंधाय ते कर्म
अजीव छे अने चालतुं ते जीवनो व्यापारछे
तो पण इहां अजीवतुं प्रधान्य (श्रेष्ठ) पणुं
कणुं ते माटे ए अजीवक्रिया एम सवळे जा-
णवुं) ? संजलनी कपायथी उपनी क्रिया
अजीव कर्म पुद्गळनी रासी ते संपराइ क्रि-
या २ एवी वे प्रकारनी क्रिया जाणवी.

अर्थ—दो० वे क्रिया प० कही तं० तेज०
कहे छे का० कायाना व्यापारथी लागे ते क्रि-
चे० निश्चे आ० फल प्रमुपथी पापलागे ते क्रि-
या चे० निश्चे.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ । तं जहा ।
काइया चेव आहिगरणिया चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारनी क्रिया अजीव
छे पण वारमा गुण ठाणा सुधी जीवने ला-
गे छे एम श्री भगवंते कहेल ते कहे छे, का-
याना व्यापारथी लागे ते कायाकी क्रिया ?
धातु काष्ठ पथरादिकनां शस्त्रोथी पापलागे
ते अधीकरणनी क्रिया २ ए वे भेदछे.

अर्थ—का. कायानी कि० क्रिया दु० वे
प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहुंछुं अ० पापथी
निवर्त्या नथी ते चे० निश्चे दु० माटे परिणामे
काया प्रवर्तावेते चे० निश्चे.

काइया किरिया दुविहा पण्णत्ता । तं
जहा । अणुवरयकायकिरिया चेव दु-
पुत्तकायकिरिया चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ—काइया क्रियाना वे भेद श्री भ-
गवंते कहेलछे ते कहे छे. आ काया गया
जन्ममां घणा काळथी वोसीराव्या वीना
आव्यो छे ते कायानां शस्त्रादीक वनवे जे जे
हिंसा धाय छे तेनी क्रिया लागे छे ते ? आ
काया हजु मिथ्यात्व अवतादीक पापथी
निवर्तावीनथी तेथी ते काइया क्रिया मि-
श्र्यात्वीने तथा समकीतद्रष्टीने पण लागे तथा
पांच इंद्रियोने आश्रीने इष्ट अनिष्ट वस्तुथी जे
मुख दुःख उपजे अथवा मनना माठा संकल्प
करवे प्रमत्त (ममादी) साधुने पण लागे छे.
घणा काळथी गया जन्मनी कायाओ वोसी
राव्या वीना आव्यो छे ते कायाना शस्त्रादीक
वनवे जे जे हिंसा धाय छे तेनी क्रिया लागे
छे. २ ए वे भेद काइया क्रियाना जाणवा.

अर्थ—आ० अधिकरणी कि० क्रिया दु० वेम-
कारे पं० कही तं० तेज० कहुंछुं सं० संयोजनाधि-
करणनी क्रिया पदगने सुटिण संजोगना चे०
निश्चे नि० वंटी प्रमुग्व सजकरी राखे चे० निश्चे.

आहिगरणिया किरिया दुविहा पण्ण-

त्ता तं जहा । संजोयणाहिगरणिया चैव
निव्वत्तणाहिगरणिया चैव ॥ ६ ॥

भावार्थ—अधीकरणनी क्रियाना वे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. खडगने मुंठ जो डवी, पाळीने हाथो जोडवो इत्यादीक शस्त्रो नो संयोग भेळववो तेनी क्रिया लागे ? खडगा दीक शस्त्रो नवां कराववां अथवा जुनां घंटी, मुसल (सावेंलु) हळादीक फरी सज कराववां तेनी क्रिया लागे छे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज० कहे छे पा० मिश्र अदेखाइ करे ते चे० निश्चे पा० परने दुःख उपजे ते चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
पाओसिया चैव पारियावणिया चैव । ७ ।

भावार्थ—हवे अजीव पुद्गळनी वे प्रकारे क्रिया भगवंते कहेल छे ते कहे छे, कोइना उपर द्वेष करे तेनी क्रिया लागे ? कोइने ताडनाडीके करी परिताप उपजावे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—पा० प्रद्वेष कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं. जी० कोइ जीवनो द्वेष करे ते चे० निश्चे अ० भीति थांभला प्रमुखे अथडाय ने ते उपर रीस चढावे ते चे० निश्चे.

पाओसिया किरिया दुविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । जीवपाओसिया चैव अजीवपाओसिया चैव ॥ ८ ॥

भावार्थ—हवे कोइना उपर द्वेष करे ते पाओसिया क्रियाना वे भेद कहेल ते कहे छे कोइ जीव उपर द्वेष करे तो तेनी क्रिया लागे ? भीति थांभले अथवा पापाण प्रमुखे अ

थडाय त्यारे ते अजीव उपर द्वेष करे तेनी क्रिया लागे ए वे भेद छे.

अर्थ—पा० परने दुःख उपजे ते कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते कहुं छुं स० पोताने ह० हाथे पा० परने तथा पोताना शरीरने दुःखदीए ते चे० निश्चे प० परने ह० हाथे पोताना परना पा० प्राण हणे ते चे० निश्चे.

पारियावणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । सहत्थपारियावणिया चैव परहत्थपारियावणिया चैव ॥ ९ ॥

भावार्थ—परने परिताप उपजावे ते पारितावणीया क्रियाना वे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे पोताने हाथे पोते तथा परने परिताप करे तेनी क्रियालागे ? परने हाथे पोताने तथा परने परिताप करे तेनी क्रियालागे २ ए वे भेद छे,

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं पा० जीवहिंसायी पाप कर्म बंधाय ते चे० निश्चे अ० आविरतियी कर्म बंधाय ते चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
पाणाइवायकिरिया चैव अपचक्षणाणकिरिया चैव ॥ १० ॥

भावार्थ—हवे वे क्रिया श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे प्राणानिपातनी क्रिया ? व्रत पचक्षणाण नर्हा करवाथी अमन्याख्याननी क्रियालागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—पा० प्राणानिपातनी क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं स० पोताने ह० हाथे पा० प्राणी दणने चे० निश्चे प० परने ह० हाथे पा० पोतानापरना प्राणदणे ते चे० निश्चे.

पाणाइवायकिरिया दुविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । सहस्यपाणाइवायकिरिया चेव
परहस्यपाणाइवायकिरिया चेव ॥ ११ ॥

भावार्थ—प्राणातिपातनी क्रियाना वे भेद,
पोताना हाथे पोताना प्राणने तथा क्रोधे करी
परना प्राणने हणे तेनी क्रिया लागे १ तेम-
ज परना हाथे पोताना तथा परना प्राणने ह-
णे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० अपत्याखानकी क्रिया दु० वे प्र-
कारे पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं जीव० सचित
ना अ० पचखाण विना कि० कर्म बांधे ते
चे० निश्चे अ० अजीव मदिरादिकना अ० पच-
खाण विना कि० कर्म बांधे ते चे० निश्चे

अपचखाणकिरिया दुविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । जीवापचखाणकिरिया चेव
अजीवापचखाणकिरिया चेव ॥ १२ ॥

भावार्थ—अपत्याख्याननी क्रियाना वे भेद
कहेल छे ते कहे छे, जीवनां पचखाण कर्या
नथी तेनी क्रिया लागे १ अजीवनां पचखा
ण कर्या नथी तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० ते
ज० कहुं छुं आ० आरंभकी चे० निश्चे पा०
परिग्रहीकी चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
आरम्भिया चेव पारिग्गहिया चेव ॥ १३ ॥

भावार्थ—हवे वे क्रिया श्रीभगवते कहेलछे
ते कहे छे एक आरंभनी १ बीजी परिग्रहनी
२ ए वे भेद छे.

अर्थ—आ० आरंभकी कि० क्रिया दु० वे
प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहुंछुं जी० स
चित्तना आरंभकी कर्म बांधाय ते चे० वळी अ०
अचिच्च वणवा प्रसूत आरंभनी क्रिया चे० वळी.

आरम्भिया किरिया दुविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । जीवआरम्भिया चेव अजीव-
आरम्भिया चेव ॥ १४ ॥

भावार्थ—आरंभीया क्रियाना वे भेद कहे-
ल छे ते कहे छे, जीवनो आरंभ करे तेनी
क्रिया लागे १ जीव रहीत कलेवरने अग्नी-
संस्कार अथवा वस्त्रादी वणवानो आरंभ करे
तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—ए० एम पा० परिग्रहनी वे जीव
अजीव वि० वळी.

एवं पारिग्गहिया वि ॥ १५ ॥

भावार्थ—एमज परिग्रहनी क्रियाना वे भेद श्री
भगवते कहेलछे ते कहेछे, मनुष्यादिक जीव-
नो परिग्रह मेळवे तो क्रिया लागे १ सुवर्ण तथा
ग्रहादीक अजीवनो परिग्रह मेळवे तो तेनी क्रि-
यालागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० ते
ज० कहुं छुं मा० कपट करवाथी लागे ते
चे० वळी मि० मिथ्यात्व करणीथी कर्म बां-
धाय ते चे० वळी

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
मायावत्तिया चेव मिच्छादंसणवत्तिया
चेव ॥ १६ ॥

भावार्थ—वे क्रिया श्रीभगवते कहेलछे ते कहे
छे एक कपटथी क्रिया लागे ते १ बीजी मिथ्या-
त्व करणी करवे क्रिया लागे २ ए वे भेदछे.

अर्थ—मा० मायाकपटनी कि० क्रिया दु०
वे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहुं छुं आ०
अभ्यंतर बांकां वाग रुद्धा परिणाम देखाटे ते
चे० वळी प० परतेवंचे कुडा लेखादिने ते
चे० वळी.

मायावत्तिया किरिया दुविहा पन्न-

त्ता तं जहा । संजोयणाहिगरणिया चैव
निव्वत्तणाहिगरणिया चैव ॥ ६ ॥

भावार्थ—अधीकरणनी क्रियाना वे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. खडगने मुंठ जो डवी, पाळीने हाथो जोडवो इत्यादीक शस्त्रोनो संयोग मेळववो तेनी क्रिया लागे ? खडगा दीक शस्त्रो नवां कराववां अथवा जुनां घंटी, मुसल (सांवेळु) हळ्यादीक फरी सज कराववां तेनी क्रिया लागे छे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज० कहे छे पा० मिश्र अदेखाइ करे ते चे० निश्चे पा० परने दुःख उपजे ते चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
पाओसिया चैव पारियावणिया चैव । ७ ।

भावार्थ—हवे अजीव पुद्गळनी वे प्रकारे क्रिया भगवंते कहेल छे ते कहे छे, कोडना उपर द्वेष करे तेनी क्रिया लागे ? कोडने ताडनादीके करी परिताप उपजावे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—पा० प्रद्वेष कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं. जी० कोड जीवनो द्वेष करे ते चे० निश्चे अ० भीत थांभला प्रमुखे अथडाय ने ते उपर रीस चढावे ते चे० निश्चे.

पाओसिया किरिया दुविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । जीवपाओसिया चैव अजीवपाओसिया चैव ॥ ८ ॥

भावार्थ—हवे कोडना उपर द्वेष करे ते पाओसिया क्रियाना वे भेद कहेल ते कहे छे कोड जीव उपर द्वेष करे तो तेनी क्रिया लागे ? भीति थांभले अथवा पापण प्रमुखे अ

थडाय त्यारे ते अजीव उपर द्वेष करे तेनी क्रिया लागे ए वे भेद छे.

अर्थ—पा० परने दुःख उपजे ते कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते कहुं छुं स० पोताने ह० हाथे पा० परने तथा पोताना शरीरने दुःखदीए ते चे० निश्चे प० परने ह० हाथे पोताना परना पा० प्राण हणे ते चे० निश्चे.

पारियावणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । सहत्थपारियावणिया चैव परहत्थपारियावणिया चैव ॥ ९ ॥

भावार्थ—परने परिताप उपजावे ते पारितावणीया क्रियाना वे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे पोताने हाथे पोते तथा परने परिताप करे तेनी क्रियालागे ? परने हाथे पोताने तथा परने परिताप करे तेनी क्रियालागे २ ए वे भेद छे,

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज. कहुं छुं पा० जीवहिंसायी पाप कर्म बंधाय ते चे० निश्चे अ० अविगतिथी कर्म बंधाय ते चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
पाणाइवायकिरिया चैव अपन्नत्तणकिरिया चैव ॥ १० ॥

भावार्थ—हवे वे क्रिया श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे प्राणातिपातनी क्रिया ? व्रत पचखाण नहीं करवाथी अमन्याख्याननी क्रियालागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—पा० प्राणातिपातनी क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते ज. कहुं छुं स० पोताने ह० हाथे पा० प्राणा हणते चे० निश्चे प० परने ह० हाथे पा० पोतानापरना प्राणहणे ते चे० निश्चे.

पाणाइवायकिरिया दुविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । सहत्यपाणाइवायकिरिया चेव
परहत्यपाणाइवायकिरिया चेव ॥ ११ ॥

भावार्थ—प्राणातिपातनी क्रियाना वे भेद,
पोताना हाथे पोताना प्राणने तथा क्रोधे करी
परना प्राणने हणे तेनी क्रिया लागे १ तेम-
ज परना हाथे पोतानां तथा परना प्राणने ह-
णे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० अपत्याखानकी क्रिया दु० वे प्र-
कारे पं० कही तं० ते ज० कहंछुं जीव० सचित
ना अ० पचखाण विना कि० कर्म बांधे ते
चे० निश्चे अ० अजीव मदिरादिकना अ० पच-
खाण विना कि० कर्म बांधे ते चे० निश्चे

अपचक्खाणकिरिया दुविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । जीवापचक्खाणकिरिया चेव
अजीवापचक्खाणकिरिया चेव ॥ १२ ॥

भावार्थ—अपत्याख्याननी क्रियाना वे भेद
कहेल छे ते कहे छे, जीवनां पचखाण कर्या
नथी तेनी क्रिया लागे १ अजीवनां पचखा
ण कर्या नथी तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० ते
ज० कहं छुं आ० आरंभकी चे० निश्चे पा०
परिग्रहीकी चे० निश्चे.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
आरम्भिया चेव पारिग्गहिया चेव ॥ १३ ॥

भावार्थ—हवे वे क्रिया श्रीभगवंते कहेलछे
ते कहे छे एक आरंभनी १ वीजी परिग्रहनी
२ ए वे भेद छे.

अर्थ—आ० आरंभकी कि० क्रिया दु० वे
प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहंछुं जी० स
चित्तना आरंभयी कर्म बांधाय ते चे० वळी अ०
अचिच वणना प्रमुख आरंभनी क्रिया चे० वळी,

आरम्भिया किरिया दुविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । जीवआरम्भिया चेव अजीव-
आरम्भिया चेव ॥ १४ ॥

भावार्थ—आरंभीया क्रियाना वे भेद कहे-
ल छे ते कहे छे, जीवनाो आरंभ करे तेनी
क्रिया लागे १ जीव रहीत कलेवरने अग्नी-
संस्कार अथवा वखादी वणवानो आरंभ करे
तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—ए० एम पा० परिग्रहनी वे जीव
अजीव वि० वळी.

एवं पारिग्गहिया वि ॥ १५ ॥

भावार्थ—एमज परिग्रहनी क्रियाना वे भेद श्री
भगवंते कहेलछे ते कहेछे, मनुष्यादिक जीव-
नाो परिग्रह मेळवे तो क्रिया लागे १ सुवर्ण तथा
ग्रहादीक अजीवनाो परिग्रह मेळवे तो तेनी क्रि-
यालागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० ते
ज० कहं छुं मा० कपट करवाथी लागे ते
चे० वळी मि० मिथ्यात्व करणीथी कर्म बां-
धाय ते चे० वळी

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
मायावत्तिया चेव मिच्छादंसणवत्तिया
चेव ॥ १६ ॥

भावार्थ—वे क्रिया श्रीभगवंते कहेलछे ते कहे
छे एक कपटथी क्रिया लागे ते १ वीजी मिथ्या-
त्व करणी करणे क्रिया लागे २ ए वे भेदछे.

अर्थ—मा० मायाकपटनी कि० क्रिया दु०
वे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहं छुं आ०
अभ्यंतर बांकां बाण रुढा परिणाम देखाडे ते
चे० वळी प० परनेवंचे रुढा लेखादिके ते
चे० वळी.

मायावत्तिया किरिया दुविहा

त्ता । तं जहा । आयभाववङ्कणया चैव
परभाववङ्कणया चैव ॥ १७ ॥

भावार्थ-मायावतीया ते कपट्यी लागे ते क्रियाना वे भेद कहेल छे ते कहेछे, अंदर पोते वांकां आचरण आचरे अने वाहीर रुडां करी देखाडे तो पोताना आत्माने छेतरवा रूप क्रिया लागे ? पोते खोटा लेखादीके करी परने छेतरे तथा पोते परनी पासे वांकां आचरण आचरावे तो क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ-मि० मिथ्यात्व दर्शन कर्म कि० क्रिया दु० वे प्रकारे प० कही तं० तेज० कहुं छुं उ० जिनवचनथी ओछुं अधिकमाने परूपे ते तथा पोताना शरीर प्रमाणे आत्मा न माने ते चे० वळी तं० जीव न माने पंच भूत मल्याछे एम कहे ते चे० वळी.

मिच्छादंसणवत्तिया किरिया दुविहा
पन्नत्ता । तं जहा । ऊणाइरित्तमिच्छा-
दंसणवत्तिया चैव तवइरित्तमिच्छादं-
सणवत्तिया चैव ॥ १८ ॥

भावार्थ-मिथ्यात्वदर्शनवत्तिया क्रियाना वे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे, जे जी वतुं जेटळुं शरीर होय तेटलो जीव मानवानुं भगवंते कहेल छे, तेम छतां कोइ अंगुठाना पर्व जेवडो जीव माने, कोइ सामळीय धानना कण जेवडो माने, कोइ पांचसे धनुष्ययी पण मोठो माने, एवी रीते न्युनाधीक श्रद्धेने न्युनाधीक परूपे तेनी क्रिया लागे ? केटला-लाफ कहे जे न्युनाधीक आत्मा छेजनई. पृथ्वी ? पाणी ? अग्नी ? वायु ? आकाश ? ए पांच भूत मल्यां छे एयी आ दग्वाफन्नादी सर्व क्रिया थाग छे. ज्यागे पंचभूत दिग्वगट जइ पोतपोताना स्वरूपमां मर्जी जये त्यागे पु-

न्य पाप कांइ भोगवानुं छेज नहीं, ए पंच-भूतथी जुदो छठो आत्मा कोइ नथी इत्यादीक विप्रित श्रद्धेने विप्रितपरूपे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ-दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० तेज० कहुं छुं दि० दृष्टि जोवाथी कर्म वंधाय ते पु० पाप कद्यानुं पुछुं तथा फरसवुं.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
दिट्टिया चैव पुट्टिया चैव ॥ १९ ॥

भावार्थ-हवे वे क्रीया श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे, इंद्रिये जोवाथी क्रिया लागे ? वीजी हाथ प्रमुख स्पर्शवाथी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ-दि० दृष्टिनी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहुं छुं जी० जीवतुं रूपादिक जोतां लागे ते चे० वळी अ० चिन्नामण जोतां पाप वंधाय ते चे० वळी.

दिट्टिया किरिया दुविहा पण्णत्ता ।
तं जहा । जीवदिट्टिया चैव अजीव-
दिट्टिया चैव ॥ २० ॥

भावार्थ-दृष्टिये जोवाथी क्रिया लागे तेना वे भेद कहेल छे ते कहे छे. हाथी, घोडा, स्त्री, पुरुष, भवाइया प्रमुख जीवने जोवाथी तथा पापनुं प्रबन सुलवाथी क्रिया लागे ? चिन्नामण प्रमुख अजीवने जोवाथी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम पु० जीव फरसनाथी अजीव फरसनाथी वि० पण.

एवं पुट्टिया वि ॥ २१ ॥

भावार्थ-एमज पुट्टिया क्रियाना वे भेद कहेल छे ते कहेछे. जीवने स्पर्शवाथी क्रिया लागे ? अजीवने स्पर्शवाथी तथा राग द्वेषे

जीव अजीवतुं प्रश्न पुछे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० तेज० कहंछुं पा० प्राणाति प्रातित्यकी क्रिया वाह्य वस्तु ने आश्रीने चे० वली सा० सर्व प्रकारे लोकना मेलवाथी उपनी ते चे० वली.

दो किरियाओ पणत्ताओ । तं जहा । पाडुचिया चेव सामन्तोवणिवाइया चेव ॥ २२ ॥

भावार्थ—हवे वे क्रिया कहेल छे ते कहेछे, कोइतुं भुंइं वांछे तो क्रिया लागे १ वरतुनो समुदाय मेलववाथी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—पा० प्रातित्यकी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहंछुं जी० जीवने आश्रीने कर्म वंधाय ते चे० वली अ० अजीवथी राग द्वेष उपजे ते चे० वली.

पाडुचिया किरिया दुविहा पणत्ता । तं जहा । जीवपाडुचिया चेव अजीवपाडुचिया चेव ॥ २३ ॥

भावार्थ—हवे परतुं भुंइं वांछे ने क्रियाना वे भेद कहेलछे ते कहेछे. कोइ जीवतुं भुंइं वांछे तथा स्त्रीयादिक जीवने आश्रीने कर्म वंधाय तेनी क्रिया लागे १ अजीवतुं भुंइं वांछे तथा घर मृचर्णादीक अजीव आश्री रागद्वेषथी जे कर्म वंधाय तेनी क्रिया लागे. २ ए वे भेद छे.

अर्थ—ए० एम सा० सापंत उपनीत क्रिया जाणवी जीव अजीव आश्रीने वि० पण

एवं सामन्तोवणिवाइया वि ॥ २४ ॥

भावार्थ—एमज वस्तुनो समुदाय मेलववाथी क्रिया लागे तेना वे भेद कहेल छे ते कहेछे पोताना घोटा, हाथी, रीं, प्रमुख रूपयंत दे-

खीने जेम जेम लोक बखाणे अथवा जोवे तेम तेम तेहनो धणी खुशी थाय अथवा एवा जीवनो समुदाय मेलवे तेनी क्रिया लागे १ तेमज घर प्रमुख नवां रमणीक वनावेल होय तेने जोइ लोक बखाणे त्यारे तेनो धणी खुशी थाय अथवा एवां घराकीक अजीवनो समुदाय मेलवे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० तेज० कही सा० पोताने हाथेथी उपनी ते चे० वली ने० नाखवाथी उपनी ते चे० वली

दो किरियाओ पणत्ताओ । तं जहा । साहत्थिया चेव नेसत्थिया चेव ॥ २५ ॥

भावार्थ—हवे वे क्रिया श्रीभगवते कहेल छे ते कहेछे पोताना हाथेथी पाप करे तेनी क्रिया लागे १ पापाणादीक नाखवाथी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—सा० स्वहस्तकी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० तेज० कहंछुं जी० जीवने पोताने हाथे हणे ते चे० वली अ० अजीव पोताने हाथे खडगादिक करी हणे ते चे० वली.

साहत्थिया किरिया दुविहा पणत्ता । तं जहा । जीवसाहत्थिया चेव अजीवसाहत्थिया चेव ॥ २६ ॥

भावार्थ—पोताना हाथेथी पाप करे ते क्रियाना वे भेद श्री भगवते कहेल छे ते कहेछे, पोताना हाथे झाली जीवे करी जीवने हणे तेनी क्रिया लागे १ खडगादि शस्त्रथी अजीव करी जीवने हणे तेनी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—ए० एम ने० नाखुं पाणी प्रमुख अजीव वाण प्रमुख वि० पण.

एवं नेसथिया वि ॥ २७ ॥

भावार्थ—एमज पापाणादिक नाखवाथी क्रिया लागे तेना पण वे भेद श्री भगवंते कहेल छे कहेछे, राजादीकनी आज्ञाथी फुआरा प्रमुख यंत्रद्वाराए करी पाणी उछालवुं तेम जीवने नाखीदीये तेनी क्रिया लागे १ नाळ प्रमुख मेळवीने धनुष्य वाणतुं नाखवुं, तेम कोइ जीवनी विराधना थाय एवी रीते अजीवने नाखीदीये तेनी क्रिया लागे २ एने सथियाक्रियाना वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे प्रकारे कि० क्रिया प० कही तं० तेज० कहुं छुं आ० स्वामीनी आज्ञाथी कर्म वंध ते चे० वळी वे० विदारतुं छेदवुं तेहथीकर्म वंध ते चे० वळी.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
आणवणिया चेव वेयारणिया चेव
॥ २८-२९ ॥

भावार्थ—हवे वे प्रकारनी क्रिया श्रीभगवंते कहेल छे ते कहे छे. स्वामी (मालीक) नी आज्ञाथी कर्म वंधाय ते आज्ञापनी क्रिया कहीए १ कोइने विदार छेदे तो तेहथी कर्म वंधाय ते विदारणि क्रिया २ ए वे भेद छे.

अर्थ—ज० जेम ने० नेसथिया कही तेम ए पण.

जहेव नेसथिया ॥ ३० ॥

भावार्थ—जेम नेसथिया क्रियाना वे भेद कहेल छे तेमजविदारणि क्रियाना पण वेभेदजाणवा

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया प० कही तं० तेज० कहुं छुं अ० उपयोग विना निदंसपणे अज्ञानपणाथी कर्म वंधाय ते चे० वळी अ० पोताना शरीरनी अपेक्षा विना क्रिया लागे ते चे० वळी,

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा ।
अणाभोगवत्तिया चेव अणवकड्वत्तिया चेव ॥ ३१ ॥

भावार्थ—वळी वीजी वे क्रिया श्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. अज्ञानपणाथी उपयोग विना निदंस (पापनी सुगरहीत) पणे कर्म वंधाय ते अना भोगवत्तिया क्रिया ? पोताना शरीरनी अपेक्षा विना क्रिया लागे ते अणवकांक्षावत्तिया क्रिया २ ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० उपयोग विना अज्ञानपणाथी कर्म वंधाय ते कि० क्रिया दु० वे प्रकारे प० कही तं० तेज० कहे छे अ० उपयोग विना वस्त्रादिकतुं लेवुं ते चे० वळी अ० उपयोग विना पुजवुं तेथी कर्म वंधे ते चे० वळी.

अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा ।
अणाउत्तआयणर्या चेव अणाउत्तपमज्जणया चेव ॥३२॥

भावार्थ—अनाभोगवत्तिया क्रियाना वेप्रकार श्रीभगवंते कहेल छे ते कहे छे उपयोग विना वस्त्रादीक लेवा मुकवाथी १ उपयोग विना पुंजवा प्रमार्जवाथी २ ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० पोताना शरीरनी अपेक्षा विना कि० क्रिया लागे ते दु० वे पं० कथा तं० ते ज० कहुं छुं आ० आत्म शरीरथी पापलागे तेहवां कर्म करेते चे० वळी प० परना शरीरथी अं० पाप करतां क्रियालागे ते चे० वळी

अणवकड्वत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा ।
आयसररअणवकड्वत्तिया चेव परसररअणवकड्वत्तिया चेव ॥ ३३ ॥

भावार्थ—अणवकांक्षावत्तिया क्रियाना वे

भेद श्री भगवन्ते कहेल छे ते कहे छे पोताना शरीर थकी पाप लागे तेहवां कर्म करे ? परना शरीरथी पाप कर्म करतां पाप लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे कि० क्रिया पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं पे० प्रेम स्नेहथी क्रिया चे० बली दो० द्वेषकोपनी क्रिया चे० बली.

दो किरियाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । पेज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव ॥ ३४ ॥

भावार्थ—बली वे प्रकारनी क्रिया श्रीभगवन्ते कहेल छे ते कहेछे. कोइना उपर प्रेम करवाथी क्रिया लागे १ कोइना उपर द्वेष करवाथी क्रिया लागे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—पे० प्रेमनी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं मा० माया कपटनी प्रेम क्रिया चे० बली लो० लोभथी रागधरे ते द्वेषनी क्रिया चे० बली.

पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । मायावत्तिया चेव लोभवत्तिया चेव ॥ ३५ ॥

भावार्थ—प्रेमथी लागे ते क्रियाना वे भेद श्री भगवन्ते कहेल छे ते कहे छे. कपटथी कर्म वंधाय १ लोभथी कर्म वंधाय २ (अर्थात् जे वस्तु उपर मिति थड त्यां कपट लोभ करेज) ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० द्वेष कोपनी कि० क्रिया दु० वे प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं को० क्रोधथी कर्म वंध ने चे० बली मा० मानथी कर्म वंध ने चे० बली.

दोसवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । कोहे चेव माणे चेव ॥ ३६ ॥

भावार्थ—द्वेष करवाथी क्रिया लागे तेहना वे भेद श्री भगवन्ते कहेलछे ते कहेछे क्रोधथी कर्म वंधाय १ मानथी कर्म वंधाय २ (अर्थात् जे वस्तु उपर द्वेष थाय त्यां त्यां क्रोधमान करेज. जेम कोर्णिक राजाए विशालानगरी भांगी ते निरीयावलीकासुत्रथी जाणवुं) ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे प्रकारे ग० गरहणा छे (पापनी निंदा) पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं म० मनेकरी वे० एक ग० पापने निंदे व० वचने करीने वे० एक पापने ग० निंदे.

दुविहा गरहा पणत्ता । तं जहा । मणसा वेगे गरहइ वयसा वेगे गरहइ ॥ १ ॥

भावार्थ—पुर्वोक्त सर्व क्रिया निन्दनीक छे तेथी हवे वे प्रकारे गरहा (निंदा) कहेल छे ते कहेछे, एक करेल पापनो पस्तावो पोताना मनथी करी ते पापने निंदे १ एक लोकने रीझववा फक्त वचनथीज करेल पापने निंदे पण मनथी निंदे नहीं २ ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० अथवा ग० पापनी निंदा दु० वे प्रकारे पं० कही छे तं० ते ज० कहुं छुं टी० जन्म पर्यंत पे० एक अ० कालनां ग० पापनिंदे २० थोडा पे० एक अ० कालनां पाप ग० निंदे.

अहवा गरहा दुविहा पणत्ता । तं जहा । दीहं पेगे अळं गरहइ रहस्सं पेगे अळं गरहइ ॥ २ ॥

भावार्थ—अथवा बली वे प्रकारे निंदा श्री भगवन्ते कहेल छे ते कहेछे. एक प्राणी दीर्घ (लांबा) काल ते जन्म पर्यंत अतुक्रमे करेल पापने निंदे १ एक प्राणी थोडा कालना ते दज पट्टे वर्षना काले पापने निंदे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे प्रकारे प० पचखाण० प० कक्षा तं० तेज० कहुंछुं, म० मनथी शुद्ध वे० एक जीव प० पचखाण करे (समकिति) व० वचनेकरी वे० एकजीव प० पचषे भाव विना ते.

दुविहे पचखाणे पन्नत्ते । तं जहा । मणसा वेगे पचखाइ वयसा वेगे^३ पचखाइ ॥ १ ॥

भावार्थ—हवे वे प्रकारना पचखाण श्रीभगवन्ते कहेलछे ते कहे छे. एक समक्रीतद्रष्टि जीव पोताना खरा मनथी भाव शुद्धिए करी पचखाण करे (इहां द्रव्ये भावे वन्ने प्रकारे पचखाण जाणवा) १ एक मिथ्यात्वद्रष्टि मन विना फक्त वचनथीज पचखाण करे (इहां द्रव्य पचखाण जाणवां) २ ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० वळी प० पचखाण दु० वे प्रकारे प० कक्षा तं० तेज० कहुंछुं दी० जावजीवनां वे० एक अ० कालना प० पचखाण करे २० थोडा वे० एक अ० कालनुं प० पचखाण करे.

अहवा पचखाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । दीहं वेगे अद्धं पचखाइ रहसं वेगे अद्धं पचखाइ ॥ २ ॥

भावार्थ—अथवा वळी वे प्रकारे पचखाण श्री भगवन्ते कहेल छे ते कहे छे. एक प्राणी दीर्घ काळ ते जाव जीव सुधीनुं पचखाणकरे ? एक थोडा काळनुं पचखाण करे २ ए वे भेदछे.

अर्थ—दो० वेडा० प्रकारे सं० सहित अ० साधुने अ० आदिनथी जेहने अ० नथी छेहडो जेहनो दी० वणोकाळ छे जेहने चा० चारगतिना सं० संसार रुप कं० अठवी वी० अति क्रमे साधु तं० तेज० कहुंछुं वि० सम्यकत्व ते ज्ञानेकरी चे० वळी च० चारित्रे करीमोक्ष पामे चे० वळी.

दोहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणाइयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं वीतीवएज्जा । तं जहा । विज्जाए चेव चरणेण चेव ॥

भावार्थ—जेहनी आदी नथी अने अंत पण नथी एवि चार गतीरुप मोटी अटवीने साधु वे प्रकारे करी ओलंघी जाय ते ज्ञाने करी अने चारित्रे करी २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे ठा० थानक अ० ए दुःखदाइ छे एम जाण्या विना नो० नहीं आ० आत्मा क० केवली प० भाष्यो ध० धर्म प्रते ल० पामे स० सांभलवेकरी तं० तेज० कहुं छुं आ० आरंभ क्षेत्रादिकनो चे० वळी प० परिग्रह धन प्रमुख ए वे जे न तजे ते.

दो अणाइं अपरियाणित्ता आया नोकेवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए । तं जहा । आरम्भे चेव परिग्गहे चेव ॥ १ ॥

भावार्थ—वे स्थानक ज्ञानशुद्धिये अनर्थना कारण जाणीने छांडे नहीं तो ते जीव केवळीपरुप्यो धर्म सांभळवो पामे नहि ते वे स्थानक कहे छे. क्षेत्रादीकनो आरंभ १ अने धन धान्यादीक परिग्रह २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे ठा० थानक अ० ए माठां छे एहनुं जाण्याविना आ० जीव णो० नहीं के० केवलीनो वो० प्रतिबोध प्रति बु० पामे तं० तेज० कहुं छुं आ० आरंभ चे० वळी प० परिग्रह चे० वळी.

दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया णो केवलं दोहिं बुज्जेज्जा । तं जहा । आरम्भे चेव परिग्गहे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ—वे स्थानक ज्ञानबुद्धिये अनर्थना हेतु जाणीने छांडे नहीं, तो ते जीन केवळीप रूपेल समकितरूप बोधवीज पामे नहीं ते वे स्थानक कहे छे. आरंभ १ परिग्रह २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वे ठा० थानक प्रते अ० ए वं-धन छे एहबुं जाण्याविना आ० जीव नो० नहीं के० केवलीनो साधु मु० केशे तथा राग-द्वेषे रहित भ० धरने अ० घरमुकीने अ० सा धुपणुं प० पामे तं० तेज० कहुं छुं अ० आरं-भ चे० वली प० परिग्रह ए वेन मुके चे० वली.

दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया नो-केवलं मुण्डे भवित्ता अगाराओ अ-णगारियं पवएज्जा । तं जहा । अरम्भे चैव परिगहे चैव ॥ ३ ॥

भावार्थ—वे स्थानक ज्ञानबुद्धिये अनर्थना हेतु जाणीने छांडे नहीं, तो ग्रहस्थावास मुकी द्रव्यभावथी मुंड थइ अणगार पणुं धारण करी शके नहीं ते वे स्थानक कहे छे, आ-रंभ १ परिग्रह २ ए वे भेद छे.

अर्थ—ए० एम वे थानक जाण्या विना नो० नहीं के० शुद्ध वं० ब्रह्मचर्यने आ० से-वी शके.

एवं नोकेवलं बम्भचेरवासं आव-सेज्ज ॥ ४ ॥

भावार्थ—एमज ए वे स्थानकने अनर्थना हेतु जाणीने छांडे नहीं तो शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळी शके नहीं.

अर्थ—नो० नहीं के० शुद्ध सं० उक्तायनी रक्षारूप सं० संजम पाली गके.

नोकेवलेणं संजमेणं संजमेज्जा ॥ ५ ॥

भावार्थ—छ काय जीवना रक्षण रूप शुद्ध संयम पाळी शके नहीं.

अर्थ—नो० नहीं के० शुद्ध सं० संवर सं० पामे.

नोकेवलेणं संवरेणं संवरेज्जा ॥ ६ ॥

भावार्थ—शुद्ध संवरे करी आश्रवद्वार रंधी शके नहीं,

अर्थ—नो० नहीं के० शुद्ध आ० मतिज्ञान परिग्रह आरंभ छोड्या विना उ० पामे.

नोकेवलं आभिणिबोहियनाणं उ-प्पाडेज्जा ॥ ७ ॥

भावार्थ—तेमज आरंभ परिग्रह ए वे छांड्या वीना शुद्ध सर्व वस्तु ग्राहक मतिज्ञान पामे नहीं

अर्थ—ए० एम सु० सूत्रज्ञान.

एवं सुयनाणं ॥ ८ ॥

भावार्थ—एम श्रुतज्ञान

अर्थ—उ० अवधिज्ञान.

ओहिनाणं ॥ ९ ॥

भावार्थ—अवधिज्ञान

अर्थ—म० मनना भाव जाणे ते ज्ञान न पामे.

मणपज्जवनाणं ॥ १० ॥

भावार्थ—मनपर्यवज्ञान

अर्थ—के० केवलज्ञान न पामे ए ११ बोल.

केवलनाणं ॥ ११ ॥

भावार्थ—केवलज्ञान पण पामे नहीं ए ११ बोल थया.

अर्थ—दो० वे ठा० थानक प० ए छांड्या

जोग एम जाणीने आ० जीव के० केवलीनो

प० भाष्यो ध० धर्म प्रते ल० पामे स० सां-भलवे. करी तं० ते ज० कहुं छुं. आ० आरंभ

चे० वली प० परिग्रह चे० वली ए० एम जा० यावत के० केवल ज्ञान उ० पामे आ-

रंभ परिग्रह तजे ते ए ११ बोल पामे.

दो ठणाइं परियाणित्ता आया केव-
लिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ।
तं जहा । आरम्भे चेव परिग्गहे चेव ।
एवं जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा ॥
[१-११] ॥ १ ॥

भावार्थ—आरंभ ने परिग्रह ए वे अनर्थना हेतु जाणीने छोडे तो ते जीव केवळीपरूप्यो धर्म सांभळवो पामे १, समकित रुम बोधवीज पामे २, द्रव्य भावथी मुंड थइ अणगार थाय ३, शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळे ४, शुद्ध संयम पाळे शुद्ध संवरे करी ५, आश्रवद्वार रंधे ६, शुद्ध सर्व वस्तु ग्राहक मतिज्ञान ७, श्रुतज्ञान ८, अनधिज्ञान ९, मनपर्यवज्ञान १०, केवळज्ञान ११, ए ११ वोल पामे.

अर्थ—दो० वे ठा० थानके आ० जीव के० केवळीनो प० भाष्यो ध० धर्म ल० पामे स० सांभळवाथी तं० ते ज० कहुंछुं सो० सांभळवाथी चे० वळी अ० सिद्धांत ते भाव सद्वहाथी चे० वळी जा० यावत के० केवळज्ञान उ० उपाजें एटले पाछला ११ वोल कखा ते पामे.

दोहिं ठणेहिं आया केवलिपन्नत्तं ध-
म्मं लभेज्ज सवणयाए । तं जहा ।
सोच्चा चेव अहिसमेच्च चेव जाव के-
वलनाणं उप्पाडेज्जा ॥ [१-११] ॥ २ ॥

भावार्थ—वळी वे स्थानके जीव केवळीपरूप्यो धर्म सांभळवाथी पामे ते कहे छे, सिद्धांत सांभळवाथी १ अने ते भाव धारीने श्रद्धवाथी २ ए वे भेद छे, पुर्वोक्त केवळज्ञान पर्यंत ११ वोल ते सिद्धांत सांभळवाथी १ अने ते भावधारीने श्रद्धवाथी पामे २

अर्थ—दो० वे प्रकारे स० काल पं० पर-
प्या तं० ते ज० कहुंछुं ओ० उत्सर्पिणी च-

ढतो काल चे० वळी उ० अवसर्पिणी काल ते उतरता आरा चे० वळी.

दो समाओ पणत्ताओ । तं जहा ।
ओसप्पिणिसमा चेव उस्सप्पिणिसमा
चेव ॥

भावार्थ—वे प्रकारे समयकाळ श्री भगवेंत कहेल छे ते कहे छे एक उत्सर्पिणी ते दस क्रोडा क्रोडी सागरोपम सुधी चडतो काळ १ वीजो अवसर्पिणी ते दस क्रोडा क्रोडी सागरोपम सुधी पडतो काळ २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे प्रकारे उ० उन्माद प० कखा तं० ते ज० कहुंछुं ज० देवताअधिष्ठित चे० वळी मो० मोहनी (पुन्य धन प्रमुपनी मुर्छा) चे० वळी क० कर्म उ० उदय तं० तिहां पं० वळी जे० जे से० ते ज० जक्षावेस ते यक्षनी वलगण से० ते पं० वळी सु० सुपे वे० वेदाय चे० वळी सु० सुपे वि० मुकावीए चे० वळी तं० तिहां पं० वळी जे० जे से० ते मो० मोहनी क० कर्मनो उ० उदय से० ते पं० वळी दु० दुःखे भोगवीए चे० वळी दु० दुःखे वि० मुकाय चे० वळी.

दुविहे उम्माए पणत्ते । तं जहा ।
जक्खाएसे चेव मोहणिज्जस्स चेव क-
म्मस्स उदएणं । तत्थ पं० जे से जक्खा-
एसे से पं० सुहवेयतराए चेव सुहविमो-
यतराए चेव । तत्थ पं० जे से मोहणि-
ज्जस्स कम्मस्स उदएणं से पं० दुहवे-
यतराए चेव दुहविमोयतराए चेव ॥

भावार्थ—वे प्रकारे उन्माद (चित्त विह्वळ) कहेल छे ते कहे छे, देवता अधिष्ठित होवाथी गमे तेम नाचवुं कुदवुं के वोलवारूप उन्मादपणं

पामे १, वीजो मोहनी कर्मना उदयथी पुत्रने पुत्री कहे तथा धन कुटुंबादिकने विषे अत्यंत शुद्ध थाय २, ए वे भेदछे. ए वे प्रकारना उन्माद छे ते मांही जे यक्षनो उन्माद ते मंत्र यंत्र मुळीयादीके करी. सुखे मुकाय १, वीजो मोहनी कर्मना उदयथी उन्माद ते मंत्रादीकथी पण छुटे नहीं, अने अनेक भवभ्रमण करावे ने श्रुतधर्म के चारित्रधर्म ए वे मांहेथी एक पण धर्म पामे नहीं ते मोहनी कर्मनी सीतेर क्रोडा क्रोडी सागरोपमनी स्थिति छे तेहना क्षयोपशमथीज छुटे, तेथी दुःखे (घणी मुक्कलीथी) मुकाय २

अर्थ-दो० वे द० दंड पं० परुष्यां तं० ते ज० कहुंछुं अ० पांच इन्द्रीने अर्थे पाप करवुं ते चे० वळी अ० परने अर्थे पाप ते चे० वळी

दो दण्डा पन्नत्ता । तं जहा । अ-
दुदण्डे चैव अणदुदण्डे चैव ॥१॥

भावार्थ-वे प्रकारना दंड श्रीभगवंते कहेल छे ते कहे छे. पांच इंद्रियोने आश्रीने पोताना स्वार्थ माटे पाप करवुं ते अर्थ दंड १ पोताना स्वार्थ वीना पाप करवुं ते अनर्थ दंड २ ए वे भेद छे.

अर्थ-ने० नारकीओने दो० वे द० दंड पं० कथा तं० तेज० कहुंछुं अ० पोताने अर्थेपरने हणे चे० वळी अ० द्वेष मात्रथी उपजे ते चे० वळी.

नेरइयाणं दो दण्डा पण्णत्ता । तं ज-
हा । अदुदण्डे चैव अणदुदण्डे चैव
॥ [१] ॥ २ ॥

भावार्थ-साते नारकीना जीवने वे दंड कहेल छे ते कहे छे पोताना शरीरनुं रक्षण करवा माटे परने हणे ते अर्थ दंड १ फक्त द्वेष उपजवायीज परजीवने हणे ते अनर्थ दंड २ ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम च० चउवीसे दं० दंडके जाणवुं जा० यावत वे० वेमानीकलगे.

एवं चउवीसा दण्डओ जाव वेमा-
णियाणं ॥ [२-२४] ॥ ३ ॥

भावार्थ-एमज वैमानीक सुधी चोवीस दंडकना सर्व जीवने अर्थ अने अनर्थ ए वे प्रकारना दंड जाणवा.

अर्थ-दु० वे प्रकारे दं० दर्शन प० कथा तं० ते ज० कहुंछुं स० जिन वचननी शुद्ध सदहणाते चे० वळी मि० जिन वचनथी वि-
परीत चे० वळी.

दुविहे दंसणे पन्नत्ते । तं जहा । स-
म्मदंसणे चैव मिच्छादंसणे चैव ॥१॥

भावार्थ-वे प्रकारे दर्शनश्री भगवंते कहेल छे ते कहेछे, जीन वचनानुसारी तत्त्वनुं जाणवुं ते समकित दर्शन १ जीन वचनथी विप्रित अतत्वरूप जाणवुं ते मिथ्यात्व दर्शन २ ए वे भेद छे.

अर्थ-स० समकित द० दर्शन दु० वे प्र-
कारे पं० कहुं तं० ते ज० कहुंछुं नि० स्व-
भावेज स० तत्त्वनी रुचि उपजे ते उपदेश
विना चे० वळी अ० गुरुना उपदेशथी स०
तत्त्वरुचि ते चे० वळी.

सम्मदंसणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
निसग्गसम्मदंसणे चैव अभिगमस-
म्मदंसणे चैव ॥ २ ॥

भावार्थ-समकित दर्शन वे प्रकारे श्रीभग-
वंते कहेल छे ते कहेछे, मरुदैवी मातानी पेरे
स्वभावेज जाती स्मर्णादीक ज्ञानथी तत्त्वरुची
आवे ते निसर्ग समकित १, भरतादिकना अ-
टाणुं भाइनी पेरे गुरुना उपदेशथी तत्त्वरुची
आवे ते अभिगम समकित २, ए वे भेद छे,

अर्थ-नि० निसर्ग (स्वभावे) स० सम्यक द० दर्शन दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कह्युं प० आव्युं जाय ते चे० वळी अ० आव्युं जाय नहीं ते अप्रतिपती चे० वळी

निसर्गसम्मदंसणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ-निसर्ग समकितना वे भेद श्रीभगवंते कहेलछे ते कहेछे, एक प्रतिपाती ते आवेलुं जाय ते उपशम भावनुं उपशम समकित उत्कृष्टं अंतर मुहुर्त सुधी रहे अने क्षयोपशम समकित उत्कृष्टं छासठ सागरोपम अंतर मुहुर्त अधिक सुधी रहे ते वारमा देवलोके उत्कृष्टी वावीस सागरनी स्थिति छे तेहना त्रण भव करे तथा चार अनुंतर विमानमां उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति छे तेहना वे भव करे ते आश्री प्रतिपाती जाणवुं ?, वीजुं अप्रतिपाती ते आवेलुं जाय नहीं ते क्षायक भावे होय ते क्षायक समकित मोक्षे पहुँचे तीहां सुधी रहे पण जाय नहीं ते आश्री अप्रतिपाती जाणवुं, ए वे भेदछे.

अर्थ-अ० अभिगम स० सम्यक द० दर्शन दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कह्युं प० उपसमिक चे० वळी अ० क्षायिक ते चे० वळी.

अभिगमसम्मदंसणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ-अभिगम समकित वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, प्रतिपाती ते उपशम भावनुं आवेलुं जाय ?, अप्रतिपाती ते क्षायक भावनुं आवेलुं जाय नहीं ?, ए वे भेद छे.

अर्थ-मिथ्यादर्शन दु० वे प्रकारे पं० पर्युं तं० ते ज० कह्युं आ० कुमतिनो मि०

हठ न मुके ते चे० वळी अ० हठ विना कुमत राखे ते चे० वळी.

मिच्छादंसणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । आभिग्गहियमिच्छादंसणे चेव अणाभिग्गहियमिच्छादंसणे चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ-मिथ्यात्व दर्शन वे प्रकारे श्रीभगवंते कहेलछे ते कहेछे, कुमतिए करी खोटो पकडेलो हठ कदाग्रह मुके नहीं ते अभिग्रहिक मिथ्यात्व ?, हठ विना हृदयमां सत्यने सत्य माने अने असत्यने असत्य माने पण वाहीरथी कुमतिए करी खोटो पकडेलो हठ कदाग्रह (गोशाळानी परे) मुके नहीं ते अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व ?, ए वे भेद छे.

अर्थ-आ० अभिग्रहित मि० मिथ्यादर्शन दु० वे प्रकारे पं० कह्युं तं० ते ज० कह्युं स० अंत सहित भव्यनो चे० वळी अ० छेहडो नथी ते अभव्यनो.

आभिग्गहियमिच्छादंसणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । सपज्जवसिए चेव अपज्जवसिए चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ-अभिग्रहिक मिथ्यात्व दर्शनना वे भेद कहेल छे ते कहे छे, जेहनो अंत ते छेहडो छे ते भवी जीव समकित पामे त्यारे ते मिथ्यात्व जाय ते आश्री जाणवुं ?, जेहनो अंत नथी ते अभवी जीव कोइ काळे समकित पामनार नथी ते आश्री जाणवुं ?, ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम अ० अनभिग्रहित मि० मिथ्यादर्शन वे भेदे वि० वळी

एव अणाभिग्गहियमिच्छादंसणे वि ॥ ७ ॥

भावार्थ-एमज अनाभिग्रहिक मिथ्यात्वना

પણ ઉપર પ્રમાણે અંત સહીત ૧, ને અંત રહી-
ત ૨, એવા વે ભેદ જાણવા.

અર્થ-દુ૦ વે ના૦ જ્ઞાનના ભેદ પં૦ કહ્યા
તં૦ તે જ૦ કહુંહું પં૦ પાંચ ઇન્દ્રીને મન સહિત
તે ચે૦ વળી પં૦ ઇન્દ્રી મન વિના તે ચે૦ વળી

દુવિહે નાણે પન્નત્તે । તં જહા । પચ્ચ-
ક્ષે ચેવ પરોક્ષે ચેવ ॥ ૧ ॥

ભાવાર્થ-વે પ્રકારે જ્ઞાન કહેલ છે તે કહે છે
એક પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન તે પાંચ ઇન્દ્રી અને મનવિના
જણાય તે આત્મ પ્રત્યક્ષ ૧, વીજું પરોક્ષને મન
અને ઇન્દ્રી થકી જણાય તે ૨, એ વે ભેદ છે.

અર્થ-પ૦ પ્રત્યક્ષ ના૦ જ્ઞાન તે દુ૦ વે પ્ર-
કારે પં૦ કહું તં૦ તે જ૦ કહુંહું કે૦ કેવલ
જ્ઞાન ચે૦ વળી નો૦ અવધિ, મનપર્યવજ્ઞાન
ચે૦ વળી.

પચ્ચક્ષનાણે દુવિહે પ્ણત્તે । તં જ-
હા । કેવલનાણે ચેવ નોકેવલનાણે
ચેવ ॥ ૨ ॥

ભાવાર્થ-પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન વે પ્રકારે શ્રી ભગવંતે
કહેલ છે તે કહે છે, કેવલજ્ઞાન તે ચૌદ રાજ-
લોક સંપુર્ણ જાણે દેસે ૧, અવધિજ્ઞાન મનપર્યવ
જ્ઞાનવહે જાણે તે ૨ એ વે ભેદ છે.

અર્થ-કે૦ કેવલજ્ઞાન દુ૦ વે પ્રકારે પં૦
કહું તં૦ તે જ૦ કહુંહું મ૦ ભવ મનુષ્યનો છે
તેહનું કેવલજ્ઞાન ચે૦ વળી સિ૦ મોક્ષના જી-
વનું કેવલજ્ઞાન ચે૦ વળી.

કેવલનાણે દુવિહે પન્નત્તે । તં જહા ।
ભવત્યકેવલનાણે ચેવ સિદ્ધકેવલનાણે
ચેવ ॥ ૩ ॥

ભાવાર્થ-કેવલજ્ઞાન વે પ્રકારે કહેલ છે
તે કહે છે, સંસારમાં રહેલા છે તેનું કેવલજ્ઞાન

૧, મોક્ષમાં ગણ્યા સિદ્ધનું કેવલજ્ઞાન ૨, એ
વે ભેદ છે.

અર્થ-મ૦ ભવ મનુષ્યનું કેવલજ્ઞાન દુ૦ વે
પ્રકારે પં૦ કહું તં૦ તે જ૦ કહુંહું સ૦ તેરમા
ગુણ ઠાણાના મ૦ જીવનું કેવલજ્ઞાન ચે૦ વળી
અ૦ ચૌદમા ગુણઠાણાના જીવ થતાનું કેવલ-
જ્ઞાન ચે૦ વળી.

ભવત્યકેવલનાણે દુવિહે પન્નત્તે । તં
જહા । સજોગિભવત્યકેવલનાણે ચેવ
અજોગિભવત્યકેવલનાણે ચેવ ॥ ૪ ॥

ભાવાર્થ-સંસારમાં રહેલા જીવનું કેવલજ્ઞાન
વે પ્રકારે કહેલ છે તે કહે છે, સજોગી તે મન
વચન કાયાના જોગ સહીત તે તેરમા ગુણઠા-
ણાવાલા જીવનું કેવલજ્ઞાન ૧, અજોગી તે ચૌ-
દમા ગુણઠાણા વાલા જીવનું કેવલજ્ઞાન તે
અ. ઇ. ઉ. ઋ. લૃ. એ પાંચ હ્રસ્વ અક્ષર ઉ-
ચ્ચરતાં જેટલો વચ્ચત લાગે તીહાં સુધી તે
જીવ તીહાં રહે ૨ એ વે ભેદ છે.

અર્થ-સ૦ સજોગી કેવલજ્ઞાન દુ૦ વે પ્રકારે
પં૦ કહું તં૦ તે જ૦ કહુંહું પ૦ ઉપજતી વે-
લાનો પ્રથમ સમયનો સ૦ ૧૩ મા ગુણઠાણાના
મ૦ જીવનું કેવલજ્ઞાન ચે૦ વળી અ૦ વીજા
સમયના સજોગી જીવનું કેવલજ્ઞાન ચે૦ વળી

સજોગિભવત્યકેવલનાણે દુવિહે પ-
ન્નત્તે । તં જહા । પદ્મસમયસજોગિભવ-
ત્યકેવલનાણે ચેવ અપદ્મસમયસજો-
ગિભવત્યકેવલનાણે ચેવ ॥ ૫ ॥

ભાવાર્થ-સજોગી ભવત્ય (તેરમા ચૌદમા
ગુણઠાણાવાલા જીવનું) કેવલજ્ઞાનના વે ભેદ
કહેલ છે તે કહે છે, કેવલજ્ઞાન ઉપજતી વેલા-
ના પ્રથમ સમયનું સજોગી ભવત્ય કેવલજ્ઞાન

१, एमज अप्रथम समयनुं ते केवळज्ञान उत्पन्न थया पछी वीजा त्रीजा चोथादीक समयनुं सजोगी भवस्थ केवळज्ञान २, ए वे भेद छे.

अर्थ-अ० अथवा च० छेला स० समयनो स० सजोगी भ० जीवनुं के० केवळज्ञान चे० वळी अ० छेलो समय तेहथी पहेला समयनो स० सजोगी भ० जीवनोके० केवळज्ञान चे० वळी

अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्यकेवलनाणे चैव अचरिमसमयसजोगिभवत्यकेवलनाणे चैव ॥ ६ ॥

भावार्थ-अथवा छेला समयना ते चौदमे गुणठाणे जातां तेरमा गुणठाणाना छेला समयनुं सजोगी भवस्थ केवळज्ञान १, छेहलो समय नहीं पण छेहलांनी पहेलां जेटलां समय होय ते अचरम समयनुं सजोगी भवस्थ केवळज्ञान २ ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम अ० १४ मा गुणठाणाना भ० जीवनुं के० केवळज्ञान वे भेदे वि० वळी एवं अजोगिभवत्यकेवलनाणे वि ७

भावार्थ-एमज अजोगी भवस्थ केवळज्ञानना वे भेद जाणवा,

अर्थ-सि० सिद्धना जीवनुं के० केवळज्ञान दु० वे प्रकारे प० कहुं तं० ते ज० कहुं अ० एक समय सि० सिद्ध थया तेनुं के० केवलज्ञान चे० वळी प० वे तथा उपरांत समय सि० सिद्ध थया तेनुं के० केवळज्ञान चे० वळी.

सिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्नते । तं जहा । अणन्तरसिद्धकेवलनाणे चैव परंपरसिद्धकेवलनाणे चैव ॥ ८ ॥

भावार्थ-सिद्धना जीवनुं केवळज्ञान तेहना वे भेद श्री भगवंते कहेल छे ते कहेछे, संप्रती

(वर्तमान) समय सिद्ध थयो ते अनंतर सिद्ध तेहनुं केवळज्ञान १, जेहने वे त्रण चार पांच दश प्रमुख समय थया ते परंपर सिद्ध तेहनुं केवळज्ञान २, ए वे भेद छे.

अर्थ-अ० एक समयना सि० सिद्धना के० केवळज्ञानना दु० वे प्रकार पं० कहुं तं० ते ज० कहुं अ० एकज अ० एक समय मोक्ष गयो ते सि० सिद्धनुं के० केवळज्ञान चे० वळी अ० अनेक अ० एक समय सि० सिद्ध थया तेनुं के० केवळज्ञान चे० वळी.

अणन्तरसिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्नते । तं जहा । एकाणन्तरसिद्धकेवलनाणे चैव अणेकाणन्तरसिद्धकेवलनाणे चैव ॥ ९ ॥

भावार्थ-अनंतर सिद्धनुं केवळज्ञान तेहना वे प्रकार कहेल छे ते कहेछे, हमणां एक समयने विपे एकज जीवमोक्षमां गयो ते एक अनंतर सिद्ध तेहनुं केवळज्ञान १, हमणां एक समयने विपे अनेक मोक्षमां गया ते अनेक अनंतर सिद्ध तेहनुं केवळज्ञान २, ए वे भेद छे.

अर्थ-प० मोक्षगया पछी २-३-४ समे थया तेहनुं केवळ ज्ञान दु० वे प्रकारे पं० कहुं तं० ते ज० कहुं अ० एक प० परंपरसिद्धनुं केवल ज्ञान चे० वळी अ० अनेक प० परंपरसिद्धनुं केवलज्ञान चे० वळी.

परंपरसिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्नते । तं जहा । एकपरंपरसिद्धकेवलनाणे चैव अणेकपरंपरसिद्धकेवलनाणे चैव ॥ १० ॥

भावार्थ-परंपर सिद्धनुं केवळज्ञान तेहना वे प्रकार कहेल छे ते कहेछे, एक परंपर सि-

द्धनुं केवलज्ञान १, अनेकपरंपर सिद्धनुं केवलज्ञान २, ए वे भेद छे.

अर्थ-नो० अवाधि, मनपर्यवज्ञान दु० वे प्रकारे पं० कहुं तं० तेज० कहुं छुं ओ० अवाधि ज्ञान चे० वळी म० मनपर्यवज्ञान चे० वळी.

नोकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । ओहिनाणे चेव मणपज्जवनाणे चेव ॥ ११ ॥

भावार्थ-नो केवलज्ञानना वे भेद श्री भगवन्ते कहेल छे ते कहे छे, अवाधिज्ञान १ मनपर्यवज्ञान २ ए वे भेद छे.

अर्थ-ओ० अवाधिज्ञान दु० वे प्रकारे पं० कहुं तं० तेज० कहुं छुं भ० एक भव ताइज होय ते चे० वळी खा० ज्ञानावरणीकर्मना क्षय उपसमथी उपनो ते चे० वळी.

ओहिनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । भवपच्चइए चेव खाओवसमिए चेव १२

भावार्थ-अवाधिज्ञानना वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे एक भव प्रत्ययनुं जे ते भवमांहीज होय १, वीजुं ज्ञानावर्णीना क्षयोपसमथी उपजे २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दो० वेने भ० भवप्रत्ययनुं पं० कहुं तं० तेज० कहुं छुं दे० देवतातुं चे० वळी ने० नारकीनुं चे० वळी.

दोण्हं भवपच्चइए पणत्ते । तं जहा । देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ॥ १३ ॥

भावार्थ-वेने भव प्रत्ययनुं अवाधिज्ञान होय ते कहे छे देवता १ अने नारकी ए वेना भवने विपे होयज २ ए भेद छे.

अर्थ-दो० वेने खा० क्षयोपसमथी पं० कहुं तं० तेज० कहुं छुं म० मनुष्यने चे० वळी

प० पचिंद्रि तिर्यच जो० जोनीने क्षयोपसमथी होय चे० वळी.

दोण्हं खाओवसमिए पन्नत्ते । तं जहा । मणुस्साणं चेव पच्चिन्दियतिरिक्खजोगियाणं चेव ॥ १४ ॥

भावार्थ-वेने क्षयोपसमथी होय ते कहे छे, संज्ञी मनुष्यने संज्ञीतिर्यच पचेंद्री २ ए वेने होय ए वे भेद छे.

अर्थ-म० मनपर्यवज्ञान दु० वे प्रकारे पं० कहुं तं० तेज० कहुं छुं उ० रुजुमती चे० वळी वि० विपुलमती चे० वळी.

मणपज्जवनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । उज्जुमई चेव विउलमई चेव १५

भावार्थ-मनपर्यव ज्ञान वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे एकलो मनमां घडो चिंतव्यो छे एम सामान्यथी मननी वात जाणे ते रुजुमती १ अने सोनानो घडो नानो अथवा म्होटो पाडलीपुरनो आजनो कालनो अथवा घणा कालनो करेलो चिंतव्यो छे इत्यादिक विशेषथी जाणे ते विपुलमती २ ए वे भेद छे.

अर्थ-प० परोक्ष ज्ञानने दु० वे प्रकारे पं० कहुं तं० तेज० कहुं छुं आ० मतिज्ञान चे० वळी सु० श्रुतज्ञान चे० वळी.

परोक्खनाणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । आभिणिबोहियनाणे चेव सुयनाणे चेव ॥ १६ ॥

भावार्थ-परोक्ष ज्ञानना वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, एकमति ज्ञान, वीजुं श्रुतज्ञान २ ए वे भेद छे.

अर्थ-आ० मतिज्ञान दु० वे प्रकारे पं० कहुं तं० तेज० कहे छे सु० श्रुत निश्चित चे०

वळी अ० अश्रुत निश्चित चे० वळी.

आभिणिबोहियनाणे दुर्विहे पन्नत्ते ।
तं जहा । सुयनिस्सिए चेव असुय-
निस्सिए चेव ॥ १७ ॥

भावार्थ—मतिज्ञानना वे भेद कहेल छे ते
कहे छे, श्रुतनिश्चित ? अश्रुतनिश्चित २ ए
वे भेद छे.

अर्थ—सु० श्रुतनिश्चित दु० वे प्रकारे पं०
कहुं तं० तेज० कहुं छुं अ० दूरथी प्रथम व-
स्तु देखीने कहे जे कोइक वस्तु छे ते चे०
वळी व० पळी ओलखे जे ए पुरुष छे ते चे०
वळी.

सुयनिस्सिए दुर्विहे पन्नत्ते । तं ज-
हा । अत्योगहे चेव वञ्चणोगहे चेव
॥ १८ ॥

भावार्थ—श्रुतनिश्चित वे प्रकारे कहेल छे ते
कहे छे, वेगळेथी वस्तु देखीने कहेजे कांइ व-
स्तु छे एम प्रथम वस्तुसुं सामान्यपणे ग्रहवुं ते
अर्थावग्रह १ पळी ओळखेजे ए पुरुष छे अ-
थवा स्त्री छे एम विशेषथी इंद्री अने शब्दादि
द्रव्यनो संबंध ते व्यंजनावग्रह २ ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० अश्रुत निश्चितनापण ए० एमज
वे भेद.

असुयनिस्सिए एवमेव ॥ १९ ॥

भावार्थ—एम अश्रुतनिश्चितना पण वे भेद
जाणवा.

अर्थ—सु० श्रुतज्ञान दु० वे प्रकारे पं० क-
हा तं० तेज० कहुं छुं अं० ११ अंग मांदि
छुं ज्ञान ते चे० वळी अं० उत्तराध्ययन प्र-
मुख चे० वळी.

सुयनाणे दुर्विहे पन्नत्ते । तं जहा ।

अङ्गपविट्टे चेव अङ्गवाहिरे चेव ॥ २० ॥

भावार्थ—एम श्रुतज्ञानना वे भेद कहेल छे
ते कहे छे, आचारांगादिक इग्यार अंग ते अंग
प्रविष्ट ? उत्तराध्ययनादी मुख सूत्र ते अंग
वाहीर ए वे भेद छे.

अर्थ—अं० अंग वाहिरना दु० वे प्रकारे पं०
कहा तं० तेज० कहुं छुं, आ० आवश्यक चे०
वळी आ० आवश्यक विना श्रुतज्ञान चे० वळी.

अङ्गवाहिरे दुर्विहे पन्नत्ते । तं जहा ।
आवस्सिए चेव आवस्सयवइरित्ते चेव
॥ २१ ॥

भावार्थ—अंग वाहीरना वे प्रकार कहेल छे
ते कहे छे सामायक १ चउवीसथो २ वंदणां
३ पडीकमणुं ४ काउसग ५ पचखाण ६ ए
छ अध्ययनना समुहुरूप आवश्यक ? आवश्य-
क विना वीजां सिद्धांत ते आवश्यक व्यतिरि-
क्त २ ए वे भेद छे.

अर्थ—आ० आवश्यक विना श्रुतते दु० वे
प्रकारे पं० कहा तं० तेज० कहुं छुं का०
काल वेलाये भणाय ते प्रथमने छेली पोरसि-
एचे० वळी उ० सर्व काले भणाय ते.

आवस्सयवइरित्ते दुर्विहे पन्नत्ते । तं
जहा । कालिए चेव उक्कालिए चेव ॥
॥ २२ ॥

भावार्थ—आवश्यक व्यतिरिक्तता वे प्रकार
कहेल छे ते कहे छे, दिवस अने रात्रिनी पहे-
ली ने चोथी पोरसिए भणाय ते उत्तराध्यय-
नादीक कालीकसूत्र १ सवारनी, मध्याननी,
संध्यानी, मध्यरात्रीनी वे वे घडी वर्जि गये ते
वखते भणाय ते दशर्वकालिक प्रमुख उत्का-
लीक सूत्र २ ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे प्रकारे धं० धर्म पं० कक्षा तं० तेज० कहुं छुं सु० द्वादशांगी-तेइज श्रुतधर्मचे० वळी च० चारित्र ध० धर्म पांच महावृत रूप चे० वळी.

दुविहे धम्मे पणत्ते । तं जहा । सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव ॥ १ ॥

भावार्थ-दुर्गती पडतां धरी राखे ते धर्म वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, द्वादशांगी रूप सिद्धांत ते श्रुतधर्म १ चारित्र धर्म २ ए वे भेद छे.

अर्थ-सु० सुत्रधर्म दु० वे प्रकारे पं० कक्षा तं० तेज० कहुं छुं. सु० श्रुतपाठ ते सुत्र श्रुतधर्म चे० वळी अ० अर्थ श्रुतधर्म चे० वळी.

सुयधम्मे दुविहे पणत्ते । तं जहा । सुत्तसुयधम्मे चेव अत्थसुयधम्मे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ-श्रुतधर्मना वे भेद कहेल छे ते कहे छे, सुत्रपाठ ते सुत्र श्रुतधर्म १, अर्थ ते अर्थ श्रुतधर्म २ ए वे भेद छे.

अर्थ-च० चारित्रनो ध० धर्म दु० वे प्रकारे पं० कक्षा तं० ते ज० कहुं छुं अ० देश विरति च० चारित्र ध० धर्म चे० वळी अ० साधूनो च० सर्व विरति ध० धर्म चे० वळी.

चरित्तधम्मे दुविहे पणत्ते । तं जहा । अगारचरित्तधम्मे चेव अणगारचरित्तधम्मे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ-चारित्र धर्म वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, समकीत मुळ वार व्रतरूप देश वर्ती चारित्र ते ग्रहस्थनो धर्म १ जेहने घर नयी एहवा साधूनो सर्व वर्ती पंचमहाव्रतरूप चारित्र धर्म २ ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे प्रकारे सं० संजम पं० कक्षा तं० ते ज० कहुं छुं स० मायानो संग छे ज्यां ते संजम चे० वळी वी० माया रहित संजम ते सातमा गुणठाणा उपरांतहोय चे० वळी.

दुविहे संजमे पणत्ते । तं जहा । स-रागसंजमे चेव वीयरगसंजमे चेव ॥ १ ॥

भावार्थ-वे प्रकारे संयम कहेल छे ते कहे छे. जीहां मायानो संग छे ते सरागसंयम १ सातमा गुणठाणां उपरांत माया (कपट) राग रहित चारित्र ते वीतराग संयम २ ए वे भेद छे.

अर्थ-स० राग सहित संजम दु० वे प्रकारे पं० कक्षा तं० ते ज० कहुं छुं सु० लोभरूप कपाय जेणे सुक्ष्म किधा छे तेवा उपसय तथा क्षपक श्रेणिनो साधू ते १० मे गुणठाणे होय चे० वळी वा० मोटा कपाय छे जिहाते चे० वळी.

सरागसंजमे दुविहे पणत्ते । तं जहा । सुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव वायरसंपरायसरागसंजमे चेव ॥ २ ॥

भावार्थ-सराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहेल्ले. जेणे लोभ रूप कपाय सुक्ष्म कुंथु रूप करेल छे ते उपशम श्रेणीनो तथा क्षपक-श्रेणीनो साधु दशमे गुणठाणे होय ते सुक्ष्म संपराय सराग संयम १ जीहां मोटी स्थुल कपाय छे ते वादर संपराय सराग संयम, २ ए वे भेद छे.

अर्थ-सु० सुक्ष्म कपाय संजम दु० वे प्रकारे पं० कक्षा तं० ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समयनो सुक्ष्म संपराय सराग संजम १० मा गुणठाणाना थम समयनुं संजम चे० वळी अ० २-३ समयना सुक्ष्म संपराय सराग संजम चे० वळी:

सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पणत्ते । तं जहा । पढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ—सुक्ष्म संपराय सराग संयमना वे भेद कहेल छे ते कहेछे. प्रथम समयनो सूक्ष्म संपराय सराग संयम. १ अप्रथम समय ते वीजा त्रीजादीक समयनो सूक्ष्म संपराय सराग संयम. २ (केवळज्ञानना प्रथम भेद कहेल छे ते प्रमाणे जाणवा) ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० अथवा च० छेला समयनो सुक्ष्म संपराय सराग संयम अ० छेलाथी पेहेला समयनो सुक्ष्म संपराय सराग संयम.

अहवा चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे ॥ ४ ॥

भावार्थ—अथवा छेला चरम समय ते वारमा गुणठाणाना छेला समयनो सुक्ष्म संपराय सराग संयम. १ अचरम ते छेलाथी पेहेला समयनो सुक्ष्म संपराय सराग संयम. २ ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० अथवा सु० सुक्ष्म संपराय सराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कवो तं० ते ज० कहुं छुं सं० उपसम श्रेणिथी पडतानु ए सुक्ष्म संपराय सराग संजम चे० वळी वि० उपसम तथा क्षपक श्रेणि चडतानुं सुक्ष्म संपराय सराग संजम चे० वळी.

अहवा सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । संकिलिस्समाणए चैव विसुज्झमाणए चैव ॥५॥

भावार्थ—अथवा सुक्ष्म संपराय सराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. संकलेशमान ते उपसमश्रेणीथी पडतानो सुक्ष्म संपराय सरागसंयम. १ विशुद्धमान ते उपसम श्रेणीथे तथा क्षपकश्रेणीथे चडतानो सुक्ष्म संपराय सरागसंयम. २ ए वे भेद छे.

अर्थ—वा० वादर संपराय सराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कवो तं० ते ज० कहुं छुं . प०

प्रथम समयनो वादर संपराय सराग संजम अ० पेहेला समय विना वादर संपराय सराग संजम.

वायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । पढमसमयवायरसंपरायसरागसंजमे अपढमसमयवायरसंपरायसरागसंजमे ॥ ६ ॥

भावार्थ—वादर संपराय सराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. प्रथम समयनो वादर संपराय सराग संयम १ अप्रथम समयनो वादर संपराय सरागसंयम २ (प्रथम-अप्रथम केवळज्ञाननी पेरे जाणवुं) ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० अथवा च० छेहेला समयनो वादर संपराय सराग संजम अ० छेलाथी पेहेलानो समयनो वादर संपराय सराग संजम.

अहवा चरिमसमयवायरसंपरायसरागसंजमे अचरिमसमयवायरसंपरायसरागसंजमे ॥ ७ ॥

भावार्थ—अथवा चरम ते छेला समयनो ते नवमा गुणठाणाना छेला समयनो १ अचरम ते छेलाथी पेहेला समयनो वादर संपराय सरागसंयम २ ए वे भेद छे.

अर्थ—अथवा वा० वादर संपराय सराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कवो तं० ते ज० कहुं छुं प० उपसम श्रेणिथी पडतानुं संजम चे० वळी अ० क्षपक श्रेणितुं ते चे० वळी.

अहवा वायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । पडिवाई चैव अपडिवाई चैव ॥ ८ ॥

भावार्थ—अथवा वादर संपराय सराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे उपसम

श्रेणीधी पहतानो ? क्षप्रकश्रेणीनो वादर संपराय सरागसंयम २ ए वे भेद छे.

अर्थ-वी० रागरहित संजम दु० वे प्रकारे पं० कहुं तं० ते ज० कहुं छुं उ० उपसमाव्या क० कपायजेणे वी० एवो राग रहित सं० संजम ते ? ? मा गुणठाणाना साधूने होय चे० वळी खीण० क्षय पाम्या छे क० कखाय एवो राग रहित संजम ते ? २. मा गुण ठाणाना साधूने होय चे० वळी.

वीयरगसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तंजहा । उवसन्तकसायवीयरगसंजमे चैव खीणकसायवीयरगसंजमे चैव ॥ १ ॥

भावार्थ-वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. जेणे कषाय उपशमावेल छे तेहनो संयम ते उपशांतकषाय वीतरागसंयम १ जेहनी कषाय क्षय थइगयेल छे ते वारमा गुणठाणाना साधूनो क्षीणकषाय वीतराग संयम २ ए वे भेद छे.

अर्थ-उ० उपसम श्रेणिनुं कषाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कहा तं० ते ज० कहुं छुं पं० पहिला समयनुं उपशांत कषाय वीतराग संजम चे० वळी अ० प्रथम समय विना ? ? मा गुण ठाणानुं संजमते चे० वळी.

उवसन्तकसायवीयरगसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा । पढमसमयउवसन्तकसायवीयरगसंजमे चैव अपढमसमयउवसन्तकसायवीयरगसंजमे चैव ॥ २ ॥

भावार्थ-उपशांत कषाय वीतरागना वे प्रकार कहेल छे ते कहेछे. प्रथम समयनो उपशांत कषाय वीतराग संयम. १ अप्रथम समयनो उपशांत कषाय वीतराग संयम. २ (प्रथम अप्रथम पूर्वनी पेरे जाणवुं) ए वे भेद छे.

अर्थ-अ० अथवा च० छेहला समयनुं उपशांत कषाय वीतराग संजम अ० छेहलाथी पहिला समयनुं उपशांत कषाय वीतराग संजम.

अहवा चरिमसमयउवसन्तकसायवीयरगसंजमे अचरिमसमयउवसन्तकसायवीयरगसंजमे ॥ ३ ॥

भावार्थ-तेमज चरम अचरम समयनो उपशांत कषाय वीतराग संयम जाणवो. ए वे भेद छे.

अर्थ-खी० क्षय कर्या कषायनो ते ? २ मा गुण ठाणानो वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कहा तं० ते ज० कहुं छुं छ० चारघाति कर्म सहित छेतेनुं खीण कषाय वीतराग संजम चे० वळी के० केवलीनुं खीण कसाय वीतराग संजम.

खीणकसायवीयरगसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा । छउमत्थखीणकसायवीयरगसंजमे चैव केवलखीणकसायवीयरगसंजमे चैव ॥ ४ ॥

भावार्थ-क्षीणकषाय वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहेछे. छदमस्थ ते ज्ञाना वरणादी आठे कर्म सहित तेहनो संयम ते छदमस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम १ केवल ज्ञान सहित केवळी तेहनो संयम ते केवळीक्षीण कषाय वीतरागसंयम २ ए वे भेदछे

अर्थ-छ० छदमस्थ खीण कषाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कहा तं० ते ज० कहुं छुं स० पोतानी भेळे प्रतिबोध पाम्याते स्वयं बुध छदमस्थ खीण कसाय वीतराग संजम दु० गुरुना प्रति बोध्या छदमस्थ खीण कसाय वीतराग संजम.

छउमत्थखीणकसायवीयरगसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा । सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरगसंजमे बुद्धवो-

हियच्छुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे
॥ ५ ॥

भावार्थ—छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे स्वयंबुध ते तिर्यकरादी पोतानी मेळे प्रतिबोध पाम्या ते स्वयंबुध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयमी. १ आचार्यादिकना प्रतिबोध्या ते छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयमी. २ ए वे भेद छे.

अर्थ—स० पोतानी मेळे प्रतिबोध पाम्या ते छद्मस्थ स्त्रीण कसाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कहां ते० ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समयना सं० पोतानी मेळे बुझेला छद्मस्थ स्त्रीण कसाय वीतराग संजम अ० वीजा समयनो स्वयंबुध छद्मस्थ स्त्रीण कसाय वीतराग संजम चे० वळी.

सयंबुद्धछुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा । पदमसमयसयंबुद्धछुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे अपदमसमयसयंबुद्धछुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे चेव ॥ ६ ॥

भावार्थ—स्वयंबुध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. प्रथम समयनो. १ अथम समयनो. २

अर्थ—अ० अथवा च० छेहेला समयनो स ये बुध छद्मस्थ स्त्रीण कसाय वीतराग संजम अ० छेहेला समय विनानुं सयंबुध छद्मस्थ स्त्रीण कसाय वीतराग संजम.

अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे अचरिमसमयसयंबुद्धछुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे ॥ ७ ॥

भावार्थ—अथवा चरम समयनो १ अचरम समयनो. २ ए वे भेद छे.

अर्थ—बु० आचार्यना प्रतिबोध्या छद्मस्थ स्त्रीण कसाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कहां तं० ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समय बुधबोहि छद्मस्थ स्त्रीण कसाय वीतराग संजम अ० वीजा समयनो बुधबोहि छद्मस्थ स्त्रीण कसाय वीतराग संजम.

बुद्धबोहियच्छुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । पदमसमयबुद्धबोहियच्छुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे अपदमसमयबुद्धबोहियच्छुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे ॥ ८ ॥

भावार्थ—बुद्धबोही ते आचार्यादिकना प्रतिबोधेलां छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. प्रथम समयनो १ अथम समयनो २.

अर्थ—अ० अथवा च० छेहेला समयनो बुधबोहि छद्मस्थ स्त्रीण कसाय वीतराग संजम अ० छेहेला समय विना बुधबोहि छद्मस्थ स्त्रीण कसाय वीतराग संजम.

अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियच्छुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे अचरिमसमयबुद्धबोहियच्छुद्धमत्थस्त्रीणकसायवीयरगसंजमे ॥ ९ ॥

भावार्थ—अथवा चरम समयनो. १ अचरम समयनो. २ ए वे वे भेद छे

अर्थ—के० केवळी स्त्रीण कसाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे पं० कहुं तं० ते ज० कहुं स० १३ मा गुणटाणानानो केवळी स्त्रीण कसाय वीतराग संजम अ० १४ मा गुणटाणना केवळीनो क्षीण कसाय वीतराग संजम,

केवलखीणकसायवीयरगसंजमे दु-
विहे पन्नत्ते । तं जहा । सजोगिकेव-
लिखीणकसायवीयरगसंजमे अजो-
गिकेवलखीणकसायवीयरगसंजमे ॥
१० ॥

भावार्थ—केवळी क्षीण कषाय वीतराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे. सजोगी ते तेरमा गुणठाणाना केवळी क्षीण कषाय वीतराग संयमी १ अजोगी ते चौदमा गुण-
ठाणाना केवळी क्षीण कषाय वीतराग संयमी २ ए वे भेद छे.

अर्थ—स० १३ मा गुणठाणाना केवलीनो क्षीण कसाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे प० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समयनो सजोगी केवलि क्षीण कसाय वीतराग संजम अ० बीजा समयनो सजोगी केवलि क्षीण कसाय वीतराग संजम.

सजोगिकेवलखीणकसायवीयरग-
संजमे दुविहे पणत्ते । तं जहा । पढ-
मसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीय-
रागसंजमे अपढमसमयसजोगिकेवलि-
खीणकसायवीयरगसंजमे ॥ ११ ॥

भावार्थ—वीतराग सजोगी केवळी क्षीण कषाय संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे प्रथम समयनो. १ अप्रथम समयनो. २

अर्थ—अथवा च० छेला समयनो सजोगी केवलखीण कसाय वीतराग संजम अ० छेह-
लाथी पेहला समयनो सजोगी केवलखीण कसाय वीतराग संजम

अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलखी-
णकसायवीयरगसंजमे अचरिमसमय-
सजोगिकेवलखीणकसायवीयरगसं-
जमे ॥ १२ ॥

भावार्थ—अथवा चरम समयनो. १ अचरम समयनो. २ ए वे भेद छे.

अर्थ—अ० १४ मा गुणठाणाना केवलीनुं खीणकसाय वीतराग संजम दु० वे प्रकारे प० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समयनो अजोगी केवलखीण कसाय वीतराग संजम अ० बीजा समयनो अजोगी केवलखीण कसाय वीतराग संजम.

अजोगिकेवलखीणकसायवीयरग-
संजमे दुविहे पणत्ते । तं जहा । पढ-
मसमयअजोगिकेवलखीणकसायवी-
यरगसंजमे अपढमसमयअजोगिकेव-
लिखीणकसायवीयरगसंजमे ॥ १३ ॥

भावार्थ—अजोगी केवळी क्षीण कषाय वी-
तराग संयमना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे प्रथम समयनो १ अप्रथम समयनो २

अर्थ—अथवा च० छेला समयनो अजोगी केवलखीण कसाय वीतराग संजम अ० छेह-
लाथी पेहला समयनो अजोगी केवलखीण कसाय वीतराग संजम.

अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलि-
खीणकसायवीयरगसंजमे अचरिमस-
मयअजोगिकेवलखीणकसायवीयरा-
गसंजमे ॥ १४ ॥

भावार्थ—अथवा चरम समयनो. १ अचरम समयनो. २ ए वे वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे प्रकारे पु० पृथ्विकायना जीव प० कह्यो तं० ते ज० कहुं छुं सु० सुक्ष्म चे० निश्चे वा० वादर (दृष्टिमां आवे ते) चे० वळी.

दुविहा पुढविकाइया पन्नता । तं ज-
हा । सुहुमा चेव वायरा चेव ॥ १ ॥

भावार्थ—पृथ्विकायना जीव वे प्रकारे श्री भगवते कहेल छे ते कहे छे. जे छदमस्थनी

नजरे आवे नहीं अने सर्व लोकने विषे ठां-
सीठांसीने भरेल छे ते सुक्ष्म पृथ्विकाय. १
छदमस्थनी नजरे आवे ते वादर पृथ्विकाय.
२ ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम जा० यावत दु० वे भेदे व०
वनस्पतीकाय सुधी पं० कद्या तं० ते ज० कहुं
हुं. सु० सुक्ष्म चे० वळी वा० वादर चे० निश्चे.

एवं जाव दुविहा वणस्सइकाइया प-
न्नता । तं जहा । सुहुमा चैव वायरा
चैव ॥ [२-५] ॥ २ ॥

भावार्थ-एम पाणी, १ अग्नी, २ वायु,
३ वनस्पतिकायना सुक्ष्म ने वादर ए वे वे
भेद जाणवा.

(आहार, १ शरिर, २ इंद्रि, ३ श्वासोश्वास,
४ भाषा, ५ मन, ६ ए छ पर्याप्ति छे ते
मांही एकेंद्रिने भाषा ने मन ए वे वर्जिने चार
पर्याप्ति छे, वेइंद्रि, ते इंद्रि, चौरिंद्रि, असंज्ञि
पचेंद्रिने मन वर्जिने पांच पर्याप्ति छे, संज्ञि
पचेंद्रिने छ पर्याप्ति छे. जे जीवने जेटली प-
र्याप्ति छे ते मांही एक अधुरी होय तेवामां प-
रभवतुं आयुष्य वांधी मरे ते अपर्याप्ति कहीये.
छ पर्याप्तिमां आहार पर्याप्ति एक समयमां
नीपजे, बीजी पांच पर्याप्ति असंख्याते अ-
संख्याते समये नीपजे, ए सर्वे अंतर मुहुर्त-
मां निपजे)

अर्थ-दु० वे भेदे पु० पृथ्विकायना जीव
पं० कद्या तं० ते ज० कहुं हुं प० पर्याप्ति पुरी
करी मरे ते चे० निश्चे अ० अधूरी पर्याप्ति
मरे ते चे० निश्चे.

दुविहा पुद्विकाइया पन्नता । तं ज-
हा । पज्जत्तगा चैव अपज्जत्तगा चैव
॥ [६ ॥ ३] ॥

भावार्थ-वळी पृथ्विकायना जीव वे प्रकारे
छे ते कहे छे, पर्याप्ति ते आहार, १

शरिर, २ इंद्रि, ३ श्वासोश्वास, ४ ए चारे
पुरी करी मरे ? अपर्याप्ति ते आहार, १ श-
रीर २, इंद्रि ३. ए त्रण पर्याप्ति पुरी करी
परभवतुं आयुष्य वांधी मरे. २ ए वे भेद छे.

अर्थ-ए एम जा० यावत व० वनस्पतिकाय
लगे जाणवा.

एवं जाव वणस्सइकाइया ॥ [७-
१०] ॥ ४ ॥

भावार्थ-एमज पाणी १, अग्नी २, वायु ३
वनस्पति ४. ए चारेना पर्याप्ति १, अपर्या-
प्ति २ ए वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-वे प्रकारे पु० पृथ्विकायना जीव पं०
कद्या तं० तेज० कहुं हुं प० अचित थया ते
चे० निश्चे अ० सचित ते चे० निश्चे जा०
यावत व० वनस्पतिकाय लगे.

दुविहा पुद्विकाइया पन्नता । तं जहा ।
परिणया चैव अपरिणया चैव जाव
वणस्सइकाइया ॥ [११-१५] ॥ ५ ॥

भावार्थ-वळी पृथ्विकायना जीव वे प्रकारे
कहेल छे ते कहे छे. प्रणित ते स्वकाय पर-
काय शस्त्रे करी कालयी थोडे काले अचित
थयेला १, शस्त्रे करी अचित थयेला नथी ते
सचित २ ए वे भेद छे.

एम पाणी १, अग्नी २, वायु, ३, वन-
स्पति ४. ए चारे स्वावरमां शस्त्रे करी प्रणित १
अने शस्त्रे करी अप्रणित २, ए वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे द० पर्याय फेर धाय ते
पं० कद्या तं० ते ज० कहुं हुं प० पर्याय
फर्या ते द्रव्य चे० निश्चे अ० नथी फर्या पर्याय
ते द्रव्य चे० निश्चे.

दुविहा द्वा पन्नता । तं जहा । प-
रिणया चैव अपरिणया चैव ॥ [१६] ॥ ६ ॥

भावार्थ-वे प्रकारनां पुद्गलरूप द्रव्य कहेल
छे ते कहेछे, प्रणित द्रव्य ते वर्ण, गंध, रस

स्पर्श पलटाय, जेम धोळा वखने राते रंगे रंगवाथी रातुं थयुं ने धोळाना पर्याय फर्या एम सर्व द्रव्यने विषे जाणवुं १ वीजां अप्रणित द्रव्य ते जेहनी वर्णादिकनी पर्याय फरी नथी. २ ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे प्रकारे पु० पृथ्विकाया पं० कहा तं० ते ज० कहुं छुं ग० विग्रह गतिए करी उपजवाने थानके गमन स० करे ते चे० निश्चे अ० स० उपना ते थानके रखा छे ते चे० निश्चे.

दुविहा पुढविकाइया पन्नत्ता । तं जहा । गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव ॥ [१७] ॥ ७ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पृथ्विकायना जीव कहेला छे ते कहेछे पृथ्विकायना जीव विग्रह गति करी उपजवाने स्थानके गमन करे ते गति समापन्न १, जीहां आवीने उपना छे तिहांज रखा छे ने विग्रह गति करी नथी ते अगति समापन्न २ ए वे भेद छे.

अर्थ-ए०एम जा० यावत व० वनस्पति-काय लगे.

एवं जाव वणस्सइकाइया ॥ [१८-२१] ॥ ८ ॥

भावार्थ-एम पाणी १, अग्नी २, वायु ३, वनस्पति ४ ए चारेने विषे गति समापन्न १ अगति समापन्न २ ए वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे द० द्रव्य ग० गति गमन स० करता द्रव्य चे० निश्चे अ० स० उपना ते थानके रखा छे ते चे० निश्चे

दुविहा दवा गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव ॥ [२२] ॥ ९ ॥

भावार्थ-वे प्रकारे द्रव्य कहेल छे ते कहेछे. एक जग्याएथी वीजी जग्याए जना द्रव्य ते

गति समापन्न १ जीहां छे तीहांज रहेल छे ने वीजी जग्याए द्रव्य जता नथी ते अगति समापन्न २ ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे भेदे पु० पृथ्विकाय पं० कहा तं० ते ज० कहुं छुं अ० एक समय जीव पृथ्विकाय प्रदेशे उपनोते चे० निश्चे प० वे त्रण समय थया जीव पृथ्विकाय प्रदेशे उपनोते चे० निश्चे जा० यावत द० द्रव्य स्वरूप.

दुविहा पुढविकाइया पन्नत्ता । तं जहा । अणन्तरोगाढगा चेव परंपरोगाढगा चेव जाव दवा ॥ [२३-२८] ॥ १० ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पृथ्विकायना जीव कहेल छे ते कहे छे. पृथ्विकायना जीव हमणाज समये कोइ आकाश प्रदेशे आवी रह्यो ते अनंतरो वगाढ १ जेहने आकाश प्रदेशे रखां वे त्रणादीक समय थया छे ते परंपरोवगाढ २ ए वे भेद छे.

एम यावत द्रव्यनुं स्वरूप कहुं.

अर्थ-दु० वे भेदे का० काल पं० कहा तं० ते ज० कहुं छुं ओ० उतरतो आरो चे० निश्चे उ० चढतो आरो ते चे० निश्चे.

दुविहे काले पण्णत्ते । तं जहा । ओसप्पिणिकाले चेव उस्सप्पिणिकाले चेव ॥ १ ॥

भावार्थ-हवे काळनुं स्वरूप कहे छे. वे प्रकारे काळश्री भगवंते कहेल छे ते कहे छे. दसक्रोडाक्रोडी सागरोपम सुधी पडतो समय तेहना छ आरा तेमां पहेलो सुसम सुसमा १ वीजो सुसम २ त्रीजो सुसम दुसम ३ चोयो दुसम सुसम ४ पांचमो दुसम ५ छटो दुसम दुसमा ६ ते अवसप्पिणि काल. १ दश क्रोडाक्रोडी सागरोपम सुधी चढतो तेहना

मां

દુઃખ. ૨ ત્રીજો દુસમ સુસમા તે દુઃખ ઘણું
ને સુખ થોડું ૩ ચોથો સુસમ દુસમા તે સુખ
ઘણું ને દુઃખ થોડું ૪ પાંચમો સુસમ તે એકલું
સુખ ૫ છઠ્ઠો સુસમ સુસમા તે સુખમાં અત્યંત
સુખ ૬ તે ઉત્સર્પિણિ કાલ. ૨ એ વે ભેદ છે.

અર્થ—દુ૦ વે ભેદે આ૦ અવકાશ આપે
જીવને પં૦ કહ્યા તં૦ તે જ૦ કહું છું લો૦
૧૪ રાજ પ્રમાણ લોકાકાશ વે૦ વલ્લી અ૦
અલોક અનંતો વે૦ નિશ્ચે.

દુઃખિહે આગાસે પળ્ણત્તે । તં જહા ।
લોગાગાસે વેવ અલોગાગાસે વેવ ॥૨૧॥

ભાવાર્થ—જીવ અને દ્રવ્યને અવકાશ આપે
તે આકાશ વે પ્રકારે કહેલ છે તે કહે છે.
સાતમી નરકથી માંડી સિદ્ધ લગી ચૌદરાજ
પ્રમાણે ંચો જેહમાં ધર્માસ્તિકાય ? અધર્મા-
સ્તિકાય ૨ આકાસ્તિકાય ૩ પુદ્ગલાસ્તિક-
કાય ૪ જીવાસ્તિકાય ૫ કાલ ૬ એ છ
દ્રવ્ય છે તે લોક આકાશ ? જેહમાં એકલો
આકાશજ છે, અને વીજાં પાંચ દ્રવ્ય નથી તે
અલોક આકાશ ૨ એ વે ભેદ છે.

અર્થ—ને૦ નારકીને દો૦ વે સ૦ શરીર પં૦
કહ્યા તં૦ તે જ૦ કહું છું અ૦ જીવના પ્રદેશ સં-
ઘાતે મઠ્ઠી રહું છે તે વે૦ નિશ્ચે વા૦ જીવ પ્ર-
દેશથી કાંઈક મઠ્ઠ્યું કાંઈક અલગું વે૦ નિશ્ચે
અ૦ અભ્યંતર શરીર તે ક૦ કાર્મણ તેજસ વા૦
વાહિર વે૦ વૈક્રેય શરીર એ૦ એમ ઢે૦ ઢેવ-
તાને મા૦ જાણવું.

નેરહ્યાણં દો સરીરગા પળ્ણત્તા ।
તં જહા । અઞ્ચિન્તરણ વેવ વાહિરણ
વેવ । અઞ્ચિન્તરણ કમ્મણ વાહિરણ
વેવણિણ । એવં દેવાણં માણિયવં ॥૨૧॥

ભાવાર્થ—નારકીને વે શરીર કહેલ છે તે
કહે છે. જીવના પ્રદેશ સ્ત્રીર (દુઃખ) નીરની
પેરે મઠ્ઠી રહેલ છે તે અભ્યંતર શરીર ? જી-

વના પ્રદેશથી અલગું, કાંઈક મઠ્ઠી રહેલું છે,
પણ પરભવે સાથે જાય નહીં વાહીર શરીર ૨૦
અભ્યંતર શરીર તે તેજસને કાર્મણ ૧ અને
વાહીર તે વૈક્રેયશરીર ૨ એ વે ભેદ છે એમ
દેવતાને પણ અભ્યંતર ને વાહીર એવાં વે શ-
રીર જાણવાં.

અર્થ—પુ૦ પૃથ્વિ કાયને દો૦ વે સ૦ શ-
રીર પં૦ કહ્યા તં૦ તે જ૦ કહું છું અ૦ અભ્યંતર
વે૦ નિશ્ચે વા૦ વાહ્ય શરીર વે૦ નિશ્ચે અ૦
અભ્યંતર ક૦ કાર્મણ શરીર વા૦ વાહ્ય તે ઓ૦
ઉદારિક શરીર જા૦ યાવત વ૦ વનસ્પતિકા
યજ્ઞો જાણવું.

પુદ્ગલિકાહ્યાણં દો સરીરગા પળ્ણત્તા ।
તં જહા । અઞ્ચિન્તરણ વેવ વાહિરણ
વેવ । અઞ્ચિન્તરણ કમ્મણ વાહિરણ
ઓરાણિણ જાવ વળ્ણસ્સહકાહ્યાણં ॥૨૧॥

ભાવાર્થ—પૃથ્વિકાયના જીવને વે શ-
રીર કહેલ છે તે કહે છે અભ્યંતર ૧ અને
વાહીર ૨૦ અભ્યંતર તે હાડ માંસ વિનાહું તે-
જસ ને કાર્મણ શરીર ૧ વીજુ વાહીર તે
ઉદારિક શરીર ૨ એ વે ભેદ છે. એમજ પા-
ણી, ૧ અગ્ની, ૨ વાયુ, ૩ વનસ્પતિ, ૪ એ
ચારને અભ્યંતર તેજસ ને કાર્મણ શરીર ૧
વાહીર વાયુ વર્જિ ંણને ઉદારિક અને વાયુને
ઉદારિક ને વૈક્રેય શરીર ૨ એવાં વે વે શરીર
જાણવા.

અર્થ—વે૦ વેદ્વિન્દ્રને દો૦ વે સ૦ શરીર પં૦
કહ્યા તં૦ તે જ૦ કહું છું અ૦ એક અભ્યંતર શરીર
વે૦ વલ્લી વા૦ વાહ્ય શરીર વે૦ વલ્લી અ૦ અભ્યં-
તર તે ક૦ કાર્મણ તેજસ અ૦ હાડ મં૦ માંસ
સો૦ સ્થિર વ૦ તેણે વાંચ્યું વા૦ વાહ્ય શરીર
ઓ૦ ઉદારિક જા૦ યાવત વ૦ તેન્દ્રિ ચૌરિ-
ન્દ્રિતાટ એમજ.

વેદ્વિન્દ્યાણં દો સરીરગા પળ્ણત્તા ।
તં જહા । અઞ્ચિન્તરણ વેવ વાહિરણ વેવ

व । अन्विन्तरए कम्मए अट्टिमंससो-
णियवद्धे बाहिरए ओरालिए । जाव
चउरिन्दियाणं ॥ ३ ॥

भावार्थ-वेइंद्रिने वे शरीर कहेल छे ते
कहेछे. अभ्यंतर १, अने बाहिर २, अभ्यंतर
तेजसने कर्मण शरिर १, बाहिर हाड मांस
सधिरे बांधेलुं उदारिक शरिर २, ए वे भेदछे.
एम तेइंद्रि चौरिन्द्रिने पण जाणवुं.

अर्थ-प० पंचेन्द्रि ति० तिर्यच जो० जो-
नियाने दो० वेस० शरीर पं० कहा तं० तेज०
कहुंछुं अ० अभ्यंतर शरीर चे० निश्चे वा०
बाह्य शरीर चे० निश्चे अ० अभ्यंतर क० का-
र्मण तेजस अ० हाड मं० मांस सो० लोही
रा० नाडी छि० शिरा व० तेणे बांध्युं वा०
बाह्य ओ० उदारिक.

पञ्चिन्दियतिरिक्खजोणियाणं दो स-
रीरगा पण्णत्ता । तं जहा । अन्विन्तर-
ए चेव बाहिरए चेव । अन्विन्तरए
कम्मए अट्टिमंससोणियराहारुत्थिरावद्धे
बाहिरए ओरालिए ॥ ४ ॥

भावार्थ-तिर्यच पंचेन्द्रिने वे शरिर कहेल छे
ते कहेछे, एक अभ्यंतर शरिर १, वीजुं बाहिर
शरिर २, अभ्यंतर तेजसने कर्मण १, अने
बाहिर हाड मांस लोही नाडी शिराये करी
बांधेलुं उदारिक शरिर २

अर्थ-म० मनुष्यने वि० पण ए० एमज
चे० निश्चे.

मणुस्साण वि एवं चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ-एमज माणसने पण जाणवुं
ए वे भेद छे.

अर्थ-वि० वांकि ग० गति स० करताते

ने० नारकीने दो० वे स० शरीर पं० कहा तं०
ते ज० कहुंछुं ते० तेजस चे० वळी क० कर्मण
चे० वळी नि० निरंतर जा० यावत वे० वै-
मानिक ताइ जाणवुं.

विग्गहगइसमावन्नगाणं नेरइयाणं दो
सरीरगा पण्णत्ता । तं जहा । तेयए
चेव कम्मए चेव । निरन्तरं जाव वे-
माणियाणं ॥ ६ ॥

भावार्थ-उपजवाने स्थानके वांकी चाली
जाय ते विग्रह गति समापन्न नारकीने वे श-
रिर कहेल एक तेजस शरिर १ वीजुं कर्मण
शरिर २, एम यावत् आंतरा रहीत वैमानिक
सुधी चौवीस दंडके वे वे शरिर जाणवा.

अर्थ-ने० नारकीने दो० वे ठा० थानके सा०
शरीरनी उ० उत्पती छे तं० तेज० कहुंछुं रा०
रागे करी चे० निश्चे दो० द्वेषेकरी चे० निश्चे
जा० यावत वे० वैमानिक ताइ जाणवुं.

नेरइयाणं दोहिं ठाणेहिं सारीरुप्पत्ती
सिया । तं जहा । रागेण चेव दोसेण
चेव । जाव वेमाणियाणं ॥ ७ ॥

भावार्थ-नारकीने वे स्थानके करी शरि-
रनी उत्पती ते शरिर वंधाय छे ते वे स्थानक
कहेछे. रागे करीने १, द्वेषे करीने २ एम वै-
मानिक सुधी चौविस दंडके जाणवुं.

अर्थ-ने० नारकीने दु० वे ठा० थानके नि०
अवयव पुरानीपना ते स० शरीरना पं० कहे छे
तं० तेज० कहुंछुं रा० रागयी नि० निवर्तना
ते चे० वळी दो० द्वेष थीकी निवर्तना चे०
निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे.

नेरइयाणं दुट्ठाणनिवत्तिए सरीरगे
पण्णत्ते । तं जहा । रागनिवत्तिए चेव

दोसनिवृत्ति ए चैव । जाव वेमाणिया-
णं ॥ ८ ॥

भावार्थ—नारकीने वे स्थानके करी शरी-
रनी निवर्तना ते शरिरना अवयव पुरा निपना
ते कहेछे. एक रागयी निवर्तना १ वीजी द्वेषयी
निवर्तना २, रागद्वेषे करी शरिर उपजे निव-
र्तना होय एम वैमानिक सुयी चौविस ढंडके
जाणवुं.

अर्थ—दो० (२४ ढण्डके) वे का० कायाराशि
पं० क्हा तं० ते ज० कहुंछुं त० वेइंद्रि प्रमुख
त्रस चे० निश्चे था० पृथिव प्रमुख चे० वळी.

दो काया पणत्ता । तं जहा । तस-
काए चैव थावरकाए चैव ॥ १ ॥

भावार्थ—वे काय ते राशी समुह कहेल छे
ते कहेछे, जे दुःख देखी त्रस पामी दुःखनी
जग्याएथी चाली सुखनी जग्याए जाय ते
त्रस जीवनो समुह ते त्रसकाय ?, अने स्थीर
रहेते स्थावरकाय २. ए वे भेद छे.

अर्थ—त० त्रसकायना दु० वे भेद पं० क्हा
तं० ते ज० कहुंछुं भ० मोक्ष जास्येते चे० निश्चे
अ० मोक्ष नहीं जायते चे० निश्चे.

तसकाए दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
भवसिद्धिए चैव अभवसिद्धिए चैव । २ ॥

भावार्थ—त्रसकायना वे प्रकार कहेल छे ते
कहेछे, मोक्षमां जसे ते भवसिद्धिया त्रस, कोइ
काले मोक्षमां जसे नहीं ते अभवसिद्धिया त्रस.

अर्थ—ए० एम था० थावर काय वि० पण.

एवं थावरकाए वि ॥ ३ ॥

भावार्थ—एम स्थावर कायना पण भव्य
अभव्य ए वे भेद जाणवा.

अर्थ—दो० वे दि० दिशिने अ० साहमा-

रहीने क० कल्पे नि० साधूने वा० तेमज
नि० साधवीने वा० तेमज प० वेप आपवो ते
पा० पूर्वदिशि चे० निश्चे उ० उत्तर दिशि
चे० निश्चे.

दो दिसाओ अभिगिज्ज कण्णइ नि-
गन्थाणं वा निगन्थीणं वा पवावित्त-
ए । पाईणं चैव उदीणं चैव ॥

भावार्थ—कल्पे साधु साध्वीने दिसादेवी
ओधो प्रमुख वेप आपवो.

अर्थ—ए० एम सु० लोच करवो.

एवं मुण्डावित्तए ॥ १ ॥

भावार्थ—मुंडन ते लोच करवो.

अर्थ—सि० शिपववुं सूत्रादिक.

सिक्खावित्तए ॥ २ ॥

भावार्थ—सूत्र अर्थ शिखववा.

अर्थ—उ० पांच महाव्रत थापवां ते.

उवट्ठावित्तए ॥ ३ ॥

भावार्थ—उटामण ते पंचमहाव्रत आरोपवां.

अर्थ—सं० जमवुं ते.

संभुञ्जित्तए ॥ ४ ॥

भावार्थ—मांडले जमवुं.

अर्थ—सं० संथारे वेसवुं ते

संवसित्तए ॥ ५ ॥

भावार्थ—संथारे वेसवुं.

अर्थ—स० सज्जाय तथा योग क्रियानुं उ०
कहेवुं ते.

सज्जायं उट्टिसित्तए ॥ ६ ॥

भावार्थ—सज्जाय तथा योगक्रियानुं कहेवुं.

अर्थ—स० सज्जाय स० परिचित करवुं ते.

सज्जायं समुट्टिसित्तए ॥ ७ ॥

भावार्थ—योगनी सामाचारी स्थीर परि-
चित्त करवी.

अर्थ—स० जोग क्रियानुं अ० धारवुं वी-
जाने कहेवुं ते.

सज्ज्ञायं अणुजाणित्तए ॥ ८ ॥

भावार्थ—योग क्रिया धारवी तथा वीजाने
कहेवी.

अर्थ—आ० अपराध कहेवो गुरु आगल.

आलोइत्तए ॥ ९ ॥

भावार्थ—करेला अपराध गुरुनी पासे कहेवा.

अर्थ—प० पापथी ओसरवुं पडिकमणुंकरवुं ते.

पडिकमिच्चए ॥ १० ॥

भावार्थ—पडिकमणुं (पाप कर्मथी निवर्तवुं)
करवुं.

अर्थ—नि० पाप निंदवुं आत्मा साथे.

निन्दिच्चए ॥ ११ ॥

भावार्थ—पोतानां करेल पाप आत्मानी
साक्षीए निंदवां.

अर्थ—ग० गुरुसाखे पाप निंदवुं.

गरहित्तए ॥ १२ ॥

भावार्थ—करेल पाप गुरुनी साक्षीए निंदवा.

अर्थ—वि० पापबंधनुं छेदवुं.

विउट्टित्तए ॥ १३ ॥

भावार्थ—पाप बंधनुं छेदवुं.

अर्थ—वि० आत्मा शुद्ध करवो पापथी.

विसोहित्तए ॥ १४ ॥

भावार्थ—अतिचारना मेलथी आत्माने शुद्ध
करवो.

अर्थ—अ० फरी पाप नही करू तेहने अर्थे
अ० उजमाल धारुं ते.

अकरणयाए अब्भुट्टित्तए ॥ १५ ॥

भावार्थ—फरी पाप नहीं करवाने अर्थे उ-
द्यम करवो.

अर्थ—अ० यथाजोग पा० पाप छेदवाने
त० तप करवो प० आदरवो ते पूर्व तथा
उत्तर सामा रहीने आदरवो.

अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडि-
वज्जित्तए ॥ १६ ॥

भावार्थ—यथायोग अतिचारने अनुसारे
प्रायश्चित लेवुं पाप छेदवां टालवाने तप कर्म
अंगिकार करवां. एटला उपरना १६ बोल पूर्व
तथा उत्तर ए वे दिशा सन्मुख रहीने आदरवां.

अर्थ—दो० वे दि० दिशाए अ० सन्मुख
रहीने क० कल्पे नि० साधूने वा० अने नि०
साधवीने वा० अने अ० पाछली मा० मरण-
ने सं० अणसण झु० तेहनी सेवा झु० सेवतां
भ० भात पा० पाणीने प० तजे पा० वृक्षनी
डाल कापी तेनी परे थिर का० मरणने अ०
अणवांचतो वि० रहे ते वे दिशाए तं० ते
ज० कहुं छुं पा० पूर्वदिशे चे० वळी उ० उ-
त्तर दिशे चे० वळी.

दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ
निग्गन्थाणं वा निग्गन्थीणं वा अप-
च्छिममारणन्तियसंलेहणाञ्जूसणाञ्जूसि-
त्ताणं भत्तपाणपाडियाइक्खेत्ताणं पाओ-
वत्ताणं कालं अणवकङ्खमाण्णं विह-
रित्तए । तं जहा । पाईणं चैव उदीणं
चैव ॥

भावार्थ—कल्पे साधु साध्वीने छेहळुं मर-
णनुं मगळीक माटे अपछीम कहीए सलेखणा
ते अणसण, झुसणा ते तेहनी सेवाए करी स-

हीत, देह मुकता भात पाणीनुं जाव जीव ल-
गि पचखाण करतां कापेली वृक्षनी डाळ
जिहां पडी तिहांज रहे तेहनी परे हाथ पगादी
क नहीं हलावतां स्थीर रहेवुं मरणने अणवांछवुं
ए रिते अणसण करवुं ते पूर्व अने उत्तर ए
वे दिशाए सन्मुख रहीने करवुं.

अर्थ-वि० वे ठा० ठाणांनो प० पहेलो
उ० उदेसो स० पूरो थयो.

विट्टाणस्स पढमो उद्देसओ समत्तो
भावार्थ-इतिश्री वीजा ठाणांगना प्रथम
उद्देशानो भावार्थ संपूर्णम्.

(अह दुट्टाणस्स वीयो उद्देसओ ।)

अर्थ-जे० जे दे० देवता उ० उर्थ लो०
लोके उ० उपना छे ते वे भेदे छे. क० १२
देव लोकना उ० उपना वि० ९ प्रेवेक ५
अनुत्तर विमानना उ० उपना चा० चाले
भमे ते ज्योतिपी अही द्वीपना उ० उपना
चा० स्थिर ज्योतिपी अही द्वीप वहारना ग०
चालवाने विपे २० राता छे गइ० गमन स०
पडिवर्ज्या छे ते० ते दे० देवताने स० सदा-
य स० नित्य जे० जे पा० पाप क० कर्म क०
बंधाय छे त० तेज देवताने ग० भवे वि०
पण ए० केटलाएक वे० वेदना वे० भोगवे.
अ० भवांतरे ग० जइ वि० ने ए० केटलाएक
वे० वेदना वे० भोगवे छे.

जे देवा उड्डुलोगोववन्नगां कप्पोवव-
न्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा
चारड्डिया गइइया गइसमावन्नगा
तेसिणं देवाणं सया समियं जे पावे
कम्मे कज्जइ तत्थगया वि एगइया
वेयणं वेदेन्ति अन्नत्थगया वि एगइया
वेयणं वेदेन्ति ॥ १ ॥

भावार्थ-जे देवता उर्द्ध (उंचा) लोके

उपना छे तेहना वे प्रकार श्री भगवंते कहेल
छे ते कहे छे, वार देवलोके उपना ते क-
ल्पवासी १ नव प्रेवेयगने पांच अनुत्तर वि-
माने उपना ते कल्पातीत २ ए वे भेद छे, जो-
तिपीदेवता वे प्रकारे छे ते कहे छे, अही द्वीपे
मनुष्य क्षेत्रमां जोतिपी छे ते चाले छे भंम
छे १, अही द्वीपनी वाहीर स्थीर छे २,
चालवाने विपे जेहने रती (खुशी) छे १,
मनुष्यक्षेत्रना गमनने पडी वर्ज्या छे २ ए वे
भेद छे, ते पुर्वोक्त देवताने सदाय नित्ये जे
पापकर्म उपजे छे, बंधाय छे ते पापकर्म केट-
लाएक देवता तो तेह देवतानाज भवने विपे
वेदना वेदे छे भोगवे छे. १ केटलाएक देव
भवांतरे ते वीजे भवे जइने कर्म वेदे छे भोग-
वे छे २ ए वे भेद छे.

अर्थ-ने० नारकी स० सदा स० निरंतर
जे० जे पा० पाप क० कर्म क० बांधे त०
तेज ग० भवे वि० पण ए० केटलाएक वे०
वेदना वे० भोगवे अ० वीजे भवांतरे ग०
गया थका वि० पण ए० केटलाएक नारकी
वे० पाप फल एटले वेदना वे० भोगवे छे
ए० एम जा० यावत पं० पंचेन्दी ति० तिर्यक्
जो० जोनियाने.

નેરડયાણં સયા સમિયં જે પાવે ક-
મ્મે કજ્જઇ તથગયા વિ ઇગડયા વે-
યણં વેદેન્તિ અન્નત્યગયા વિ ઇગડયા
વેયણં વેદેન્તિ । એવં જાવ પશ્ચિન્દિ-
યતિરિક્ષ્વજોણિયાણં ॥ ૨ ॥

ભાવાર્થ—નારકી જે સદા સર્વદા નિરંતર
પાપકર્મ કરે છે, વાંધે છે તે પાપનાં ફલ કે-
ટલાએક નારકી તો તીહાંજ નર્કમાં રહ્યા વેદના
વેદે છે, ભોગવે છે ૧ કેટલાએક નારકી વીજે
ભવાંતરે જઇને પાપનાં ફલ વેદે છે ભોગવે છે
૨ એ વે ભેદ છે. એમ યાવત્ પાંચ સ્થાવર, ત્રણ
વિગલેન્દ્રિ, પચેન્દ્રિ તિર્યચ તે જે ભવમાં પાપ
કરે તેહજ ભવમાં ભોગવે. ૧ અને વીજે ભવે
પણ ભોગવે છે ૨ એ વે ભેદ છે.

અર્થ—મનુષ્યને એમજ જાણવું સં સદા સં
નિરંતર જેં જે પાં પાપ કં કર્મ કં કરે છે
તે ઇં એજ ગં ભવે વિં પણ એં કેટલાએક
વેં કર્મ ફલ વેં ભોગવે અં વીજે ભવાંત-
તરે ગં ગયા થકા વિં પણ એં કેટલાએક
વેં વેદના વેં ભોગવે છે.

મણુસ્સાણં સયા સમિયં જે પાવે
કમ્મે કજ્જઇ ઇહગયા વિ ઇગડયા વેયણં
વેદેન્તિ અન્નત્યગયા વિ ઇગડયા વેયણં
વેદેન્તિ ॥ ૩ ॥

ભાવાર્થ—જે મનુષ્ય સદા સર્વદા પાપ કરે
છે તે કેટલાએક મનુષ્ય તેહજ ભવને વિષે
પાપનાં ફલ વેદે છે ભોગવે છે ૧ કેટલાએક
મનુષ્ય વીજે ભવાંતરે જઇને પાપનાં ફલ વેદે
છે ભોગવે છે. ૨ એ વે ભેદ છે.

અર્થ—મં મનુષ્ય વં વર્જિને સેં વીજા
એં એમજ જાણવા.

મણુસ્સવજ્જા સેસા એકગમા ॥૪॥

ભાવાર્થ—મનુષ્ય વર્જિને શેષ વીજા દંડક
તે ભવનપતિ, વાળ વ્યંતર જોતિષી વૈમાનિક
એક ગમા સરસાં જાણવાં.

અર્થ—નેં નારકી જીવની દું વે ગં
ગતિ છે દું વે આં આવવાની ગતિ છે. પં
કહી છે તં તે જં કહું હું નેં નરકતું
આહુપું વાંધ્યું નેં તે નરકમાં ઉં ઉપજતો
થકો મં મનુષ્યથકી વાં અથવા પં પંચે-
ન્દ્રિ તિં તિર્યચ જોં જોનિ માંહિથી એ વે-
માંથી વાં વલી ઉં નારકી થાય.

નેરડયા દુગડયા દુઆગડયા પળ્ણ-
તા । તં જહા । નેરડા નેરડાસુ ઉવ-
વજ્જમાણે મણુસ્સેહિંતો વા પશ્ચિન્દિ-
યતિરિક્ષ્વજોણિએહિંતો વા ઉવવજ્જે-
જ્જા ॥ ૧ ॥

ભાવાર્થ—નારકીને જાવાની વે ગતિ અને
આવવાની વે આગતિ કહેલ છે તે કહે છે.
જેણે નારકીનું આયુષ્ય વાંધ્યું છે તેહને નાર-
કીજ કહીએ તે નરકમાં ઉપજે તો મનુષ્યમાંથી
૧ અથવા પચેન્દ્રિ તિર્યચમાંથી ૨ એ વે માંહી-
થીજ નારકી થાય.

અર્થ—સેં તેહજ ચેં નિશ્ચે પંં વલી નેં
નારકીને નેં નારકીપણું વિં મુક્તો થકો મં
મનુષ્યપણું વાં અથવા પંં પંચેન્દ્રિ તિર્યચ
જોં યોનિ ગં પામે.

સે ચેવ ણં નેરડા નેરડયત્તં વિપ્પજ-
હમાણે મણુસ્સત્તાએ વા પશ્ચિન્દિયતિ-
રિક્ષ્વજોણિયત્તાએ ગચ્છેજ્જા ॥ ૨ ॥

ભાવાર્થ—વલી તેહજ નારકીપણું મુક્તી નર-
કમાંથી નિસરી મનુષ્યમાં ૧ અથવા પચેન્દ્રિ

तिर्यचमां आवी उपजे २. ए वे ठेकाणे आवे जाय.

अर्थ-ए० एम अ० असुरकुमार वि० पण जाणवा (नारकी पेटे) ण० एटलो विशेष से० ते चे० निश्चे णं० वळी अ० असुरकुमार अ० असुरकुमारनो भव वि० मुकतो थको म० मनुष्यपणुं वा० अथवा ति० तिर्यच जो० योनी वा० अथवा ग० पामे.

एवमसुरकुमारा वि । णवरं से चेव णं असुरकुमारे असुरकुमारत्तं विष्णजहमाणे मणुस्सत्ताए वा तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा ॥ ३ ॥

भावार्थ-एम नारकीनी पेरे असुरकुमार जाणवा पण एटलो विशेष जे ते असुरकुमार देवता असुरकुमारपणुं मुकतो थको पृथ्वि १ पाणी २ वनस्पती ३ संज्ञी मनुष्य ४ संज्ञी तिर्यच पचेंद्रि ५ ए पांचमां आवी उपजे.

अर्थ-ए० एम स० सघळा दे० देवता जाणवा.

एवं सवदेवा ॥ ४ ॥

भावार्थ-एम दसे भवनपति, वाणव्यंतर जोतिपी वैमानिकमां वीजा देवलोक मुधी सर्वदेवताने असुरकुमारनी पेरे जाणवुं. [त्रीजाथी आठमा देवलोक मुधीना देवता संज्ञी मनुष्य ? संज्ञी तिर्यच २ ए वेमांथी आवी उपजे अने ए वे मांहीज जाय, नवमांथी स्वार्थसिद्ध मुधीना देवता एक मनुष्यमांथी आवी उपजे अने मनुष्य मांहीज जाय.]

अर्थ-पु० पृथ्विकायना जीव दु० वे गतिमांदि ग० जाय दु० वे आ० गतिमांथी आवे प० कला नं० ने ज० कहुं लुं. पु० पृथ्विकायनुं आउणुं वांथी पु० पृथ्विकायने विपे उ० उपजतो थको पु० पृथ्विकाय मांदि वा०

अथवा नो० नारकी वजीं वीजा सर्वमांथी वा० अथवा उ० उपजे ते.

पुढविकाइया दुगइया दुआगइया पण्णत्ता । तं जहा । पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा नोपुढविकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा ॥ ५ ॥

भावार्थ-पृथ्विकायना जीवने वे गति वे आगतिथी भगवंते कहेल छे ते कहे छे. पृथ्विकायनुं आयुष्य वांथी पृथ्विकायमां उपजे ते पृथ्विकायमांथी वळी पृथ्विकायमां आवी उपजे ? पृथ्विकायमां नारकी वजीं त्रेवीस दंडकना आवी उपजे २, पृथ्विविना वीजा सर्वनोपृथ्वि कहीए.

अर्थ-से० ते चे० निश्चे णं० वळी पु० पृथ्विकायनो जीव पु० पृथ्विकायपणुं वि० मुकतो थको पु० पृथ्विकायमां उपजे वा० अथवा नो० नो पृथ्विकायपणे वा० अथवा ग० उपजे ए० एम जा० यावत मा० मनुष्य लगे.

से चेव णं पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विष्णजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा नोपुढविकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा । एवं जाव माणुस्सा ॥ ६ ॥

भावार्थ-वळी तेदज पृथ्विकायनो जीव पृथ्विकायपणुं मुकीने पृथ्विकामां जइ उपजे ? अथवा नोपृथ्वि ते देवता नारकी वजिंने वीजां सर्व म्यानके जाय, एम यावत त्रण विगलेंद्रिमां पांच स्थावर त्रण विगलेंद्रि मनुष्यने तिर्यच पचेंद्रि ए दस दंडकनो आवे ने ए दसमां जाय. तिर्यच पचेंद्रिमां आठमा देवलोकथी स्वार्थसिद्ध वजि चोविस दंडकनो

आवे ने चौबीसमां जाय, मनुष्यमां तेउ वायु-
ने सातमी नरक वर्जिने वावीस दंडकनो आवे
ने चौबीस दंडकमां जाय.

अर्थ-दु० वे० प्रकारे ने० नारकी प० कक्षा
तं० ते ज० कहुं छुं भव० भव्यनारकी चे०
निश्चे अ० अभव्य नारकी चे० निश्चे जा०
यावत वे० वैमानिक लगे २४ दण्डके जाणवुं.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
भवसिद्धिया चेव अभवसिद्धिया चेव ।
जाव वेमाणिया ॥ १ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेलछे
ते कहे छे. एक भव्यनारकी १ वीजा अभ-
व्यनारकी २ ए वे भेद छे एम यावत् वैमा-
निक सुधी चौविस दंडके जाणवुं.

अर्थ-दु० वे प्रकारे ने० नारकी प० कक्षा
तं० ते ज० कहुं छुं अ० एक समये घणा उपना
ते चे० निश्चे पं० एकेकी समे एकेको उपनो
ते चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे
२४ दण्डके.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
अणन्तरोववन्नगा चेव परंपरोववन्नगा
चेव । जाव वेमाणिया ॥ २ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे
ते कहे छे. एक समे घणा एकटा उपना १
एक समे एक, वीजे समे वीजो एम परंपराए
उपना २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे
भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कक्षा
तं० ते ज० कहुं छुं ग० नरकमां जाता अथवा
तरत उपना ते चे० निश्चे अ० घणा कालना
छे ते चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक
लगे जाणवा.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा
चेव । जाव वेमाणिया ॥ ३ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे
ते कहे छे. नरकमां जाता होय तथा नरकमां
तरत उपना ते गति समापन १ घणा कालना
तीहां छे ते अगति समापन २ ए वे भेद छे
एम यावत् वैमानिक सुधी गतिसमापन १
अगतिसमापन २ ए.वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कक्षा तं०
ते ज० कहुं छुं प० प्रथम समय उ० उपना चे०
निश्चे अ० वीजा वीजे समये उपजा चे०
निश्चे जा० यावत वैमानिक लगे २४ दण्डके

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
पढमसमओववन्नगा चेव अपढमसम-
ओववन्नगा चेव । जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे
ते कहे छे. प्रथम समयना उपना १ अप्रथम
समयना उपना ते वीजा वीजादीक समयना
उपना २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे
भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कक्षा तं०
ते ज० कहुं छुं आ० आहारवंत चे० निश्चे
अ० विग्रहगति ते १-२ समे अणाहारी चे०
निश्चे जा० यावत वे० वैमानिक लगे २४ दण्डके

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
आहारगा चेव अणाहारगा चेव । जा-
व वेमाणिया ॥ ५ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे
ते कहेल छे. आहारिक ते केटला एक नारकी
हमेशां आहार लेछे १ अणाहारिक ते विग्रह
गति करी नरकमां उपजे ते वारे. एक वे समे

अणाहारि होय एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे प्रकारे ने० नारकी पं० कथा तं० ते ज० कहुं हूं उ० श्वासोश्वास लीए ते पर्याप्ता चे० निश्चे नो० जे श्वासोश्वास नथी लेता ते अपर्याप्ता चे० निश्चे जा० यावत् वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नता । तं जहा ।
उस्सासगा चेव नोउस्सासगा चेव ।
जाव वेमाणिया ॥ ६ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. एक पर्याप्ता नारकी छे ते श्वासो-श्वास लेछे १ वीजा अपर्याप्ता नारकी छे ते श्वासोश्वास लेता नथी २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कथा तं० ते ज० कहुं स० इन्द्रि सहित चे० निश्चे अ० इन्द्रि रहित चे० निश्चे जा० यावत् वे० वैमानिक लगे

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
सइन्दिया चेव अणिन्दिया चेव । जाव
वेमाणिया ॥ ७ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे. जेणे पर्याय पुरी करी छे ते इन्द्रि सहित छे. १ जेणे पर्याय पुरी करी नथी ते इन्द्रि रहित छे २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कथा तं० ते ज० कहुं हूं पं० पर्याप्ता नाम कर्मथी चे० निश्चे अ० पर्याप्ति पुरी नथी थइ ते चे० निश्चे जा० यावत् वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।

पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव । जा-
व वेमाणिया ॥ ८ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे एक पर्याप्ता १ वीजा अपर्याप्ता २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे प्रकारे ने० नारकी पं० कथा तं० ते ज० कहुं हूं स० मन पर्याप्ति सहित चे० निश्चे अ० मन पर्याप्ति पुरी थइ नथी ते चे० निश्चे ए० एक पं० पचेन्द्रि स० सर्व जाणवा वि० वेइन्द्रि, तेइन्द्रि, चउरिन्द्रि वर्जिने जा० यावत् वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
सन्नी चेव असन्नी चेव । एवं पश्चि-
न्दिया सवे विगलिन्दियवज्जा जाव
वेमाणिया ॥ ९ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते कहे छे मन पर्याय सहित ते संज्ञी १ मन पर्याय हजु नथी थइ ते असंज्ञी २ ए वे भेद छे. पांच स्यावर अने त्रण विगलेंद्रिने मननथी तेथी ए आठ वर्जिने यावत् वाणव्यंतर सुधी (इहां वैमानिक पण लेवा) ए सर्व पचेन्द्रिमां संज्ञी असंज्ञी ए वे वे भेद छे (असंज्ञी पचेन्द्रि मरीने नारकी भवनपति वाणव्यंतर सुधी उपजे छे अने जोतिपी वैमानिकमां एकला संज्ञीज उपजे छे तेथी इहां वाणव्यंतर सुधी कहेल छे.)

अर्थ-दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कथा तं० ते ज० कहुं हूं भा० भासक चे० निश्चे अ० अभासक चे० निश्चे ए० एम ए० एकेन्द्रि वर्जिने स० सर्वने.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।

भासगा चेव अभासगा चेव । एवं
एगिन्दियवज्जा सवे ॥ १० ॥

भावार्थ—वे भेदे नारकी कहा छे, भासक
अने अभासक एम वे भेद छे. एम एकेन्द्रि व-
र्जिने सर्व दंडके जाणवुं.

अर्थ—दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कहा तं०
ते ज० कहुं छुं स० समकित दृष्टी नारकी चे०
निश्चे मि० मिथ्यात्वी नारकी चे० निश्चे
ए० एकेन्द्रि वर्जित स० सर्व दंडके.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
सम्मदिट्टिया चेव मिच्छदिट्टिया चेव
एगिन्दियवज्जा सवे ॥ ११ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे
ते कहे छे. एक समकित द्रष्टी, बीजा मिथ्यात्व
द्रष्टी २ एम एकेन्द्रिय वर्जिने सर्व १९ दंडकमां
समकित द्रष्टीने मिथ्यात्व द्रष्टीए वे वे भेद
जाणवा.

अर्थ—दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कहा तं०
ते ज० कहुं छुं प० भव थोडाहोय ते चे० नि
श्चे अ० अनंत संसारी छेते चे० वळी जा०
यावत वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
परित्तसंसारिया चेव अणन्तरसंसारिया
चेव । जाव वेमाणिया ॥ १२ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे
ते कहे छे. जे नारकीने थोडा भव करवाना
होय ते परित्त संसारी १ जेहने घणा भव
करवाना होय ते अनंतसंसारी २ एम यावत
वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ—दु० वे प्रकारे ने० नारकी पं० कहा
तं० ते ज० कहुं छुं स० संख्याता का० काल

स० समय द्वि० स्थितिना चे० निश्चे अ० असं-
ख्याता का० काल स० समय द्वि० स्थितिना
चे० निश्चे ए० एम प० पंचेन्द्रि जाणवा ए०
एकेन्द्रि वि० विगलेंद्रि व० वर्जिने जा० यावत
वा० व्यंतर लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
संखेज्जकालसमयद्विइया चेव अ-
संखेज्जकालसमयद्विइया चेव । एवं
पश्चिन्दिया एगिन्दियविगलिन्दियव-
ज्जा जाव वाणमन्तरा ॥ १३ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे ते
कहेछे. एक संख्याता कालसमयनी स्थिति एटले
जघन्य दशहजार वरसनी स्थितिवाळा, बीजा
असंख्याता काल समयनी स्थिति ते पल्यो
पम सागरोपमनी स्थितिवाळा २ ए वे भेद
छे. पांच स्थावर, त्रण विगलेद्रिना असंख्याता
वरसनां आयुष्य नथी ते ए आठ वर्जि-
ने मनुष्य तिर्यच भवनपति वाणव्यंतर सुधी
वे वे भेद जाणवा. जोतिषी वैमानिकमां असं-
ख्याता वरसनां आयुष्य छे.

अर्थ—दु० वे भेदे ने० नारकी पं० कहा
तं० ते ज० कहुं छुं. सु० जिनधर्म पामवो सोहि-
लोछे ते चे० निश्चे दु० जिनधर्मनी प्राप्ति दो-
हिली छे ते चे० निश्चे जा० यावत वे० वैमा-
निक लगे जाणवा.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा ।
सुलभवोहिया चेव दुलभवोहिया
चेव । जाव वेमाणिया ॥ १४ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे नारकी कहेल छे,
ते कहे छे. एक सुलभ बोधी ते जेहने जैनध-
र्म पामवो सोहिलो छे १ बीजो दुर्लभ बोधी

ते जेहने जैनधर्म पामवो दोहिलो छे २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे ने० नारकी प० कहा तं० ते ज० कहुं छुं कि० भारे कर्मिं चे० वळी सु० हलुआकर्मिं चे० वळी जा० यावत् वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा किण्हपक्खिया चेव सुक्कपक्खिया चेव । जाव वेमाणिया ॥ १५ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेछ छे ते कहे छे. एक कृष्णपक्षि ते जेहने घणो संसार परिभ्रमण करवानुं छे ते भारे कर्मिं. १ बीजा शुक्लपक्षि ते जेहने कर्म थोटां छे संसार अल्प छे ने हलुवाकर्मिं. २ एम यावत् वैमानिक सुधी वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे ने० नारकी प० कहा तं० ते ज० कहुं छुं च० फरी नरकमां नही आवे ते चे० निश्चे अ० वळी नरकमां आवसे ते चे० निश्चे जा० यावत् वे० वैमानिक लगे.

दुविहा नेरइया पन्नत्ता । तं जहा । चरिमा चेव अचरिमा चेव । जाव वेमाणिया ॥ १६ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे नारकी कहेछ छे ते कहे छे. एक चरम ते फरी नरकमां नही आवे श्रेणीक कृष्ण प्रमुख १ बीजा अचरम ते बीजा भव करीने वळी फरी नरकमां आवसे २ यावत् वैमानिक सुधी वे भेद जाणवा.

अर्थ-दो० वे ठा० प्रकारे आ० जीव अ० अधो लो० लोकने जा० जाणे पा० देखे तं० ते ज० कहुं छुं स० विक्रय समुदघाते चे० वळी अ० अवधिज्ञाने करी आ० जीव अ० अधो लो० लोक प्रते जा० जाणे पा० देखे

अ० समुदघात विना चे० वळी अ० अवधिज्ञान दर्शने करी आ० जीव अ० अधो लो० लोकने जा० जाणे पा० देखे अ० अवधिज्ञानी स० विक्रय समुदघाते करी स० विक्रय समुदघात विना पण चे० वळी अ० आत्मा स्वभाव ज्ञाने करी आ० जीव अ० अधो लो० लोक जा० जाणे पा० देखे.

दोहिं ठणेहिं आया अहेलोगं जाणइ पासइ । तं जहा । समोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ असमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ अहोहिसमो हयासमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ ॥ १ ॥

भावार्थ-वे प्रकारे आत्मा अधो (नीचो) लोकने जाणे देखे ते कहेछे, विक्रय समुदघाते आत्मस्वभावे करी जीव अधो लोकने जाणे देखे ?, विक्रय समुदघात विना पण अवधिज्ञान अवधिदर्शने करी आत्म स्वभावेज अधोलोकने जाणे देखे. २ अधोवाते अवधिज्ञानी जीव तथा परम अवधिज्ञाननो धणी विक्रय समुदघाते करी तथा विक्रय समुदघात विना पण आत्म स्वभावे करी अधोलोकने जाणे देखे.

अर्थ-ए० एम ति० विछा लो० लोक प्रते जाणे देखे.

एवं तिरियलोगं ॥ २ ॥

भावार्थ-एमज विछालोकप्रते जाणे देखे.

अर्थ-उ० एम उर्द्ध लो० लोक प्रते.

उड्डलोगं ॥ ३ ॥

भावार्थ-एमज उर्द्ध लोकने पूर्वोक्त वे प्रकारे करी जाणे देखे.

अर्थ-के० एम १४ राज लो० लोक प्रते जाणे देखे.

केवलकल्पलोगं ॥ ४ ॥

भावार्थ-एमज केवललोक ते संपूर्ण चौद राजलोक प्रत्ये केवलज्ञान केवलदर्शने करी जाणे देखे.

अर्थ-दो० वे ठा० प्रकारे आ० जीव अ० अधो लो० लोक प्रते जा० जाणे पा० देखे तं० ते ज० कहुं छुं वि० विक्रय शरीर कीधुं जेणे एहवो चे० निश्चे अ० आत्मा स्वभावे करी आ० जीव अ० अधो लो० लोक प्रते जा० जाणे पा० देखे अ० विक्रय शरीर विना पण चे० वळी अ० स्वभावे आ० जीव अ० अधो लो० लोक प्रते जा० जाणे पा० देखे अ० अवधि ज्ञानी वि० विक्रय करीने वि० विक्रय कर्या विना चे० वळी अ० स्वभावेज आ० जीव अ० अधो लो० लोकने जा० जाणे पा० देखे.

दोहिं ठणेहिं आया अहेलोगं जाणइ पासइ । तं जहा । विउविएणं चव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ अविउविएणं चव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ अहोहिविउवियाविउविएणं चव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ ॥ १ ॥

भावार्थ-जेणे विक्रय शरीर करेछुं छे ते आत्मस्वभावे करी जीव अधोलोक प्रत्ये जाणे देखे १ विक्रय शरीर कर्या विनाज परम अवधिज्ञाननो धणी आत्मस्वभावे करी अधोलोक प्रत्ये जाणे देखे २, एम विक्रय शरीर करीने १ तथा अण-

करीने २ परम अवधिज्ञाने आत्मस्वभावे करी अधोलोक प्रत्ये जाणे देणे.

अर्थ-ए० एम ति० त्रिछो लो० लोक जाणे देखे.

एवं तिरियलोगं ॥ २ ॥

भावार्थ-एमज त्रिछालोकने जाणे देखे.

अर्थ-उ० उर्ध लो० लोक प्रते.

उड्डलोगं ॥ ३ ॥

भावार्थ-तथा उर्धलोकने पूर्वोक्त वे प्रकारे करी जाणे देखे.

अर्थ-के० समग्र लो० लोक प्रते जाणे,

केवलकल्पलोगं ॥ ४ ॥

भावार्थ-एमज समग्रलोक प्रत्ये जाणे देखे.

अर्थ-दो० वे ठा० धानके आ० जीव स० शब्द प्रते सु० सांभले तं० ते ज० कहुं छुं दे० देशथी एक काने वि० वळी आ० जीव स० शब्द प्रते सु० सांभले स० वे काने वि० अथवा संभिन्न श्रोता लब्धिनो आ० धणी सर्व इन्द्रिये करी स० शब्द प्रते सु० सांभले.

दोहिं ठणेहिं आया सदाइं सुणेइ । तं जहा । देसेण वि आया सदाइं सुणेइ सवेण वि आया सदाइं सुणेइ ॥१॥

भावार्थ-वे स्थानके आत्मा शब्द प्रत्ये सांभले ते कहे छे. देश थकी ते एक काने वहेरो होय तेथी एकज काने आत्मा प्रत्ये शब्द सांभले १, सर्वथी ते वे काने आत्मा शब्द प्रत्ये सांभले तथा संभिन्न श्रोत्र लब्धिनो धणी सर्व इन्द्रिये करी सांभले २ ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम वे भेदे रु० रूप पा० देखे देशथी ने सर्वथी.

एवं रुवाइं पासइ ॥ २ ॥

भावार्थ—एम् वे प्रकारे रूप देखे ते कहे छे, देशथी ते एक आंखे काणो होय तेथी एकज आंखे देखे १ सर्वथी ते वे आंखे देखे २.

अर्थ—ग० गंध नाके अ० ले एदेशथी सर्वथी एम् वे भेद.

गन्धाइं अग्धाइ ॥ ३ ॥

भावार्थ—एम् नाके गंध ले ते दशथी ने सर्वथी.

अर्थ—र० एम् रस आ० ले देशथी सर्वथी.

रसाइं आसाएइ ॥ ४ ॥

भावार्थ—एम् जीभे रसले देशथी ते प-डजीभी प्रमुख रोगे करी देश (एक तर्फ) थी स्वाद ले तथा सर्वथी ले.

अर्थ—फा० फरस प्रते प० जाणे देशथी सर्वथी.

फासाइं पडिसंवेदेति ॥ ५ ॥

भावार्थ—एम् स्पर्श पण देशथी ने सर्वथी कहेवुं.

अर्थ—दो० वे ठा० धानके आ० आत्मा ओ० दीपे तेजे करी तं० ते ज० कहुं छुं दे० देशथी वि० पण आ० जीव ओ० दीपे पञ्जु-यानीपरे स० सर्वथी वि० पण आ० जीव ओ० दीपे दीवानी परे.

दोहिं ठाणेहिं आया ओभासइ ।
तं जहा । देसेण वि आया ओभासइ
सवेण वि आया ओभासइ ॥ १ ॥

भावार्थ—वे स्थानके करी आत्मा तेजथी दीपे ते कहे छे, देशथी खजुया (आगीया-जीव) नी परे दीपे १ सर्वथी मूर्धनी परे आत्मा दीपे २.

अर्थ—ए० एम् प० प्रकर्षे दीपेदेशथी सर्वथी.

एवं पभासइ ॥ २ ॥

भावार्थ—एम् देशथी ने सर्वथी आत्मा प्रकाशे ए वे भेद छे.

अर्थ—वि० विकुर्वे देशथी सर्वथी.

विउवइ ॥ ३ ॥

भावार्थ—एम् वे प्रकारे विकुर्वे देशथी ते हाथ प्रमुख वेंक्रेय करे १ सर्वथी ते काया संपूर्ण विकुर्वे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—प० एम् मैथुन सेवे वे भेदे.

परियारेइ ॥ ४ ॥

भावार्थ—एम् वे प्रकारे मैथुन सेवे देशथी ते हस्तादिक अवयवे करी तथा मने करीने सेवे १ सर्वथी ते मन वचन कायाए करी सेवे २ ए वे भेद छे.

अर्थ—भा० एम् भाषा भा० बोले वे भेदे.

भासं भासइ ॥ ५ ॥

भावार्थ—एम् वे प्रकारे भाषा बोले देशथी ते जीवहाग्रे बोले १, सर्वथी ते लडिधपुरी भाष्या बोले २, ए वे भेद छे.

अर्थ—आ० आहार ले वे भेदे.

आहारेइ ॥ ६ ॥

भावार्थ—एम् वे प्रकारे आहार ले, देशथी ते आहार प्रमुख मात्रा (मर्यादा) ए ले १, सर्वथी ते पूर्ण आहार ले २, ए वे भेदछे.

अर्थ—प० परगमावे.

परिणामेइ ॥ ७ ॥

भावार्थ—एम् वे प्रकारे आहार प्रमुखपर गमावे देशथी ते पेटमां पीओ होय तेणे करी एक तर्फपरगमावे तथा हस्तादीक अवयवे परगमावे १, सर्वथी ते सर्व वंगे परगमावे

२, एम देशथी आहार प्रमुख छांडे ते अधो वायु नीकळे १, सर्वथी छांडे, आखे शरीरे परसेवानी परे २, ए वे भेद छे.

अर्थ-वे० वेदे.

वेदेइ ॥ ८ ॥

भावार्थ-एम वे प्रकारे आहारने वेदे देशथी १, सर्वथी २, ए वे भेद छे.

अर्थ-नि० निर्जरे.

निज्जरेइ ॥ ९ ॥

भावार्थ-एम वे प्रकारे आहारने तजे देशथी ते एकासपुं करे १, सर्वथी ते उपवास करे २, ए वे भेदछे.

अर्थ-दो० वे ठा० धानके दे० देवता स० शब्द प्रते सु० सांभळे तं० ते ज० कहूं छुं. दे० देशथी वि० वळी दे० देवता स० शब्द प्रते सु० सांभळे स० सर्वथा वि० पण दे० देवता स० शब्द प्रते सु० सांभळे जा० याव-त नि० छांडे.

दोहिं ठाणेहिं देवे सदाइं सुणेइ ।
तं जहा । देसेण वि देवे सदाइं सुणे-
इ सवेण वि देवे सदाइं सुणेइ जाव
निज्जरेइ ॥

भावार्थ-वे स्थानके करी देवता पण शब्द प्रत्ये सांभळे ते कहेछे, देशथी देवता शब्द प्रत्ये सांभळे एटले कांडक सांभळ्युं कांडक न सांभळ्युं ?, सर्वथी देवता शब्द प्रत्ये सांभळे ते ते शब्द बोले ते सर्वे सांभळे २, ए वे भेदछे, एम यावत् निर्जरावे छांडे त्यां मुधी ए सर्वे बोल आहारनी परे देशथी सर्वथी ए वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-म० सर्वमां प्रधान दे० देवता दु० वे भेदे प० कथा तं० ते ज० कहूं छुं ए० भवधारिणि शरीरवंत चे० वळी वि० उत्तर विक्रिय करे ते चे० वळी,

मरुया देवा दुविहा पन्नत्ता । तं जहा ।
एगसरीरी चेव बिसरीरी चेव ॥१॥

भावार्थ-मरुत देवता वे प्रकारे श्री भगवंते कहेलछे ते कहेछे, जेवारे भवधारणीज शरीर होय ते वारे एक शरीरछे १, अने जे वारे उत्तर विक्रय करे ते वारे वे शरीर छे २ (सर्व देवताने वे शरीरज होय पण आठमा देवलोक सुधीना देवताछे ते मांही मरुत देवता सर्वथी प्रधान (उत्तम) छे ते माटे इहां मरुत देवता कहेलछे) ए वे भेदछे.

अर्थ-ए० एम किं० किन्नरदेव.

एवं किन्नरा ॥ २ ॥

भावार्थ-एम किन्नर देवता.

अर्थ-किं० किं० पु० पु० पुरुषदेव.

किंपुरिसा ॥ ३ ॥

भावार्थ-किं पुरुष देवता.

अर्थ-गं० गन्धर्व देवता.

गन्धवा ॥ ४ ॥

भावार्थ-गंधर्व देवता.

अर्थ-ना० नागकुमार देवता,

नागकुमारा ॥ ५ ॥

भावार्थ-नागकुमार देवता.

अर्थ-सु० सुवन्न कुमार.

सुवन्नकुमारा ॥ ६ ॥

भावार्थ-सुवर्णकुमार देवता.

अर्थ-अ० अग्निकुमार.

अगिकुमारा ॥ ७ ॥

भावार्थ-अग्निकुमार देवता.

अर्थ-वा० वायुकुमार देवता.

वाउकुमारा ॥ ८ ॥

भावार्थ-वायुकुमार देवता ए सर्वेने भवधा-

भि० भेदाय पडे तं० ते ज० कहुं छुं. स० पोतानी वा० मेले पो० पुदगळ भि० भेदाय छे प० परे वा० करिने पो० पुदगळ भि० भेदाय.

दोहिं ठणेहिं पोग्गला भिज्जन्ति ।
तं जहा । सयं वा पोग्गला भिज्ज-
न्ति परेण वा पोग्गला भिज्जन्ति ॥ २ ॥

भावार्थ—वे थानके पुदगळ भेदाय छे ते कहुंछुं पोतानी मेले पुदगळ भेदाय छे १, परे करिने पुदगळ भेदाय छे २.

अर्थ—दो० वे ठा० थानके पो० पुदगळ प० सडे छे तं० ते ज० कहुं छुं स० पोतानी वा० मेले पो० पुदगळ प० सडे छे प० पर-
थी पो० पुदगळ प० सडि पडे छे.

दोहिं ठणेहिं पोग्गला परिसडन्ति ।
तं जहा । सयं वा पोग्गला परिसड-
न्ति परेण पोग्गला परिसडन्ति ॥ ३ ॥

भावार्थ—वे प्रकारे पुदगळ सडे छे ते कहे छे. एक पोतानी मेले पुदगळ सडी पडे छे, कोठ प्रमुख रोगे करी आंगळी प्रमुख १, एक परथी पुदगळ सडी पडे छे सोमलाटिके करी २, ए वे भेद छे.

अर्थ—ए० एम प० पडे छे पर्वतना गिपर प्रमुख वे भेदे.

एवं परिवडन्ति ॥ ४ ॥

भापार्थ—एम पडे छे पर्वतनां शिखर.

अर्थ—ए० एम वि० विणसे छे वे भेदे.

विघ्नंसन्ति ॥ ५ ॥

भावार्थ—एम विणसे छे वादळ प्रमुख.

अर्थ—दु० वे भेदे पो० पुदगळ प० कक्षा तं० ते ज० कहुं छुं मि० जुदा छे चे० वळी.

अ० अभिन्न मळेला छे चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा ।
भिन्ना चेव अभिन्ना चेव ॥ १ ॥

भावार्थ—वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे. एक भिन्न ते जुदां जुदां पुदगळ छे १, एक अभिन्न ते भेळां पुदगळ छे २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे भेदे पो० पुदगळ प० कक्षा तं० ते ज० कहुं छुं मि० पोतानी मेले भे-
दाय ते चे० वळी नो० न भेदाय ते चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा ।
भिउरधम्मा चेव नोभिउरधम्मा चेव
॥ २ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे. एक पुदगळ पोतानी मेले भेदाय छे ते भिदुर स्वभाव छे १, बीजा नोभिदुर स्वभाव ते वज्रादिक जाणवां २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे भेदे पो० पुदगळ प० कक्षा तं० ते ज० कहुं छुं प० परमाणुं पुदगळ चे० वळी नो० घणानो समुह चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा ।
परमाणुपोग्गला चेव नोपरमाणुपोग्ग-
ला चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे पुदगळ कहेल छे ते कहे छे. परमाणुं पुदगळ ते लक्ष्मस्यनी नजरे आवे नही, तेहन केवळज्ञानीज जाणे देखे १, वंश पुदगळ घणानो समुह (जयो) तेनोपरमाणुं पुदगळ २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे भेदे पो० पुदगळ प० कक्षा तं० ते ज० कहुं छुं मु० सृष्ट्य चे० वळी वा० वाटर चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा ।
सुहुमा चैव वायरा चैव ॥ ४ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे, एक सुक्ष्म पुद्गळ ते भाष्याना १, बीजां वादर पुद्गळ २, (शित १ उष्ण २ सनिग्ध ३ लुखां ४ ए चार स्पर्श सुक्ष्मने होय १, अने वादर पुद्गळने आठ स्पर्श होय २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे भेदे पो० पुद्गळ प० कक्षा तं० ते ज० कहं छुं व० वंधाणा पा० एक पासे पु० शरीरने फरस्या ते गंध चे० वळी नो० नथी. व० वंधाणा पण पा० पार्श्व पु० फरस्या छे ते शब्द चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा ।
बद्धपासपुट्टा चैव नोबद्धपासपुट्टा चैवा ॥ ५ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे. बद्ध ते वंधाणां घणां शरीरने एक पासे फरस्या, नाक प्रमुख इंद्रि ग्रहण योग्य पुद्गळ १, नोबद्ध ते वंधाणां नथी पण पासे फरस्या छे ते काने शब्द संभळाय २, ए भेद इंद्रिने आश्री छे.

अर्थ—दु० वे भेदे पो० पुद्गळ प० कक्षा तं० ते ज० कहं छुं प० समस्त ग्रहा ते चे० वळी अ० समस्त ग्रहा नथी ते चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा ।
परियाइय चैव अपरियाइय चैव ॥ ६ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे. पर्यायातित ते जे समस्त ग्रहा कर्म पुद्गळनी पेरे १, अपर्यायातित ते समस्त पुद्गळ ग्रहा नथी २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे भेदे पो० पुद्गळ प० कक्षा तं० ते ज० कहं छुं अ० जीवि शरीरे गद्या ते

चे० वळी अ० नथी अंगिकार कर्या ते चे० वळी.
दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा ।
अत्ता चैव अणत्ता चैव ॥ ७ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे. जीवे परिग्रह शरीरपणे अंगिकार कर्या ते १, परिग्रह शरीरपणे अंगिकार कर्या नथी ते २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे भेदे पो० पुद्गळ प० कक्षा तं० ते ज० कहं छुं इ० इष्ट चे० वळी अ० अनिष्ट चे० वळी.

दुविहा पोग्गला पन्नत्ता । तं जहा ।
इट्टा चैव अणिट्टा चैव ॥ ८ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे, एक इष्ट पुद्गळ छे १, बीजां अनिष्ट पुद्गळ छे २, ए वे भेद छे.

अर्थ—ए० एम क० कांतभलावर्णादिक सहित.

एवं कन्ता ॥ ९ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे. एक भलावर्णादी सहीत ते कांत पुद्गळ १, एक भलावर्णादी रहीत ते अकांत पुद्गळ २, ए वे भेद छे.

अर्थ—पि० मिय

पिया ॥ १० ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे. इंद्रियोने मिय पुद्गळ १, इंद्रियोने अमिय पुद्गळ २, ए वे भेद छे.

अर्थ—म० इन्द्रिने सुखकारी.

मगुन्ना ॥ ११ ॥

भावार्थ—वळी वे प्रकारे पुद्गळ कहेल छे ते कहे छे, इंद्रियोने सुखकारी १ इंद्रियोने दुखकारी २.

अर्थ-म० मनोहर देखतां मनने प्रियलागे

मणामा ॥ १२ ॥

भावार्थ-वळी वे प्रकारे पुढगळ कहेल छे ते कहे छे, मनोहर देखतां मनने प्रिय लागे ते मनोज्ञ १, देखतां मनने प्रिय न लागे ते अमनोज्ञ २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे भेदे स० शब्द प० कया तं० तेज० कहुंछुं अ० जीवे गहाछे चे० वळी अ० जीवे नथी ग्रहा चे० वळी.

दुविहा सदा पन्नत्ता । तं जहा ।
अत्ता चेव अणत्ता चेव ॥ १ ॥

भावार्थ-वे प्रकारे शब्द कहेल छे ते कहेछे एक जीवे ग्रहा छे १, एक जीवे नथी ग्रहेला २, ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम इ० इष्ट जा० यावत म० मनोहर

एवं इट्टा जाव मणामा ॥ [२-६] ॥ २ ॥

भावार्थ-एम इष्ट शब्द १, अनिष्ट शब्द २, कांत शब्द १, अकांतशब्द २, प्रिय शब्द १, अप्रिय शब्द २, सुखकारी १, दुखकारी २, मनोज्ञ शब्द १, अमनोज्ञ शब्द २, ए सर्वेमां पूर्वनी पेरे वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-दु० वे रु० रूप पं० कया तं० तेज० कहुंछुं अ० चक्षु ए गहा चे० वळी अ० अग्रहित चे० वळी जा० यावत म० मनोज्ञ.

दुविहा रूवा पन्नत्ता । तं जहा । अत्ता
चेव अणत्ता चेव । जाव मणामा
॥ [७-१२] ॥ ३ ॥

भावार्थ-वे प्रकारे रूप कहेल छे ते कहेछे. एक चक्षुए ग्रहं रूप १, वीजुं चक्षुए रूप ग्रहं नथी २, ए वे भेद छे. एम इष्टरूप १, अनिष्टरूप २,

कांतरूप १, अकांतरूप २, प्रिय रूप १, अप्रिय रूप २, सुखकारी १, दुखकारी २, मनोज्ञरूप १, अमनोज्ञरूप २, ए सर्वे रूपमां पूर्वनी पेरे वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-ए० एम ग० गन्ध.

एवं गन्धा ॥ [१३-१८] ॥ ४ ॥

भावार्थ-एम गंध ते एक नासिकाए ग्रहो छे १, वीजो गंध नासिकाए ग्रहो नथी २, एक इष्ट गंध १, एक अनिष्ट गंध २, कांतगंध १, अकांत गंध २, प्रिय गंध १, अप्रिय गंध २, मनोज्ञ गंध १, अमनोज्ञ गंध २, ए सर्वे गंधमां पूर्वनी पेरे वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-र० रस.

रसा ॥ [१९-२४] ॥ ५ ॥

भावार्थ-एम रस ते एक जीभे रस ग्रहो छे १, एक जीभे रस ग्रहो नथी २, एक इष्ट रस १, एक अनिष्टरस २, कांतरस १, अकांतरस २, प्रियरस १, अप्रियरस २, मनोज्ञरस १, अमनोज्ञरस २, ए सर्वेमां पूर्वनी पेरे वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-फ० फरस.

फासा ॥ [२५-३०] ॥ ६ ॥

भावार्थ-एम स्पर्श ते एक स्पर्श इंद्रिए ग्रहो छे १, एक स्पर्श ग्रहो नथी २, एक इष्ट स्पर्श १, एक अनिष्ट स्पर्श २, कांत स्पर्श १, अकांत स्पर्श २, प्रिय स्पर्श १, अप्रिय स्पर्श २, मनोज्ञ स्पर्श १, अमनोज्ञ स्पर्श २, ए सर्वेमां पूर्वनी पेरे वे वे भेद जाणवा.

अर्थ-ए० एम ए० एकेकना आ० आलावा भा० जाणवा.

एवं एकेके आलावगा भाणियवा ॥

भावार्थ-एम पूर्वोक्त प्रमाणे गंध स्पर्शना वे वे भेदछे ते एकेकना छ छ आलावा जाणवा.

अर्थ-दु० वे भेदे आ० आचार प० क-
ह्यो तं० ते ज० कहंछुं ना० ज्ञानाचार चे०
वळी नो० दर्शनाचार चे० वळी.

दुविहे आयारे पन्नत्ते । तं जहा ।
नाणायारे चेव नोनाणायारे चेव ॥१॥

भावार्थ-वे प्रकारे आचार कहेल छे ते
कहे छे, काळथी १, विनयथी २, बहु मानथी
३, उपध्यानथी ४, अर्थ तथा गुरुने गोपवे नहि
५, अक्षर शुद्ध ६, अर्थ शुद्ध ७, अक्षरार्थ शुद्ध
८, ए आठ भेदे ज्ञान आचार १, नोज्ञान आ-
चार ते दर्शनाचार २, ए वे भेद छे.

अर्थ-नो० दर्शनाचार दु० वे भेदे पं०
कह्यो तं० ते ज० कहंछुं दं० दर्शनाचार चे०
वळी नो० चारित्राचार चे० वळी.

नोनाणायारे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
दंसणायारे चेव नोदंसणायारे चेव ॥२॥

भावार्थ-नोज्ञानआचार वे प्रकारे कहेल
छे ते कहे छे, शंका नहि १, अन्य मतनी इच्छा
नहि २, करणीना फळनो संशय नहि ३, परना
आडवरे मुंझाय नहि ४, स्वधर्म प्रसंशा करे ५,
धर्मथी पडताने आलंघनदीए ६, स्वधर्मिनी
भक्ति करे ७, जैन धर्मने दीपावे ८, ए आठ
भेदे दर्शन आचार १, नोदर्शन आचार ते पांच
समित्तिने त्रण गुप्ती ए आठ भेदे चारित्र
आचार २, ए वे भेद छे.

अर्थ-नो० चारित्राचार दु० वे भेदे पं०
कह्यो तं० ते ज० कहंछुं च० चारित्राचार
चे० वळी नो० चारित्राचार चे० वळी.

नोदंसणायारे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
चरित्तायारे चेव नोचरित्तायारे चेव ॥३॥

भावार्थ-नोदर्शन आचार वे प्रकारे कहेल
छे ते कहे छे, चारित्र आचार १, नोचारित्र

आचार ते तप आचार प्रमुख २, ए वे
भेद छे.

अर्थ-नो० नोचारित्राचार दु० वे भेदे
प० कह्यो तं० ते ज० कहंछुं तं० तपाचार
चे० वळी वी० धर्मने विषे वळ फोरववुं
चे० वळी.

नोचरित्तायारे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
तवायारे चेव वीरियायारे चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ-नोचारित्र आचार वे प्रकारे क-
हेल छे ते कहे छे. छ अभ्यंतर, छ बाहिर ए
वार भेदे तप आचार १, वळ वीर्य धर्म का-
र्यमां गोपवे नहीं १, पूर्वोक्त छत्रीस भेदमां उ-
द्यम करे २, शक्तिने अनुसारे मन वचन का-
यानो व्यापार एकाग्रचित्ते प्रयुंजे ३, ए-त्रण
भेदे वीर्याचार २, ए वे भेदछे.

अर्थ-दो० वे प० प्रतिज्ञा प० कही छे.
तं० ते ज० कहंछुं स० प्रशस्त भावरूप प०
मनपरिणाम चोपाते चे० वळी उ० तपविशेष
प० १२ प्रतिमा साधुने, ११ प्रतिमा श्रावकने
चे० वळी.

दो पडिमाओ पणत्ताओ । तं जहा ।
समाहिपडिमा चेव उवहाणपडिमा चेव ॥

भावार्थ-वे प्रकारे प्रतिमा ते प्रतिज्ञा विशेष
नियम कहेल छे ते कहेछे. एक समाधि प्रति-
मा ते प्रशस्त (भला) भाव रूप प्रतिमा मन
परिणाम रूप पुद्गल चोखां होय १, वीजी
उपध्यान प्रतिमा ते विशेष तप साधुनी वार
प्रतिमा १, श्रावकनी अगियार प्रतिमा २, ए
वे भेद छे

अर्थ-दो० वे प० प्रतिमा प० कही तं०
ते ज० कहंछुं वि० कपाय प्रसुपतो त्याग
चे० वळी वि० फाउसग करवो ते चे० वळी.

दो पडिमाओ पणत्ताओ । तं जहा ।

વિવેગપડિમા ચેવ વિઓસગ્ગપડિમા
ચેવ ॥ ૨ ॥

ભાવાર્થ—વઢી વે પ્રકારે પ્રતિમા કહેલછે તે કહેછે, વિવેક પ્રતિમા તે કપાય પ્રમુખ અયોગ્ય વસ્તુનો ત્યાગ કરવો ૧, વ્યુત્સર્ગ પ્રતિમા તે કાઝસગઠું કરવું ૨, એ વે ભેદ છે.

અર્થ—દોં વે પં પ્રતિમા પં કહી તં તે જં કહું છું મં ભદ્રા પ્રતિમા ચેં વઢી સું સુભદ્રા પ્રતિમા ચેં વઢી.

દો પડિમાઓ પળ્ણત્તાઓ । તં જ-
હા । મહા ચેવ સુમહા ચેવ ॥ ૩ ॥

ભાવાર્થ—વઢી વે પ્રકારે પ્રતિમા કહેલછે તે કહેછે, મહા પ્રતિમા તે પૂર્વાદિ દિશાએ ચાર પોહોર લગી કાઝસગ કરવો (આ સિવાય વીજો પ્રકાર શાસ્ત્રમાં નથી) ૧, સુભદ્રા પ્રતિમા પળ્ણ એમજ દેખાયછે. વે દિવસે પુરી ધાયછે, પરીસહ સ્વમે ૨, એ વે ભેદ છે.

અર્થ—દોં વે પં પ્રતિમા પં કહી તં તે જં કહું છું મં મહામદ્ર પ્રતિમા ચેં વઢી સં સર્વથી મદ્ર ચેં વઢી.

દો પડિમાઓ પળ્ણત્તાઓ । તં જ-
હા મહામદ્રા ચેવ સવઓમદ્રા ચેવ
॥ ૪ ॥

ભાવાર્થ—વઢી વે પ્રકારે પ્રતિમા શ્રી વીત્તરાગ વેવે કહેલછે તે કહે છે, મહામદ્ર પ્રતિમા પળ્ણ એમજ, પળ્ણ એટલો વિશેષકે એકેકી દિશાએ એકેકી અહોરાત્રીનો કાઝસગ કરે એમ ચાર દિશાની ચાર અહો (દિવસ) રાત્રીનું માન જાણવું ૧, સર્વતોમદ્ર પ્રતિમા તે દશે દિશાએ એકેકી અહો રાત્રીનો કાઝસગ કરે એટલે દશ અહો રાત્રીનું માન જાણવું ૨, એ વે ભેદ છે.

અર્થ—દોં વે પં પ્રતિમા પં કહી તં તે જં કહું છું. સું નાની પ્રતિમા ચેં વઢી મોં મોટી પ્રશ્રવણ પ્રતિમા મં દ્રવ્યથી મોટી ચેં વઢી મોં મોટી પ્રશ્રવણ પડિમા તે લઘુનિત રાખવી.

દો પડિમાઓ પળ્ણત્તાઓ । તં જ-
હા । સુહિયા ચેવ મોયપડિમા મહાહિ-
યા ચેવ મોયપડિમા ॥ ૫ ॥

ભાવાર્થ—વઢી વે પ્રકારે પ્રતિમા કહેલછે તે કહેછે, નાની મોક પ્રતિમા તે માત્રુ નકરે ૧, મોટી મોક પ્રશ્રવણ પ્રતિમા ચાર પ્રકારે, દ્રવ્યથી મઠ માત્રુ કરે નહીં ૧, શ્લેષથી ગ્રામાદીક વાહીર રહે ૨, કાઠથી શરદ તથા ગ્રિષ્મ કાઠે આઠાર કરીને આદરે તો ચૌદ ભક્ત તે છ દિવસે પૂરી થાય અને આઠાર કર્યા વિના આદરે તો શોઠ ભક્ત તે સાત દિવસે પુરી થાય ૩, ભાવથી દેવાદિકના ઉપસર્ગ સહન કરે ૪, એ નાની મોટી પળ્ણ એમજ, પળ્ણ એટલો વિશેષ જે આઠાર કરીને આદરે તો સોઠ ભક્તે પુરી થાય ૧, અને આઠાર કર્યા વિના આદરે તો અઠાર ભક્તે પુરી થાય ૨, એ વે ભેદ છે.

અર્થ—દોં વે ભેદે પં પ્રતિજ્ઞા પં કહી તં તે જં કહું છું જં જવ મં મધ્યની પરે ચેં વઢી ચં ચન્દ્રમાની પરે વધતી ઘટ તો કલા તપની વં વજ્ર મધ્યની પરે ચેં વઢી ચં ચન્દ્ર પ્રતિમા.

દો પડિમાઓ પળ્ણત્તાઓ । તં જ-
હા । જવમજ્ઞા ચેવ ચન્દ્રપડિમા વજ-
રમજ્ઞા ચેવ ચન્દ્રપડિમા ॥ ૬ ॥

ભાવાર્થ—વઢી વે પ્રકારે પ્રતિમા કહેલ છે તે કહેછે, જવ મધ્ય ચન્દ્ર પ્રતિમા તે જવ ધાનના સરસો મધ્ય ભાગ છે જેહનો અને ચન્દ્રમાની પરે વધતી ઘટતી કલા જેમ શુક્રપથના

दिवसे एक कोळीयो आहार करे, एम दिन दिन प्रत्ये अकेक कोळीयो वधारतां पुनमे पंदर कोळीया आहार करे, पळी वद पडवाने दिवसे पंदर कोळीया, एम दिन दिन प्रत्ये एकेक कोळीयो ओछे करतां अमावास्याए एक कोळीयो लीए, ए यव मध्य चंद्र प्रतिमा तप १, अंधारी पडवे पंदर कोळीया पळी दिन दिन प्रत्ये एकेक ओछे करतां अमावास्याए एक कोळीयो, सुद पडवाने दिवसे एक कोळीयो, एम एकेक वधतां पुनमे पंदर कोळीया ए रीते तप करयो ते वज्र मध्य प्रतिमा २, उसन पाणी पीये, थाय तो चौविहार तथा तेविहार करे, वज्र सरिखुं मध्य छे जेहनुं ते वज्र मध्य प्रतिमा जाणवी २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दु० वे भेदे सा० सामायक पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं अ० ग्रहस्थनुं सामायक चे० वळी अ० साधुनुं सामायक चे० वळी.

दुविहे सामाइये पणत्ते । तं जहा । अगारसामाइये चेव अणगारसामाइये चेव ॥

भावार्थ-वे प्रकारे सामायक श्री वीतराग देवे कहेल छे ते कहेछे, ग्रहस्थनुं सामायक देश विरति रूप श्रावकने १, साधुनुं सामायक सर्व विरति रूप २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दो० वे भेदे उ० उपजवुं पं० कहुं तं० ते ज० कहुंछुं दे० देवतानुं चे० वळी ने० नारकीनुं चे० वळी.

दोण्हं उववाए पन्नत्ते । तं जहा । देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ॥ १ ॥

भावार्थ-जेहने गर्भ स्थिति नधी ते वे प्रकारना जीवने उपपात ते उपजवुं कहेल छे कहे छे. चार जातिना देवताने उपजवानुं १, सात नारकीने उपजवानुं २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दो० वेने उ० मरण रूप पं० कहा तं० ते ज० कहुंछुं ने० नारकीनुं मरण चे० वळी भ० भवनपतीनुं मरण चे० वळी.

दोण्हं उवट्टणा पणत्ता । तं जहा । नेरइयाणं चेव भवणवासीणं चेव ॥ २ ॥

भावार्थ-वे प्रकारना जीवने उद्वर्तनाते निकळवुं कहे छे ते कहेछे, नारकीने उद्वर्तना १, भवनपति देवताने उद्वर्तना २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दो० वेने च० चवन पं० कहुं तं० ते ज० कहुंछुं जो० ज्योतिपीनुं चवन चे० वळी वे० वेमानीक देवनुं चे० वळी.

दोण्हं चयणे पणत्ते । तं जहा । जोइसियाणं चेव वेमाणियाणं चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ-वे प्रकारना जीवने चवन ते मरण कहेल छे ते कहे छे, चंद्र सूर्यादिक जोतिपी देवताने चवन १, वैमानिक देवताने चवन २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दो० वेने ग० गर्भे व० उपजवुं छे पं० कहुं तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने गर्भे उपजवुं छे चे० वळी प० पंचेन्द्री ति० तिर्यच जो० जोनियाने गर्भे उपजवुं चे० वळी.

दोण्हं गवभवकन्ती पन्नत्ता । तं जहा । मणुस्साणं चेव पञ्चिन्दियतिरिख-जोणियाणं चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ-वे प्रकारना जीवने गर्भमां उपजवानुं कहेल छे ते कहे छे, मनुष्यमां गर्भपणे उपजे १, पंचेन्द्रि तिर्यच योनिना जीव गर्भपणे उपजे २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दो० वे ग० गर्भमां था० थकां आ० आहार करेछे पं० एम कहुं तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने चे० वळी प० पंचेन्द्रि ति० तिर्यचने चे० वळी.

દોષ્ઠં ગર્ભસ્થાણં આહારે પન્નત્તે ।
તં જહા । મણુસ્સાણં ચેવ પશ્ચિન્દિય-
તિરિક્ષજોણિયાણં ચેવ ॥ ૫ ॥

ભાવાર્થ-વેને ગર્ભમાં થકાંજ આહાર કહેલ છે તે કહેછે, મનુષ્યને ગર્ભમાં રહ્યાં આહાર છે, માતા આહાર કરે તે આહાર લીયે છે ૧, પચેંદ્રિ તિર્યચને પળ ગર્ભમાં રહ્યાં આહાર છે ૨, એ વે ભેદ છે.

અર્થ-દોં વેને ગં ગર્ભમાં થકાં વું વૃદ્ધિ પંં કહીછે તંં તે જં કહુંછું મં મનુષ્યને ચેં વ્હી પં પચેન્દ્રિ તિં તિર્યચયોનિને ચેં વ્હી.

દોષ્ઠં ગર્ભસ્થાણં વુઢ્ઠી પળ્ણત્તા ।
તં જહા । મણુસ્સાણં ચેવ પશ્ચિન્દિય-
તિરિક્ષજોણિયાણં ચેવ ॥ ૬ ॥

ભાવાર્થ-વેને ગર્ભમાં થકાંજ વૃદ્ધિ કહેલ છે તે કહેછે, મનુષ્ય ગર્ભમાં રહ્યાં વૃદ્ધિ પામે છે ૧, પચેંદ્રિ તિર્યચ પળ ગર્ભમાં રહ્યાં વૃદ્ધિ પામે છે ૨, એ વે ભેદછે.

અર્થ-એમં નિં નિદ્ધાર નથી.

એવં નિવ્વુઢ્ઠી ॥ ૭ ॥

ભાવાર્થ-એમ ગર્ભમાં નિવૃદ્ધિ તે નિદ્ધાર નથી, લઘુનિતિ (માત્રુ) પ્રમુખ નથી.

અર્થ-વિં વિકુર્વણા છે.

વિવ્વણા ॥ ૮ ॥

ભાવાર્થ-એમ વિકુર્વણા વિક્રમ્ય લઘિષ્વંત.

અર્થ-ગં ગર્ભમાંથી પં વહાર ગમન કરે.

ગઙ્ગપરિયાણ ॥ ૯ ॥

ભાવાર્થ-એમ ગર્ભમાં હીરગમન કરે, પ્રદેશ વાહીર કાઢી સંપ્રાપ્ય કરે, પહેવે સમે મરણ પામે તો નરકે જાય, એમ શ્રીભગવતી મૂત્રમાંથી કહુંછે.

અર્થ-મરિણાંતિકાદિક સમુદયાતછે.

સમુદ્યાણ ॥ ૧૦ ॥

ભાવાર્થ-એમ મારણંતિકાદિ સમુદયાત છે.

અર્થ-કાં કાલની અવસ્થાએ મરણની.

કાલસંજોગે ॥ ૧૧ ॥

ભાવાર્થ-એમ કાલ તે મરણની અવસ્થાએ.

અર્થ-અં ગર્ભમાંથી નિસરવું.

આયાઈ ॥ ૧૨ ॥

ભાવાર્થ-એમ ગર્ભ માંહીથી નિસરવું તે જન્મ.

અર્થ-મં પ્રાણત્યાગ.

મરણે ॥ ૧૩ ॥

ભાવાર્થ-એમ મરણ તે પ્રાણ ત્યાગ એ વે વોલ ગર્ભમાં છે.

અર્થ-દોં વેને છં ચામડી પં અને પર્વ ની સાંધીના વંધન પં કહ્યાછે તં તે જં કહુંછું મં મનુષ્યને ચેં વ્હી પં પચેન્દ્રિ તિં તિર્યચ જોનીને ચેં વ્હી.

દોષ્ઠં છવિપવા પન્નત્તા । તં જહા ।
મણુસ્સાણં ચેવ પશ્ચિન્દિયતિરિક્ષજો-
ણિયાણં ચેવ ॥ ૧૪ ॥

ભાવાર્થ-વેને છવિ અને પર્વ તે સંધિનાં વંધન કહેલ છે તે કહે છે, મનુષ્યને ૧, પચેંદ્રિ તિર્યચને ૨, એ વે ભેદ છે.

અર્થ-દોં વેને મું વીર્ય સોં સુધિરથી સંં ડપના પં કહ્યા તંં તે જં કહુંછું મં મનુષ્ય ચેં વ્હી પં પચેન્દ્રિ તિં તિર્યચ યોનિ ચેં વ્હી.

દો સુક્કસોણિયસંભવા પળ્ણતા । તં
જહા । મણુસ્સા ચેવ પશ્ચિન્દિયતિરિ-
ક્ષજોણિયા ચેવ ॥ ૧૫ ॥

भावार्थ—वे शुक्र ते पितानुं विर्यं अने मा-
तानां रुधीरथी उपजे छे ते कहेछे, मनुष्य १,
पचेंद्रि तिर्यच २, ए वे पितानुं वीर्यं अने मा-
तानुं रुधीर विना उपजे नहीं.

अर्थ—दु० वे ठि० स्थिति प० कही तं० ते
ज० कहुंछुं का० कायमां ठि० रहेवुं चे० व-
ळी भ० भवने विपे ठि० हेवुं चे० वळी.

दुविहा ठिई पण्णत्ता । तं जहा । का-
यडिई चव भवडिई चव ॥ १६ ॥

भावार्थ—पृथ्विकाय प्रमुख छकायमां रहेवुं
ते स्थिति वे प्रकारे कहेल छे ते कहेछे, मरिने
तेनी तेज कायमां उत्पन्न थाय ते काय स्थिति
१, भवने विपे रहेवुं भव करवा ते भव स्थिति
२, ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वेने का० काय ठि० स्थिति
प० कही तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने चे०
वळी प० पचेन्द्रि ति० तिर्यच योनीने चे०
वळी.

दोण्हं कायडिई पण्णत्ता । तं जहा ।
मणुस्साणं चव पञ्चिन्दियतिरिक्खजो-
णियाणं चव ॥ १७ ॥

भावार्थ—वेने काय स्थिति कही छे ते कहे
छे, मनुष्य मरिने सात आठ भव सुधी माणस
थाय १, पचेंद्रि तिर्यच मरिने सात आठ भव
सुधी पचेंद्रि तिर्यच थाय २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वेने भ० भव ठि० स्थिति पं०
कही तं० ते ज० कहुंछुं दे० देवताने चे० वळी
ने० नारकीने चे० वळी.

दोण्हं भवडिई पण्णत्ता । तं जहा ।
देवाणं चव नेरइयाणं चव ॥ १८ ॥

भावार्थ—वेने भव स्थिति ते एकज भव करे

(अर्थात् मरिने वीजा अवतारमां वीजी गतिमां
उपजे) ते कहेछे, देवता मरी फरी देवता थाय
नहीं १, नारकी मरी फरी नारकी थाय
नहीं २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे भेदे आ० आयुष पं० कदा
छे तं० ते ज० कहुंछुं अ० काळ प्रधान आ
उपु चे० वळी भ० भव प्रधान आउपुं चे०
वळी.

दुविहे आउए पण्णत्ते । तं जहा ।
अद्धाउए चव भवाउए चव ॥ १९ ॥

भावार्थ—वे प्रकारे आयुष्य कहेलुंछे ते कहे
छे, काळ प्रधान आउखा कर्म १, भव प्रधान
आउखा कर्म २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वेने अं० काळ प्रधान आउपुं
पं० कहुं तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने चे०
वळी पं० पचेन्द्रि ति० तिर्यच योनीने चे०
वळी.

दोण्हं अद्धाउए पण्णत्ते । तं जहा ।
मणुस्साणं चव पञ्चिन्दियतिरिक्खजो-
णियाणं चव ॥ २० ॥

भावार्थ—वेने काळ प्रधान आयुष्य कहेल
छे ते कहे छे, मनुष्यने १, पचेंद्रि तिर्यचने
(एकेंद्रि तिर्यच एहमां आव्या) २, ए वे भेद छे.

अर्थ—दो० वेने भ० भव प्रधान आउपुं
पं० कहुं तं० ते ज० कहुंछुं दे० देवताने चे०
वळी ने० नारकीने चे० वळी.

दोण्हं भवाउए पण्णत्ते । तं जहा ।
देवाणं चव नेरइयाणं चव ॥ २१ ॥

भावार्थ—वेने भव प्रधान आयुष्य कहेलछे
ते कहे छे देवताने १ नारकीने २ ए वे भेद छे.

अर्थ—दु० वे भेदे क० कर्म पं० कदां तं०

ते ज० कहुंछुं प० कर्मना दलते चे० वळी
अ० कर्मनो रस भोगवीएते चे० वळी.

दुविहे कम्मे पण्णत्ते । तं जहा । पदे-
सकम्मे चेव अणुभावकम्मे चेव ॥ २२ ॥

भावार्थ-वे प्रकारे कर्म कहेलछे ते कहेछे,
प्रदेश कर्म ते कर्मना पुदगल१, अनुभाव कर्म जे
कर्मनो रस भोगवीये ते २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दो० वे थानके अ० जेहवुं वांध्युं छे
तेहवुं पा० भोगवे तं० ते ज० कहुंछुं दे० दे-
वता चे० वळी ने० नारकीपणे चे० वळी.

दो अहाउयं पालेन्ति । तं जहा ।
देवा चेव नेरइया चेव ॥ २३ ॥

भावार्थ-वे जणे जेहवुं आयुष्य वांध्युं छे,
तेहवुंज भोगवे एटले निकाचित आयुष्यना धणी
अधुरे आउखे मरे नहीं ते कहेछे, देवता पूर्ण
आउखुं पाळे १, नारकी पण पूर्ण आउखुं
पाळे २, ए वे भेद छे.

अर्थ-दो० वेने आ० आउपुं सं० सोपक-
मी पं० कहुं तं० ते ज० कहुंछुं म० मनुष्यने
चे० वळी प० पंचेन्द्रि ति० तिर्यच योनियाने
चे० वळी.

दोण्हं आउयसंवट्टए पणत्ते । तं ज-
हा । मणुस्साणं चेव पञ्चिन्दियतिरि-
क्खजोणियाणं चेव ॥ २४ ॥

भावार्थ-वेने सोपकमिं ते डीलुं आयुष्य कहेलुं
छे ते कहे छे, मनुष्यने १, एकेन्द्रिधी पंचेन्द्रि
मुथी तिर्यचने २, ए वे भेद छे.

अर्थ-ज० जंबुद्वीप नामना दी० द्वीपमां
म० मेरु प० पर्वतने उ० उत्तर द्वा० दक्षिण
ने पासे दो० वे त्रा० वर्ष क्षेत्र प० क्खाछे
व० वणु स० सरखाछे अ० विशेष आधिका
नथी स० समानछे एक एकथी अ० एक-

एकथी ना० नथी व० वधता आ० लांवपणे
वि० पहोलपणे सं० आकार प० परिधि तं०
ते ज० कहुंछुं भ० भरत चे० वळी ए० ए
रवत चे० वळी.

जम्बुद्वीवे दीवे मन्दरस्सं पवयस्स
उत्तरदाहिणेणं दो वासा पण्णत्ता बहु-
समउल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं
नाइवट्टन्ति आयामविकखम्भसंठाणप-
रिणाहेणं । तं जहा । भरहे चेव एरवए
चेव ॥ १ ॥

भावार्थ-परिपूर्ण चंद्रमंडळने आकारे एक
लाख जोजननो लांबो पहोळो जंबुद्वीप छे
तेहमां एक लाख जोजननो उंचो मेरुपर्वत
छे, तेहना उत्तरने वे पासे अने दक्षिण-
ना वे पासे वे वर्ष क्षेत्र कहेल छे.
ते प्रमाणथी घणा सरखां छे, कांडपण एके-
कथी विशेषार्थीक नथी, तेमज पर्वत, नगर, न-
दीनो विशेष नथी. आरा प्रमुखना भावे करी
एकेकथी वधता नथी. लांवपणे, पहोळपणे,
संस्थान, आकार चढाव्या धनुष्यने आकारे,
परिधि इत्यादिके करी सरखाछे. पांचसेछविस
जोजनने छकळा विस्तारपणे छे. जोजननो
एकवीसमो भाग ते कळा जाणवी. ते वे क्षेत्र
नां नाम कहेछे, एक भरतक्षेत्र १, वीजुं एर-
वतक्षेत्र २, ए वे सरखां छे ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एह ए० रीते अ० मानप्रमाण
भाव सर्व एमज जाणवा ने० वळी वेने क्षेत्र
सरखां छे हे० हेमवंत क्षेत्र चे० वळी हे०
हेमणवय क्षेत्र चे० वळी.

एवं एणं अभिलावेणं नेयवं हेम-
वए चेव हेरणवए चेव ॥ २ ॥

भावार्थ-ए रीते मान प्रमाण सर्व भाव ए-
मज जाणवां, तेम वेने क्षेत्र सरखां छे कहे छे.

हेमवन्तक्षेत्र दक्षिणदिशाए १, एरणवन्त क्षेत्र उत्तरदिशाए २, ए वे क्षेत्र सरखां छे.

अर्थ-ह० हरिवास चे० वळी र० रम्यक क्षेत्र चे० वळी.

हरिवासे चेव रम्यवासे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थ-तेमज हरिवर्ष दक्षिणदिशाए १, रम्यकवर्षक्षेत्र उत्तरदिशाए २, ए वे क्षेत्र सरखां छे.

अर्थ-जं० जंबुद्वीप नामना द्वीपमां म० मेरु प० पर्वतथी पु० पुर्वदिशे प० पश्चिमदिशे दो० वे खे० क्षेत्र प० कव्हा व० घणे स० सरखे प्रमाणे छे अ० विशेष नथी जा० यावत पृ० पुर्वविदेह क्षेत्र चे० वळी अ० पश्चिम विदेह चे० वळी.

जम्बुद्वीवे दीवे मन्दरस्स पवयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं दो खेत्ता पण्णत्ता बहुसमउल्ला अविसेसा जाव पुवविदेहे चेव अवरविदेहे चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ-जंबुद्वीपना मेरुपर्वतथी पूर्व पश्चिमे वे क्षेत्र घणाज सरखां प्रमाणे छे, कांडपण विशेषाधिक नथी ते वे क्षेत्रनां नाम कहे छे, पूर्व महाविदेहक्षेत्र १, पश्चिममहाविदेहक्षेत्र २, ए वे भेद छे.

अर्थ-जंबुद्वीप नामना दी० द्वीपमां म० मेरु प० पर्वतने उ० उत्तर दा० दक्षिणदिशे दो० वे कु० कुरुक्षेत्र प० कव्हा व० बहु स० सरखा उ० मान प्रमाणे अ० कांड विशेष नथी जा० यावत दे० देवकुरु चे० वळी उ० उत्तर कुरु चे० वळी.

जम्बुद्वीवे दीवे मन्दरस्स पवयस्स उत्तरदाहिणेणं दो कुराओ पण्णत्ताओ

बहुसमउल्लाओ अविसेसाओ जाव देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव ॥ ५ ॥

भावार्थ-जंबुद्वीपना मेरुपर्वतथी उत्तर दक्षिणदिशाए वे कुरु कहेल छे ते मान प्रमाणे करी घणा सरखा छे, कांडपण विशेषाधिक नथी, तेह वे कुरुनां नाम कहे छे, देवकुरु दक्षिणदिशाए १, उत्तर कुरु उत्तरदिशाए २, ए वे भेद छे.

अर्थ-त० तिहां ण० वळी दो० वे म० मोटा म० मोटा विस्तारवन्त म० मोटा दु० वृक्ष प० कव्हा व० बहु स० सरखा उ० मान प्रमाणे अ० विशेष नथी स० किसो फेर नथी अ० मांहेमांही ना० नथी वधता ओछा आ० लां-वपणे वि० पोहोळपणे उ० उचपणे सं० आकारे प० परिधिपणे तं० ते ज० कहुंछुं कू० कुडसामली वृक्ष चे० वळी ज० जंबूवृक्ष चे० वळी सु० सुदर्शन नामे.

तत्थ णं दो महइमहालया महा-दुमा पण्णत्ता बहुसमउल्ला अविसेसम-णाणत्ता अण्णमण्णं नाइवट्टन्ति आया-मविकस्वम्भुच्चत्तोवेहसंठाणपरिणाहेणं । तं जहा । कूडसामली चेव जम्बू चेव सु-दंसणा ॥ ६ ॥

भावार्थ-तिहां देवकुरु उत्तरकुरु मांही मोटा महा तेजवन्त रमणीक शोभायमान प्रधान (उत्तम) वे वृक्ष प्रमाणे घणां सरखा छे, कांडपण विशेषाधिक नथी, लांबा, पडोळा, विस्तार, उंचा घरतीमां, आकार, परिधि सरखा छे. मांहेमांही एकेकथी वधता नथी. लां-वपणे, पडोळपणे, उंचपणे, उंडापणे, आकारे, परिधि एट्टला प्रमाणे सरखा छे. रत्नमय छे, एट्टुं मान बीजी जग्याएथी जाणवुं. ते वे वृक्ष-

नां नाम कहे छे, एक कुडशामलवृक्ष ते शि-
खरने आकारे छे १, वीजुं जंबूवृक्ष तेनुं वीजुं
नाम सुदर्शन ते जोवा योग्य छे.

अर्थ-तं तिहां ण० बळी दो० वे दे०
देवता म० मोटी रुधिना धणी जा० यावत्
म० मोटा सो० मुखना धणी प० पल्योपम
द्वि० आउपावत् प० वसे छे तं० ते ज० क-
हुंछुं ग० सुवर्णकुमारनी जातिना चे० बळी
वे० वेणुदेवनामे अ० अनाढिनामे चे० बळी
ज० जंबुद्वीपना स्वामी छे.

तत्थ णं दो देवा महिद्धिया जाव
महासोक्खा पलिओवमड्डिया परिव-
सन्ति । तं जहा । गरुले चैव वेणुदेवे
अणादिए चैव जम्बुद्वीवाहिवई ॥ ७ ॥

भावार्थ-ते वृक्षने विषे वे देवता म्होटी
रुधिना धणी यावत् मोटा मुखना धणी एक
पल्योपमना आउखानी स्थितिवाळा सुवर्ण-
कुमारनी जातिनां रहेंछे, ते व देवतानां नाम
कहे छे. एक गरुलेदेव तेनुं वीजुं नाम वेणुं
देवछे १, वीजो अणाढीय नामे देव २, ए
वे देव जंबुद्वीपना अधिष्ठाता ते मालीक छे.

अर्थ-ज० जम्बु नामना दि० द्वीपमां म०
मेरु प० पर्वतने उ० उत्तर दा० दक्षिणादिशे
दो० वे दा० वर्षधर प० पर्वत प० कथा व०
धणा स० सरखा उ० मानप्रमाणे अ० वि-
शेष नथी म० भेद नथी अ० मांहीमांही ना०
अधिक ओछा नथी आ० लांबपणे वि० पो-
ळपणे उ० उंचपणे सं० आकारे प० परिध-
पणे तं० ते ज० कहुंछुं चु० नाहना हिमवंत
पर्वत चे० बळी सि० सिखरीपर्वत चे०
बळी.

जम्बुद्वीपे दीपे मन्दरस्म पवयस्स

उत्तरदाहिणेणं दो वासहरपवया पण्णत्ता
बहुसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता अपण-
मण्णं नाइवट्टन्ति आयामविकखम्भुच्चत्तो
वेहसंठाणपरिणाहेणं । तं जहा । चुल्ल-
हिमवन्ते चैव सिहरी चैव ॥ ८ ॥

भावार्थ-जंबुद्वीपे मेरु पर्वतथी उत्तर अने
दक्षिण दिशाए वे वर्षधर (क्षेत्रनी मर्यादा
करे ते) पर्वत कहेल छे ते वे पर्वत घणा स-
रखा छे, विशेष नथी, भेद नथी, एकेकथी
वधता नथी, नहाना नथी, लांबपणे, पहोळ-
पणे, उंचपणे, उंडपणे, आकारे, परिधि एटले
प्रकारे सरखा छे, तेहनां नाम कहे छे. भरत
क्षेत्रथी उत्तर दिशाए सोजोवननो उंचो नानो
हिमवंत पर्वत १, इरवत क्षेत्रथी आतर्फ शि-
खरी पर्वत २, ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम म० महा हिमवंत चे० ब-
ळी रु० रूपोपर्वत चे० बळी

एवं महाहिमवन्ते चैव रूपी चैव ॥ ९ ॥

भावार्थ-एम मेरुथी आ तर्फ महा हिमवंत
१, मेरुथी पेली तर्फ रूपी पर्वत २,

अर्थ-ए० एम नि० निषटपर्वत चे० बळी
नी० नीलवंतपर्वत चे० बळी.

एवं निसहे चैव नीलवन्ते चैव ॥ १० ॥

भावार्थ-एम मेरुथी दक्षिणे निषट पर्वत
१, मेरुथी उत्तरे नीलवंत पर्वत २, ए वे वे
पर्वत सरखा छे.

अर्थ-ज० जंबुद्वीप नामना टी० टीपे म०
मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिणे हे०
हिमवंतक्षेत्र ए० एरणवंतक्षेत्रने विषे दो० वे
व० वाटला व० वंतादपर्वत प० कथा व० घणा
म० सरखा उ० मान प्रमाणे अ० विशेष नथी

સ૦ મેદ નથી જા૦ યાવત સ૦ શબ્દાપાતી
ચે૦ વળી વિ૦ વિકટાપાતી ચે૦ વળી.

જમ્બુદ્વીવે દીવે મન્દરસ્સ પવ્યસ્સ
ઉત્તરદાહિણેણં હેમવણ્ણવણ્ણસુ વાસેસુ
દો વટ્ટવેયહ્ણપવ્યા પન્નત્તા વહુસમઁ
હ્ણ અવિસેસમણાણત્તા જાવ સહાવર્ઘ
ચેવ વિયઢાવર્ઘ ચેવ ॥ ૧૧ ॥

ભાવાર્થ—જંબુદ્વીપે મેરુ પર્વતથી દક્ષિણ દિ-
શાએ હેમવંત ક્ષેત્ર અને ઉત્તર દિશાએ ઇરણવંત
ક્ષેત્ર છે, એ બેને વિષે વેદ્યત વાટલા વૈતાદ્ય પ-
ર્વત પાલાને આકારે કહેલ છે, તે ઘળા સરસા
છે, વિશેષ મેદ નથી. તે બેનાં નામ કહે છે,
શબ્દા પાતી હેમવંતમાં ૧, વિકટાપાતી ઇરણ્ય-
વંતમાં છે ૨.

અર્થ—ત૦ તિહાં ણ૦ વળી દો૦ વેદે૦ દેવતા
મ૦ મોટી રુદ્ધિવંત જા૦ યાવત પ૦ પલ્યોપમ
આઝપાએ પ૦ રેહેછે તં૦ તે જ૦ કહુંહું સા૦
સ્વાતિનામે ચે૦ વળી પ૦ પ્રભાસનામે ચે૦
વળી.

તત્થ ણં દો દેવા મહિહ્ણિયા જાવ
પલિઓવઢિહ્ણિયા પરિવસન્તિ । તં જહા ।
સાઈ ચેવ પમાસે ચેવ ॥ ૧૨ ॥

ભાવાર્થ—તિહાં બે દેવતા મ્હોટી રુદ્ધિના
ધળી, પલ્યોપમ આઝવાના ધળો રહે છે.
તિહાં તેહનાં ભવન છે, તે બે દેવતાનાં નામ
કહે છે, એક સ્વાતિ નામે દેવતા ૧, ત્રીજો
પ્રભાસ નામે દેવતા ૨, એ બે મેદ છે.

અર્થ—જ૦ જમ્બુદ્વીપ નામના દો૦ દ્વીપે
મ૦ મેરુ પ૦ પર્વતથી ઉ૦ ઉત્તર દા૦ દક્ષિણ
દિશે દ૦ હરિ વર્ષ ક્ષેત્ર ર૦ રમ્યક વા૦ ક્ષેત્ર
દો૦ ચેવ૦ વાટલા વે૦ વૈતાદ્ય પર્વત પ૦ કળા

વ૦ ધળા સ૦ સરસા ઉ૦ સમાન છે જા૦
યાવત ગ૦ ગંધાપતી હરિવર્ષમાં ચે૦ વળી
મા૦ માલવંત પર્યાય ચે૦ વળી

જમ્બુદ્વીવે દીવે મન્દરસ્સ પવ્યસ્સ
ઉત્તરદાહિણેણં હરિવરિસરમ્મણ્ણસુ વાસે-
સુદો વટ્ટવેયહ્ણપવ્યા પન્નત્તા વહુસમઁ
હ્ણ જાવ ગન્ધાવર્ઘ ચેવ માલવન્તપરિ-
યાએ ચેવ ॥ ૧૩ ॥

ભાવાર્થ—જંબુદ્વીપે મેરુ પર્વતથી દક્ષિણે હ-
રિવર્ષ ક્ષેત્ર અને ઉત્તરે રમ્યક વર્ષ ક્ષેત્ર છે.
તિહાં બે વૃત વૈતાદ્ય પર્વત કહેલ છે. ઘળા
સરિસા વરાવર છે, તે બે પર્વતનાં નામ કહે છે
હરિવર્ષ ક્ષેત્રમાં ગંધાપાતી છે ૧, રમ્યક વર્ષ
ક્ષેત્રમાં માલવંત પર્વત છે.

અર્થ—ત૦ તિહાં ણ૦ વળી દો૦ વેદે૦ દે-
વતા મ૦ મોટી રુદ્ધિના ધળી જા૦ યાવત પ૦
પલ્યોપમની દ્વિ૦ સ્થિતિના પ૦ વસેછે તં૦ તે
જ૦ કહુંહું અ૦ અરુણ નામે ચે૦ વળી પ૦
પન્નનામે ચે૦ વળી.

તત્થ ણં દો દેવા મહિહ્ણિયા જાવ પ-
લિઓવમઢિહ્ણિયા પરિવસન્તિ । તં જહા
। અરુણે ચેવ પઝમે ચેવ ॥ ૧૪ ॥

ભાવાર્થ—તિહાં બે દેવતા મ્હોટી રુદ્ધિના
ધળી પલ્યોપમની સ્થિતિવાળા વસે છે, તિહા
તેહનાં ભવન-વાસ છે તે બે દેવતાનાં નામ ક-
હે છે, એક અરુણ નામે દેવતા ૧, ત્રીજો પન્ન
નામે દેવતા ૨, એ બે મેદ છે.

અર્થ—જ૦ જમ્બુદ્વીપ નામના દો૦ દ્વીપે મ૦
મેરુ પ૦ પર્વતથી દા૦ દક્ષિણ દિશે દે૦ દંદ
કુરુથકી પુ૦ પુર્વને પાસે અ૦ પશ્ચિમને પાસે
પ૦ ડાં આ૦ ઘોઢાના સ્વ૦ સ્વંધ સ૦ આદિ

नीचा पळी उंचा सरिखा अ० अर्थ चं० चंद्र
सं० आकारे सं० रखा दो० वे व० वखारा प०
पर्वत प० कथा छे व० धणु स० सरखा
जा० यावत सो० सौमनस वि० विद्युत्प्रभ
चे० वळी

जम्बुद्वीपे दीवे मन्दरस्स पवयस्स
दाहिणेणं देवकुराए पुवावरपासे एत्थ
णं आसक्खन्धगसरिसा अड्डचन्दसं-
ठणमंठिया दो वक्खारपवया पन्नत्ता
वहुसमउल्ला जाव सौमणसे विज्जुपभे
चेव ॥ १५ ॥

भावार्थ-जंबुद्वीपना मेरु पर्वतथी दक्षिण
दिशाए अने देवकुरुथी पुर्व पश्चिमनी पासे
तिहां घोडाना स्वंध सरिखा आदी नीचा,
छेड्डे उंचा, निषघनी पासे चारसो जोजन
उंचा, मेरुनी पासे पांचसे जोजन उंचा, अर्थ
चंद्राकारे संस्थित (रहेला) वेवखारा पर्वत
छे ते देवकुरुने अर्थ चंद्राकारे करेल छे तेथी
वेवखारा पर्वत कहेल छे, ते वे घणा सरिखा
यावत् वरावर छे, ते वेनां नाम कहे छे, एक
सौमनस १, वीजो विद्युत्प्रभ २, ए वे भेदछे.

अर्थ-जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु
प० पर्वतने उ० उत्तरे उ० उत्तर कुरुक्षेत्रने
पासे पु० पुर्व पश्चिमने पासे ए० इहां आ०
अश्वना खं० पंच स० सरिपा अ० अर्थ चं०
चन्द्रने सं० आकारे सं० रखा दो० वे व० व-
पाग प० पर्वत प० कथा छे व० धणा स०
सरखा छे जा० यावत गं० गन्धमादन नामे
पश्चिमे चे० वळी मा० मालवंत पुर्वे चे० वळी

जम्बुद्वीपे दीवे मन्दरस्स पवयस्स
उत्तरेणं उत्तरकुराए पुवावेरे पासे एत्थ

णं आसक्खन्धगसरिसा अड्डचन्दसं-
णसंठिया दो वक्खारपवया पणत्ता
वहुसमउल्ला जाव गन्धमायणे चेव मा-
लवन्ते चेव ॥ १६ ॥

भावार्थ-जंबुद्वीप मेरु पर्वतथी उत्तरे अने
उत्तर कुरुनी पूर्व पश्चिमनी पासे तिहां घोडा-
ना स्वंद सरखा अर्थ चंद्राकारे तथा गजदं-
ताकारे वेवखारा पर्वत कहेल छे, ते वे घणा
सरखा यावत् वरावर छे, ते वेनां नाम कहेछे,
पश्चिमनी पासे गंधमादन १, पूर्वनी पासे मा-
लवंत २, ए वे भेद छे.

अर्थ-जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु
प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिणे दी० वे
दी० लांबा वे० वैताद्वय प० पर्वत प० कथा
व० धणा स० समान जा० यावत भा० भरत
क्षेत्रमां चे० वळी दी० दीर्घ वे० वैताद्वय प०
पर्वत ए० एरुवतमां चे० वळी दी० दीर्घवैताद्वय

जम्बुद्वीपे दीवे मन्दरस्स पवयस्स
उत्तरदाहिणेणं दो दीहवेयड्डपवया प-
न्नत्ता बहुसमउल्ला जाव भारहे चेव
दीहवेयड्डे एरावए चेव दीहवेयड्डे ॥ १७ ॥

भावार्थ-जम्बुद्वीपना नामना द्वीपे मेरु प-
र्वतथी उत्तर दक्षिणे वे लांबा वैताद्वय पर्वत
कथा, घणा समान भरतक्षेत्रमां तेमज एवगतक्षेत्र
ए वेनेमां दीर्घ वैताद्वय पर्वत कथा.

अर्थ-भा० भरतना ण० वळी दी० दीर्घ
वैताद्वयमां दी० वे गु० गुफा प० कशी छे
व० बहु स० समा सरीपो छे, अ० विशेष
नथी स० भेद नथी अ० मांढोमांढी ना० ए-
केकथी वधनी नथी आ० लांसपणे वि० प्रशो-
लपणे उ० उंचपणे सं० आकार प० पश्चि

તં જ૦ કહુંહું તિ૦ તિમિસ ગુફા ચે૦
વલી સં૦ સંડ પ્રપાત ગુફા ચે૦ વલી

મારહે ણં દીહવેયઢ્ઢે દો ગુહાઓ પ-
ણત્તાઓ વહુસમઝલાઓ અવિસેસમણા-
ણત્તાઓ અન્નમન્નં નાઙ્વટ્ટન્તિ આયામ-
વિક્કમ્મ્મુચ્ચત્તસંઠાણપરિણાહેણં । તં જ-
હા । તિમિસગુહા ચેવ સ્વણ્ડપ્પવાયગુ-
હા ચેવ ॥ ૧૮ ॥

ભાવાર્થ—ભરતક્ષેત્રમાં દીર્ઘ વૈતાઢ્ય પર્વતમાં
વે ગુફા કહી છે તે વે સમાન સરસ્વી છે, વિ-
શેષ નથી, ભેદ નથી, માંહોમાંહી એકેકથી વ-
ધતી નથી, લાંવપણે, પહોળાપણે, ડંચપણે, આ-
કાર પરિધિએ સરસ્વી છે, તે વે ગુફાના નામ
કહે છે તિમિસ ગુફા તથા સંડપ્રપાત ગુફા.

અર્થ—તં૦ તિહા ણં૦ વલી દો૦ વે દે૦
દેવતા મ૦ મોટી સુદ્ધિના ધની જા૦ યાવત
પ૦ પલ્લોપમનું દિ૦ આડું છે પ૦ રહે છે
તં૦ તે જ૦ કહુંહું ક૦ કૃતમાલ ચે૦ વલી
ન૦ નટમાલ દેવ ચે૦ વલી

તત્થ ણં દો દેવા મહિઙ્ઘિયા જાવ
પલિઓવમઙ્ઘિયા પરિવસન્તિ । તં જ-
હા । કયમાલણ ચેવ નટ્ટમાલણ ચેવ
॥ ૧૯ ॥

ભાવાર્થ—તથા વે દેવતા મોટી સુદ્ધિના ધ-
ની પલ્લોપમને આડવે રહે છે, તેનાં નામ કૃત
માલ અને નટ માલ દેવતા.

અર્થ—પ૦ ઇરાવત ક્ષેત્રમાં ણ૦ પણ ટી૦
દીર્ઘ વૈતાઢ્યમાં દો૦ વે ગુ૦ ગુહાઓ પ૦ કહી

જા૦ યાવત ક૦ કૃતમાલ ચે૦ વલી ન૦
નટમાલ ચે૦ વલી

ઇરાવણ ણં દીહવેયઢ્ઢે દો ગુહાઓ પ-
ણત્તાઓ જાવ કયમાલણ ચેવ નટ્ટ-
માલણ ચેવ ॥ ૨૦ ॥

ભાવાર્થ—ઇરાવત ક્ષેત્રમાં પણ દીર્ઘ
વૈતાઢ્ય પર્વત છે, તેમાંહી પણ વે ગુફા છે, યા-
વત્ કૃતમાલ ૧, નૃત્યમાલ દેવતા મુધી ભર-
તક્ષેત્રની પેરે સર્વ જાણવું.

અર્થ—જ૦ જમ્બુદ્વીપ નામના દો૦ દ્વીપમાં
મ૦ મેરુ પ૦ પર્વતની દા૦ દક્ષિણે ત્રુ૦ નાનો
હિમવંત વા૦ વર્ષધર પ૦ પર્વતના દો૦ વે ક૦
કુટ પ૦ કહ્યા વ૦ ધના સ૦ સમાન જા૦
યાવત વિ૦ પુહોલપણે ડ૦ ડંચ સં૦ આકારે
પ૦ સરસ્વી પરિધિ તં૦ તે જ૦ કહુંહું ત્રુ૦
નાનો હિમવંત કુટ ચે૦ વલી વે૦ વેશ્રમણ કુટ
ચે૦ વલી

જમ્બુદ્વીવે દીવે મન્દરસ્સ પવ્વયસ્સ
દાહિણેણં ત્રુહિમવન્તે વાસહરપવ્વણ
દો કૂડા પત્તત્તા વહુસમઝલા જાવ વિ-
ક્કમ્મ્મુચ્ચત્તસંઠાણપરિણાહેણં । તં જહા
। ત્રુહિમવન્તકૂડે ચેવ વેસમણકૂડે
ચેવ ॥ ૨૧ ॥

ભાવાર્થ—જમ્બુદ્વીપે મેરુપર્વતથી દક્ષિણદિશાએ
નાના હિમવંત વર્ષધર પર્વતના વે કુટ કહેલ
છે, તે ઘણા સરસ્વા છે. પહોળપણે, ડંચપણે,
સંસ્થાનપણે, પરિધિએ સરસ્વા છે. કાંડપણ ફેર
નથી. તે વે કુટનાં નામ કહે છે, ત્રુહિમવંત-
કુટ ૧, વેશ્રમણકુટ ૨, એ વે ધેટ છે.

अर्थ-जंबुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु
प० पर्वतनी दा० दक्षिणे म० महाहिमवंते
वा० वर्षधर प० पर्वतनी मर्यादा करे छे ते
दो० वे कू० कुट प० कथा व० घणा स०
सरखा छे जा० यावत् म० महाहिमवंत कुट
चे० वळी वे० वेरुलियनामे कुट चे० वळी.

जम्बुद्वीपे दीपे मन्दरस्स पवयस्स
दाहिणेणं महाहिमवन्ते वासहरपवए दो कूडा
पन्नत्ता बहुसमउल्ला जाव म-
हाहिमवन्तकूडे चेव वेरुलियकूडे
चेव ॥ २२ ॥

भावार्थ-जंबुद्वीपे मेरुथी दक्षिणदिशाए म-
हाहिमवंत वर्षधर (वर्ष कहेतां क्षेत्र तेहनी
मर्यादा करे) पर्वतना वे कुट ते शिखराकारे
कहेल छे, घणा सरखा यावत् वरावर छे, ते
वे कुटनां नाम कहे छे, एक महाहिमवंतकुट
१, वीजो वेरुलीय नामे कुट २ ए वे भेदछे.

अर्थ-ए० एम नि० निपध वा० वर्षधर
प० पर्वतना दो० वे कू० कुट प० कथा व०
घणा सरखा छे जा० यावत् नि० निपधकुट
चे० वळी रु० रुचककुट चे० वळी.

एवं निसहे वासहरपवए दो कूडा
पणत्ता बहुसमउल्ला जाव निसह-
कूडे चेव रुयगकूडे चेव ॥ २३ ॥

भावार्थ-एम निपध वर्षधर पर्वतना वे कुट
कहेल छे ते घणा सरखा छे, यावत् वरावर
छे, निपधकुट १, रुचकमभकुट २. ए वे भेद छे.

अर्थ-ज० जंबुद्वीप नामना दी० द्वीपे म०
मेरु प० पर्वतनी उ० उत्तरे नी० नीलवंत

वा० वर्षधर प० पर्वत दो० वे कू० कुट प०
कथा व० घणा स० सरखा जा० यावत् तं० ते
ज० कहुंछुं नी० नीलवन्तकुट चे० वळी उ०
उवदर्शनकुट चे० वळी.

जम्बुद्वीपे दीपे मन्दरस्स पवयस्स
उत्तरेणं नीलवन्ते वासहरपवए दो कूडा
पणत्ता बहुसमउल्ला जाव । तं जहा
नीलवन्तकूडे चेव उवदंसणकूडे चेव
॥ २४ ॥

भावार्थ-जंबुद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशाए नी-
लवंत वर्षधर पर्वतना वेकुट कहेल छे, घणा
सरखा छे यावत् वरावर नामे कुट १, उप-
दर्शन कुट २, ए वे वैतादय प०

अर्थ-ए० ए० ए० समान वर्षधर प०
पर्वतना दो० वे कू० कुट प० कथा व० घ-
णा स० सरखा छे जा० यावत् तं० ते ज०
कहुंछुं रु० रुपिकुट चे० वळी म० मणिकंचन-
कुट चे० वळी.

एवं रुपिमि वासहरपवए दो कूडा
पन्नत्ता बहुसमउल्ला जाव । तं जहा ।
रुपिकूडे चेव मणिकञ्चणकूडे चेव ॥ २५ ॥

भावार्थ-एम रुपि वर्षधर पर्वतना वे कुट
(शिखर) कहेल छे, घणा सरखा छे, यावत्
वरावर छे, तेहनां नाम कहे छे, रुपी कुट १,
मणिकंचन कुट २, ए वे भेद छे.

अर्थ-ए० एम नि० सिपरी वा० वर्षधर
प० पर्वते दो० वे कू० कुट प० कथा व०
घणा स० सरखा तं० ते ज० कहुंछुं सि०
शिखरीकुट चे० वळी ति० तिगिच्छकुट चे०
वळी.

एवं सिहरिम्नि वासहरपव्वए दो कू-
डा पन्नत्ता बहुसमउल्ला । तं जहा ।
सिहरिकूडे चेव तिगिच्छिकूडे चेवा ॥ २६ ॥

भावार्थ—एम शिखरी वर्षधर पर्वतना वे
कुट कहेल छे, घणा सरखा छे यावत् वरावर
छे. शिखरिक्कुट १, तिगिच्छिकुट २, एवे भेदछे

अर्थ—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म०
मेरु प० पर्वत उ० उत्तर दा० दक्षिणे चु०
चुल हिमवंत सिखरी वा० वर्षधर पर्वते दो०
वे म० मोटा द० द्रह प० कक्षा व० घणा
स० सरपा छे अ० विशेषे स० भेद नथी अ०
एकथी ना० वधे नही घटे नहीं आ० लां-
पणे वि० पोहलपणे उ० उंडपणे सं० आकार
प० परिधिए सरपा तं० ते ज० कहुंछुं प०
पन्नद्रह चे० वळी पो० पुंडरीकद्रह चे० वळी

जम्बुद्वीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उ-
त्तरदाहिणेणं चुल्लहिमवन्नासिहरीसु वा-
सहरपव्वयसु दो महद्दहा पन्नत्ता बहुस-
मउल्ला अविसेसमणणत्ता अन्नमन्नं ना-
इवट्टन्ति आयामविक्खम्भुवेहसंशण-
परिणहेणं । तं जहा । पउमद्दहे चेव
पोण्डरीयद्दहे चेव ॥ २७ ॥

भावार्थ—जम्बुद्वीपना मेरुथी दक्षिणे चुल्ल हि-
मवंत पर्वत अने उत्तरे शिखरि पर्वत छे, ए वे
पर्वतने विषे वे म्होटा द्रह श्री भगवंत कहेल
छे, ते घणा सरखा छे, कांड पण विशेष भेद
नथी, एकेकथी वधता नथी, घटता पण नथी,
लांपणे, पक्षोपणे, उंचपणे, उंटपणे, संस्था-

ने परिधिए सरखा छे, ते वे द्रहनां नाम कहे
छे, एक पदम द्रह १, बीजो पुंडरीक द्रह २,
(एवे द्रह एकहजार जोजन लांवा, पांचसे जो-
जनना पहोळा छे, दश जोजनना धरतीमांहि
उंडा छे, तेमांही एकक्रोड विसलाख पचास
हजार एकसोने विस कमळ छे, सर्व रत्नमय
छे, पन्नद्रह माहीं एक म्होडुं कमळ छे ते श्री
देवीनुं छे अने एकसोने आठ कमळ श्रीदे-
वीनां भंडारनां छे, चार कमळ महतरिकानां
छे, सात कमळ अणिकानां छे, सोळहजार
कमळ आत्मरक्षक देवतानां छे, चारहजार क-
मळ सामानिक देवनां छे, आठहजार कमळ
मांहीली परिपदानां छे, दशहजार कमळ व-
चली परिपदानां छे, वारहजार कमळ वाहि-
रली परिपदानां छे. हवे कमळना त्रण कोट
छे, वत्रीसलाख कमळ पहेला कोटनां छे, चा-
लीसलाख कमळ बचला कोटनां छे, अडता-
लोसलाख कमळ वाहीरला कोटनां छे. एम
सर्वे थइने एकक्रोड विसलाख पचासहजार ए-
कसोने विस कमळ धयां तेमांही मोडुं कमळ
एक जोजननुं लांनुं अने पोहोळुं छे, अर्थ
जोजननुं जाहुं छे, दश जोजननुं पाणीमांही
उंडुं छे, वे कोश पाणी धकी उंडुं छे, दश
जोजन ब्राह्मेहं सर्वांगे कहेलुं छे, ते कमळनुं
वज्र रत्नमय सुळ छे, रिष्ट रत्नमय कंद छे,
वैरुली रत्नमय निलवरणां वाहिरलां पानडां
छे, जंबुनंद राता रत्न सुवर्णमय मांहीला पा-
नडां छे, तपाच्या शोनामय केशरां छे, नाना
प्रकारना मणिमय जे उपरे पांखडीयुं छे, सो-
नानी कर्णिकाछे, ते कर्णिका वे कोशनी लांबी
ने पडोळी छे, एक कोशनो जाटपणे दोहो छे,
ते उपर ग्रणुं ग्रणुं रत्नमय छे, तेहना पन्नम

મધ્યદેશ ભાગે શ્રીદેવીનું ઘર છે, તે એક કોશનું લાંબુ અને અર્ધ કોશનુંપોહોલું છે અને દેશ અંબુ કોગ અંબુલે, અનેક સ્તંભા છે, ઘટાર્યો સુવર્ણે કરી તે જોવા યોગ્ય છે, તે ધુવનને ત્રણ વારણાં છે, પૂર્વે ૧, દક્ષીણે ૨, ઉત્તરે ૩, એ ત્રણ વારણાં પાંચસે ધનુષ્યનાં અંચાં છે, અહીંસે ધનુષ્યનાં પહોળાં છે, તે ધુવનમાં એક મળી પીઠીકા છે, તે પાંચસે ધનુષ્યની લાંબી ને પહોળી છે, અહીંસે ધનુષ્યની અંચી છે, તે મળી-પીઠીકા ઉપરે એક દેવ સેજ્યા રહેવાનો પલ્યંગ છે, એવી રીતેજ પુંડરીક દ્રહમાં પણ જાણવું.)

અર્થ—તં તિહાં ણં વલી દોં વે દેં દેવી મં મોટી સુધિવંત જાં યાવત પં પલ્યોપમ ટિં આઝપાના પં વસે છે તં તે જં કહુંહું સિં શ્રી ચેં વલી લં લક્ષ્મી ચેં વલી

તત્ય ણં દો દેવયાઓ મહિઙ્ઘિયાઓ જાવ પલિઓવમઙ્ઘિઙ્ઘિયાઓ પરિવસન્તિ । તં જહા । સિરિ ચેવ લચ્છિ ચેવ ॥૨૯॥

ભાવાર્થ—તિહાં વે દેવીયું મ્હોટી સુધિની ધણિયાણીયું યાવત્ એક પલ્યોપમના આઝલા વાલીયું વસે છે, તે વે દેવીયુંના નામ કહે છે, પદ્મદ્રહમાં શ્રી દેવી ૧, પુંડરિક દ્રહમાં લક્ષ્મી દેવી રહે છે ૨ એ વે ભેદ છે.

અર્થ—એં એમ મં મહા હિમવંત રૂપી વાં વર્ષધર પં પર્વતે દોં વે મં મોટા ટં દ્રહ પં કયા વં ધના સં સરપા જાં યાવત તં તે જં કહુંહું મં મહા પ્રમદ્રહ ચેં વલી મં મહા પુંડરીક દ્રહ ચેં વલી દેં દેવાંગના ટિં હિમિદેવી ચેં વલી વું સુદ્ધિદેવી ચેં વલી

એવં મહાહિમવન્તરૂપીસુ વાસહરપ-વણસુ દો મહદ્દહા પળત્તા વહુસમઅણા જાવ તં જહા । મહાપઅમદ્દહે ચેવ મહાપોળ્ડરીયદ્દહે ચેવ । દેવયાઓ હિરિ ચેવ વુદ્ધિ ચેવ ॥ ૨૯ ॥

ભાવાર્થ—એમ મહાવંત અને રૂપીપર્વતને વિષે વે મ્હોટા દ્રહ કહેલ છે તે ઘણા સરસા છે યાવત્ વરાવર છે તેહનાં નામ કહે છે, મહાહિમવંત પર્વત ઉપરે મહાપદ્મદ્રહ ૧, રૂપી પર્વત ઉપરે મહા પુંડરિકદ્રહ ૨, તિહાં પણ વે દેવીયું મ્હોટી સુદ્ધિની ધણિયાણીયું વસે છે તેહનાં નામ કહે છે. મહાપદ્મ દ્રહમાંથી ઙ્ઘિદેવી ૧, મહાપુંડરિક દ્રહમાં સુદ્ધિ નામે દેવી વસે છે. ૨, એ વે ભેદ છે.

અર્થ—એં એમ નીં નિપથ નીં નીલવંતે તિં તિગિચ્છદ્રહ છે ચેં વલી કેં કેસરી-દ્રહ છે ચેં વલી દેં દેવીયો ધિં ધૃતીદેવી ચેં વલી કિં કિન્તિ ચેં વલી

એવં નિસહનીલવન્તેસુ તિગિચ્છદ્દહે ચેવ કેસરિદ્દહે ચેવ । દેવયાઓ ધિર્ધિ ચેવ કિન્તી ચેવ ॥ ૩૦ ॥

ભાવાર્થ—એમ નિપથ પર્વત અને નીલવંત પર્વતને વિષે વે મ્હોટા દ્રહ કહેલ છે, નિપથ પર્વત ઉપર તિગિચ્છ દ્રહ ૧, નીલવંત પર્વત ઉપરે કેશરિદ્રહ ૨, તિહાં વે દેવીયું મ્હોટી સુદ્ધિની ધણિયાણીયું વસે છે તેહનાં નામ કહે છે તિગિચ્છદ્રહમાં ધૃતીદેવી ૧, કેશરિદ્રહમાં કિન્તિદેવી વસે છે ૨, [એ સર્વે દ્રહનું અંકાપણું અને કમળનું માન પદ્મદ્રહની વરાવર જાણવું અને ત્રીજું માન પદ્મદ્રહથી ઠામ વમણું જાણવું.] એ વે ભેદ છે.

પેહેલા તથા વીજા દ્વાળંમાં આવતા પરસ્પર સૂત્રોનો સંબંધ વતાવનાર મુઝમાં આપેલ સંસ્કૃત પાઠનો તરજુમો.

૧૧ દ્વાળં.

પેરેગ્રાફ ૧ (સમ્યક મિથ્યાજ્ઞાન શ્રદ્ધાન અને અનુષ્ઠાનોવડે સર્વ પદાર્થોનો વિષય ઉપયોગમાં લાવવાથી આત્માનું સર્વ પદાર્થોમાં પ્રાધાન્યપણું તેથી આત્માનો વિચાર પેહેલા કહેછે.)

૨ (કેટલાએક મતવાલાઓ આત્માનું ક્રિયા રહીતપણું માને છે તેથી તે મતનું નિરાકરણ કરવાને માટે તે આત્માનું ક્રિયા સહીત પણું કહેવાને ઇચ્છતા ક્રિયાના કરણભૂત જે દંઢ તેનું સ્વરૂપ પ્રથમ કહેછે.)

૩ (તે દંઢવડે આત્મા ક્રિયા કરે છે તેથી તે ક્રિયા કહે છે.)

૪ (ઉપર વતાવેલ સ્વરૂપવાલા આત્માનો આધાર જે લોક તેનું સ્વરૂપ કહે છે.)

૫ (લોકની વ્યવસ્થા પળ તેથી વિપરીત જે અલોકના હોવાથી થાય તેથી તે અલોક કહેછે.)

૬ (લોક અને અલોકનો વિભાગ કરનાર ધર્માસ્તિકાય છે તેથી તેનું સ્વરૂપ કહેછે.)

૭ (ધર્મથી પળ વિપરિત જે અધર્મ તેનું સ્વરૂપ કહે છે.)

૮ (આત્મા પળ લોકમાં રહેલ ધર્માસ્તિકાય અને અધર્માસ્તિકાયથી ઉપગ્રહીત, દંઢ સહિત, સક્રિય એવો છતો કર્મવટે વંધાયછે તે વંધ કહેછે.)

૯ (અનાદિ કાલથી વંધનો સદ્ભાવ છતા પળ કોઈ ભવીજીવ મોક્ષ પામે છે તેથી મોક્ષનું સ્વરૂપ કહે છે.)

૧૦ (મોક્ષ પળ પુણ્ય પાપના ક્ષય થવાથી થાયછે તેથી પુણ્ય પાપનું સ્વરૂપ કહેવું જોઈએ તેમાં પળ મોક્ષ અને પુણ્યનું શુભ સ્વરૂપનું સમાન ધર્મિપણું તેથી પેહેલું પુણ્ય કહે છે.)

૧૧ (પુણ્યનું પ્રતિપક્ષ પાપ છે તેથી તેનું સ્વરૂપ કહે છે.)

૧૨ (ઉપર કહેલ પુણ્ય પાપકર્મોના વન્ધનું કારણ જે આશ્રવ તે કહે છે.)

૧૩ (હવે આશ્રવના વિપરીત સંવરનું સ્વરૂપ કહે છે.)

૧૪ (તે સંવર વે પ્રકારનો છે પળ સંવરના સામાન્યપણાથી એક છે. વિશેષ સંવરમાં કર્મો વેદાય છે પળ વંધ થતો નથી તેથી વેદના સ્વરૂપ કહે છે.)

૧૫ (વન્ધે પ્રકારની પળ વેદના વેદનાની સામ્યપણાથી એકજ પ્રકારની છે. મોગવેલા રસવાલું કર્મ પ્રદેશથી સ્ત્રી પઢેછે તેથી વેદના પછી કર્મ પરિશાટનરૂપ નિર્જરાનું નિરૂપણ કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૨ (સંસારમાં જીવ જુદી જુદી નિર્જરાનું ભાજન પ્રત્યેક શરીરની અવસ્થામાં થાય છે પળ સાધારણ શરીરની અવસ્થામાં થતો નથી તેથી પ્રત્યેક શરીરની અવસ્થાવાલા જીવના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરવા માટે “એગે જીવે” એ વિગેરેથી કહે છે અથવા પ્રસ્તુત (ચાલતા) ગાહમાં કહેવાના જીવ વિગેરે નવ પદાર્થો સામાન્યથી કાળા. હવે વિશેષથી જીવ પદાર્થનું નિરૂપણ કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૩ (વન્ધ, મોક્ષ વિગેરે આત્માના ધર્મો કાળા છે તેથી તે અધિકારથીજ આ પછી “એગા જીવાણં” ત્યાંથી માંઢીને “એગે ચરિત્તે ત્યાંમુધી આત્માના ધર્મોને કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૪ (જ્ઞાન વિગેરે ઉત્પાદ, વ્યય, ધ્રુવવાલા છે અને સ્થિતિ છે તે સમય વિગેરેની છે તેથી સમયની પરૂપણા કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૬ (અંશરહિત વસ્તુઓના અધિકારથીજ આ વે સૂત્રો કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૬ (જેમ પરમાણું તેવા પ્રકારના એકત્વ પરિણામના વિશેષથી એકત્વપણું થાયછે તેવીજ રીતે અનંતા અણુમય સ્કન્ધોનું પણ થાય એમ વતાવતાં સકલ વાદર સ્કંધ પ્રધાનભૂત ઇપ્ત્યાગ્માર એ નામની પૃથ્વીનું સ્કન્ધ પરુપે છે.)

પેરેગ્રાફ ૬ (૨) (સિદ્ધિ પછી સિદ્ધવાલા કહેછે.)

પેરેગ્રાફ ૭ (૧) કર્મક્ષય સિદ્ધનો ધર્મ પરિનિર્વાણ છે તેથી તે કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૭ (૨) (પરિનિર્વાણ ધર્મના યોગથી તેજ કર્મક્ષય સિદ્ધ પરિનિર્વૃત (એટલે મોક્ષ પામેલા) કેહેવાયછે તેથી તે વતાવતાં કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૮ (અત્યાર સુધીમાં આ પ્રાયે જીવ ધર્મ એકતારુપે કહ્યો, હવે પુદ્ગલો જીવને ઉપગ્રાહક (સાધનભૂત) હોવાથી પુદ્ગલ લક્ષણ જીવધર્મો (“ એમે સદે ” ત્યાંથી તે “ જાવ લુચ્ચે ”) ત્યાં સુધી એકતારુપે વતાવે છે.)

પેરેગ્રાફ ૯ (પુદ્ગલ ધર્મોની એકતા કહી, હવે પુદ્ગલને આલિંગીને રહેલા ૧૮ પાપસ્થાનકના અપગસ્ત (અશુભ) ધર્મોની એકતા કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૦ (૧૮ પાપસ્થાનક કહ્યા, હવે તેના વિપરીતોની એટલે પ્રાણાતિપાત વેરમણ ઇત્યાદીના ૧૮ સૂત્રોવડે એકતા કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૧ (સંસારી જીવ દ્રવ્યના ધર્મોનું એકત્વપણું કહ્યું. હવે કાલનું સ્થિતિરુપપણું હોવાથી અને તદ્ધર્મપણાને લીધે તેનો વિશેષ કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૨ (જીવ, પુદ્ગલ અને કાલ લક્ષણ દ્રવ્યોનો વિવિધ ધર્મ વિશેષોની એકત્વ પરુપણા કહી, હવે સંસારી જીવો, મુક્તજીવો અને પુદ્ગલ દ્રવ્ય વિશેષોનો નારક પરમાણું વિગેરેનો સમુદાય લક્ષણ ધર્મની એકતા વતાવે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૪ (જમ્બુદ્વીપ કંઠો, હવે તેના પરુપક ભગવાન મહાવીરની એકતા કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૫ (વીર એકલા નિર્વૃત થયા એમ કહ્યું. નિર્વૃત્તિક્ષેત્રની પાસે અનુત્તર વિમાનો છે તેથી ત્યાંના રહેનાર દેવોનું દેહમાન કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૬ (દેવોનો અધિકાર ચાલતો હોવાથી નક્ષત્ર દેવોનું તારાઓની સાથે એકપણું કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૭ (પુદ્ગલ સ્વરુપ કહેવા ઇચ્છતા કહે છે.)

દુદ્ધાણં ઉદ્દેસઓ ૧.

પેરેગ્રાફ ૧ (હવે દ્વિસ્થાનક નામનું વીજું અધ્યયન શરુ કરે છે. આનો વિશેષ સંવંધ આ છે. જૈનોના મતપ્રમાણે વસ્તુ સામાન્ય વિશેષે રુપ છે. સામાન્ય આશ્રીને પ્રથમ અધ્યયનમાં આત્મા વિગેરે વસ્તુનું એકત્વવણું પરુપ્યું. આત્માનો વિશેષનો આશ્રય લઈને તેજ વે પ્રકારે પરુપીએ છીએ. આ સંવંધે આવેલ આ અધ્યયનના ઉપક્રમ વિગેરે ચાર અનુયોગદ્વાર થાય છે તેપણ પહેલા અધ્યયનની પેટ જાણવા અને જે ફેર છે તે પોતાની બુદ્ધિથી જાણી લેવો. ફક્ત ચાર ઉદ્દેસાવાલા અધ્યયનનું પ્રત્રાણુગમે પ્રથમ ઉદ્દેસકનું આ આદિ સૂત્ર છે.)

પેરેગ્રાફ ૨ (હવે ત્રસ એ આદિ નવ સૂત્રવડે જીવતત્વનાજ સમ્પતિપક્ષ (વિરુદ્ધ સાહિત) ભેદો વતાવે છે.)

પેરેગ્રાફ ૩ (આમ જીવનત્વના ધ્વિપદાવતાર (વીજું દ્રાણં) વતાવીને અજીવ તત્વ સંવંધી તે વતાવે છે.)

પેરેગ્રાફ ૪ (ક્રિયાના સદ્ભાવે આત્માને વંધ વિગેરે યાય છે. ક્રિયા નિરુપણ કરવાને માંટ ૩૬ સૂત્ર કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૫ (આ ક્રિયાઓ પ્રાયે ગઈગીય છે તેથી ગઈ કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૬ (પ્રત્યાખ્યાન કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૭ (જ્ઞાનપૂર્વક પ્રત્યાખ્યાન વિગેરે મોક્ષ ફલદાતા છે તેથી જ્ઞાન વિગેરે કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૮ (જ્ઞાન અને ચારિત્ર આત્મા કેવી રીતે પામે છે તે ? ? સૂત્રોથી કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૯ (૧) (વઢી ધર્મ વિગેરે વિદ્યા ચરણસ્વરૂપ કેવી રીતે પામે છે તે કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૯ (૨) (વઢી ધર્માદિ લાભને માટે વીજા વે કારણો કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૦ (કેવલજ્ઞાન પળ કાલવિશેષે થાય છે તે કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૧ (કેવલજ્ઞાન મોહનીય ઉન્માદના ક્ષણ થાય છે તેથી સામાન્યથી ઉન્માદનું નિરૂપણ કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૨ (૧) (ઉન્માદથી જીવ પ્રાણાતિ પાતાદિ રૂપ દંડમાં પ્રવર્તે છે અને દંડનું ભાજન થાય છે તેથી દંડનું નિરૂપણ કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૨ (૨) (કહેલ સ્વરૂપવાલો દંડ સર્વ જીવોમાં ૨૪ દંડકોમાં ફોરની વતાવે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૩ (સમ્યક દર્શન વિગેરે ત્રણ રત્નવાલાઓનેજ દંડ હોતા નથી તેથી તે ત્રણેનું નિરૂપણ કરવા ઇચ્છતા સામાન્યથી દર્શનનું સ્વરૂપ વતાવે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૪ (હવે જ્ઞાન કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૫ (હવે ચારિત્ર કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૬ (ચારિત્ર ધર્મ છે તે સંયમ છે તેથી સંયમ કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૭ (સરાગ સંયમ કહ્યો, હવે ચોતરાગ સંયમ કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૮ (૧) (સંયમ કહ્યો તે જીવાર્જીવ વિષય છે તેથી પૃથ્વી આદિ જીવનું સ્વરૂપ કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૯ (કાલ અને આકાશની ધે સૂત્રોથી પરૂપણા કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૨૦ (લોક અને અલોકના ભેદથી આકાશનું વે પ્રકારપણું વતાવ્યું અને લોક છે તે શરીરવાલાઓનું અને શરીરોનું આશ્રય સ્વરૂપ છે તેથી નારક વિગેરે શરીર દંડક વહે શરીર પરૂપણા કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૨૧ (૧) (શરીરના અધિકારમાં જીવોની વે રાશીવહે પરૂપણા કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૨૧ (૨) (ત્રસકાય સ્થાવર કાયોનુંજ વે પ્રકારે પરૂપણા કરવાને વે સૂત્રો કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૨૨ (પૂર્વ સૂત્રમાં ભવ્ય જીવો કહ્યા. હવે તેના વિશેષમાંજ જે જે કરવું ઉચિત છે તેજ વે સ્થાનકથી કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૨૩ (હવેના ૧૬ સૂત્રો પૂર્વ સૂત્રની પેટે વે દિશાઓના આલાવાથી કહેવા.)

॥ દુટ્ટાણં ઉદ્દેસઓ ૨ ॥

પેરેગ્રાફ ૧ (૧) (પેહેલા ઉદ્દેસામાં જીવ ધર્મ અને અર્જીવ ધર્મ વિશેષકરીને વે પ્રકારે કહ્યા, વીજા ઉદ્દેસામાં પળ વે પ્રકારે જીવ ધર્મ કહે છે. પ્રથમ ઉદ્દેસાના છેલા સૂત્ર અને આ વીજા ઉદ્દેસાના આદિ સૂત્રનો આ પ્રમાણે સંબંધ છે. પહેલા ઉદ્દેસાના અંતના સૂત્રમાં પાદપોગમન કહ્યું છે અને તેથી કેટલાક દેવપણું પામે છે તેથી દેવા વિશેષ કહેવામાં તેનો કર્મવંધ અને ઘેદના કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧ (૨) (આ વે વિકલ્પ (ભેદ) ધીજા ઠાણામાં સૂત્રને આશ્રીને કહ્યો છે અને આ રીતે સૂત્રમાં કહેલ ઘણે પ્રકારની સર્વે જીવોના ચૌવોસે દંડકમાં પરૂપણા કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૨ (નારકીની ગતી તથા આગતી ઘતાવે છે.)

પેરેગ્રાફ ૩ (જીવાધિકાર હોવાને લીધે ભવ્ય વિગેરે ણવા ૧૬ વિશેષણોવહે દંડકની પરૂપણા કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૪ (પહેલા વૈમાનિક ચરમત્વ અને અચરમત્વ પળ કહ્યા છે તે અવધિજ્ઞાન વહે અધોલોક વિગેરે જુપ્ છે, હવે તે જોવામાં જીવના વે પ્રકાર કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૫ (વૈક્રિય શરીર આશ્રીને અધોલોક વિગેરેના જ્ઞાનમાં વે પ્રકાર કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૬ (આજ્ઞાનાધિકાર છે તેથી તે સંવંધમાં વીજું કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૭ (શબ્દ શ્રવણ વિગેરે જીવપરિણામ કહેવા તેનો સંવંધ ચાલતો હોવાથી જીવના વીજા પળ પરિણામ કહે છે)

પેરેગ્રાફ ૮ (સામાન્યથી શ્રવણ વિગેરે દેશ અને સર્વથી કહ્યા છે. વિશેષ વિવિક્ષામાં દેવોનું પ્રધાનપણું હોવાથી તેમને આશ્રીને તે કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૯ (ઉપર કહેલ ભાવો શરીર હોય તોજ સંભવે છે તેથી અને દેવોનું પ્રધાનપણું છે તેથી વ્યક્તિ આશ્રીને તેમનાજ શરીરોની પરુપણા કરે છે.)

॥ દુદ્દાણં ઉદ્દેસઓ ૩ ॥

(વીજા ઉદ્દેસા અને વીજા ઉદ્દેસાનો સંવંધ નીચે મુજવ છે. વીજા ઉદ્દેસામાં જીવ પદાર્થ અનેક રીતે કહ્યો. આ ઉદ્દેસામાં જીવને ઉપગ્રાહક (સાધનશુન) પુદ્ગલ જીવ ધર્મ ક્ષેત્ર દ્રવ્યલક્ષણ પદાર્થ પરુપણા કહેશે. વીજા ઉદ્દેસાના છેલા મૂત્ર અને આ ઉદ્દેસાના પહેલા

મૂત્રનો સંવંધ નીચે મુજવ છે. વીજા ઉદ્દેસાના છેલા મૂત્રમાં દેવોના શરીર વતાવ્યાં અને શરીરવાલો શબ્દાદિનો ગ્રાહક હોયછે તેથી શબ્દની નિરુપણા કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૨ (શબ્દભેદ કહ્યા, હવે તેના કારણની નિરુપણા કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૩ (પુદ્ગલનું એકઠા થવું ને જુદા થવું તેનું કારણ વતાવવાને કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૪ (૧૨ સૂત્રોથી પુદ્ગલોનીજ નિરુપણા કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૫ (પુદ્ગલના અધિકારને લીધે જ ઉપર કહેલ સવિપક્ષના (વિરુધ પક્ષના) વિગેરે છે વિશેષણોથી વિશિષ્ટ (વિશેષ) શબ્દાદી પુદ્ગલ ધર્મો કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૬ (પુદ્ગલ ધર્મો કહ્યા. ધર્મોના અધિકાર હોવાથી હવે જીવ ધર્મો કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૭ (હવે વીર્યાચારને વિશેષ કહેવા માટે છે મૂત્રો કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૮ (પડિમાઓ સામાયિકવાલ્લા નેજ હોય તેથી સામાયિક કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૯ (જીવના ધર્મોનો અધિકાર છે તેથી ૨૪ મૂત્રોથી વીજા ધર્મો પળ કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૦ (પર્યાયનો અધિકાર હોવાથી અને તે નિયત (અમુક) ક્ષેત્ર આશ્રિત હોવાથી ક્ષેત્રના વ્યપદેશથી (સંવંધથી) પુદ્ગલ પર્યાયને કહેવા ડચ્છતા ક્ષેત્રપ્રકરણ કહે છે.)

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे
म० मेरु प० पर्वतनी दा० दक्षिणे म० महा
हि० हिमवंत वा० वर्षधर प० पर्वतना म० महा
प० पद्म द० द्रह नामना द० द्रह थकी दो० वे
म० मोटी न० नदीओ प० वहे छे तं० ते ज०
कहुंछुं रो० रोहिता नदी चे० वळी हे० हरि
कंता नदी चे० वळी ॥ ३१ ॥

जम्बुद्वीपे दीपे मन्दरस्स पवयस्स
दाहिणेणं महाहिमवन्ताओ वासहरप-
वयाओ महापउमद्दहाओ दहाओ
दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा ।
रोहिया चेव हरिकन्ता चेव ॥ ३१ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे मेरुयी दक्षिण दिशाए महा
हिमवंत वर्षधर पर्वतना महापद्म द्रहमांथी वे म्हा
म्होटी नदीयुं नीफली वहे छे तेहनां नाम
कहे छे, रोहिता नदी १, हरिकंता नदी २, ए
वे भेद छे ॥ ३१ ॥

अर्थः—ए० एम नि० निपथ नामे वा०
वर्षधर प० पर्वतना ति० तिगिच्छ द्रह ना-
मना द० द्रहथी दो० वे म० मोटी न० नदीओ
प० वहेछे तं० ते ज० कहुंछुं ह० हरि नदी
चे० वळी सी० सीतोदा नदी चे० वळी ॥ ३२ ॥

एवं निसहाओ वासहरपवयाओ ति-
गिच्छिद्दहाओ दहाओ दो महानई-
ओ पवहन्ति । तं जहा । हरि चेव
सीओय चेव ॥ ३२ ॥

भावार्थः—एम निपथ वर्षधर पर्वतना ति-
गिच्छ नामे द्रह मांहीथी वे म्हा म्होटी नदी-
युं निकळी वहे छे तेहनां नाम कहे छे, हरि
नदी १, सीतोदा नदी २, एवे भेद छे ॥ ३२ ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे
म० मेरु प० पर्वतनी उ० उत्तरे नी० नील-

वत वा० वर्षधर प० पर्वतथी के० केसरिद्रह
नामना म० मोटा द्रहथी दो० वे म० मोटी
न० नदीओ प० वहेछे तं० ते ज० कहुंछुं सी०
सीता नदी चे० वळी ना० नारिकंता नदी
चे० वळी ॥ ३३ ॥

जम्बुद्वीपे दीपे मन्दरस्स पवयस्स
उत्तरेणं नीलवन्ताओ वासहरपवयाओ
केसरिद्दहाओ महादहाओ दो महान-
ईओ पवहन्ति । तं जहा । सीता चेव
नारिकन्ता चेव ॥ ३३ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपना मेरुयी उत्तर दिशाए
नीलवंत वर्षधर पर्वतना केसरि द्रहथी वे म्हा
म्होटी नदीयुं निकळी वहे छे तेहनां नाम
कहे छे, सीतानदी १, नारिकंतानदी २, ए वे
भेद छे ॥ ३३ ॥

अर्थः—ए० एम रु० रूपी वा० वर्षधर
प० पर्वतना म० महा पो० पुंडरीक द० द्रहथी
दो० वे म० मोटी न० नदीओ प० वहे छे
तं० ते ज० कहुंछुं न० नरकंता चे० वळी
रु० रूपकुला चे० वळी ॥ ३४ ॥

एवं रूपीओ वासहरपवयाओ महा-
पोण्डरीयद्दहाओ दो महानईओ पव-
हन्ति । तं जहा । नरकन्ता चेव रु-
पकुला चेव ॥ ३४ ॥

भावार्थः—एम रूपी वर्षधरपर्वतना महा पुंड-
रीक द्रहमांथी वे म्हा म्होटी नदीयुं निकळी वहे
छे तेहनां नाम कहे छे, नरकंतानदी १, रूप-
कुलानदी २, ए वे भेद छे ॥ ३४ ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे
म० मेरु प० पर्वतनी दा० दक्षिणे भ० भ-
रत वा० क्षेत्रे दो० वे प० प्रपात द० द्रह
(टुंगरयी नीचो मवाद्द पडे ते) पं० कया

પેરેગ્રાફ ૪ (પહેલા વૈમાનિક ચરમત્વ અને અચરમત્વ પણ કહ્યા છે તે અવધિજ્ઞાન વડે અધોલોક વિગેરે જુદા છે, હવે તે જોવામાં જીવના વે પ્રકાર કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૫ (વૈક્રિય શરીર આશ્રીને અધોલોક વિગેરેના જ્ઞાનમાં વે પ્રકાર કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૬ (આજ્ઞાનાધિકાર છે તેથી તે સંવંધમાં વીજું કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૭ (શબ્દ શ્રવણ વિગેરે જીવપરિણામ કહેવા તેનો સંવંધ ચાલતો હોવાથી જીવના વીજા પણ પરિણામ કહે છે)

પેરેગ્રાફ ૮ (સામાન્યથી શ્રવણ વિગેરે દેશ અને સર્વથી કહ્યા છે. વિશેષ વિવિધામાં દેવોનું પ્રધાનપણું હોવાથી તેમને આશ્રીને તે કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૯ (ઉપર કહેલ ભાવો શરીર હોય તોજ સંભવે છે તેથી અને દેવોનું પ્રધાનપણું છે તેથી વ્યક્તિ આશ્રીને તેમનાજ શરીરોની પરુપણા કરે છે.)

॥ દુઢાણં ઉદ્દેસઓ ૩ ॥

(વીજા ઉદ્દેસા અને વીજા ઉદ્દેસાનો સંવંધ નીચે મુજવ છે. વીજા ઉદ્દેસામાં જીવ પદાર્થ અનેક રીતે કહ્યો. આ ઉદ્દેસામાં જીવને ઉપગ્રાહક (સાધનમુત) પુદ્ગલ જીવ ધર્મ ક્ષેત્ર દ્રવ્યલક્ષણ પદાર્થ પરુપણા કહેશે, વીજા ઉદ્દેસાના છેલા મૂત્ર અને આ ઉદ્દેસાના પહેલા

મૂત્રનો સંવંધ નીચે મુજવ છે. વીજા ઉદ્દેસાના છેલા મૂત્રમાં દેવોના શરીર વતાવ્યાં અને શરીરવાલો શબ્દાદિનો ગ્રાહક હોયછે તેથી શબ્દની નિરુપણા કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૨ (શબ્દભેદ કહ્યા, હવે તેના કારણની નિરુપણા કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૩ (પુદ્ગલતું એકઠા થવું ને જુદા થવું તેનું કારણ વતાવવાને કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૪ (૧૨ મૂત્રોથી પુદ્ગલોનીજ નિરુપણા કરે છે.)

પેરેગ્રાફ ૫ (પુદ્ગલના અધિકારને લીધે જ ઉપર કહેલ સવિપક્ષના (વિરુધ પક્ષના) વિગેરે છ વિશેષનોથી વિશિષ્ટ (વિશેષ) શબ્દાદી પુદ્ગલ ધર્મો કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૬ (પુદ્ગલ ધર્મો કહ્યા, ધર્મોના અધિકાર હોવાથી હવે જીવ ધર્મો કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૭ (હવે વીર્યાંચારને વિશેષ કહેવા માટે છ મૂત્રો કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૮ (પડિમાઓ સામાયિકવાલ્યા નેજ હોય તેથી સામાયિક કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૯ (જીવના ધર્મોનો અધિકાર છે તેથી ૨૪ મૂત્રોથી વીજા ધર્મો પણ કહે છે.)

પેરેગ્રાફ ૧૦ (પર્યાયનો અધિકાર હોવાથી અને તે નિયત (અમુક) ક્ષેત્ર આશ્રિત હોવાથી ક્ષેત્રના વ્યપદેશથી (સંવંધથી) પુદ્ગલ પર્યાયને કહેવા ઇચ્છતા ક્ષેત્રપ્રકરણ કહે છે.)

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी दा० दक्षिणे म० महा हि० हिमवन्त वा० वर्षधर प० पर्वतना म० महा प० पदम द० द्रह नामना द० द्रह थकी दो० वे म० मोटी न० नदीओ प० वहे छे तं० ते ज० कहुंछुं रो० रोहिता नदी चे० वळी हे० हरि कंता नदी चे० वळी ॥ ३१ ॥

जम्बुद्वीवे दीवे मन्दरस्स पवयस्स दाहिणेणं महाहिमवन्ताओ वासहरपवयाओ महापउमद्दहाओ दहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । सीता चेव हरिकन्ता चेव ॥ ३१ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे मेरुथी दक्षिण दिशाए महा हिमवन्त वर्षधर पर्वतना महापञ्च द्रहमांथी वे म्हा म्होटी नदीयुं नीफली वहे छे तेहनां नाम कहे छे, रोहिता नदी १, हरिकन्ता नदी २, ए वे भेद छे ॥३१॥

अर्थः—ए० एम नि० निपथ नामे वा० वर्षधर प० पर्वतना ति० तिगिच्छ द्रह नामना द० द्रहथी दो० वे म० मोटी न० नदीओ प० वहेछे तं० ते ज० कहुंछुं ह० हरि नदी चे० वळी सी० सीतोदा नदी चे० वळी ॥३२॥

एवं निसहाओ वासहरपवयाओ तिगिच्छिद्दहाओ दहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । हरि चेव सीओय चेव ॥ ३२ ॥

भावार्थः—एम निपथ वर्षधर पर्वतना तिगिच्छ नामे द्रह मांहीथी वे म्हा म्होटी नदीयुं निकळी वहे छे तेहनां नाम कहे छे, हरि नदी १, सीतोदा नदी २, ए वे भेद छे ॥३२॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी उ० उत्तरे नी० नील-

वत वा० वर्षधर प० पर्वतथी के० केसरिद्रह नामना म० मोटा द्रहथी दो० वे म० मोटी न० नदीओ प० वहेछे तं० ते ज० कहुंछुं सी० सीता नदी चे० वळी ना० नारिकंता नदी चे० वळी ॥ ३३ ॥

जम्बुद्वीवे दीवे मन्दरस्स पवयस्स उत्तरेणं नीलवन्ताओ वासहरपवयाओ केसरिद्दहाओ महादहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । सीता चेव नारिकन्ता चेव ॥ ३३ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपना मेरुथी उत्तर दिशाए नीलवन्त वर्षधर पर्वतना केसरि द्रहथी वे म्हा म्होटी नदीयुं निकळी वहे छे तेहनां नाम कहे छे, सीतानदी १, नारिकंतानदी २, ए वे भेद छे ॥ ३३ ॥

अर्थः—ए० एम रु० रूपी वा० वर्षधर प० पर्वतना म० महा पो० पुंडरीक द० द्रहथी दो० वे म० मोटी न० नदीओ प० वहे छे तं० ते ज० कहुंछुं न० नरकन्ता चे० वळी रु० रूपकुला चे० वळी ॥ ३४ ॥

एवं रूपीओ वासहरपवयाओ महापोण्डरीयद्दहाओ दो महानईओ पवहन्ति । तं जहा । नरकन्ता चेव रूपकुला चेव ॥ ३४ ॥

भावार्थः—एम रूपी वर्षधरपर्वतना महा पुंडरीक द्रहमांथी वे म्हा म्होटी नदीयुं निकळी वहे छे तेहनां नाम कहे छे, नरकंतानदी १, रूपकुलानदी २, ए वे भेद छे ॥३४॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे म० मेरु प० पर्वतनी दा० दक्षिणे भ० भरत वा० क्षेत्र दो० वे प० मन्वन्त द० (इंगरथी नीचो मन्वाद् पदे)

વ૦ ઘણા સ૦ સમા તં૦ તે જ૦ કહુંહું ગ૦
ગંગા પ્પ૦ પ્રપાત હ૦ દ્રહ ચે૦ વ્હી સિ૦
સિન્ધુ પ્પ૦ પ્રપાત હ૦ દ્રહ ચે૦ વ્હી ॥૩૫॥

જમ્બુદ્વીવે દીવે મન્દરસ્સ પવયસ્સ
દાહિણેણં ભરહે વાસે દો પવાયદ્દહા
પણ્ણત્તા વહુસમણ્ણા । તં જહા ।
ગ્ગપ્પવાયદ્દહે ચેવ સિન્ધુપ્પવાયદ્દહે
ચેવ ॥ ૩૫ ॥

ભાવાર્થ:—જંબુદ્વીપે મેરુથી દક્ષીણે ભરતક્ષે-
ત્રમાં વે પ્રપાતદ્રહ છે, જેહમાં પર્વતથી નદીનો
પ્રવાહ પડે છે તે વે ઘણા સરસ્વા છે યાવત
વરાવર છે તેહ વેનાં નામ કહે છે, જેમાં ગંગા-
નદીનો પ્રવાહ પડે છે તે ગંગાપ્રપાતદ્રહ ?,
સિન્ધુ નદીનો પ્રવાહ જેહમાં પડે છે તે સિન્ધુ-
પ્રતાપ દ્રહ ૨, એ વે ભેદ છે ॥૩૫॥

અર્થ:—એ૦ એમ હે૦ હેમવંત વા૦ ક્ષેત્ર
દો૦ વે પ૦ પ્રપાત હ૦ દ્રહ પ૦ કહ્યા. વ૦વહુ
સ૦ સરસ્વા તં૦ તે જ૦ કહુંહું રો૦ રોહિતા
પ્પ૦ પ્રપાત હ૦ દ્રહ ચે૦ વ્હી રો૦ રોહિતંસ
પ્પ૦ પ્રપાત હ૦ દ્રહ ચે૦ વ્હી ॥ ૩૬ ॥

એવં હેમવણ વાસે દો પવાયદ્દહા પ-
ણ્ણત્તા વહુસમણ્ણા । તં જહા । રો-
હિયપ્પવાયદ્દહે ચેવ રોહિયંસપ્પવાયદ્દહે
ચેવ ॥ ૩૬ ॥

ભાવાર્થ:—એમ જંબુદ્વીપના મેરુથી ઉત્તરદિ-
શાળે હેમવંતક્ષેત્રમાં વે પ્રપાતદ્રહ (કુંહ) કહેલ
છે, તે વે ઘણા સરસ્વા છે યાવત વરાવર છે,
તેહનાં નામ કહે છે, રોહિતા પ્રપાતકુંહ તેહમાં
મ્હા મ્હોટા મકર (મગર) મુલ્યપ્રવાહે રોહિતા-
નદી પડે છે ?, રોહિતાંસાં પ્રપાતદ્રહ છે ૨,
એ વે ભેદ છે ॥૩૬॥

અર્થ:—જ૦ જમ્બુદ્વીપ નામના દી૦દ્વીપે મ૦
મેરુ પ૦ પર્વતથી દા૦ દક્ષિણે હ૦ હરિ વર્ષ-
ક્ષેત્રે દો૦ વે પ૦ પ્રપાત હ૦ દ્રહ પં૦ કહ્યા વ૦
ઘણા સ૦ સમા તં૦ તેજ૦ કહુંહું હ૦ હરિ પ્પ૦
પ્રપાત હ૦ દ્રહ ચે૦ વ્હી હ૦ હરિકાન્ત પ્પ૦
પ્રપાત હ૦ દ્રહ ચે૦ વ્હી ॥ ૩૭ ॥

જમ્બુદ્વીવે દીવે મન્દરસ્સ પવયસ્સ
દાહિણેણં હરિવાસે દો પવાયદ્દહા પન્નત્તા
વહુસમણ્ણા । તં જહા । હરિપ્પવાયદ્દહે
ચેવ હરિકાન્તપ્પવાયદ્દહે ચેવ ॥ ૩૭ ॥

ભાવાર્થ:—જંબુદ્વીપના મેરુથી દક્ષીણે હરિ-
વર્ષ ક્ષેત્રમાં વે પ્રપાતદ્રહ કહેલ છે, તે વે ઘણા
સરસ્વા છે યાવત વરાવર છે, તેહનાં નામ કહે
છે, હરિપ્રપાતદ્રહ ૧, હરિકાન્તા પ્રપાતદ્રહ ૨, એ
વે ભેદ છે ॥૩૭॥

અર્થ:—જ૦ જમ્બુદ્વીપ નામના દી૦ દ્વીપે
મે૦ મેરુ પ૦ પર્વતથી ઉ૦ ઉત્તર દા૦ દક્ષિણે
મ૦ મહા વિદેહ વા૦ ક્ષેત્રે દો૦ વે પ૦ પ્રપાત
હ૦ દ્રહ પં૦ કહ્યા વ૦ ઘણા સ૦ સરપા જા૦
યાવત સી૦ સીતા પ્પ૦ પ્રપાત હ૦ દ્રહ ચે૦
વ્હી સી૦ સીતોટા પ્પ૦ પ્રપાત હ૦ દ્રહ ચે૦
વ્હી ॥ ૩૮ ॥

જમ્બુદ્વીવે દીવે મન્દરસ્સ પવયસ્સ
ઉત્તરદાહિણેણં મહાવિદેહે વાસે દો પ-
વાયદ્દહા પણ્ણત્તા વહુસમણ્ણા જાવ
સીયપ્પવાયદ્દહે ચેવ સીઓયપ્પવાયદ્દહે
ચેવ ॥ ૩૮ ॥

ભાવાર્થ:—જંબુદ્વીપના મેરુથી ઉત્તરે અને દ-
ક્ષીણે મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં વે પ્રપાતદ્રહ કહેલ છે
તે સરસ્વા છે યાવત વરાવર છે તેહનાં નામ
કહે છે, સીતા પ્રપાતદ્રહ ?, સીતોટા પ્રપાતદ્રહ
૨, એ વે ભેદ છે ॥૩૮॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे
म० मेरु प० पर्वतधी उ० उत्तरे र० रम्यक
वा० क्षेत्रे दो० वे प० प्रपात इ० द्रह पं० क-
क्षा व० घणा स० समा जा० यावत न० न-
रकन्त प्र० प्रपात इ० द्रह चे० वळी ना०
नारिकन्त प्प० प्रपात इ० द्रह चे० वळी ॥३९॥

जम्बुद्वीपे दीपे मन्दरस्स पवयस्स
उत्तरेणं रम्मए वासे दो पवायद्दहा प-
ण्णत्ता बहुसमउल्ला जाव नरकन्तप्प-
वायद्दहे चेव नारिकन्तप्पवायद्दहे चेव
॥ ३९ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे मेरुधी उत्तरे रम्यक्वास
क्षेत्रमां वे प्रपातद्रह कहेल छे ते वे घणा सर-
खा छे यावत वरावर छे तेहनां नाम कहे छे,
नरकांत प्रपातद्रह १, नारिकांता प्रपातद्रह २,
ए वे भेद छे ॥३९॥

अर्थः—ए एम हे० हेरणवय वा० क्षेत्रे दो०
वे प० प्रपात इ० द्रह प० कक्षा व० घणा
स० समा जा० यावत सु० सुवर्ण कुल प्प०
प्रपात इ० द्रह चे० वळी रू० रूपकूल प्प० प्र-
पात इ० द्रह चे० वळी ॥ ४० ॥

एवं हेरन्नवए वासे दो पवायद्दहा प-
ण्णत्ता बहुसमउल्ला जाव सुवर्णकूल-
प्पवायद्दहे चेव रूपकूलप्पवायद्दहे चेव
॥ ४० ॥

भावार्थः—एम अरण्यवंत क्षेत्रमां वे प्रपात-
द्रह कहेल छे ते कहे छे ते वे घणा सरखा छे
यावत वरावर छे, सुवर्णकुला प्रपातद्रह १,
रूपकुला प्रपातद्रह २, ए वे भेद छे ॥४०॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे
म० मेरु प० पर्वतधी उ० उत्तरे ए० एरवत
वा० क्षेत्रे दो० वे प० प्रपात इ० द्रह प०
कक्षा व० घणा स० समा जा० यावत र० रक्त

प्प० प्रपात इ० द्रह चे० वळी र० रक्तवजी
प्प० प्रपात इ० द्रह चे० वळी ॥ ४१ ॥

जम्बुद्वीपे दीपे मन्दरस्स पवयस्स
उत्तरेणं एरवए वासे दो पवायद्दहा प-
ण्णत्ता बहुसमउल्ला जाव रत्तप्पवायद्दहे
चेव रत्तवइप्पवायद्दहे चेव ॥ ४१ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे मेरुधी उत्तरे एरवंत क्षे-
त्रमां वे प्रपातद्रह श्री तिर्थकरदेवे कहेल छे, ते
वे घणा सरखा छे यावत वरावर छे, तेहनां
नाम कहे छे, रक्तप्रपातद्रह १, रक्तावती प्रपा-
तद्रह २, ए वे भेद छे ॥४१॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे
म० मेरु प० पर्वतधी दा० दक्षिणे भ० भरत
वा० क्षेत्रे दो० वे म० मोटी न० नदीओ प०
कही व० घणी स० समा जा० यावत गं०
गंगा चे० वळी सि० सिन्धु चे० वळी ॥४२॥

जम्बुद्वीपे दीपे मन्दरस्स पवयस्स
दाहिणेणं भरेहे वासे दो महानईओ
पण्णत्ताओ बहुसमउल्लाओ जाव गङ्गा
चेव सिन्धू चेव ॥ ४२ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे मेरुधी दक्षिणे भरतक्षे-
त्रमां वे म्होटी नदीयुं कहेल छे, घणी सरखा
छे यावत वरावर छे तेहनां नाम कहे छे, गं-
गानदी १, सिंधुनदी २, ए वे भेद छे ॥४२॥

अर्थः—ए० एम ज० जेम प० प्रपात इ०
द्रह ए० एम न० नदीओ भा० जाणवी ए०
एम जा० यावत ए० एरवत वा० क्षेत्रे दो०
वे म० महा न० नदीओ पं० कही व० घणी
स० सर्पी ग० यावत र० रक्ता चे० वळी र०
रक्तावती चे० वळी ॥ ४३ ॥

एवं जहा पवायद्दहा एवं नईओ भा-
णियवाओ एवं जाव एरावए वासे दो

महानईओ पन्नत्ताओ बहुसमउल्लाओ
जाव रत्ता चेव रत्तवई चेव ॥ ४३ ॥

भावार्थः—एम जेम प्रपातद्रह कल्या छे तेम
अनुक्रमे नदीयुं पण जाणवी, यावत एरवंत
क्षेत्रमां वे म्होटी नदीयुं कही छे ते वे घणी
सरखी छे यावत बराबर छे तेहनां नाम कहे
छे, रक्तानदी १, रक्तावती नदी २, ए वे भेद
छे ॥४३॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे भ०
भरत ए० एरवत वा० क्षेत्रने विषे ती० गइ
उ० उत्सर्पिणी काले सु० सुपम दु० दुपमा
स० समो दो० वे सा० सागरोपम को० क्रो
डा को० क्रोडीनो का० काल हो. थयो ॥१॥

११ पेरा (जंबुद्वीपना अधीकारने लीधे
तथा क्षेत्रधर्म आश्रीने पुदगळ धर्माधिकारने
लीधे जंबुद्वीप संबंधी भरत वीगेरे लगता काल
लक्षण पर्याय धर्मनुं अनेकपणुं वतावनारा
अहार सूत्रो कहेछे.)

जम्बुद्वीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु
तीयाए उस्सर्पिणीए सुसमदुस्समाए
समाए दो सागरोपमक्रोडाक्रोडीओ
काले होत्था ॥ १ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपना भरत अने एरवंत क्षे-
त्रमां अतिन (गइ) उत्सर्पिणी काले सुसम
दुसमा नामे चौथो आरो वे क्रोडाक्रोडी सा-
गरोपम काल प्रमाणे थयो ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम इ० वर्तमान उ० उत स-
र्पिणी काले सुपमदुःपमां चौथो आरो वे
सागरोपम क्रोडा क्रोडीनो जा० यावत पं०
करो ॥ २ ॥

एवं इमीसे उस्सर्पिणीए जाव प-
न्नत्ते ॥ २ ॥

भावार्थः—आ वर्तमान उत्सर्पिणी काले
सुसम दुसमा नामे (चौथो) आरो वे क्रोडा
क्रोडी सागरोपम काल प्रमाणे थयो. ॥ २ ॥

अर्थः—ए० एम० आ० आवती उ० उत
सर्पिणी काले वे क्रोडाक्रोडी सागरोपमनो
जा० यावत भ० थयो ॥ ३ ॥

एवं आगमिस्साए उस्सर्पिणीए जा-
व भविस्सइ ॥ ३ ॥

भावार्थः—एमज आवती उत्सर्पिणीनो
सुसम दुसमा नामे चौथो आरो वे क्रोडाक्रोडी
सागरोपम काल प्रमाणे थयो एवं भेदछे ॥३॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे भ०
भरत ए० एरवत वा० क्षेत्रे ती० गइ उ० उत
सर्पिणीए सु० सुपमा स० आरे म० म-
नुष्य युगलीया दो० वे गा० गाउ या० प्र-
माण उ० उंचे उ० उंचपणे हो० थयां दो०
वे य० वळी प० पल्योपमनुं प० उत्तकृष्ट आउणु
पा० पालता हुआ ॥ ४ ॥

जम्बुद्वीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु
तीयाए उस्सर्पिणीए सुसमाए समाए
मणुया दो गाउयाइं उडुं उच्चत्तेणं हो-
त्था दोणिय पल्लिओवमा इं परमाउं पा-
लइत्ता ॥ ४ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपना भरत अने एरवंतक्षे-
त्रमां गइ उत्सर्पिणीना सुसमा नामे आरामां
युगलीयां मनुष्यनुं शरिर वे गाउ उंचपणे थयुं
अने उत्कृष्टं वे पल्योपमनुं आउणुं पालता
हुवा ॥ ४ ॥

अर्थः—ए० एम इ० आ वर्तमान उ० उत
सर्पिणी काले जा० यावत पा० (वे पल्यो-
पमनुं आउणुं) पाले ॥ ५ ॥

एवं इमीसे उस्सर्पिणीए जाव पा-
लइत्ता ॥ ५ ॥

भावार्थः—एम आ वर्तमान उत्सर्पिणीना सुसमा आरे युगळीयां मनुष्यन्तुं शरिर वे गाड उंचपणे थयुं अने उतकण्डुं वे पल्योपमन्तुं आउखुं थयुं ॥ ५ ॥

अर्थः—ए एम आ० आवती उ० उत्सर्पिणी काले जा० यावत पा० पाळये ॥६॥

एवं आगमिस्साए उस्सपिणीए जाव पालइस्सन्ति ॥ ६ ॥

भावार्थः—एम आवती उत्सर्पिणीना सुसमा आरे युगळीयां मनुष्यन्तुं शरिर वे गाड उंचपणे थशे? अने उत्कण्डुं वे पल्योपमन्तुं आउखुं पाळशे २ ए वे भेद छे ॥ ६ ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे भ० भरत ए० एरवत वा० क्षेत्रे ए० एक स० समये ए० एक जु० युगे दो० वे अ० अरिहंतना वं० मोटा वंश उ० उपना पुर्वे वा० वळी उ० उपजे छे वा० वळी उ० उपजस्ये वा० वळी ॥ ७ ॥

जम्बुद्वीवे दीवे भरेहरेवएसु वासेसु एगसमए एगजुगे दो अरहन्तवंसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जन्ति वा उप्पज्जिस्सन्ति वा ॥ ७ ॥

भावार्थः—जम्बुद्वीपना भरत एरवत क्षेत्रमां एक समे एक युगे (युगते चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ ए पांच वर्षानो एक युग थाय.) वे अरिहंत भगवंतनां म्होटा वंश उपन्या, उपजे छे ने वर्तमान चौधिसी आर्थानि आवते काले उपजशे. ॥७॥

अर्थः—ए० एम च० चक्रवर्तिना वं० वंश उ० वासुदेवना वं० वंश जा० यावत उ० उपजशे वा० वळी ॥ ८-९ ॥ ८ ॥

एवं चक्रवर्तिवंसा दसारावंसा जाव उप्पज्जिस्सन्ति वा ॥ [८-९] ॥ ८ ॥

भावार्थः—ते एक भरतमां ने एक एरवतमां, एम वे चक्रवर्तिना वंश, एम वे वासुदेवना वंश जाणवा, ए वे भेद छे ॥ ८-९ ॥ ८ ॥

जम्बुद्वीपना भरत एरवत क्षेत्रमां एके समे अतितकाले वे अरिहंत उपन्या, वर्तमान काले उपजे छे, अनागतकाले उपजशे, एम वे चक्रवर्ति, एम वे वळदेव, एम वे वासुदेव यावत उपन्या, उपजे छे ने उपजशे, ए वे भेद छे.

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे दो० वे कु० कुरुने विपे म० मनुष्य स० सदा सु० सुपम सु० सुपम पहलो आरो उ० मोटी इ० क्रद्धि मते प० पाम्या प० मनुष्यनो भ० भव सफल मा० मानता वि० विचरे छे तं० ते ज० कहुंछुं दे० देवकुरु क्षेत्र चे० वळी उ० उत्तर कुरुक्षेत्र चे० वळी ॥ १०-१४ ॥ ९ ॥

जम्बुद्वीवे दीवे दोसु कुरासु मणुया सया सुसमसुसमं उत्तमं इड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरन्ति । तं जहा । देवकुराए चेव उत्तरकुराए चेव ॥ [१०-१४] ॥ ९ ॥

भावार्थः—जम्बुद्वीपे वे कुरुने विपे मनुष्य सदाय सुखम सुखमां पहेळां आरानी रुद्धि भोगवतां युगळीयां विचरे छे ते वे कुरुनां नाम कहे छे, देवकुरु १, उत्तरकुरु २, ए वे कुरुमां सदाय पहलो आरो छे, ए वे भेद छे. (१०-१४) ९

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे दो० वे वा० क्षेत्रे म० मनुष्य स० सदा सु० सुपमा बीजो आरो उ० मोटी इ० रुद्धि मते प० पाम्या प० मनुष्य भ० भव सफल मा० मानता वि० विचरे छे तं० ते ज० कहुंछुं ह० हरिवर्षभेद चे० वळी उ० रम्यग वर्षे क्षेत्र चे० वळी ॥ १५ ॥ १० ॥

जम्बुद्वीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया
सया सुसमं उत्तमं इडिं पत्ता पञ्चणु-
भवमाणा विहरन्ति । तं जहा । हरि-
वासे चैव रम्मगवासे चैव ॥ [१५] ॥ १० ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे वे क्षेत्रने विपे मनुष्य
सदाय सुखमा नामे वीजा आरानी उत्तम
रुद्धी पाम्या सुख भोगवतां विचरे छे, ते क्षे-
त्रनां नाम कहेछे, हरिवर्षक्षेत्रे १, रम्यक वर्षक्षेत्रे
२, ए वे भेद छे ॥ १५ ॥ १० ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे
दो० वे वा० क्षेत्रने विपे म० मनुष्य स० स-
दा सु० सुपम दु० दुखमा नामे उ० उत्तम
इ० रुद्धि प० पाम्या प० मनुष्य भ० भव
मा० प्रतिसुख भोगवता वि० विचरे छे तं०
ते ज० कहंछुं हे० हेमवंत क्षेत्र चे० वळी ए०
एरणवंत क्षेत्र चे० वळी ॥ १६ ॥ ११ ॥

जम्बुद्वीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया
सया सुसमदुस्समं उत्तमं इडिं पत्ता प-
ञ्चणुभवमाणा विहरन्ति । तं जहा ।
हेमवए चैव एरन्नवए चैव ॥ [१६] ॥ ११ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपे वे क्षेत्रने विपे मनुष्य
युगळीयां सदाय सुखम दुःखमां वीजा आरा-
नी उत्तम रुद्धी पाम्याने ते सुख भोगवतां
विचरेछे ते वे क्षेत्रनां नाम कहेछे, हेमवंत क्षेत्रे
१, एरणवंत क्षेत्रे २, ए वे भेद छे ॥ १६ ॥ ११ ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे
दो० वे वे० क्षेत्रने विपे म० मनुष्य स० स-
दा दु० दुखम स० सुपमा उ० उत्तम इ०
रुद्धि प्रते प० पाम्या प० मनुष्य भ० भव
मा० प्रति सुख भोगवता वि० विचरेछे तं० ते
ज० कहंछुं पु० पुर्व महा विदेहमां चे० वळी
अ० पश्चिम महा विदेहमां चे० वळी ॥ १७ ॥ १२ ॥

जम्बुद्वीवे दीवे दोसु खेत्तेसु मणुया
सया दुस्समसुसमं उत्तमं इडिं पत्ता प-
ञ्चणुभवमाणा विहरन्ति । तं जहा । पुव-
विदेहे चैव अवरविदेहे चैव ॥ [१७] ॥ १२ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपमां वे क्षेत्रने विपे मनुष्य
युगळीयां नथी, सदाय दुखमां सुखमां चोथा
आरानी उत्तम रुद्धि पाम्या ते सुख भोगवता
विचरेछे; ते वे क्षेत्रनां नाम कहेछे, पूर्व महावि-
देहमां १, पश्चिम महाविदेहमां २, ए छ युगळी-
यांना क्षेत्रमां अने महाविदेहमां आरा फरता
नथी, ए वे भेद छे ॥ १७ ॥ १२ ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामा दी० द्वीपे
दो० वे वा० क्षेत्रमां म० मनुष्य छ. छ प्र-
कारे पि० पण का० काल प्रते प० मनुष्य
भ० भव मा० प्रतिसुष भागवता वि० विचरे
छे तं० ते ज० कहंछुं भ० भरतक्षेत्रे चे० व-
ळी ए० एरवत क्षेत्रे चे० वळी ॥ १८ ॥ १३ ॥

जम्बुद्वीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया
छव्विहं पि कालं पञ्चणुभवमाणा विह-
रन्ति । तं जहा । भरहे चैव एरवए
चैव ॥ [१८] ॥ १३ ॥

भावार्थः—जंबुद्वीपमां वे क्षेत्रमां मनुष्य छए
प्रकारे आराना काल प्रत्ये भोगवता विचरे
छे ते वे क्षेत्रनां नाम कहे छे, भरतक्षेत्रमां १,
एरवंत क्षेत्रमां २, ए वे भेद छे ॥ १८ ॥ १३ ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे
दो० वे च० चन्द्रमा प० अजवालु करताहवा
त्रा० वळी प० उद्योत करेछे वा० वळी प०
उद्योत करस्ये वा० वळी ॥ १ ॥

१२ पेरा (जंबुद्वीपमां काळलक्षण द्रव्य-
पर्याय विशेष कथा, हवेतो जंबुद्वीपमांज काळ
पदार्थ वतावनार व्योतिपीनी परूपणा करेछे)

जम्बुद्वीपे दीवे दो चन्दा पभासिंसु
वा पभासन्ति वा पभासिस्सन्ति वा । १ ।

भावार्थः—जंबुद्वीपे वे चंद्रमा अतितकाले
अजवाळं करता हता, वर्तमानकाले करे छे,
अनागतकाले करशे, ए वे भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—दो० वे सू० सूर्य त० तप्या अती-
तकाले वा० वळी त० तपेछे वा० वळी त०
तपस्ये वा० वळी ॥ २ ॥

दो सूरिया तवइंसु वा तवन्ति वा
तविस्सन्ति वा ॥ २ ॥

भावार्थः—एमज जंबुद्वीपमां सूर्य अतित-
काले तप्या, वर्तमानकाले तपेछे, अनागतकाले
तपशे, ए वे भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः—दो० वे क० कृत्तिका नक्षत्र दो० वे रो०
रोहिणी दो० वे मि० मृगशिर दो० वे अ० आद्रा
नक्षत्र ए० एम २८ नक्षत्र भा० जाणवा.

१३ पेरा (वीजुं ठाणुं चालतुं होवाथी चंद्रोना
तथा तेना परिवारना वेवडापणुं वतावे छे.)

दो कत्तियाओ, दो रोहिणीओ,
दो मिगसिरा, दो अद्दाओ एवं भा-
णियव्वं

भावार्थः—एम जंबुद्वीपमां वे कृत्तिका नक्षत्र
छे, वे रोहिणी नक्षत्र छे, वे मृगसर नक्षत्र छे,
वे आर्द्रा नक्षत्र छे, एम अठावीस नक्षत्र गा-
थायी जाणवां.

अर्थः—क० कृत्तिका रो० रोहिणी मि० मृ-
गशिर अ० आद्रा य० वळी पु० पुनर्वसु य०
वळी पु० पुष्य य० वळी त० तेवार पळी
वि० वळी अ० अश्लेषा म० महा य० वळी
दो० वे फ० पुर्व तथा उत्तर फाल्गुनी य०
वळी ॥ १ ॥

कत्तियरोहिणिमिगसिर—

अद्दा य पुणवसू य पुस्सो य ।
तत्तो वि अस्सलेसा

महा य दो फग्गुणीओ य ॥ १ ॥

भावार्थः—वे कृत्तिका १, वे रोहिणी २, वे
मृगशिर ३, वे आद्रा ४, वे पुनर्वसु ५, वे पुष्य
६, ते वार पळी वे आश्लेषा ७, वे मघा ८, वे
पूर्वाफाल्गुणी ९, वे उत्तराफाल्गुणी १० ॥ १ ॥

अर्थः—ह० हस्त चि० चित्रा सा० स्वाति
य० वळी वि० विशाखा त० तेमज य०
वळी हो० होय अ० अणुराधा जे० जेष्टा मू०
मूल पु० पूर्वाषाढा य० वळी आ० आपाढा
उ० उत्तर चे० वळी ॥ २ ॥

हत्यो चित्ता साई य

विसाहा तह य होन्ति अणुराहा ।

जेडा मूलो पुवा य

आसादा उत्तरा चेव ॥ २ ॥

भावार्थः—वे हस्त ११, वे चित्रा १२, वे
स्वाति १३, वे विशाखा १४, वे अनुराधा १५,
वे ज्येष्ठा १६, वे मूळ १७, वे पूर्वाषाढा १८,
वे उत्तराषाढा १९ ॥ २ ॥

अर्थः—अ० अभिच स० श्रवण ध० ध-
निष्ठा स० शतभिषा दो० वे य० वळी हो०
होय भ० पूर्व ने उत्तर भद्रपद रे० रेवती अ०
अश्वनि भ० भरणी ने० जाणवा आ० अनु-
क्रमे छे ॥ ३ ॥

अभिई सवणधणिद्धा

सयभिसया दो य होन्ति भद्दवया ।

रेवइअस्सिणिभरणी

नेयवा आणुपुवीए ॥ ३ ॥

भावार्थः—निशे वे अभिजीत २०, वे श्रवण
२१, वे धनिष्ठा २२, शतभिशां २३, वळी होय
वे पूर्वाभाद्रपद २४, वे उत्तरा भाद्रपद २५, वे

रेवती २६, वे अश्वनी २७, वे भरणी २८, एम अनुक्रमे वे वे जाणवा ॥ ३ ॥

अर्थः—ए० एम गा० गाथाने अ० अनुसारे ने० जाणवुं जा० यावत् दो० वे भ० भरणी ए २८ नक्षत्र

एवं गाहाणुसारेणं नेयव्वं जाव दो भरणीओ ॥

भावार्थः—एम गाथाने अनुसारे यावत् भरणी लगी जाणवा ए सर्वे वे वे भेद छे

अर्थः—दो० वे अ० अग्नी देवता ॥ १ ॥

१४ पेरा (कृतीकार्या अठावीश नक्षत्राणा क्रम वडे अग्नी आदी अठावीश देवता होय छे ते कहे छे.)

दो अग्नी ॥ १ ॥

भावार्थः—हवे ए पूर्वोक्त अठावीस नक्षत्रना ताराना अठावीस देवता स्वामी छे ते कहे छे, वे अग्नीदेवता ॥ १ ॥

अर्थः—दो० वे प० प्रजापती देवता ॥ २ ॥

दो पयावई ॥ २ ॥

भावार्थः—वे प्रजापती देवता ॥ २ ॥

अर्थः—दो वे सो० सोमदेवता ॥ ३ ॥

दो सोमा ॥ ३ ॥

भावार्थः—वे सोमदेवता ॥ ३ ॥

अर्थः—दो० वे रु० रुद्रदेवता ॥ ४ ॥

दो रुद्रा ॥ ४ ॥

भावार्थः—वे रुद्रदेवता ॥ ४ ॥

अर्थः—दो० वे अ० आदित्यदेवता ॥ ५ ॥

दो अइई ॥ ५ ॥

भावार्थः—वे अदिती देवता ॥ ५ ॥

अर्थः—दो० वे व० वृहस्पती नामे देवता ॥ ६ ॥

दो वहस्सई ॥ ६ ॥

भावार्थः—वे वृहस्पतीदेवता ॥ ६ ॥

अर्थः—दो० वे स० सर्पि नामे देवता ॥ ७ ॥

दो सप्पा ॥ ७ ॥

भावार्थः—वे सर्प ते नाग नामे देवता ॥ ७ ॥

अर्थः—दो० वे पि० पितर नामे देवता ॥ ८ ॥

दो पिई ॥ ८ ॥

भावार्थः—वे पितरनामे देवता ॥ ८ ॥

अर्थः—दो० वे भ० भग्न नामे देवता ॥ ९ ॥

दो भगा ॥ ९ ॥

भावार्थः—वे भ्रग नामे देवता ॥ ९ ॥

अर्थः—दो० वे अ० अर्यमानामे देवता ॥ १० ॥

दो अज्जमा ॥ १० ॥

भावार्थः—वे अर्थमाण नामे देवता ॥ १० ॥

अर्थः—दो० वे स० सवितार नामे देवता ॥ ११ ॥

दो सविया ॥ ११ ॥

भावार्थः—वे सविता नामे देवता ॥ ११ ॥

अर्थः—दो० वे त० त्वष्टा नामे देवता ॥ १२ ॥

दो तद्धा ॥ १२ ॥

भावार्थः—वे त्वष्टा नामे देवता ॥ १२ ॥

अर्थः—दो० वे वा० वायु नामे देवता ॥ १३ ॥

दो वाऊ ॥ १३ ॥

भावार्थः—वे वायु नामे देवता ॥ १३ ॥

अर्थः—दो० वे इ० इंद्राग्नी नामे देवता ॥ १४ ॥

दो इन्द्रगी ॥ १४ ॥

भावार्थः—वे इंद्राग्नि नामे देवता ॥ १४ ॥

अर्थः—दो० वे मि० मित्र नामे देवता ॥ १५ ॥

दो मिता ॥ १५ ॥

भावार्थः—वे मित्र नामे देवता ॥ १५ ॥

अर्थः—दो० वे इ० इन्द्र नामे देवता ॥ १६ ॥

दो इन्द्रा ॥ १६ ॥

भावार्थः—वे इंद्र नामे देवता ॥ १६ ॥

अर्थः—दो० वे नि० निजृतीनामे देवता ॥ १७ ॥

दो निरई ॥ १७ ॥

भावार्थः—वे निरती नामे देवता ॥१७॥

अर्थः—दो० वे आ० आऊ-जळ (ब्राह्मण)

नामे देवता ॥ १८ ॥

दो आऊ ॥ १८ ॥

भावार्थः—वे आप ते जळ नामे देवता ॥१८॥

अर्थः—दो० वे वि० विश्व नामे देवता ॥१९॥

दो विस्सा ॥ १९ ॥

भावार्थः—वे विश्व नामे ॥१९॥

अर्थः—दो० वे व० ब्रह्म नामे देवता ॥२०॥

दो बम्हा ॥ २० ॥

भावार्थः—वे ब्रह्मा नामे देवता ॥२०॥

अर्थः—दो० वे वि० विष्णु नामे देवता ॥२१॥

दो विण्हू ॥ २१ ॥

भावार्थः—वे विष्णु नामे देवता ॥२१॥

अर्थः—दो० वे व० वसु नामे देवता ॥२२॥

दो वसू ॥ २२ ॥

भावार्थः—वे वसु नामे देवता ॥२२॥

अर्थः—दो० वे व० वरुण नामे देवता ॥२३॥

दो वरुणा ॥ २३ ॥

भावार्थः—वे वरुण नामे देवता ॥२३॥

अर्थः—दो० वे अ० अज नामे देवता ॥२४॥

दो अया ॥ २४ ॥

भावार्थः—वे अज नामे देवता ॥२४॥

अर्थः—दो० वे वि० वृद्धि नामे देवता ॥२५॥

दो विविद्धी ॥ २५ ॥

भावार्थः—वे वृद्धि नामे देवता ॥२५॥

अर्थः—दो० वे पु० पुंषा नामे देवता ॥२६॥

दो पुस्सा ॥ २६ ॥

भावार्थः—वे पुंस नामे देवता ॥२६॥

अर्थः—दो० वे अ० अश्व नामे देवता ॥२७॥

दो अस्सी ॥ २७ ॥

भावार्थः—वे अश्व नामे देवता ॥२७॥

अर्थः—दो० वे य० यमदेव नामे देवता ॥२८॥

दो यमा ॥ २८ ॥

भावार्थः—वे यम नामे देवता ॥२८॥

ए अठाविस नक्षत्रना-स्वामी ए सर्वे वे वे जाणवा.

अर्थः—दो० वे इ० मंगळ ॥ १ ॥

१५ पेरा (अंगारक आदी अठाशी ग्रहोना नाम दे छे.)

दो इङ्गालगा ॥ १ ॥

भावार्थः—हवे अठयासी ग्रहनां नाम कहे छे. वे अंगारक ते मंगळ ॥१॥

अर्थः—दो० वे वि० व्याल ॥ २ ॥

दो वियालगा ॥ २ ॥

भावार्थः—वे व्याल ॥२॥

अर्थः—दो० वे लो० लोहितक्षा ॥ ३ ॥

दो लोहियक्खा ॥ ३ ॥

भावार्थः—वे लोहिताक्ष ॥३॥

अर्थः—दो० वे स० शनीश्वर ॥ ४ ॥

दो सणिच्छरा ॥ ४ ॥

भावार्थः—वे शनीश्वर ॥४॥

अर्थः—दो० वे आ० आहुनिक ॥ ५ ॥

दो आहुणिया ॥ ५ ॥

भावार्थः—वे आहुनिक ॥५॥

अर्थः—दो० वे पा० प्राहुणिक ॥ ६ ॥

दो पाहुणिया ॥ ६ ॥

भावार्थः—वे प्राहुणिक ॥६॥

अर्थः—दो० वे क० काण ॥ ७ ॥

दो कणा ॥ ७ ॥

भावार्थः—वे काण ॥७॥

अर्थः—दो० वे क० कनक ॥ ८ ॥

दो कणगा ॥ ८ ॥

भावार्थः—वे कनक ॥८॥

अर्थः—दो० वे क० कनकनक ॥ ९ ॥

दो कणकणगा ॥ ९ ॥

भावार्थः—वे कनकनक ॥९॥

अर्थः—दो० वे क० कनकवितानक ॥ १०॥

दो कणगवियाणगा ॥ १० ॥

भावार्थः—वे कनकवितानक ॥१०॥

अर्थः—दो० वे क० कनकसंतानक ॥ ११॥

दो कणगसंतानगा ॥ ११ ॥

भावार्थः—वे कनक संतानक ॥११॥

अर्थः—दो० वे सो० सोम ॥ १२ ॥

दो सोमा ॥ १२ ॥

भावार्थः—वे सोम ॥१२॥

अर्थः—दो० वे स० सहितनामा ॥ १३ ॥

दो सहिया ॥ १३ ॥

भावार्थः—वे सहित ॥१३॥

अर्थः—दो० वे आ० अश्वासन ॥ १४ ॥

दो आसासणा ॥ १४ ॥

भावार्थः—वे अश्वासन ॥१४॥

अर्थः—दो० वे क० कजावग ॥ १५ ॥

दो कज्जोवगा ॥ १५ ॥

भावार्थः—वे कज्जोवग ॥१५॥

अर्थः—दो० वे क० कर्षट ॥ १६ ॥

दो कर्षटगा ॥ १६ ॥

भावार्थः—वे कर्षट ॥१६॥

अर्थः—दो० वे अ० अयस्कर ॥ १७ ॥

दो अयकरगा ॥ १७ ॥

भावार्थः—वे अयस्कर ॥१७॥

अर्थः—दो० वे दु० दुंदुभग ॥ १८ ॥

दो दुन्दुभगा ॥ १८ ॥

भावार्थः—वे दुंदुभक ॥१८॥

अर्थः—दो० वे सं० शंख नामे ॥ १९ ॥

दो सङ्गा ॥ १९ ॥

भावार्थः—वे शंख ॥१९॥

अर्थः—दो० वे स० शंखवर्ण नामे ॥२०॥

दो सङ्खवन्ना ॥ २० ॥

भावार्थः—वे शंखवर्ण ॥२०॥

अर्थः—दो० वे स० शंखवर्णाभ नामे ॥२१॥

दो सङ्खवण्णाभा ॥ २१ ॥

भावार्थः—वे शंखवर्णाभ ॥२१॥

अर्थः—दो० वे क० कंस नामे ॥ २२ ॥

दो कंसा ॥ २२ ॥

भावार्थः—वे कंस ॥२२॥

अर्थः—दो० वे क० कंसवर्ण ॥ २३ ॥

दो कंसवन्ना ॥ २३ ॥

भावार्थः—वे कंसवर्ण ॥२३॥

अर्थः—दो० वे क० कंसवर्णाभ ॥ २४ ॥

दो कंसवण्णाभा ॥ २४ ॥

भावार्थः—वे कंसवर्णाभ ॥२४॥

अर्थः—दो० वे रु० रूपी ॥ २५ ॥

दो रूपी ॥ २५ ॥

भावार्थः—वे रूपी ॥२५॥

अर्थः—दो० वे रु० रूप्याभ नाम ॥२६॥

दो रूप्याभासा ॥ २६ ॥

भावार्थः—वे रूप्याभ ॥२६॥

अर्थः—दो० वे नी० नीलग्रह ॥ २७ ॥

दो नीला ॥ २७ ॥

भावार्थः—वे नील ॥२७॥

अर्थः—दो० वे नी० नीलाभासानामे ॥२८॥

दो नीलाभासा ॥ २८ ॥

भावार्थः—वे नीलाभास ॥२८॥

अर्थः—दो० वे भा० भस्मग्रह ॥ २९ ॥

दो भासा ॥ २९ ॥

भावार्थः—वे भस्म ॥२९॥

अर्थः—दो० वे भा० भस्मराशीग्रह ॥३०॥

दो भासरासी ॥ ३० ॥

भावार्थः-वे भस्मराशी ॥३०॥

अर्थः-दो० वे ति० तिल ॥ ३१ ॥

दो तिला ॥ ३१ ॥

भावार्थः-वे तिल ॥३१॥

अर्थः-दो० वे ति० तिलपुष्पवर्ण ॥३२॥

दो तिलपुष्पवर्णा ॥ ३२ ॥

भावार्थः-वे तिल पुष्पवर्ण ॥३२॥

अर्थः-दो० वे द० दक नामे ॥ ३३ ॥

दो दगा ॥ ३३ ॥

भावार्थः-वे दक ॥३३॥

अर्थः-दो० वे द० दक पंचवर्ण नामे ३४॥

दो दगपञ्चवर्णा ॥ ३४ ॥

भावार्थः-वे दक पंचवर्ण ॥३४॥

अर्थः-दो० वे का० काक नामे ॥ ३५ ॥

दो काका ॥ ३५ ॥

भावार्थः-वे काक ॥३५॥

अर्थः-दो० वे का० कर्कध नामे ॥ ३६॥

दो कायवञ्जा ॥ ३६ ॥

भावार्थः-वे ककुध ॥३६॥

अर्थः-दो० वे इ० इन्द्रीगी ॥ ३७ ॥

दो इन्द्रगी ॥ ३७ ॥

भावार्थः-वे इन्द्राग्नि ॥३७॥

अर्थः-दो० वे धू० धूमकेतु नामे ॥३८॥

दो धूमकेतु ॥ ३८ ॥

भावार्थः-वे धूमकेतु ॥३८॥

अर्थः-दो० वे ह० हरीनामे ॥ ३९ ॥

दो हरी ॥ ३९ ॥

भावार्थः-वे हरि ॥३९॥

अर्थः-दो० वे पि० पिंगला ॥ ४० ॥

दो पिङ्गला ॥ ४० ॥

भावार्थः-वे पिंगल ॥४०॥

अर्थः-दो० वे बु० बुद्ध ॥ ४१ ॥

दो बुहा ॥ ४१ ॥

भावार्थः-वे बुध ॥ ४१ ॥

अर्थः-दो० वे सु० शुक्र ॥ ४२ ॥

दो सुका ॥ ४२ ॥

भावार्थः-वे शुक्र ॥ ४२ ॥

अर्थः-दो० वे व० बृहस्पति ॥ ४३ ॥

दो बृहस्पति ॥ ४३ ॥

भावार्थः-वे बृहस्पति ॥ ४३ ॥

अर्थः-दो० वे रा० राहु ॥ ४४ ॥

दो राहु ॥ ४४ ॥

भावार्थः-वे राहु ॥ ४४ ॥

अर्थः-दो० वे अ० अगस्ती ॥ ४५ ॥

दो अगस्ती ॥ ४५ ॥

भावार्थः-वे अगस्ति ॥ ४५ ॥

अर्थः-दो० वे मा० मानवक ॥ ४६ ॥

दो माणवगा ॥ ४६ ॥

भावार्थः-वे माणवक ॥ ४६ ॥

अर्थः-दो० वे का० काश्य ॥ ४७ ॥

दो कासा ॥ ४७ ॥

भावार्थः-वे कास ॥ ४७ ॥

अर्थः-दो० वे फा० फर्श ॥ ४८ ॥

दो फासा ॥ ४८ ॥

भावार्थः-वे स्पर्श ॥ ४८ ॥

अर्थः-दो० वे धु० धुर ॥ ४९ ॥

दो धुरा ॥ ४९ ॥

भावार्थः-वे धुर ॥ ४९ ॥

अर्थः-दो० वे प० प्रसुष ॥ ५० ॥

दो प्रसुहा ॥ ५० ॥

भावार्थः-वे प्रसुख ॥ ५० ॥

अर्थः-दो० वे वि० विकट ॥ ५१ ॥

दो वियडा ॥ ५१ ॥

भावार्थः-वे विकट ॥ ५१ ॥

अर्थः—दो० वे वि० विसंधी ॥ ५२ ॥

दो विसंधी ॥ ५२ ॥

भावार्थः—वे विसंधी ॥ ५२ ॥

अर्थः—दो० वे नि० नियल ॥ ५३ ॥

दो नियल ॥ ५३ ॥

भावार्थः—वे नियल ॥ ५३ ॥

अर्थः—दो० वे प० पइल ॥ ५४ ॥

दो पयल ॥ ५४ ॥

भावार्थः—वे पइल ॥ ५४ ॥

अर्थः—दो० वे ज० जडितालक ॥ ५५ ॥

दो जडियाइलया ॥ ५५ ॥

भावार्थः—वे जडीतालक ॥ ५५ ॥

अर्थः—दो० वे अ० अरुण ॥ ५६ ॥

दो अरुणा ॥ ५६ ॥

भावार्थः—वे अरुण ॥ ५६ ॥

अर्थः—दो० वे अ० अगिला ॥ ५७ ॥

दो अगिला ॥ ५७ ॥

भावार्थः—वे अगिल ॥ ५७ ॥

अर्थः—दो० वे का० कालग्रह ॥ ५८ ॥

दो काल ॥ ५८ ॥

भावार्थः—वे काल ॥ ५८ ॥

अर्थः—दो० वे म० महाकाल ॥ ५९ ॥

दो महाकालगा ॥ ५९ ॥

भावार्थः—वे महाकाल ॥ ५९ ॥

अर्थः—दो० वे सो० स्वस्तिक ॥ ६० ॥

दो सोत्थिया ॥ ६० ॥

भावार्थः—वे स्वस्तिक ॥ ६० ॥

अर्थः—दो० वे सो० सोवस्तिक ॥ ६१ ॥

दो सोवत्थिया ॥ ६१ ॥

भावार्थः—वे सौवस्तिक ॥ ६१ ॥

अर्थः—दो० वे व० वर्धमान ॥ ६२ ॥

दो वद्धमाणगा ॥ ६२ ॥

भावार्थः—वे वर्धमान ॥ ६२ ॥

अर्थः—दो० वे प० प्रलंब ॥ ६३ ॥

दो पलम्बा ॥ ६३ ॥

भावार्थः—वे प्रलंब ॥ ६३ ॥

अर्थः—दो० वे नि० नित्यलोक ॥ ६४ ॥

दो निचालोगा ॥ ६४ ॥

भावार्थः—वे नित्यालोक ॥ ६४ ॥

अर्थः—दो० वे नि० नित्याजोत ॥ ६५ ॥

दो निचुज्जोया ॥ ६५ ॥

भावार्थः—वे नित्योजोत ॥ ६५ ॥

अर्थः—दो० वे स० सयंप्रभ ॥ ६६ ॥

दो सयंपभा ॥ ६६ ॥

भावार्थः—वे स्वयंप्रभ ॥ ६६ ॥

अर्थः—दो० वे ओ० उभासा ॥ ६७ ॥

दो ओभासा ॥ ६७ ॥

भावार्थः—वे उभास ॥ ६७ ॥

अर्थः—दो० वे से० श्रेयकार ॥ ६८ ॥

दो सेयंकरा ॥ ६८ ॥

भावार्थः—वे श्रेयंकर ॥ ६८ ॥

अर्थः—दो० वे स्वे० स्वमंकार ॥ ६९ ॥

दो स्वमंकरा ॥ ६९ ॥

भावार्थः—वे स्वमंकर ॥ ६९ ॥

अर्थः—दो० वे आ० आभंकर ॥ ७० ॥

दो आभंकरा ॥ ७० ॥

भावार्थः—वे अभंकर ॥ ७० ॥

अर्थः—दो० वे प० प्रभंकर ॥ ७१ ॥

दो पभंकरा ॥ ७१ ॥

भावार्थः—वे प्रभंकर ॥ ७१ ॥

अर्थः—दो० वे अ० अपराजित ॥ ७२ ॥

दो अपराजिया ॥ ७२ ॥

भावार्थः—वे अपराजित ७२ ॥

अर्थः—दो० वे अ० अरज ॥ ७३ ॥

दो अरया ॥ ७३ ॥

भावार्थः—वे अरज ॥ ७३ ॥

अर्थः—दो० वे अ० अशोक ॥ ७४ ॥

दो असोगा ॥ ७४ ॥

भावार्थः—वे अशोक ॥ ७४ ॥

अर्थः—दो० वे वि० विगतशोक ॥ ७५ ॥

दो विगयसोगा ॥ ७५ ॥

भावार्थः—वे वित्तशोक ॥ ७५ ॥

अर्थः—दो० वे वि० विमल ॥ ७६ ॥

दो विमला ॥ ७६ ॥

भावार्थः—वे विमल ॥ ७६ ॥

अर्थः—दो० वे वि० विततना ॥ ७७ ॥

दो वितत्ता ॥ ७७ ॥

भावार्थः—वे वितत ॥ ७७ ॥

अर्थः—दो० वे वि० वित्रस्त ॥ ७८ ॥

दो वितत्था ॥ ७८ ॥

भावार्थः—वे वित्रस्त ॥ ७८ ॥

अर्थः—दो० वे वि० विसाल ॥ ७९ ॥

दो विसाला ॥ ७९ ॥

भावार्थः—वे विसाल ॥ ७९ ॥

अर्थः—दो० वे सा० साल ॥ ८० ॥

दो साला ॥ ८० ॥

भावार्थः—वे शाल ॥ ८० ॥

अर्थः—दो० वे सु० सुवया ॥ ८१ ॥

दो सुवया ॥ ८१ ॥

भावार्थः—वे (युक्तक) सुवया ॥ ८१ ॥

अर्थः—दो० वे अ० अणिवर्ति ॥ ८२ ॥

दो अणियट्टी ॥ ८२ ॥

भावार्थः—वे अनिवर्त ॥ ८२ ॥

अर्थः—दो० वे ए० एकजडी ॥ ८३ ॥

दो एगजडी ॥ ८३ ॥

भावार्थः—वे एक जडी ॥ ८३ ॥

अर्थः—दो० वे दु० द्वीजडी ॥ ८४ ॥

दो दुजडी ॥ ८४ ॥

भावार्थः—वे द्विजडी ॥ ८४ ॥

अर्थः—दो० वे क० करकरिक ॥ ८५ ॥

दो करकरिगा ॥ ८५ ॥

भावार्थः—वे करकरिक ॥ ८५ ॥

अर्थः—दो० वे रा० राजगल ॥ ८६ ॥

दो रायगला ॥ ८६ ॥

भावार्थः—वे राजगल ॥ ८६ ॥

अर्थः—दो० वे पु० पुष्पकेतु ॥ ८७ ॥

दो पुष्पकेऊ ॥ ८७ ॥

भावार्थः—वे पुष्पकेतु ॥ ८७ ॥

अर्थः—दो० वे भा० भावकेतु ॥ ८८ ॥

दो भावकेऊ ॥ ८८ ॥

भावार्थः—वे भावकेतु ॥ ८८ ॥ ए सर्वे ८८ ग्रह वे वे जाणवा.

अर्थः—ज० जम्बुद्वीपणं० नामना दी० द्वीपे वे० वेदिका दो० वे गा० गाउ उ० उंची उ० उञ्चपणे प० कही

१६ पेरा (जंबुद्वीपना अधिकारने लोघे आटळुं वधारे ते संबंधमां कहे छे.)

जम्बुद्वीवस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उडुं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥

भावार्थः—जंबुद्विप नामे द्विपनी वेदिका कोट सरखी ते आठ जोजननी उंची ते उपर वळी वे गाउ उंची पांचसें धनुष्य पहोळी नाना (विचित्र) रत्नमय पद्मवर वेदिका कही छे.

अर्थः—ल० लवण णं० नामनो स० समुद्र दो० वे जो० जोजन स० सो स० हजार एटले वे लाख च० चक्रवाल वि० पोहोलपणे प०

કહ્યો લ૦ લવણ ણં૦ નામના સ૦ સમુદ્રની
વે૦ વેદિકા દો૦ વે ગા૦ ગાઝ-૩૦ ડંચી
૩૦ ડંચપણે પં૦ કહી

૧૭ પેરા (જંબુદ્વીપ સંવંધી કહ્યા પછી લ-
વણસમુદ્ર સંવંધી કહે છે.)

લવણે ણં સમુદ્રે દો જોયણસયસહ-
સ્સાઈં ચક્રવાલવિક્ષમ્ભેણં પણ્ણત્તે ॥૧॥

લવણસ્સ ણં સમુદ્રસ્સ વેડ્યા દો
ગાઝ્યાઈં ઉઢ્ઠં ઉચ્ચત્તેણં પણ્ણત્તા ॥૨॥

ભાવાર્થ:-લવણસમુદ્ર વે લાચ જોજન પ-
હોઢપણે ચક્રવાલ મંડલ તેહનું પહોઢપણછે ઇ-
ટલે પૂર્વથી પશ્ચિમને કાંટે દક્ષીણથી ઉત્તરે વે
લાચ જોજન પોહોઢપણે કહેલછે. લવણ સ-
મુદ્રના કોટની ઉપરલી વેદિકા વે ગાઝની ડં-
ચપણે કહી છે.

અર્થ:-ધા૦ ઘાતકી સ્વં૦ સ્વંદ નામના દી૦
દ્વીપે પુ૦ પૂર્વાધને ણં૦ વિપે મ૦ મેરુ પ૦ પ-
ર્વતથી ૩૦ ઉત્તર દા૦ દક્ષિણ દિસે દો૦ વે
વા૦ ક્ષેત્ર પં૦ કહ્યા વ૦ ઘણા સ૦ સરપા
જા૦ યાવત મ૦ ભરત ચે૦ વઢી ઇ૦ ઇરવત
ચે૦ વઢી ॥ ૧ ॥

૧૮ પેરા (ક્ષેત્રના પ્રસ્તાવથી લવણસમુદ્ર સં-
વંધી કહ્યા પછી ઘાતકીસ્વંદ સંવંધી કહેછે.)

ધાયઙ્ગલ્લવણે દીવે પુરત્થિમદ્દે ણં-મ-
ન્દરસ્સ પવ્વચસ્સ ઉત્તરદાહિણેણં દો વા-
સ્તા ઘણ્ણત્તા વહુસમઉચ્છા જાવ ભરે
ચેવ ઇરવ્વે વેવ ॥ ૧ ॥

ભાવાર્થ:-ઘાતકી સ્વંદના પૂર્વાધને વિપે મેરુ
પર્વતથી ઉત્તર અને દક્ષીણે વે ક્ષેત્ર જ્ઞાની ઇ ક-
હેલ છે તે ઘણા સરસ્તા છે યાવત વસાવર-છે
તે વે ક્ષેત્રનાં નામ કહેઁ, એક ભરતક્ષેત્ર ૧, વીજું
ઇરવત, ઇ વે ભેદ છે ॥ ૧ ॥

અર્થ:-ઇ૦ ઇમ જ૦ જેમા જંબુદ્વીપી
ત૦ તેમ ઇ૦ અહીપણ મા૦ જાણવું જા૦ યાવત
દો૦ વે વા૦ ક્ષેત્રને વિપે મ૦ મનુષ્ય ૩૦
પ્રકારના પિ૦ વઢી કા૦ કાલ પ્રતે પ૦ મનુ-
ષ્ય મ૦ ભવ મા૦ પ્રતે સુલ્લ ભોગવતા વિ-
વિચરે તં૦ તે જ૦ કહુંછું મ૦ ભરત ચે૦ વઢી
ઇ૦ ઇરવત ચે૦ વઢી ન૦ ઇટલો વિશેષ કૃ-
કૂટ સામલી વૃક્ષ ચે૦ વઢી ધા૦ ધાતકી સ્વ-
વૃક્ષ ચે૦ વઢી દે૦ દેવતા મ૦ ગરુલ નામે ચે૦
વઢી વે૦ વેણુ દેવતા સુ૦ સુદર્શન દેવતા ચે૦
વઢી ॥ ૨ ॥

ઇવં જહા જમ્બુદ્વીવે તહા ઇત્થ મા-
ણિયવ્વં જાવ દોસુ વાસેસુ મણુયા ઢ-
વિહં પિ કાલં પચ્છણુભવમાણા વિહ-
ન્તિ તં જહા ભરે ચેવ ઇરવ્વે ચેવ
નવરં કૂડસામલી ચેવ ધાયઙ્ગલ્લવે ચેવ
દેવા ગરુલે ચેવ વેણુદેવે સુદંસણે ચેવ
॥ ૨ ॥

ભાવાર્થ:-ઇમ જેમ જંબુદ્વીપમાં છે તેમ ઇમાં
પણ જાણવું યાવત વે ક્ષેત્રને વિપે મનુષ્ય ૩
પ્રકારના કાલ પ્રત્યે ભોગવતા વિચરે છે તે
ક્ષેત્રનાં નામ કહે છે, એક ભરતક્ષેત્ર ૧ વીજું
ઇરવત ક્ષેત્રે ૨ ઇ વે ભેદ છે. ઇટલો વિશેષ
તિહાં કુટ સામલી વૃક્ષ છે ૧, વીજું ઘાતકી
છે ૨ તિહાં કુટ સામલી વૃક્ષને વિપે ગરુલ
નામે દેવતા રહેછે ૧, અને ઘાતકી વૃક્ષને વિપે
વેણુદેવતા રહે છે જેહનું દર્શન મિયકારી છે
તેથી તેહનું વીજું નામ સુદર્શન પણછે ૨, ઇ વે
ભેદ છે ॥ ૨ ॥

અર્થ:-ધા૦ ઘાતકી સ્વંદના દી૦ દ્વીપે પ૦ પ-
શ્ચિમાધને વિપે મ૦ મેરુ પ૦ પર્વતથી ૩૦ ઉત્તર
દા૦ દક્ષિણે દો૦ વે વા૦ ક્ષેત્ર પં૦ કહ્યા વ૦
ઘણા સ૦ સમા જા૦ યાવત મ૦ ભરત ચે૦ વઢી

ए० एरवत चे० वळी जा० यावत छ० छ प्र-
कारना पि० वळी का० काल प्रते प० मनुष्य
भ० भव मा० प्रते सुख भोगवतो विचरे न०
एटलो विशेष कू० कूट सामली वृक्ष चे० वळी
म० महा धा० धातकी रु० वृक्ष चे० वळी दे० दे-
वता ग० गरुड चे० वळी वे० वेणु देव पि०
प्रिय दर्शन देवता चे० वळी ॥ ३ ॥

धायइखण्डदीवपच्छत्थिमद्धेणं म-
न्दरस्स पवयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वा-
सा पण्णत्ता बहुसमउल्ला जाव भरहे
चेव एरवए चेव जाव छविहं पि कालं
पच्चणुभवमाणा । नवरं कूडसामली
चेव महाधायइरुक्खे चेव देवा गरुले
चेव वेणुदेवे पियदंसणे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थः—घातकीखंड द्विपना पश्चिमार्धने
विषे मरुपर्वतने उत्तर दक्षिणे वे वास कहेलांछे
एटले क्षेत्र कहेलेछे ते वे घणां सरखांछे यावत
मान प्रमाणे करी सरखां छे, ते वे क्षेत्रनां
नाम कहे छे, एक भरतक्षेत्र १, वीजुं एरवत
क्षेत्र २, ए वे भेद छे, यावत तिहांनां मनुष्य
छ आरानां सुख दुःख प्रत्ये भोगवता विचरे
छे, फरता आरा आवि ते एक भरतक्षेत्रमां १,
वीजुं एरवत क्षेत्रमां २, ए वे क्षेत्रमां एकज
फालभाव वर्ते छे, एटलो विशेष छे, तिहां कुट
सामली नामे वृक्ष छे १, वीजुं महाघातकी नामे
वृक्ष छे २, तिहां कुट सामली वृक्षने विषे
गरुड नामे देवता रहे छे १, महाघातकी वृ-
क्षने विषे वेणु नामे देवता रहे छे जेहनुं दर्शन
प्रियकारी छे तेथी तेनुं वीजुं नाम प्रितिदर्शन
छे २, ए वे भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः—धा० धातकी ख० खण्ड णं० वळी दी०
द्विपने विषे दो० वे भ० भरतक्षेत्र ॥ १ ॥

१९ पेरा (पुर्वार्ध अने पश्चिमार्ध मळीने
घातकी खंड नामना संपुर्ण द्विपने आश्रीने
वे सूत्रो कहे छे.)

धायइखण्डे णं दीवे दो भरहाइं ॥१॥
भावार्थः—घातकीखंड द्विपने विषे वे भर-
तक्षेत्र छे ॥ १ ॥

अर्थः—दो० वे ए० एरवत क्षेत्र ॥ २ ॥
दो एरवयाइं ॥ २ ॥

भावार्थः—वे एरवत क्षेत्र छे ॥ २ ॥
अर्थः—दो० वे हे० हेमवंतक्षेत्र ॥ ३ ॥

दो हेमवयाइं ॥ ३ ॥
भावार्थः—वे हिमवंत क्षेत्र छे ॥ ३ ॥

अर्थः—दो० वे हे० हिरणवंतक्षेत्र ॥ ४ ॥
दो हेरणवयाइं ॥ ४ ॥

भावार्थः—वे हेरणवंत क्षेत्र छे ॥४॥
अर्थः—दो० वे ह० हरिवर्षक्षेत्र ॥ ५ ॥

दो हरिवासाइं ॥ ५ ॥
भावार्थः—वे हरिवास क्षेत्र छे ॥ ५ ॥

अर्थः—दो० वे र० रम्यकक्षेत्र ॥ ६ ॥
दो रम्मगवासाइं ॥ ६ ॥

भावार्थः—वे रम्यकवर्ष क्षेत्र छे ॥ ६ ॥
अर्थः—दो० वे पु० पुर्वमहाविदेहक्षेत्र ॥७॥

दो पुष्वविदेहाइं ॥ ७ ॥
भावार्थः—वे पूर्वे महाविदेह क्षेत्र छे ॥७॥

अर्थः—दो० वे अ० पश्चिम महाविदेहक्षेत्र ॥८॥
दो अवरविदेहाइं ॥ ८ ॥

भावार्थः—वे पश्चिम महाविदेह क्षेत्र छे ॥८॥
[ए महाविदेहमां सदाय चोथो आरो छे],

अर्थः—दो० वे दे० देवकुरुक्षेत्र ॥ ९ ॥
दो देवकुराओ ॥ ९ ॥

भावार्थः—वे देवकुरु युगळीयांना क्षेत्र छे ॥९॥
अर्थः—दो० वे दे० देवकुरु म० मोटा दु०

વૃક્ષ ॥ ૧૦ ॥

દો દેવકુરુમહદુમા ॥ ૧૦ ॥

ભાવાર્થ:-વે દેવકુરુ નામે મ્હોટાં વૃક્ષ રત્ન-
મય શાસ્વતાં છે ॥૧૦॥

અર્થ:-દોં વે દેં દેવકુરુ મં મોટા દું
વૃક્ષ વાં રહેનાર દેં દેવ ॥ ૧૧ ॥

દો દેવકુરુમહદુમવાસી દેવા ॥૧૧॥

ભાવાર્થ:-વે દેવકુરુ મ્હોટા વૃક્ષના વાસી
દેવતા છે ॥ ૧૧ ॥

અર્થ:-દોં વે ઉં ઉત્તરકુરાક્ષેત્ર ॥૧૨॥

દો ઉત્તરકુરાઓ ॥ ૧૨ ॥

ભાવાર્થ:-વળી તેહજ ઘાતકીસંઢમાં વે ઉ-
ત્તરકુરુ યુગલીયાનાં ક્ષેત્ર છે ॥૧૨॥

અર્થ:-દોં વે ઉં ઉત્તરકુરુનામે મં મોટા
દું વૃક્ષ ॥ ૧૩ ॥

દો ઉત્તરકુરુમહદુમા ॥ ૧૩ ॥

ભાવાર્થ:-તિહાં ઉત્તરકુરુ નામે વે મ્હોટાં
વૃક્ષ છે ॥ ૧૩ ॥

અર્થ:-દોં વે ઉં ઉત્તરકુરુ મં મોટા
દું વૃક્ષના વાં રહેનાર દેં દેવતા ॥ ૧૪ ॥

દો ઉત્તરકુરુમહદુમવાસી દેવા ॥૧૪॥

ભાવાર્થ:-વે ઉત્તરકુરુ મ્હોટા વૃક્ષના વાસી
દેવતા છે ॥ ૧૪ ॥

અર્થ:-દોં વે ચું ચુલ હિં હિમવંતપર્વત ॥ ૧૫ ॥

દો ચુલહિમવન્તા ॥ ૧૫ ॥

ભાવાર્થ:-વે લઘુ હિમવંત પર્વત છે ॥૧૫॥

અર્થ:-દોં વે મં મોટા હિમવંત ॥૧૬॥

દો મહાહિમવન્તા ॥ ૧૬ ॥

ભાવાર્થ:-વે મ્હોટા હિમવંત પર્વત છે ॥૧૬॥

અર્થ:-દોં વે નિં નિપથ ॥ ૧૭ ॥

દો નિસહા ॥ ૧૭ ॥

ભાવાર્થ:-વે નિપથ પર્વત છે ॥ ૧૭ ॥

અર્થ:-દોં વે નિં નીલવંત ॥ ૧૮ ॥

દો નીલવન્તા ॥ ૧૮ ॥

ભાવાર્થ:-વે નીલવંત પર્વત છે ॥૧૮॥

અર્થ:-દોં વે રૂં રૂપીપર્વત ॥ ૧૯ ॥

દો રૂપી ॥ ૧૯ ॥

ભાવાર્થ:-વે રૂપી પર્વત છે ॥ ૧૯ ॥

અર્થ:-દોં વે સ્વિં શિવરીપર્વત ॥૨૦॥

દો સિહરી ॥ ૨૦ ॥

ભાવાર્થ:-વે શિવરી પર્વત છે ॥ ૨૦ ॥

અર્થ:-દોં વે સં શબ્દાપાતી નામે વૃત
વૈતાદ્ય છે ॥ ૨૧ ॥

દો સદાવર્દ ॥ ૨૧ ॥

ભાવાર્થ:-વે શબ્દાપાતી નામે વૃત વૈતાદ્ય
પર્વત છે ॥ ૨૧ ॥

અર્થ:-દોં વે સં શબ્દાપાતીના વાં ર-
હેનાર સાં સ્વાતીનામે દેં દેવતા ॥ ૨૨ ॥

દો સદાવર્દવાસી સાઈદેવા ॥૨૨॥

ભાવાર્થ:-વે શબ્દાપાતી વૈતાદ્યના વાસી
સ્વાતી દેવતા છે ॥ ૨૨ ॥

અર્થ:-દોં વે વિં વિકટાપાતી વૈતાદ્ય ॥૨૩॥

દો વિયડાવર્દ ॥ ૨૩ ॥

ભાવાર્થ:-વે વિકટાપાતી વૈતાદ્ય પર્વત
છે ॥ ૨૩ ॥

અર્થ:-દોં વે વિં વિકટાપાતીના વાં
રહેનારા પં પ્રભાસનામે દેં દેવ ॥ ૨૪ ॥

દો વિયડાવર્દવાસીપ્રભાસા દેવા ॥૨૪॥

ભાવાર્થ:-વે વિકટાપાતી વૈતાદ્યના વાસી
પ્રભાસ નામે દેવતા છે ॥૨૪॥

અર્થ:-દોં વે ગં ગંધાપાતી ॥ ૨૫ ॥

દો ગન્ધાવર્દ ॥ ૨૫ ॥

ભાવાર્થ:-વે ગંધાપાતી નામે વૃત વૈ-
દ્ય છે ॥ ૨૫ ॥

अर्थः—दो० वे गं० गंधापातीना वा०वासी
अ० अरुण नामे दे० देवता ॥ २६ ॥

दो गन्धावइवासी अरुणा देवा ॥ २६ ॥

भावार्थः—गंधापातीना वासी अरुण नामे
देवता छे ॥ २६ ॥

अर्थः—दो० वे मा० मालवंत प० पर्याय
नामे वृत्त वैताढ्य ॥ २७ ॥

दो मालवन्तपरियागा ॥ २७ ॥

भावार्थः—वे मालवंत पर्याय नामे वृत्त वै-
ताढ्य पर्वत छे ॥ २७ ॥

अर्थः—दो० वे मा० मालवंत प० पर्यायना
वा० रहेनार प० पदमनामे दे० देवता ॥ २८ ॥

दो मालवन्तपरियागवासी पउमा
देवा ॥ २८ ॥

भावार्थः—वे मालवंत पर्यायना वासी पदम
नामे देवता छे ॥ २८ ॥

अर्थः—दो० वे मा० मालवंत पर्वत ॥ २९ ॥

दो मालवन्ता ॥ २९ ॥

भावार्थः—वे मालवंत नामे गजदंत पर्व-
त छे ॥ २९ ॥

अर्थः—दो० वे चि० चित्रकूट पर्वत ॥ ३० ॥

दो चित्तकूडा ॥ ३० ॥

भावार्थः—वे चित्रकूट पर्वत छे ॥ ३० ॥

अर्थः—दो० वे प० पदमकूट ॥ ३१ ॥

दो पम्हकूडा ॥ ३१ ॥

भावार्थः—वे पदमकूट पर्वत छे ॥ ३१ ॥

अर्थः—दो० वे न० नलिणकूट पर्वत ॥ ३२ ॥

दो नलिणकूडा ॥ ३२ ॥

भावार्थः—वे नलीनकूट पर्वत छे ॥ ३२ ॥

अर्थः—दो० वे ए० एक शैलपर्वत ॥ ३३ ॥

दो एगसेला ॥ ३३ ॥

भावार्थः—वे एकशैल पर्वत छे ॥ ३३ ॥

अर्थः—दो० वे ति० त्रिकूटपर्वत ॥ ३४ ॥

दो तिकूडा ॥ ३४ ॥

भावार्थः—वे त्रिकूट पर्वत छे ॥ ३४ ॥

अर्थः—दो० वे वे० वेसमणकूट ॥ ३५ ॥

दो वेसमणकूडा ॥ ३५ ॥

भावार्थः—वे वैश्रमण कूट छे ॥ ३५ ॥

अर्थः—दो० वे अ० अंजन पर्वत ॥ ३६ ॥

दो अञ्जणा ॥ ३६ ॥

भावार्थः—वे अंजन पर्वत छे ॥ ३६ ॥

अर्थः—दो० वे मा० मांतजनपर्वत ॥ ३७ ॥

दो मातञ्जणा ॥ ३७ ॥

भावार्थः—वे मातंजन पर्वत छे ॥ ३७ ॥

अर्थः—दो० वे सो० सौमनसगजदंता ॥ ३८ ॥

दो सोमणसा ॥ ३८ ॥

भावार्थः—देवकुरुथी पुर्व दिशाए वे सोम-
नस गजदंताकार पर्वत छे ॥ ३८ ॥

अर्थः—दो० वे वि० विद्युत्प्रभ ॥ ३९ ॥

दा विज्जुप्पभा ॥ ३९ ॥

भावार्थः—देवकुरु पासे वे विद्युत्प्रभ पर्व-
त छे ॥ ३९ ॥

अर्थः—दो वे० अ० अंकावतीनगरी ॥ ४० ॥

दो अङ्गावई ॥ ४० ॥

भावार्थः—तेहथी आगळ वे अंकावती न-
गरी छे ॥ ४० ॥

अर्थः—दो० वे प० पद्मावतीनगरी ॥ ४१ ॥

दो पम्हावई ॥ ४१ ॥

भावार्थः—वे पदमावती नगरी छे ॥ ४१ ॥

अर्थः—दो० वे आ० आसीविसा ॥ ४२ ॥

दो आसीविसा ॥ ४२ ॥

भावार्थः—वे आशिविषा नगरी छे ॥ ४२ ॥

अर्थः—दो० वे सु० सुखावहा ॥ ४३ ॥

દો સુહાવહા ॥ ૪૩ ॥

ભાવાર્થઃ-વે સુસાવહા નગરી છે ॥૪૩॥

અર્થઃ-દોં વે ચંં ચંદ્રપર્વત ॥ ૪૪ ॥

દો ચન્દપવ્વયા ॥ ૪૪ ॥

ભાવાર્થઃ-એ ચાર નગરી સિતોદાનદીને જ-
મને પાસે છે તિહાંથી આગલ વે પૂર્વે વે ચંદ્ર
પર્વત છે ॥ ૪૪ ॥

અર્થઃ-દોં વે સૂં સૂર્યપર્વત ॥ ૪૫ ॥

દો સૂરપવ્વયા ॥ ૪૫ ॥

ભાવાર્થઃ-વે સૂર્ય પર્વત છે ॥ ૪૫ ॥

અર્થઃ-દોં વે નાં નાગપર્વત ॥ ૪૬ ॥

દો નાગપવ્વયા ॥ ૪૬ ॥

ભાવાર્થઃ-વે નાગ પર્વત છે ॥૪૬॥

અર્થઃ-દોં વે દેં દેવપર્વત ॥ ૪૭ ॥

દો દેવપવ્વયા ॥ ૪૭ ॥

ભાવાર્થઃ-વે દેવપર્વત છે ॥૪૭॥

અર્થઃ-દોં વે ગં ગંધમાદન ગજદંતા ॥૪૮॥

દો ગન્ધમાયણા ॥ ૪૮ ॥

ભાવાર્થઃ-ને વાર પછી વે ગંધમાદન ગજ-
દંતા પર્વત છે ॥૪૮॥

અર્થઃ-દોં વે ડં ડક્ષુકારપર્વત ॥ ૪૯ ॥

દો ડસુગારપવ્વયા ॥ ૪૯ ॥

ભાવાર્થઃ-ઉત્તર કુરુને પશ્ચિમ ભાગે એ
સર્વે ઘાતકી સ્વંડના પુવાર્ધ અને પશ્ચિમાર્ધમાં
છે તે માટે વે વે કલ્યા છે, વે ડ્ધુધાર પર્વતે
ઘાતકી સ્વંડના દક્ષીણ ઉત્તરે વે ભાગ કર્યા
છે ॥ ૪૯ ॥

અર્થઃ-દોં વે ચું લઘુ હિં હિમવંતના
કૂં કૂટ ॥ ૫૦ ॥

દો ચુહિમવન્તકૂડા ॥ ૫૦ ॥

ભાવાર્થઃ-વે લઘુ હિમવંત પર્વતના કુટ છે,
વે વે પર્વત છે તે માટે એકેકા પર્વત ઉપર વે
વે કુટ છે ॥૫૦॥

અર્થઃ-દોં વે-વે-વે વેસમણકૂટપર્વત ॥૫૧॥

દો વેસમણકૂડા ॥ ૫૧ ॥

ભાવાર્થઃ-વે-વૈશ્રમણ કુટ ॥૫૧॥

અર્થઃ-દોં વે મં મહાહિમવન્તકૂટ ॥૫૨॥

દો મહાહિમવન્તકૂડા ॥ ૫૨ ॥

ભાવાર્થઃ-વે મહા હિમવંત પર્વતના કુટ ॥૫૨॥

અર્થઃ-દોં વે વે-વે વૈહુર્યકૂટ ॥ ૫૩ ॥

દો વેરુલિયકૂડા ॥ ૫૩ ॥

ભાવાર્થઃ-વે વૈહુર્યકુટ ॥૫૩॥

અર્થઃ-દોં વે નિં નિષધકૂટ ॥ ૫૪ ॥

દો નિસહકૂડા ॥ ૫૪ ॥

ભાવાર્થઃ-વે નિષધ પર્વતના કુટ ॥ ૫૪ ॥

અર્થઃ-દોં વે રૂં રુચકકૂટ ॥ ૫૫ ॥

દો રુચગકૂડા ॥ ૫૫ ॥

ભાવાર્થઃ-વે રુચકના કુટ ॥ ૫૫ ॥

અર્થઃ-દોં વે નીં નીલવંતકૂટ ॥ ૫૬ ॥

દો નીલવન્તકૂડા ॥ ૫૬ ॥

ભાવાર્થઃ-વે નીલવંત પર્વતના કુટ ॥૫૬॥

અર્થઃ-દોં વે ડં ઉપદર્શનકૂટ ॥ ૫૭ ॥

દો ઉવદંસણકૂડા ૫૭ ॥

ભાવાર્થઃ-વે ઉપદર્શન કુટ ॥ ૫૭ ॥

અર્થઃ-દોં વે રૂં રુપિકૂટ ॥ ૫૮ ॥

દો રુપિકૂડા ॥ ૫૮ ॥

ભાવાર્થઃ-વે રુપ્યકુટ ॥૫૮॥

અર્થઃ-દોં વે મં મણિકંચણકૂટ ॥૫૯॥

દો મણિકંચણકૂડા ॥ ૫૯ ॥

ભાવાર્થઃ-વે મણિકંચન કુટ ॥૫૯॥

અર્થઃ-દોં વે સિં શિપરીનાકૂટ ॥૬૦॥

દો સિહરિકૂડા ॥ ૬૦ ॥

ભાવાર્થઃ-વે શિખરિના કુટ ॥૬૦॥

અર્થઃ-દોં વે તિં તિમચ્છકૂટ ॥૬૧॥

दो तिगिच्छिकुटा ॥ ६१ ॥

भावार्थः—वे तिगिच्छिकुटवे एम सर्वपर्वत
उपर वे वे कुट जाणवा ॥ ६१ ॥

अर्थः—दो० वे प० पदम द्र० द्रह ॥ ६२ ॥

दो पउमद्रहा ॥ ६२ ॥

भावार्थः—एम वे पदम द्रह छे ॥ ६२ ॥

अर्थः—दो० वे प० पदम द्र० द्रह वा० र-
हेनारी सि० श्री दे० देवीओ ॥ ६३ ॥

दो पउमद्रहवासिणीओ सिरीओ दे-
वीओ ॥ ६३ ॥

भावार्थः—बमणां क्षेत्र छे माटे त्यां वे पदम
द्रहनी रहेनारी श्रीदेवी छे ॥ ६३ ॥

अर्थः—दो० वे म० महार्प० पदम द्र० द्रह ॥ ६४ ॥

दो महापउमद्रहा ॥ ६४ ॥

भावार्थः—वे महा पदमद्रह छे ॥ ६४ ॥

अर्थः—दो० वे म० महा प० पदम द्र० द्रह
वा० रहेनारी हि० ही दे० देवीओ ए० एम
जा० यावत दो० वे पो० पुंडरीकद्रह ॥ ६५ ॥

दो महापउमद्रहवासिणीओ हिरी-
ओ देवीओ । एवं जाव दो पोण्डरीय-
द्रहा ॥ ६५ ॥

भावार्थः—त्यां वे महा पदमद्रहनी रहेनारी
वे ही नामे देवी छे एम यावत् वे पुंडरीक
द्रह छे ॥ ६५ ॥

अर्थः—दो० वे पो० पुंडरीकद्रह वा० रहे-
नारी ल० लक्ष्मी दे० देवीओ ॥ ६६ ॥

दो पोण्डरीयद्रहवासिणीओ लच्छी-
ओ देवीओ ॥ ६६ ॥

भावार्थः—त्यां वे पुंडरीक द्रहनी / रहेनारी
लक्ष्मी नामे देवीयो छे ॥ ६६ ॥

अर्थः—दो० वे गं० गंगा प्रपात द्र० द्रह
जा० एम दो० वे र० रक्तावती प्य० प्रपात

द्र० द्रह ॥ ६७ ॥

दो गङ्गप्पवायद्रहा जाव दो
रक्तवड्पवायद्रहा ॥ ६७ ॥

भावार्थः—वे गंगामपात द्रह छे त्यां उंचाथी
गंगानो भवाह पडे छे एम यावत् वे रक्तवती
प्रपात द्रह छे ए सर्वे द्रह वे वे जाणवा ॥ ६७ ॥

अर्थः—दो० वे रो० रोहितानदी जा० एम
दो० वे रु० रूप्य कु० कुला नदी ॥ ६८ ॥

दो रोहियाओ जाव दो रूप्यकु-
लाओ ॥ ६८ ॥

भावार्थः—वे रोहितानदी एम यावत् वे
रूप्यकुला नदी ॥ ६८ ॥

अर्थः—दो० वे गा० ग्राहवतीनदी ॥ ६९ ॥

दो गाहवईओ ॥ ६९ ॥

भावार्थः—वे ग्राहवती नदी ॥ ६९ ॥

अर्थः—दो० वे द० द्रहवती नदी ॥ ७० ॥

दो दहवईओ ॥ ७० ॥

भावार्थः—वे द्रहवती नदी ए सर्वे पर्वतर्थी
नीकळी विजयमां आवी छे ॥ ७० ॥

अर्थः—दो० वे पं० पंकवतीनदी ॥ ७१ ॥

दो पङ्कवईओ ॥ ७१ ॥

भावार्थः—वे पंकवती नदी ॥ ७१ ॥

अर्थः—दो० वे त० तप्तजलानामे ॥ ७२ ॥

दो तप्तजलाओ ॥ ७२ ॥

भावार्थः—वे तप्तजला नदी ॥ ७२ ॥

अर्थः—दो० वे म० मत्तजलानामे ॥ ७३ ॥

दो मत्तजलाओ ॥ ७३ ॥

भावार्थः—वे मत्तजला नदी ॥ ७३ ॥

अर्थः—दो० वे उ० उन्मत्तजलानामे ॥ ७४ ॥

दो उन्मत्तजलाओ ॥ ७४ ॥

भावार्थः—वे उन्मत्तजला नदी ॥ ७४ ॥

अर्थः—दो० वे खी० क्षारोर्दानामे ॥ ७५ ॥

दो खीरोयाओ ॥ ७५ ॥

भावार्थः—वे क्षीरोदा नदी ॥७५॥

अर्थः—दो० वे सी०सिहस्रोतानदी ॥७६॥

दो सीहसोयाओ ॥ ७६ ॥

भावार्थः—वे सिंहश्रोता नदी ॥७६॥

अर्थः—दो०वे अ०अंतवाहिनीनामे ॥७७॥

दो अन्नोवाहिणीओ ॥ ७७ ॥

भावार्थः—वे अंतर वाहिनी नदी ॥७७॥

अर्थः—दो० वे उ० उर्मिमालिणीओ ॥७८॥

दो उर्मिमालिणीओ ॥ ७८ ॥

भावार्थः—वे उर्मिमालिनी नदी ॥७८॥

अर्थः—दो० वे फे० फेणमालिनी नदी ॥७९॥

दो फेणमालिणीओ ॥ ७९ ॥

भावार्थः—वे फेणमालिनी नदी ॥७९॥

अर्थः—दो० वे गं० गंभीरमालिनी ॥८०॥

दो गंभीरमालिणीओ ॥ ८० ॥

भावार्थः—वे गंभीरमालिनी नदी ए सवें नदी
वे वे जाणवी ॥८०॥

अर्थः—दो० वे क० कच्छाविजय ॥८१॥

दो कच्छा ॥ ८१ ॥

भावार्थः—घातकी खंडमांही वे महाविदेह क्षेत्र
छे, एकेका महाविदेहमां वत्रीस वत्रीस विजय
छे, एम चोसठ विजयछे तेहनां नाम वे थोकेछे,
एकेक विजयमां वे वे नगरि छे. वे कच्छवि-
जय ॥ ८१ ॥

अर्थः—दो० वे सु० सुकच्छाविजय ॥८२॥

दो सुकच्छा ॥ ८२ ॥

भावार्थः—वे सुकच्छ ॥८२॥

अर्थः—दो० वे म० महाकच्छाविजय ॥८३॥

दो महाकच्छा ॥ ८३ ॥

भावार्थः—वे महाकच्छ ॥८३॥

अर्थः—दो० वे क० कच्छावतीविजय ॥८४॥

दो कच्छावर्द ॥ ८४ ॥

भावार्थः—वे कच्छगावती ॥८४॥

अर्थः—दो० वे आ० आवर्त्तावतीविजय ॥८५॥

दो आवत्ता ॥ ८५ ॥

भावार्थः—वे आवर्त ॥८५॥

अर्थः—दो० वे मं० मंगलावतीविजय ॥८६॥

दो मङ्गलावत्ता ॥ ८६ ॥

भावार्थः—वे मंगलावर्त ॥८६॥

अर्थः—दो० वे पु० पुक्खला ॥८७॥

दो पुक्खला ॥ ८७ ॥

भावार्थः—वे पुक्खलावर्त ॥८७॥

अर्थः—दो० वे पु० पुक्खलावती ॥८८॥

दो पुक्खलावर्द ॥ ८८ ॥

भावार्थः—वे पुक्खलावती ॥८८॥

अर्थः—दो० वे व० वच्छा ॥८९॥

दो वच्छा ॥ ८९ ॥

भावार्थः—वे वच्छा ॥८९॥

अर्थः—दो० वे सु० सुवच्छा ॥९०॥

दो सुवच्छा ॥ ९० ॥

भावार्थः—वे सुवच्छा ॥९०॥

अर्थः—दो० वे म० महावच्छा ॥९१॥

दो महावच्छा ॥ ९१ ॥

भावार्थः—वे महावच्छा ॥९१॥

अर्थः—दो० वे व० वच्छगावती ॥९२॥

दो वच्छावर्द ॥ ९२ ॥

भावार्थः—वे वच्छगावती ॥९२॥

अर्थः—दो० वे र० रम्या ॥९३॥

दो रम्या ॥ ९३ ॥

भावार्थः—वे रम्या ॥९३॥

अर्थः—दो० वे र० रम्यका ॥९४॥

दो रम्यागा ॥ ९४ ॥

भावार्थः-वे रम्मगा ॥९४॥

अर्थः-दो० वे र० रमणिजा ॥९५॥

दो रमणिज्जा ॥ ९५ ॥

भावार्थः-वे रमणिजा ॥९५॥

अर्थः-दो० वे मं० मंगलावती ॥९६॥

दो मङ्गलावई ॥ ९६ ॥

भावार्थः-वे मंगलावती ॥९६॥

अर्थः-दो० वे प० पदमा ॥ ९७ ॥

दो पम्हा ॥ ९७ ॥

भावार्थः-वे पदमा ॥ ९७ ॥

अर्थः-दो० वे सु० सुपदमा ॥ ९८ ॥

दो सुपम्हा ॥ ९८ ॥

भावार्थः-वे सुपदमा ॥ ९८ ॥

अर्थः-दो० वे म० महापदमा ॥ ९९ ॥

दो महापम्हा ॥ ९९ ॥

भावार्थः-वे महापदमा ॥ ९९ ॥

अर्थः-दो० वे प० पदमागावती ॥१००॥

दो पम्हावई ॥ १०० ॥

भावार्थः-वे पदमागावती ॥ १०० ॥

अर्थः-दो० वे स० शंखा ॥१०१॥

दो सङ्गा ॥ १०१ ॥

भावार्थः-वे शंखा ॥१०१॥

अर्थः-दो० वे न० नलिणा ॥१०२॥

दो नलिणा ॥ १०२ ॥

भावार्थः-वे नलीना ॥ १०२ ॥

अर्थः-दो० वे कु० कुमुदा ॥ १०३ ॥

दो कुमुया ॥ १०३ ॥

भावार्थः-वे कुमुदा ॥१०३॥

अर्थः-दो० वे स० नलिलावती ॥१०४॥

दो नलिणावई ॥ १०४ ॥

भावार्थः-वे नलीनावती ॥१०४॥

अर्थः-दो० वे व० वमा ॥१०५॥

दो वप्पा ॥ १०५ ॥

भावार्थः-वे वमा ॥१०५॥

अर्थः-दो० वे सु० सुवमा ॥ १०६ ॥

दो सुवप्पा ॥ १०६ ॥

भावार्थः-वे सुवमा ॥१०६॥

अर्थः-दो० वे म० महावमा ॥१०७॥

दो महावप्पा ॥ १०७ ॥

भावार्थः-वे महावमा ॥१०७॥

अर्थः-दो० वे व० वप्रकावती ॥ १०८ ॥

दो वप्पावई ॥ १०८ ॥

भावार्थः-वे वप्रगावती ॥१०८॥

अर्थः-दो० वे व० वल्लु ॥१०९॥

दो वग्गू ॥ १०९ ॥

भावार्थः-वे वल्लु ॥१०९॥

अर्थः-दो० वे सु० सुवल्लु ॥११०॥

दो सुवग्गू ॥ ११० ॥

भावार्थः-वे सुवल्लु ॥११०॥

अर्थः-दो० वे ग० गंधिला ॥१११॥

दो गन्धिला ॥ १११ ॥

भावार्थः-वे गंधीला ॥ १११ ॥

अर्थः-दो० वे ग० गंधिलावती ॥११२॥

दो गन्धिलावई ॥ ११२ ॥

भावार्थः-वे गंधीलावती ॥११२॥

अर्थः-दो० वे खे० खेमा ॥११३॥

दो खेमाओ ॥ ११३ ॥

भावार्थः-वे खेमा ॥११३॥

अर्थः-दो० वे खे० खेमपुरा ॥११४॥

दो खेमपुराओ ॥ ११४ ॥

भावार्थः-वे खेमपुरा ॥११४॥

अर्थः-दो० वे रि० रिहा ॥११५॥

दो रिहाओ ॥ ११५ ॥

भावार्थः-वे रिष्ट ॥ ११५ ॥
 अर्थः-दो० वे रि० रिष्टपुरा ॥११६॥
 दो रिष्टपुराओ ॥ ११६ ॥
 भावार्थः-वे रिष्टपुर ॥११६॥
 अर्थः-दो० वे ख० षडगी ॥११७॥
 दो खडगीओ ॥ ११७ ॥
 भावार्थः-वे खडगी ॥११७॥
 अर्थः-दो० वे म० मंजूसा ॥ ११८ ॥
 दो मञ्जूसाओ ॥ ११८ ॥
 भावार्थः-वे मंजूसा ॥ ११८ ॥
 अर्थः-दो० वे ओ० ओषधी ॥११९॥
 दो ओसहीओ ॥ ११९ ॥
 भावार्थः-वे ओषधी ॥११९॥
 अर्थः-दो० वे पु० पुंढरगिणी ॥१२०॥
 दो पुण्डरगिणीओ ॥ १२० ॥
 भावार्थः-वे पुंढरकिणी ॥१२०॥
 अर्थः-दो० वे सु० सुसीमा ॥१२१॥
 दो सुसीमाओ ॥ १२१ ॥
 भावार्थः-वे सुसीमा ॥१२१॥
 अर्थः-दो० वे कु० कुंडला ॥१२२॥
 दो कुण्डलाओ ॥ १२२ ॥
 भावार्थः-वे कुंडला ॥१२२॥
 अर्थः-दो० वे अ० अपराजित नामे ॥१२३॥
 दो अपराजिताओ ॥ १२३ ॥
 भावार्थः-वे अपराजीता ॥१२३॥
 अर्थः-दो० वे पं० प्रभङ्गरा ॥१२४॥
 दो प्रभङ्गराओ ॥ १२४ ॥
 भावार्थः-वे प्रभङ्गरा ॥१२४॥
 अर्थः-दो० वे अ० अंकावती ॥१२५॥
 दो अङ्कावतीओ ॥ १२५ ॥
 भावार्थः-वे अंकावती ॥१२५॥

अर्थः-दो० वे प० पद्मावती ॥१२६॥
 दो पद्मावतीओ ॥ १२६ ॥
 भावार्थः-वे पद्मावती ॥१२६॥
 अर्थः-दो० वे सु० सुभा ॥१२७॥
 दो सुभाओ ॥ १२७ ॥
 भावार्थः-वे शुभा ॥१२७॥
 अर्थः-दो० वे र० रत्नसंचया ॥१२८॥
 दो रत्नसंचयाओ ॥ १२८ ॥
 भावार्थः-वे रत्नसंचया ॥१२८॥
 अर्थः-दो० वे आ० आसपुरा ॥१२९॥
 दो आसपुराओ ॥ १२९ ॥
 भावार्थः-वे आसपुरा ॥१२९॥
 अर्थः-दो० वे सी० सीघपुरी ॥१३०॥
 दो सीघपुराओ ॥ १३० ॥
 भावार्थः-वे सिंहपुरा ॥१३०॥
 अर्थः-दो० वे म० महापुरी ॥१३१॥
 दो महापुराओ ॥ १३१ ॥
 भावार्थः-वे महापुरा ॥१३१॥
 अर्थः-दो० वे वि० विजयपुरी ॥१३२॥
 दो विजयपुराओ ॥ १३२ ॥
 भावार्थः-वे विजयपुरा ॥१३२॥
 अर्थः-दो० वे अ० अपराजित ॥१३३॥
 दो अपराजिताओ ॥ १३३ ॥
 भावार्थः-वे अपराजीता ॥१३३॥
 अर्थः-दो० वे अ० अपराजात ॥१३४॥
 दो अपराजाओ ॥ १३४ ॥
 भावार्थः-वे अपराजां ॥१३४॥
 अर्थः-दो० वे अ० अगोक ॥१३५॥
 दो अगोकाओ ॥ १३५ ॥
 भावार्थः-वे अगोका ॥१३५॥
 अर्थः-दो० वे वि० विगतगोका ॥१३६॥
 दो विगतगोकाओ ॥ १३६ ॥

भावार्थः-वे विगतशोका ॥१३६॥
 अर्थः-दो० वे वि० विजया ॥१३७॥
दो विजयाओ ॥ १३७ ॥
 भावार्थः-वे विजयाय ॥१३७॥
 अर्थः-दो० वे वि० विजयंती ॥१३८॥
दो वेजयन्तीओ ॥ १३८ ॥
 भावार्थः-वे वैजयंति-॥१३८॥
 अर्थः-दो० वे ज० जयंती ॥१३९॥
दो जयन्तीओ ॥ १३९ ॥
 भावार्थः-वे जयंति ॥१३९॥
 अर्थः-दो० वे अ० अपराजित ॥१४०॥
दो अपराइयाओ ॥ १४० ॥
 भावार्थः-वे अपराजीता ॥१४०॥
 अर्थः-दो० वे च० चक्रपुरी ॥१४१॥
दो चक्रपुराओ ॥ १४१ ॥
 भावार्थः-वे चक्रपुरा ॥१४१॥
 अर्थः-दो० वे ख० खड्गपुरी ॥१४२॥
दो खड्गपुराओ ॥ १४२ ॥
 भावार्थः-वे खड्गपुरा ॥१४२॥
 अर्थः-दो० वे अ० अवध्या ॥१४३॥
दो अवज्ज्ञाओ ॥ १४३ ॥
 भावार्थः-वे अवध्या ॥१४३॥
 अर्थः-दो० वे अ० अयोध्या ॥१४४॥
दो अओज्ज्ञाओ ॥ १४४ ॥
 भावार्थः-वे अयोध्या ॥१४४॥
 अर्थः-दो० वे भ० भद्रसालवन ॥ १४५॥
दो भद्रसालवणाई ॥ १४५ ॥
 भावार्थः-ए चोसठ विजय ते सर्वे वे वे
 जाणवी त्यां वे मेरु पर्वत छे तेथी वे भद्रसाल
 वनधरतीये छे ॥१४५॥
 अर्थः-दो० वे न० नंदनवन ॥१४६॥
दो नन्दणवणाई ॥ १४६ ॥

भावार्थः-वे नंदन मेखला मध्ये छे ॥१४६॥
 अर्थः-दो० वे सो० सोमनसवन ॥१४७॥
दो सोमणसवणाई ॥ १४७ ॥
 भावार्थः-वे सोमनसवन मेखला ए पर्व-
 तने मध्ये छे ॥१४७॥
 अर्थः-दो० वे प० पंडुकवन ॥ १४८ ॥
दो पण्डगवणाई ॥ १४८ ॥
 भावार्थः-वे पंडुगवन मेरुने शिखरेछे ॥१४८॥
 अर्थः-दो० वे प० पांडुकंवल शिला ॥१४९॥
दो पाण्डुकम्बलसिलाओ ॥ १४९ ॥
 भावार्थः-ए वनमां तिर्थकरने जन्माभिषेक
 करवानी चार चार शिला छे तेमां वे पांडुकं-
 वल शिला छे ॥१४९॥
 अर्थः-दो० वे अ० अतिपांडुकंवलशिला ॥१५०॥
दो अइपाण्डुकम्बलसिलाओ ॥१५०॥
 भावार्थः-वे अति पांडुकंवल शिलाले ॥१५०॥
 अर्थः-दो० वे र० रक्त कंवलशिला ॥१५१॥
दो रक्तकम्बलसिलाओ ॥ १५१ ॥
 भावार्थः-वे रत्नकंवल शिला छे ॥१५१॥
 अर्थः-दो० वे अ० आरक्त कंवलशिला ॥१५२॥
दो अइरक्तकम्बलसिलाओ ॥१५२॥
 भावार्थः-वे अतिरत्नकंवल शिलाले ॥१५२॥
 अर्थः-दो० वे म० मेरु ॥ १५३ ॥
दो मन्दरा ॥ १५३ ॥
 भावार्थः-वे मेरु छे ॥१५३॥
 अर्थः-दो० वे म० मेरुनी चूलिका ॥१५४॥
दो मन्दरचूलियाओ ॥ १५४ ॥
 भावार्थः-वे मेरुनी वे चूलिकाले ॥१५४॥
 अर्थः-घा० घातकि ख० खण्ड णं० नामा दी०
 द्वीपमां वे० वेदिका दो० वे गा० गाउनी उ०
 उर्द्व उ० उंचपणे पं० कही ॥ १५५ ॥
धायईखण्डस्स णं दीवस्स वेइया
दो गाउयाई उड्डं उच्चत्तेणं पणत्ता ॥१५५॥

भावार्थः—घातकीखंड नामे द्वीपनी वेदिका कोट रूपते वे गाउ उंची उंचपणे कहीछे ॥१५५॥

अर्थः—का० कालोदधि णं० नामना स० समुद्र-नी वे० वेदिका दो० वे गा० गाउनी उ० उर्द्ध उ० उंचपणे पं० कही

२० पेरा (घातकी खंड पछी काळोद समुद्र छे तेथी ते संबधी कहे छे)

कालोदस्स णं समुद्रस्स वेइया दो गाउयाइं उडुं उच्चत्तेणं पणत्ता ॥

भावार्थः—काळोदधी समुद्र (तेतुं घणुं काळे वर्णे पाणी) नी वेदिका वे गाउ उंची उंचपणे कही छे

अर्थः—पु० पुखारार्थ दी० द्वीपथी पु० पुर्व दिशे णं० वळी म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिणे दो० वे वा० क्षेत्र प० कथा व० घणा स० सरखा छे मान प्रमाणे जा० यावत भ० भरत चे० वळी ए० एरवत चे० वळी त० तेमज जा० यावत दो० वे कु० कुरु पं० कथा तं० तेज० कहुंछुं दे० देवकुरु चे० वळी उ० उत्तरकुरु चे० वळी त० त्यां णं० वळी म० मोटा म० महालय म० मोटा दु० व्रक्ष पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं कू० कूट साम-ली वृक्ष चे० वळी प० पदमवृक्ष चे० वळी दे० देवता ग० गरुल चे० वळी वे० वेणु दे० देव प० पदमदेव चे० वळी जा० यावत छ० छए आरानां पि० वळी का० सुखदुख प० भोगवता वि० विचरे छे ॥ १ ॥

२१ पेरा (काळोद समुद्र पछी तरतज पुष्कर द्वीप आवेलो होवाथी तेना पुर्वार्थ प-थिमार्थ ए वने प्रकरणो कहे छे)

पुखरवरद्वीवद्धपुरत्थिमद्धे णं मन्द-रस्स पवयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पन्नत्ता बहुसमउल्ला जाव भरहे चैव

एवए चैव । तहेव जाव दो कुराओ पन्नत्ताओ । तं जहा । देवकुरा चैव उत्तरकुरा चैव । तत्थ णं महतिमहा-लया महद्दुमा पन्नत्ता । तं जहा । कू-डसामली चैव पउमरुक्खे चैव । देवा गरुले चैव वेणुदेवे पउमे चैव जाव छविहं पि कालं पच्चणुभवमाणा वि-हरन्ति ॥ १ ॥

भावार्थः—पुष्करार्थ द्वीपथी पुर्वदिशाए मेरु पर्वतथी उत्तर दक्षिणे वे वर्षधर क्षेत्र कहेल छे, ते वे घणा सरखा छे यावत वरावर छे, एक भरतक्षेत्र १, वीजुं एरवतक्षेत्र छे २, तेमज (यावत घातकी खंडनी पेरे पुष्करार्थ पण जाणवुं) यावत वे कुरु छे, एक देवकुरु १, वीजुं उत्तरकुरु २, त्यां देवकुरुमां वे म्होटा महालय वृक्ष कहेल छे तेहनां नाम कहे छे, कुटशामली वृक्ष १, वीजुं पदमवृक्ष २, त्यां वे देवता वसेछे ते गरुलदेव तेतुं वीजुं नाम वेणुदेव १, वीजो पदमदेव २, यावत छए आरानां सुखदुःख भोगवता विचरे छे त्यांसुथी जाणवुं ॥१॥

अर्थः—पु० पुष्करवर दी० द्वीपथी प० पश्चिमे णं० वळी म० मेरु प० पर्वतथी उ० उत्तर दा० दक्षिणे दो० वे वा० क्षेत्र पं० कथा त० तेमज ना० विशेष कहेछे कू० कूटसामली वृक्ष चे० वळी म० महा प० पदम रू० वृक्ष चे० वळी दे० देवता ग० गरुल नामे चे० वळी वे० वेळु दे० देव पो० पुंडरीक नामे चे० वळी ॥ २ ॥

पुखरवरद्वीवद्धपच्चत्थिमद्धे णं मन्द-रस्स पवयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वा-सा पन्नत्ता । तहेव नाणत्तं कूडसामली

चेव महागउमरुक्खे चेव । देवा ग-
रुले चेव वेणुदेवे पोण्डरीए चेव ॥२॥

भावार्थः—पुष्करवर द्विपथी पश्चिमे मेरु पर्व-
तने उत्तर अने दक्षीणे वच्चे वे वर्षधर क्षेत्र
कहेल छे, तेमज पुर्वनी पेरे सर्व जाणवुं, एटलो
विशेष जे कुटशामळी वृक्ष १, वीजुं महापदम
वृक्ष २, तिहां देवता गरुल नामे वेणुदेव १,
वीजो पुंडरिक नामे जाणवा ॥२॥

अर्थः—पु० पुष्करवर दी० द्वीप नामना णं०
वळी दी० द्वीपमां दो० वे भ० भरतक्षेत्र दो०
वे ए० एरवतक्षेत्र जा० यावत दो० वे म०
मेरु पर्वत दो० वे म० मेरुनी चू० चूलि-
काओ छे ॥ ३ ॥

पुष्करवरद्दीवड्डे णं दीवे दो भरहाइं
दो एरवयाइं जाव दो मन्दरा दो म-
न्दरचूलियाओ ॥ ३ ॥

भावार्थः—पुष्करवर द्विपमां वे भरतक्षेत्र, वे
एरवतक्षेत्र एम यावत् वे मेरुपर्वत, वे मेरुपर्व-
तनी चुलीका ॥३॥

अर्थः—पु०पुष्करवर णं०वळी दी०द्वीपमां वे०
वेदिका दो० वे गा० गाऊनी उ० उर्द्ध उ०
उंचपणे पं० कही ॥ ४ ॥

पुष्करवरस्स णं दीवस्स वेइया दो
गाउयाइं उड्डं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥ ४ ॥

भावार्थः—पुष्करवर द्विपनी वेदिका वे गा-
ऊनी उंची उंचपणे कही छे ॥४॥

अर्थः—स० सघलाए पि० एम णं० वळी दी०
द्वीप स० समुद्रनी वे० कांगरा कोट विना ते
वेदिका दो० वे गा० गाऊनी उ० उंची उ०
उंचपणे पं० कही

२२ पेरा (पुष्करवर द्वीपनी वेदीकानी
परुपणा कहा पछी वाकीना द्वीप समुद्रोनी
वेदीकानी परुपणा कहे छे,)

सवेसिं पि णं दीवसमुहाणं वेइया-
ओ दो गाउयाइं उड्डं उच्चत्तेणं पन्न-
त्ताओ ॥

भावार्थः—एम सर्व द्विप समुद्रनी वेदीकाओ
(फरता कोटना कांगरा विना ते वेदिका क
हीए) ते वे गाऊनी उंची उंचपणे ज्ञानीए
कहेली छे.

अर्थः—दो० वे अ० असुरकुमारना इ०इन्द्र पं०
कहा तं० ते ज० कहुंछुं च० चमरेन्द्र चे०
वळी व० वलेंद्र चे० वळी ॥ १

२३ पेरा (आ द्वीप समुद्रो इंद्रोना उत्पात
ने माटे पर्वतना जेवा आश्रयभूत छे तेथी इंद्रो
विषे कहे छे.)

दो असुरकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं
जहा । चमरे चेव वळी चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—ए पुर्वोक्त सघलाए द्विप समुद्र उ-
त्पाद पर्वत इंद्र आश्रयी छे ते माटे इंद्रनो
अधीकार आव्यो ते कहे छे. वे असुरकुमारना
इंद्र कहेल छे ते कहेछे चमरेन्द्र १, वलेंद्र २ ॥१॥

अर्थः—दो० वे ना० नागकुमारना इ०इन्द्र पं०
कहा तं० ते ज० कहुंछुं ध० धरणेंद्र चे०
वळी भू० भूतानेंद्र चे० वळी ॥ २ ॥

दो नागकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
धरणे चेव भूयाणन्दे चेव ॥ २ ॥

भावार्थः—वे नागकुमार जातिना इंद्र ते
धरणेंद्र १ अने भूतानेंद्र २ ॥२॥

अर्थः—दो०वे सु० सुवर्णकुमारना इ०इन्द्र पं०
कहा तं० ते ज० कहुंछुं वे० वेणु दे० देव
चे० वळी वे० वेणुदाली चे० वळी ॥ ३ ॥

दो सुवर्णकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं ज-
हा । वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव ॥३॥

भावार्थः—वे सुवर्णकुमार जातिना इंद्र ते
वेणुदेव १ वेणुदाली २ ॥३॥

अर्थः—दो०वे वि०विद्युतकुमारना इ० इंद्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं ह० हरिकंत चे० वळी ह० हरिस्सनामे चे० वळी ॥ ४ ॥

दो विज्जुकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । हरि चैव हरिस्सहे चैव ॥४॥

भावार्थः—वे विद्युतकुमार जातिना इंद्र ते हरिकांत १ हरिस्सह २ ॥४॥

अर्थः—दो०वे अ० अग्निकुमारना इ० इंद्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं अ० अग्निशिर्षे चे० वळी अ० अग्नि मानव नामे चे० वळी ॥५॥

दो अग्गिकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । अग्गिमिहे चैव अग्गिमाणवे चैव ॥ ५ ॥

भावार्थः—वे अग्गिकुमारना इंद्र ते अग्नि-शिर्षे १ अग्गिमाणवे २ ॥५॥

अर्थः—दो०वे दी०दीपकुमारना इ० इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं पु० पूर्णा नामे चे० वळी व० वशिष्ठ नामे चे० वळी ॥ ६ ॥

दो दीवकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । पुण्णे चैव वमिठ्ठे चैव ॥ ६ ॥

भावार्थः—वे द्विपकुमारना इंद्र ते पुण्णे १ अने वशिष्ठ २ ॥६॥

अर्थः—दो०वे उ० उदधिकुमारना इ० इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं ज० जलकंता चे० वळी ज० जलप्रभ चे० वळी ॥ ७ ॥

दो उदहिकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । जलकन्ते चैव जलपभे चैव ॥ ७ ॥

भावार्थः—वे उदधीकुमारना इंद्र ते जल-कांत १ जलप्रभ २ ॥७॥

अर्थः—दो०वे दि० दिसाकुमारना इ० इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं अ० अमित गति चे०

वळी अ० अमितवाहन चे० वळी ॥ ८ ॥

दो दिसाकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । अमियगई चैव अमियवाहणे चैव ॥ ८ ॥

भावार्थः—वे दिशाकुमारना इंद्र ते अमीत-गति १ अमीतवाहन २ ॥८॥

अर्थः—दो०वे वा० वायुकुमार इ० इंद्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं वे० वेलंवे चे० वळी प० प्रभंजन चे० वळी ॥ ९ ॥

दो वाउकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । वेल्खे चैव पभञ्जणे चैव ॥९॥

भावार्थः—वे वायुकुमारना इंद्र ते वेल्खे १ प्रभंजन २ ॥९॥

अर्थः—दो० वे थ० स्थनितकुमारना इ० इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं घो० घोप चे० वळी म० महाघोप चे० वळी ॥ १० ॥

दो थणियकुमारिन्दा पन्नत्ता । तं जहा । घोसे चैव महाघोसे चैव ॥१०॥

भावार्थः—वे स्तनीतकुमारना इंद्र तेहनां नाम कहे छे, घोप १, महाघोप २, दशभवन पतीनीकायना ए वीस इंद्र जाणवा ॥१०॥

अर्थः—दो०वे पि० पिसाचना इ० इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं का० काल चे० वळी म० महाकाल चे० वळी ॥ ११ ॥

दो पिसायइन्दा पणत्ता । तं जहा । काले चैव महाकाले चैव ॥ ११ ॥

भावार्थः—वे व्यंतरनीकायना आठ इंद्र कहे छे. वे पीसाचना इंद्रना ते काल १, महा-काल २ ॥११॥

अर्थः—दो०वे भू० भूतना इ० इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं सु० सुरूप चे० वळी प० प्रति रूप चे० वळी ॥ १२ ॥

दो भूयइन्दा पन्नत्ता । तं जहा । सु-
रूवे चैव पडिरूवे चैव ॥ १२ ॥

भावार्थः—वे भूतना इंद्र ते सुरूप १, प्रति-
रूप २ ॥१२॥

अर्थः—दो० वे ज० यक्षना इ० इन्द्र पं० कव्या
तं० ते ज० कहुंछुं पु० पुर्णभद्र चे० वळी म०
माणभद्र चे० वळी ॥ १३ ॥

दो जविखन्दा पणत्ता । तं जहा ।
पुन्नभद्दे चैव मणिभद्दे चैव ॥ १३ ॥

भावार्थः—वे यक्षना इंद्रना ते पुर्णभद्र १, म-
णीभद्र २ ॥१३॥

अर्थः—दो० वे र० राक्षसना इ० इन्द्र पं० क-
व्या तं० ते ज० कहुंछुं भी० भीम चे० वळी
म० महा भीम चे० वळी ॥ १४ ॥

दो रक्खसिन्दा पणत्ता । तं जहा ।
भीमे चैव महाभीमे चैव ॥ १४ ॥

भावार्थः—वे राक्षसना इंद्र, ते भीम १, म-
हाभीम, २ ॥१४॥

अर्थः—दो० वे कि० किंनरना इ० इन्द्र पं० कव्या
तं० ते ज० कहुंछुं किं० किंनर नामे चे० वळी
किं० किं पुरुष चे० वळी ॥ १५ ॥

दो किंनरिन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
किंनरे चैव किंपुरिसे चैव ॥ १५ ॥

भावार्थः—वे किंनरना इंद्र ते किंनर १,
किंपुरूप २ ॥१५॥

अर्थः—दो० वे किं० किं पुरुषना इ० इन्द्र पं०
कव्या तं० ते ज० कहुंछुं सु० सुपुरुष चे० वळी
म० महापुरुष चे० वळी ॥ १६ ॥

दो किंपुरिसिन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
सुपुरिसे चैव महापुरिसे चैव ॥ १६ ॥

भावार्थः—वे किंपुरुषना इंद्र ते सुपुरुष १,
महापुरुष २ ॥१६॥

अर्थः—दो० वे म० महोरगना इ० इन्द्र
पं० कव्या तं० ते ज० कहुंछुं अ० अतिकाय
नामे चे० वळी म० महाकाय चे० वळी ॥१७॥

दो महोरगिन्दा पन्नत्ता । तं ज-
हा । अइकाए चैव महाकाए चैव ॥१७॥

भावार्थः—वे महोरगना इंद्र ते अतिकाय १,
महाकाय २ ॥१७॥

अर्थः—दो० वे ग० गंधर्वना इ० इन्द्र पं०
कव्या तं० ते ज० कहुंछुं गी० गीतरती चे०
वळी गी० गीत जज्ञ चे० वळी ॥ १८ ॥

दो गन्धविन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
गीयर्इ चैव गीयजसे चैव ॥ १८ ॥

भावार्थः—वे गंधर्वना इंद्र ते गीतरती १,
गीतयज्ञा २ ॥१८॥

अर्थः—दो० वे अ० अणपन्निना इ० इन्द्र
पं० कव्या तं० ते ज० कहुंछुं सं० संनधी नामे
चे० वळी स० समान चे० वळी ॥ १९ ॥

दो अणवणिन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
संनिहिए चैव समाणे चैव ॥ १९ ॥

भावार्थः—वळी इहा पृथ्वीथी दश जोजन
हेछे वीजी आठ उत्तम व्यंतर जाती छे तेहना
इंद्र कहेछे, वे अणपन्नी कायना इंद्र ते सन्निक १,
समान २, ॥१९॥

अर्थः—दो० वे प० पण पन्निना इ० इन्द्र
पं० कव्या तं० ते ज० कहुंछुं धा० धाती चे०
वळी वि० विधाती चे० वळी ॥ २० ॥

दो पणवणिन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
धाए चैव विहाए चैव ॥ २० ॥

भावार्थः—वे पणपन्नीकायना इंद्र ते धाती
१, विधाती २ ॥२०॥

अर्थः—दो० वे इ० इसिवाय निकायना
इ० इन्द्र पं० कव्या तं० ते ज० कहुंछुं इ०
इसिनामे चे० वळी इ० इसीवाल नामे चे०
वळी ॥ २१ ॥

दो इमिवाइन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
इमि चैव इमिवाले चैव ॥ २१ ॥

भावार्थः—वे इसीवायनीकायना इंद्र ते
इसी १, इसीवासी २ ॥२१॥

अर्थः—दो० वे भू० भूतवायनिकायना इ०
इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं इ० ईश्वर
चे० वली म० महेश्वर चे० वली ॥ २२ ॥

दो भूयवाइन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
इस्मरे चैव महिस्मरे चैव ॥ २२ ॥

भावार्थः—वे भूतवाइ कायना इंद्र ते ईश्वर १,
महेश्वर २ ॥२२॥

अर्थः—दो० वे कं० कंदीनिकायना इ०
इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं सु० सुवत्य
चे० वली वि० विसाल चे० वली ॥ २३ ॥

दो कन्दिन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
सुवत्ये चैव विलासे चैव ॥ २३ ॥

भावार्थः—वे कंदीनीकायना इंद्र ते सुवच्छ
१, विशाल २ ॥२३॥

अर्थः—दो० वे म० महाकंदीना इ० इंद्र
पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं हा० हस्स चे०
वली ह० हास्य रती चे० वली ॥ २४ ॥

दो महाकन्दिन्दा पन्नत्ता । तं ज-
हा । हस्से चैव हस्सरई चैव ॥ २४ ॥

भावार्थः—वे महाकंदीनीकायना इंद्र ते
हास १, हासरती २ ॥२४॥

अर्थः—दो० वे कु० कोहंडनिकायना इ०
इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं से० श्वेत
नाम चे० वली म० महाश्वेत चे० वली ॥२५॥

दो कुम्भडिन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
सए चैव महासेए चैव ॥ २५ ॥

भावार्थः—वे कोहंडनीकायना इंद्र ते श्वेत
१, महाश्वेत २ ॥२५॥

अर्थः—दो० वे प० पतग इ० इन्द्र पं०
कथा तं० ते ज० कहुंछुं प० पयग चे० वली
प० पयगवती चे० वली ॥ २६ ॥

दो पयगिन्दा पन्नत्ता । तं जहा ।
पयए चैव पयगवई चैव ॥ २६ ॥

भावार्थः—वे पयगनीकायना इंद्र ते पयग
१, पयगपती २ ॥२६॥

अर्थः—जो० ज्योतिषी दे० देवताना दो०
वे इ० इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं च०
चंद्रमा चे० वली भू० सूर्य चे० वली ॥२७॥

जोइसियाणं देवाणं दो इन्दा प-
णत्ता । तं जहा । चन्दे चैव सूर
चैव ॥ २७ ॥

भावार्थः—ए सर्वे मली सोळ व्यंतरना वचीस
इंद्र थया, जोतिषी देवताना वे इंद्र कहेलछे ते कहे
छे, चंद्रमा १, सूर्य २ ॥२७॥

अर्थः—सो० सौधर्म देवलोक इ० ईशान
पं० वली क० देवलोकने विपे दो० वे इ०
इन्द्र पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं सु० शक्रेद्र
चे० वली इ० ईशानेन्द्र चे० वली ॥ २८ ॥

सोहम्भीमाणेसु णं कप्पेसु दो इन्दा
पन्नत्ता । तं जहा । सुक्के चैव ईसाणे
चैव ॥ २८ ॥

भावार्थः—सौधर्म प्रथम देवलोक वीजं ईशान
देवलोक तेहना वेवे इंद्र ते शक्रेद्र १, ईशानेन्द्र २ ॥२८॥

अर्थः—ए० एम स० सनत कु० कुमार
मा० माहेंद्र क० देवलोकने विपे दो० वे इ०
इन्द्र पं० कथा स० सनत कुमारेंद्र चे० वली
मा० माहेंद्र चे० वली ॥ २९ ॥

एवं सणकुमारमाहिन्देसु कप्पेसु दो
इन्दा पन्नत्ता । तं जहा । सणकुमारै
चैव माहिन्दे चैव ॥ २९ ॥

भावार्थः—एमज सनंतकुमार-१, माहेंद्र २, ए वे देवलोकना वे इंद्र ते सनत्कुमारेंद्र १, माहेंद्र २ ॥२९॥

अर्थः—व० ब्रह्मदेवलोक ल० लांतक णं वळी क० देवलोकने विषे दो० वे इ० इन्द्र पं० कऱ्या तं० ते ज० कहुंछुं व० वऱ्हेंद्र चे० वळी लं० लांतकेंद्र चे० वळी ॥ ३० ॥

बम्भलोगलन्तगोसु णं कप्पेसु दो इन्दा पन्नत्ता । तं जहा । बम्भे चैवलन्तए चैव ॥ ३० ॥

भावार्थः—पांचमुं ब्रह्मदेव १, छठुं लांतकदेवलोक २ ए वे देवलोकना वे इंद्र कहेल छे ते ब्रह्मेंद्र १, लांतकेंद्र २ ॥३०॥

अर्थः—म० महाशुक्र स० सहस्रार णं वळी क० देवलोकने विषे दो० वे इ० इन्द्र पं० कऱ्या तं० ते ज० कहुंछुं म० महाशुक्र चे० वळी स० सहश्रेद्र चे० वळी ॥ ३१ ॥

महासुकसहस्रारेसु णं कप्पेसु दो इन्दा पन्नत्ता । तं जहा । महासुके चैव सहस्रारे चैव ॥ ३१ ॥

भावार्थः—सातमुं महाशुक्र देवलोक १, आठमुं सहस्रार देवलोक तेहना वे इंद्र ते महाशुक्रेंद्र १, सहस्रारेंद्र २, वेना वोल माटे वे वे देवलोक एकठां कहेल छे ॥३१॥

अर्थः—आ० आणत पा० प्राणत आ० आरण अ० अच्युत णं वळी क० देवलोकने विषे दो० वे इ० इन्द्र पं० कऱ्या तं० ते ज० कहुंछुं पा० प्राणतेंद्र चे० वळी अ० अच्युतेंद्र चे० वळी ॥ ३२ ॥

आणयपाणयारणच्चुएसु णं कप्पेसु दो इन्दा पन्नत्ता तं जहा । पाणए चैव अच्चुए चैव ॥ ३२ ॥

भावार्थः—नवमुं आणत १, दशमुं प्राणत २, अग्यारमुं आरण ३, वारमुं अच्युत ४, ए चार देवलोक मळी वे इंद्र कहेल छे, प्राणतेंद्र १, नवमा दशमानो इंद्र छे, अच्युतेंद्र २ अग्यारमा वारमानो इंद्र छे ए सर्वे मळी चार जातीना देवताना चोसठ इंद्र थया ॥३२॥

अर्थः—म० महासु० शुक्र स० सहस्रार णं वळी क० देवलोकने विषे वि० विमान दु० वे व० वर्णना पं० कऱ्या तं० ते ज० कहुंछुं हा० पीला वर्णनुं चे० वळी सु० उजला वर्णनुं चे० वळी

२४ पेरा (देवो अधिकार होवाथी तेमने रहेवाना विमानो विशे कहे छे.)

महासुकसहस्रारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पन्नत्ता । तं जहा । हालिदा चैव सुकिला चैव ॥

भावार्थः—पुर्वे देवतानो अधीकार आव्यो ते माटे विमाननो अधीकार कहे छे. सातमुं महाशुक्र, आठमुं सहस्रार ए वे देवलोकने विषे विमान वे वर्णनां कऱ्यां छे ते कहे छे, पीळां वर्णनां १, धोळां वर्णनां [सोधर्म इशान ए वे देवलोकें पांच वर्णनां विमानछे, त्रीजा, चौथा देवलोकें राताने लीलां विमान छे, पांचमे छठे देवलोकें काळां ने निलां विमान छे, नवमाथी ते स्वार्थ सिद्ध विमान सुधी एक धोळा वर्णना विमान छे.

अर्थः—गे० नव गैवैकना दे० देवने दो० वे २० हाथनी वाया उ० उर्द्ध उ० उंचपणे पं० कही भगवंते

२५ पेरा (देवो अधिकार होवाथी वे ठाणामां आवती देवोनी अवगाहणा (शरीरनुं मान) कहेछे)

गेविज्जगाणं देवाणं दो स्यणीओ उहुं उच्चत्तेणं पणत्ता ॥

भावार्थः—नव त्रैवेयकणा देवतानीकाया वे
हाथनी उंची उंचपणे श्रीतिर्थकर देवे कहीछे.

अर्थः—वि० बीजा द्वा० ठाणानो त० त्रीजो
उ० उद्देशो स० पुरो थयो.

विद्वानस्स तइयो उद्देशोसमत्तो ॥

भावार्थः—इतिश्री बीजा ठाणाना त्रीजा जे
शानो भावार्थ संपूर्णम् ॥

[अह दुद्वानस्स चउत्थो उद्देशो]

अर्थः—स० सर्वथी सुक्ष्मकाल ते समय इ० एम
वा० अथवा आ० असंख्यात समयनो काल
ते आवलिका इ० एम वा० अथवा जी० ए
काल जीवाश्रित माटे जीव कहीए इ० एम
वा० अथवा अ० अजीव पुद्गल आश्रित माटे
अजीव कहीए इ० एम वा० अथवा प० ए
वे भेद कहीए ॥ १ ॥

१ पेरा (त्रीजा उद्देशामां पुद्गल अने जीव-
ना धर्म कथा अने चोथा उद्देशामां तो सर्वे
चीज जीव अजीवरूप एम कहेवानुं छे. त्रीजा
उद्देशाना छेला सूत्रनो अने चोथा उद्देशाना
पहेला सूत्रनो नीचे मुजव संबंध छे, त्रीजा
उद्देशाना छेला सूत्रमां देवनी अवगाहणा ल-
क्षणधर्म कथो हतो अने चोथा उद्देशाना पेहे-
ला सूत्रोमां धर्माधिकार होवाथी जीव अजीव
संबंधी समयादी स्थीतीनुं लक्षण धर्म अने
धर्मिना अभेदपणे कहेवामां आवे छे.)

१. समयो इ वा आवलिया इ वा जी-
वा इ वा अजीवा इ वा पवुच्चन्ति ॥१॥

भावार्थः—हवे काल ते अजीव छे पण जीव
आश्रयी छे, अजीव जे पुद्गल स्थिती भावे
आश्रयी छे, समयथी मांडी पुद्गल तथा जीव
सागरोपमताइ एक स्थानके ए स्वभावे रहे
ते काल ते जीव अजीव वेने आश्रित छे ते
माटे वे ठाणामां ए कालमाननो अधिकार

कहो छे. सर्वथी नानो काल ते समय कहीए
समयथी मोटो कालमान ते आवलीकाका
असंख्याता समयनो ए काल जीवाश्रित माटे
जीव कहीए १, अजीव पुद्गलाश्रित माटे
जीव पण होय एम वे भेद छे ॥१॥

अर्थः—आ० सासोश्वासनो काल ते प्रा-
ण इ० एम वा० अथवा थो० सात प्रा-
नो काल ते थोव इ० एम वा० अथवा जी०
ते कालने जीवाश्रित माटे जीव कहीए इ०
एम वा० अथवा अ० ते काल अजीव पुद्ग-
लाश्रित माटे अजीव कहीए इ० एम वा०
अथवा प० ए वे भेद कहीए ॥ २ ॥

आणापाणू इ वा थोवा इ वा जी-
वा इ वा अजीवा इ वा पवुच्चन्ति ॥२॥

भावार्थः—आणपाणुं ते सासोश्वासनो काल
एक सासोश्वासथी एक प्राण थाय, सात प्रा-
ण एक थोव थाय, एहने जीवाश्रितपणा माटे
वकाळज, अजीव ते माटे अजीव ते माटे
भेद कथा छे ॥२॥

अर्थः—ख० संख्यात प्राणरूप इ० एम वा०
अथवा ल० सात थोवनो एक लव इ०
वा० अथवा जी० ए कालने जीवाश्रित
जीव कहीए इ० एम वा० अथवा अ०
वाश्रित माटे अजीव कहीए इ० एम
अथवा प० ए वे भेद कहीए ॥ ३ ॥

खणा इ वा लवा इ वा जीवा इ वा
अजीवा इ वा पवुञ्चन्ति ॥ ३ ॥

भावार्थः—संख्यात प्राणे एक क्षण थाय,
सात थोवे एक लव थाय, एहने एमज जीव
कहीए, अजीव पण कहीए ॥३॥

अर्थः—ए० एम मु० वे घडी ते ३७७३
सासोश्वास इ० एम वा० अथवा अ० त्रीस मु-
हुर्त्त इ० एम वा० अथवा ॥ ४ ॥

एवं मुहुत्ता इ वा अहोस्ता इ वा
॥ ४ ॥

भावार्थः—एम मुहुर्त्त ते त्रणहजार सातसे
तोतेर शाशोश्वासनी वे घडी थाय, त्रीस मुहु-
र्त्तनी एक अहोरात्री थाय ॥४॥

अर्थः—प० पन्नर अहोरात्रि इ० एम वा०
अथवा मा० वे पक्ष इ० एम वा० अथवा ॥५॥

पक्खा इ वा मासा इ वा ॥ ५ ॥

भावार्थः—पन्नर अहोरात्रीए एक पक्ष थाय,
वे पक्षनो एक मास थाय ॥५॥

अर्थः—उ० वे मासे १ रतु इ० एम वा०
अथवा अ० त्रण रतु इ० एम वा० अथवा ॥६॥

उऊ इ वा अयणा इ वा ॥ ६ ॥

भावार्थः—वे मासनी एक रतु थाय त्रण
रतुए एक अयन थाय, ते दक्षीणायन तथा
उत्तरायन ॥६॥

अर्थः—सं० वे अयन इ० एम वा० अथ-
वा जु० पांच वरसे एक युग इ० एम वा०
अथवा ॥ ७ ॥

संवच्छरा इ वा जुगा इ वा ॥७॥

भावार्थः—वे अयनधी एक संवत्सर ते वरस
थाय, पांच वरसनो युग थाय ॥७॥

अर्थः—वा० (वीस युगे) वरस स० सो इ०
एम वा० अथवा वा० वरस स० हजार
(दससो वरसे) इ० एम वा० अथवा ॥८॥

वाससया इ वा वाससहस्सा इ वा ॥८॥

भावार्थः—वीस युगे सो वरस थाय, एम
दश सो वरसे एक हजार वरस थाय ॥८॥

अर्थः—वा० वरस स० सो स० हजार एटले
लाख वरस इ० एम वा० अथवा वा० वरस
को० क्रोड एटले सो लाप वरस इ० एम
वा० अथवा ॥ ९ ॥

वाससयसहस्सा इ वा वासकोडी
इ वा ॥ ९ ॥

भावार्थः—एम सो हजारे एक लाख वर-
स थाय, एम सो लाखथी एक क्रोड वरस
थाय ॥ ९ ॥

अर्थः—पु० चोरासीलाप वर्षे एक पुर्वाङ्ग
थाय इ० एम वा० अथवा पु० पुर्वांगने चो-
राशी लाख गुणा करीए तो एक पुर्व थाय
इ० एम वा० अथवा ॥ १० ॥

पुवङ्गा इ वा पुवा इ वा ॥ १० ॥

भावार्थः—चोरासी लाख वरसनो एक पुर्वांग
थाय ते पुर्वांगने चोरासी लाखगुणा करवाथी
सीतेरलाख क्रोडी अने छप्नहजार कोडी वरसे
एक पुरव थाय ॥१०॥

अर्थः—तु० चोराशीलाख पुर्वे एक तुट्टि
तांग थाय इ० एम वा० अथवा तु० तुट्टितांगने
चोराशीलाखे गुणीए तो तुट्टित थाय इ० एम
वा० अथवा ॥ ११ ॥

तुडियङ्गा इ वा तुडिया इ वा ॥११॥

भावार्थः—चोरासीलाख पुरवे एक तुट्टीतांग
थाय ते तुट्टीतांगने चोरासीलाख गुणा करवा-
थी एक तुट्टीत थाय, एमज पाछली संख्याने
चोरासीलाख गुणी करवाथी आगली संख्या
थाय एम सर्वत्र जाणवुं) ॥११॥

अर्थः—अ० ८४ लाख तुट्टिते एक अडडांग थाय
इ० एम वा० अथवा अ० ८४ लाख अडडांगी
एक अडड थाय इ० एम वा० अथवा ॥१२॥

भावार्थः—जीहां धुळनो कोट होयते खेड कहीए, कुनगर ते कर्वट ॥ ३ ॥

अर्थः—म० चार दिशे वे गाउए गामते इ० एम वा० अथवा दो० जलस्थलनो मार्ग होय ते इ० एम वा० अथवा ॥ ४ ॥

मडव्या इ वा द्रोणमुहा इ वा ॥४॥

भावार्थः—जीहां चारे दिशाए वे वे गाउ गाम वेगळा होयते मंडप कहीए, जीहां जळनो तथा स्थळनो मार्ग होयते द्रोणमुख ॥ ४ ॥

अर्थः—प० भलां रतन वस्तु उपजेते इ० एम वा० अथवा आ० लोह प्रमुपनी खाण होय ते इ० एम वा० अथवा ॥ ५ ॥

पट्टणा इ वा आगरा इ वा ॥५॥

भावार्थः—जीहां भली वस्तु रत्नादिक उपजे तथा चारे दिशाए देशावरथी माल आवे ते पाटण कहीए, जीहां लोढादिकनी खाण होयते आगर कहीये ॥ ५ ॥

अर्थः—आ० तापसना ठाम इ० एम वा० अथवा सं० समी भूमि वावे कठिन भूमि रापे ते इ० एम वा० अथवा ॥ ६ ॥

आसमा इ वा संवाहा इ वा ॥६॥

भावार्थः—जीहां निर्धस्नान थाय अने तापस प्रमुख रहेता होयते आश्रम. जीहां समी भूमी वावी कठण भूमी राखे खाण प्रमुखमां ते संवाध ॥ ६ ॥

अर्थः—सं० साथ आवी उत्तरे जिहां इ० एम वा० अथवा घो० नदीने कांटे वास इ० एम वा० अथवा ॥ ७ ॥

संनिवेशा इ वा घोसा इ वा ॥७॥

भावार्थः—जीहां साथ आवी उत्तरे ते सनिवेश, नदीना कांटे वसे ते घोषगाम ॥ ७ ॥

अर्थः—आ० घणी जातना वृक्ष जिहां होव इ० एम वा० अथवा उ० जिहां लोक उजाणी ते इ० एम वा० अथवा ॥ ८ ॥

आरामा इ वा उज्जाणा इ वा ॥ ८ ॥

जीहां घणी जातीनां वृक्ष वेली होय, केलीना घर होय, जीहां स्त्री पुरुष क्रीडा करे ते आराम जीहां पत्र पुष्प फळ फुल छांयाए शोभित घणा लोक उजाणी करे ते उध्यान ॥८॥

अर्थः—व० एक जातिना वृक्ष होयते इ० एम वा० अथवा व० घणी जातिना वृक्ष होय ते इ० एम वा० अथवा ॥ ९ ॥

वणा इ वा वणखण्डा इ वा ॥ ९ ॥

भावार्थः—जीहां एक जातिनां वृक्ष होयते वन, जीहां घणी जातीनां वृक्ष होयते वनखंडा ॥९॥

अर्थः—वा० चोपुणीवाव इ० एम वा० अथवा पु० वाटली वाव इ० एम वा० अथवा ॥१०॥

वावी इ वा पुष्करिणी इ वा ॥१०॥

भावार्थः—चौखुणी होयते वावडी, वाटली (गोळ) तथा जीहां कमळ होयते पुष्करिणी ॥१०॥

अर्थः—स० सरोवर इ० एम वा० अथवा स० सरोवरनी श्रेणि इ० एम वा० अथवा ॥११॥

सरा इ वा सरपन्तिया इ वा ॥११॥

भावार्थः—जळाश्रयते सरोवर वे चार सरोवरनी पंक्ति होय पाषाणे करी पाळ वांधी होय, चारे दिशाए सहकारादिकनी छांया होय ते सरोवरनी श्रेणी कहीए ॥ ११ ॥

अर्थः—अ० कुवा इ० एम वा० अथवा त० तलाव इ० एम वा० अथवा ॥ १२ ॥

अगडा इ वा तलागा इ वा ॥१२॥

भावार्थः—अगड ते कुवा, जीहां माटीनी म्होटी पाळ वांधी होयते तलाव ॥ १२ ॥

अर्थः—उ० द्रह उंडु पाणी इ० एम वा० अथवा न० नदी इ० एम वा० अथवा ॥१३॥

दहा इ वा नई इ वा ॥१३॥

भावार्थः—जीहां उंडुपाणी होयते द्रह, नदी, गंगा प्रमुख, ॥ १३ ॥

अर्थः—पु० पृथ्वी रत्नप्रभादिक इ० एम वा० अथवा उ० समुद्र धनोदधि इ० एम वा० अथवा ॥ १४ ॥

पुढवी इ वा उदही इ वा ॥ १४ ॥

भावार्थः—पृथ्वी रत्न प्रभादीक, उदधी ते समुद्र धनोदधी ॥ १४ ॥

अर्थः—वा० घनघात तनवात इ० एम वा० अथवा उ० अवकाशांतर आकाश प्रदेश जिहां सुक्ष्म पृथ्वीकाय जीव भरेला छे इ० एम वा० अथवा ॥ १५ ॥

वायखन्धा इ वा उवासन्तरा इ वा ॥ १५ ॥

भावार्थः—वायुना खंध घनघात तनवात प्रमुख, जिहां सुक्ष्म पृथ्वीना जीव भर्याछे, आकाश प्रदेशते अवकाशांतर ॥ १५ ॥

अर्थः—व० पृथ्वीना घनघात तनघातना-पंध इ० एम वा० अथवा वि० लोक नाडी त्रस नाडी जीव ते इ० एम वा० अथवा ॥ १६ ॥

वलया इ वा विग्रहा इ वा ॥ १६ ॥

भावार्थः—जिहां पृथ्वीनां घनोदधी घनघातना खंधछे ते वलय, जिहां लोक नाडी त्रस नाडी जीव रखाछे ते विग्रह ॥ १६ ॥

अर्थः—डी० जंबुद्वीपादिक इ० एम वा० अथवा से० लवणादिक इ० एम वा० अथवा ॥ १७ ॥

दीवा इ वा समुद्रा इ वा ॥ १७ ॥

भावार्थः—द्विपते जंबु द्विपादीक, समुद्र ते लवण समुद्रादीक ॥ १७ ॥

अर्थः—वे० समुद्रजलनी वेल इ० एम वा० अथवा वे० द्विपनी वेदिका इ० एम वा० अथवा ॥ १८ ॥

वेला इ वा वेइया इ वा ॥ १८ ॥

भावार्थः—वेल समुद्रना जळनी द्विपनी वेदिकाते कोट कांगरा रहित ॥ १८ ॥

अर्थः—दा० दरवाजा विजयादिक इ० एम वा० अथवा तो० तोरण इ० एम वा० अथवा ॥ १९ ॥

दारा इ वा तोरणा इ वा ॥ १९ ॥

भावार्थः—जंबुद्विप प्रमुखना द्वार विजयादीक, दरवाजा उपर लगाडीए ते तोरण ॥ १९ ॥

अर्थः—ने० नारकी इ० एम वा० अथवा ने० नारकीना बा० रहेवाना ठाम इ० एम वा० अथवा जा० थाय ते वे० वैमानिक देवता इ० एम वा० अथवा वे० वैमानिकने उपजवाना वा० ठाम इ० एम वा० अथवा (२०-४३) ॥ २० ॥

नेरइया इ वा नेरइयावासा इ वा जाव वेमाणिया इ वा वेमाणियावास इ वा ॥ [२०-४३] ॥ २० ॥

भावार्थः—नर्कमां रहते नारकीनारकीने रहेवान ठाम ते नरकावासा एम यावत् चौवीस दंडव जाणवा. वैमानिक देवता जीव अने अजीव तेका पुद्गळ सहीतछे ते माटे ते देवताने उपजवान विमानते पृथ्वीकायनी अपेक्षाए जीव अजीव सचित्तपणा माटे वे भेद ॥ २०-४३ ॥ २०

अर्थः—क० देवलोक इ० एम वा० अथवा क० देवलोकना अंश इ० एम वा० अथवा ॥ ४४ ॥ २१

कप्पा इ वा कप्पविमाणावासा वा ॥ [४४] ॥ २१ ॥

भावार्थः—कल्प ते देवलोक, तेहना अंश कल्प विमान वास ते जीव अजीव पणा मा वे भेदे ॥ ४४ ॥ २१ ॥

अर्थः—वा० मनुष्यना क्षेत्र इ० एम वा० अथवा वा० हेमवंत प० पर्वत प्रमुख इ० ए वा० अथवा ॥ ४५ ॥ २२ ॥

वासा इ वा वासहरपवया इ वा ॥ [४५] ॥ २२ ॥

भावार्थः—वर्ष ते भरतादी क्षेत्र, वर्षधर ते हीमवंतादी पर्वत ॥४५॥ २२ ॥

अर्थः—कृ० शिखर इ० एम वा० अथवा कृ० तिहां देवताना घर इ० एम वा० अथवा ॥ ४६ ॥ २३ ॥

कूडा इ वा कूडागारा इ वा ॥ [४६] ॥ २३ ॥

भावार्थः—कुट ते हिमवंतादि शिखर, ज्यां देवतानां घर छे ते कुटागार ॥४६॥ २३ ॥

अर्थ०—वि० ३२ महा विदेहना पंडते इ० एम वा० अथवा रा० राजा रहे ते इ० एम वा० अथवा जी० जीवाश्रित इ० एम वा० अथवा अ० अजीवाश्रित इ० एम वा० अथवा प० ए वे वोल कहीए ॥४७॥ २४ ॥

विजया इ वा रायहाणी इ वा जीवा इ वा अजीवा इ वा पवुञ्चन्ति ॥ [४७] ॥ २४ ॥

भावार्थः—महाविदेह क्षेत्रनां खंड कच्छ महाकच्छादीक वत्रीस ते विजय, खेमादिक नगरिमां राजा रहे ते राजधानी, ए सघळा वोलमां जीव अने अजीव ए वे वोल कहेवा पुद्गळ आधी अजीव जीव, जीव सहित माटे जीव जाणवा ॥ ४७ ॥ २४ ॥

अर्थः—छा० छाया वृक्षादिकनी इ० एम वा० अथवा आ० आतप सूर्यादिकनो इ० एम वा० अथवा ॥ १ ॥

३ पेरा (जे पुद्गळ धर्मो छे ते पण तेमज छे एम कहे छे)

छाया इ वा आतवा इ वा ॥ १ ॥

भावार्थः—जे पुद्गळ स्वभाव छे ते पण एमज वे भेटे, वृक्षादिकनी छाया ते अजीव अने वृक्ष ते जीव, सहित, आतप ते सूर्यादीकनो ॥ १ ॥

अर्थः—दो० कांनि तेने इ० एम वा० अथवा अ० अंधकार इ० एम वा० अथवा ॥ २ ॥

दोसिणा इ वा अन्धयारा इ वा ॥ २ ॥

भावार्थः—जोत्सनाते कांती अथवा तेज अंधकार ॥ २ ॥

अर्थः—ओ० अवमान ते क्षेत्रादि प्रमाण हाथ गज प्रमुख इ० एम वा० अथवा उ० तुलादि कर्ष मासो वाल इ० एम वा० अथवा ॥ ३ ॥

ओमाणा इ वा उम्माणा इ वा ॥ ३ ॥

भावार्थः—मान ते हाथगज प्रमुख, उन्मान ते तुलाप्रमुख, कर्ष मासा वाल इत्यादीक ॥ ३ ॥

अर्थः—अ० नगरना धर इ० एम वा० अथवा उ० वाडीना धर इ० एम वा० अथवा ॥ ४ ॥

अइजाणगिहा इ वा उज्जाणगिहा इ वा ॥ ४ ॥

भावार्थः—अतीतान ग्रह ते प्रवेशनां नगर, उज्जानगह ते वाडीनां घर ॥ ४ ॥

अर्थः—अ० अवलंब देश विशेष नाम इ० एम वा० अथवा स० सनिप्रपात ए पण एमज रुद्धिथी जाणवुं इ० एम वा० अथवा जी० जीवाश्रित माटे जीव इ० एम वा० अथवा अ० अजीवाश्रित माटे अजीव इ० एम वा० अथवा प० वे भेद कहीए ॥ ५ ॥

अवलिम्बा इ वा सणिप्पवाया इ वा जीवा इ वा अजीवा इ वा पवुञ्चन्ति ॥ ५ ॥

भावार्थः—अवलिंब देशविशेष, सनिप्रपात तेपण एमज रुद्धिथी जाणवुं. ए सघळा वोल जीवाश्रितपणा माटे जीव अने पुद्गळ माटे अजीव कहेवा ॥ ५ ॥

अर्थः—दो० वे रा० रागी प० कही नं० ते ज० फहुं छुं जी० जीव रासी चे० वळी अ० अजीवगती चे० वळी

४ पेरा (हवे समयादी वस्तु पण जीवा-
जीव रूप कहेवानुं कारण ए छे जे ते सिवा-
यनी बीजी कोइ राशी नथी)

दो रासी पण्णत्ता । तं जहा । जी-
वरासी चैव अजीवरासी चैव ॥

भावार्थः—वे राशी कही छे ते कहेछे, एक
जीवराशी १, बीजी अजीवराशी २ ए वेभेदछे.

अर्थः—दु० वे व० बन्ध पं० कहा-तं० ते
ज० कहुं छुं पे० राग ते माया लोभरूप चे०
वळी दो० द्वेष ते क्रोध मानरूप चे० वळी ॥ १ ॥

५-१ पेरा (जीवराशी पण बद्ध अने मुक्तना
भेदथी वे प्रकारे छे)

दुविहे बन्धे पन्नत्ते । तं जहा । पे-
ज्जबन्धे चैव दोसबन्धे चैव ॥ १ ॥

भावार्थः—वे प्रकारे बंध कहोछे ते कहे छे,
एक प्रेम ते रागनो बंध, माया लोभरूप १,
बीजो द्वेष बंध ते क्रोधमानरूप २, ए वे भेद
छे ॥ १ ॥

अर्थः—जी० जीवने णं० वळी दो० वे ठा०
थानके करी पा० पाप क० कर्मनो व० बंध
थाय छे तं० ते ज० कहुं छुं रा० रागेकरी
चे० वळी दो० द्वेषेकरी चे० वळी ॥ २ ॥

५-२ पेरा (प्रेम अने द्वेष लक्षण कर्मनो उदय
थवाथी जीवने अशुभ कर्मबंध थाय छे ते
बतावे छे.)

जीवा णं दोहिं ठाणोहिं पावकम्मं
बन्धन्ति । तं जहा । रागेण चैव दो-
सेण चैव ॥ २ ॥

भावार्थः—जीवने वे स्थानके करी पापक-
र्मनो बंध छे, पाप बंधाय छे ते कहे छे, रागे
करी पाप बंधाय छे १, द्वेषे करी पाप बंधाय
छे २, ए वे भेदछे ॥ २ ॥

अर्थः—जी० जीव णं० वळी दो० वे ठा०
थानके पा० पाप क० कर्म उ० उदीरे छे
तं० ते ज० कहुं छुं अ० जाणीने लोच प्रमुखे
करी चे० वळी वे० वेदनाए ओ० उपक्रम ते
रोगादिकनी चे० वळी वे० वेदनाए ॥ १ ॥

६ पेरा (राग अने द्वेषथी बांधेला पाप
कर्मोनी जेवी रीते उदीर्णा वेदना अने निर्जरा
जीवो करे छे ते कहे छे)

जीवा णं दोहिं ठाणोहिं पावकम्मं
उदीरेन्ति । तं जहा । अब्भुवगमिया-
ए चैव वेयणाए ओवक्कमियाए चैव वे-
यणाए ॥ १ ॥

भावार्थः—जीव वे स्थानके करी पापकर्म
उदीरेछे, अवसर आव्या विना उदये आणे
ते उदिरणा ते कहे छे, स्ववसे जाणीने शिर-
रलोचन तप चारित्रादीक वेदना पीडा भोगवे
१, बीजी उपक्रमीकी उपक्रमथी उपनी वेदना
ते ताव अतिसारादी रोगथी उपनी वेदना
पीडा भोगवे २, ए वे भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम वे० उदय आव्युं कर्म भो-
गवे ॥ २ ॥

एवं वेदेन्ति ॥ २ ॥

भावार्थः—एमज उदय आव्युं कर्म वे प्रकारे
वेदे भोगवे ॥ २ ॥

अर्थः—ए० एम नि० निर्जरे क्षय करे कर्म
अ० जाणीने लोच तप क्रियाए करीने चे० वळी
वे० वेदनाए करी ओ० रोगादिनी चे० वळी
वे० वेदनाए करी ॥ ३ ॥

एवं निज्जरेन्ति अब्भुवगमियाए
चैव वेयणाए ओवक्कमियाए चैव वेय-
णाए ॥ ३ ॥

भावार्थः—एम वे प्रकारे कर्म निर्जरेछे, क्षय
करे छे ते शिरलोजनादिक क्रियादिके १,

उदय आवेल रोगादीकनी वेदना २, ए वे भेद छे ॥३॥

अर्थः—दो० वे ठा० थानके आ० जीव स० शरीर प्रते फु० फरसीने परभवे णं० वळी नि० जाय तं० ते ज० कहुं लुं दे० देशे पग प्रमुख वि० वळी आ० जीव स० शरीर प्रते फु० फरसीने णं० वळी नि० नीकले स० सर्वथी ते सघली काया वि० वळी आ० जीव स० शरीर प्रति फु० फरसीने णं० वळी नि० नीकले ॥ १ ॥

७ पेरा (कर्मनी निर्जणामां देशथी अथवा सर्वथी भवांतरमां जता अथवा मोक्षमां जता शरीरथी नीरीयाण थाय छे ते पांच सूत्रोथी बतावे छे)

दोहिं ठाणेहिं आया सरीरं फुसित्ता णं निज्जाइ । तं जहा । देसेण वि आया सरीरं फुसित्ता णं निज्जाइ स-
वेण वि आया सरीरं फुसित्ता णं नि-
ज्जाइ ॥ १ ॥

भावार्थः—वे स्थानके आत्मा शरिरने फर-
सीने भवांतरे अथवा मुक्तिये जाय ते कहे छे
पगप्रमुख फरसीने जीव नीकळे ते देशथी १,
सघळी काया फरसीने जीव नीकळे ते स-
र्वथी २ ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम फु० फरके देशथी सर्वथी
णं० वळी ॥ २ ॥

एवं फुरित्ता णं ॥ २ ॥

भावार्थः—जीव निकळतां ते ठेकाणुं फरके
ते देशथी, जीवने शरिरने स्पर्शते फरके ते
सर्वथी ॥ २ ॥

अर्थः—ए० एम फु० फोडीने नीकळे णं०
वळी ॥ ३ ॥

एवं फुडित्ता णं ॥ ३ ॥

भावार्थः—एम शरीरने फोडी जीव नीकळे
ते देशथी सर्वथी ॥३॥

अर्थः—ए० एम सं० संकोचीने शरीरने
णं० वळी ॥ ४ ॥

एवं संवट्टित्ता णं ॥ ४ ॥

भावार्थः—एम शरीरने संकोचीने देशथी १,
सर्वथी २, इलीका गतीये देशथी तथा दडानी
गतीये सर्वथी नीकळे ॥४॥

अर्थः—ए० एम नि० जीव प्रदेशथी शरीर
अलगुं थाय णं० वळी ॥ ५ ॥

एवं निवट्टित्ता णं ॥ ५ ॥

भावार्थः—एम जीवप्रदेशथी शरिर अलगुं
थाय ते देशथी इलीकागतीये १, सर्वथी दडा-
नी गतीये २, ए वे भेद छे ॥५॥

अर्थः—दो० वे ठा० थानके आ० जीव
के० केवलीनो प० भाष्यो ध० धर्म ल० पामे
स० सांभलवे करीने त० ते ज० कहुं लुं स्व०
कर्मना क्षयथी चे० वळी उ० उपशमान्याथी
चे० वळी ॥ १ ॥

८ पेरा (उपर सर्व निर्याण कइयुं ते
परंपराए धर्म श्रमण लाभ विगेरेथी थायछे ते
बतावेछे)

दोहिं ठाणेहिं आया केवलपन्नंतं
धम्मं लभेज्ज सवणयाए । तं जहा ।
खएण चेव उवसमेण चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—वे प्रकारे आत्मा केवळी भापीत
धर्म सांभळवाथी पामे ते कहेछे, ज्ञानावर्णी तथा
दर्शन मोहनीना क्षयथी १, अथवा उपशमा-
व्याथी पण धर्म पामे २, ए वे भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम जा० यावत म० मन पर्यव
ना० ज्ञान उ० पामे तं० ते ज० कहुं लुं स्व० क्षयथी
चे० वळी उ० उपसमथी चे० वळी ॥ २ ॥

एवं जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडे-

ज्जा । तं जहा । खण्ण चेव उवस-
मेण चेव ॥ २ ॥

भावार्थः—एष यावत् वे प्रकारे मतिज्ञान, श्रुत-
ज्ञान, अवधीज्ञान, मनपर्यवज्ञान उपजावे पामे ते
वे स्थानक कहे छे, ज्ञानावर्णीना क्षयथी १,
अथवा उपशमथी २, ए वे भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः—दु० वे प्रकारे अ० काळनुं उ० उपमा
प्रमाण पं० कहुं तं० ते ज० कहुं पं० पल्यो-
पमनुं मान चे० वळी सा० सागरोपमनुं मान
चे० वळी ॥ १ ॥

९ पेरा (वे पदे सर्व साधारण क्षयोप-
सम कह्यो अने ते बोधथी मतिश्रुत अने अव-
धीज्ञान वधारेमां वधारे छासठ सागरोपम
सुधीना होय छे ने सागरोपम छे ते पल्योप-
मने आश्रीने रहे छे तेथी ते वंनेनी प्ररुपणा
करे छे.)

दुविहे अद्धोवमिए पणत्ते । तं जहा ।
पलिओवमे चेव सागरोवमे चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—मतिश्रुत अवधीज्ञाननी उत्कृष्टी
स्थिति छासठ सागरोपमनी छे ते सागरोपमनुं
मान कहेवाने कहे छे, वे प्रकारे काळनुं प्रमाण
छे ते कहेछे, एक पल्योपमनुं मान छे १, बीजुं
सागरोपमनुं मान छे २, ए वे भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—से० ते किं० श्रुं तं० ते प० पल्योपम
प० पल्योपमनु मान कहे छे जं० जो जो०
चार गाउ वि० उंडो पोहळो प० कुवो छे
ए० एकदिनथी मांडी सात दिनना जण्या
युगळीयाना माथाना केशे करी भरेल हो० होय
नि० आतरारहित णि० ठांसीने भ० भरीए
वा० वाळने अग्रनी को० कोडी गमे करी ॥ १ ॥

से किं तं पलिओवमे । पलिओवमे
जं जोयणवित्थिणं

पलं एगाहियप्परूदाणं ।

होज्ज निरन्तणिचियं
भरियं वालग्गकोडीणं ॥ १ ॥

भावार्थः—ते पल्योपमनुं मान कहे छे, चार
गाउनो उंडो प्होळो पालो ते कुवो होय, ए
कादिनथी मांडी सात दिनना जण्या युगळीया
तेहना माथाना केशथी ते कुवो आंतरा रहित
ठांसीने भरीये ते वालाग्र द्रष्टिए पण आवे
नहीं एवा झीणा होय ॥ १ ॥

अर्थः—स० सो वा० वरस ते वालाग्र वा० वरस
स० सोए ए० एकोको वाळाग्र अ० काढे ते
कुओ ठालो थाय ते जो० जेटळो का० काल
सो० ते का० काल वो० जाणवो उ० ए उपमां
ए० एक प० पल्योपमनी ॥ २ ॥

वाससए वाससए
एकेके अवहडंमि जो कालो ।
सो कालो बोधवो

उवमा एगस्स पलस्स ॥ २ ॥

भावार्थः—ते वालग्र सो सो वरसे एकेको काढे
ते काढतां काढतां जेटले काळे ते कुवो खा-
ली थाय तेटळा काळने एक पल्योपमनुं मान
जाणवुं ॥ २ ॥

अर्थः—ए० एकदा जे प० पल्योपमनी को०
कोडाकोडि ह० होय द० दसगुणा तं० ते सा०
सागरोपमनुं उ० वळी ए० एकनुं भ० होय
प० प्रमाण ॥ ३ ॥

एएसिं पल्लाणं
कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।
तं सागरोवमस्स उ

एगस्स भवे परीमाणं ॥ ३ ॥

भावार्थः—ए पल्योपमने दश क्रोडाकोडी
गुणा करवाथी सागरोपम थाय एटले दश
क्रोडाकोडी पल्योपमे एक सागरोपम थाय ॥ ३ ॥

अर्थः-दु० वे भेदे को० क्रोध पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं आ० आत्माथी उपनो ते क्रोध चे० वळी पं० परना वचनथी उपन्यो ते चे० वळी ॥१॥

१० परा (आ पल्योपमवडे जे क्रोध व-गेरेना फळभुत कर्यानी स्थीती कहेवाय छे तनुं स्वरूप निरूपण करवाने कहे छे)

दुविहे कहे पन्नते । तं जहा । आ-यपइडिहए चेव परपइडिहए चेव ॥ १ ॥

भावार्थः- वे प्रकारे क्रोध कहेलछे ते कहे छे, आत्म प्रतिष्ठित ते निष्कारणे आत्माथी शाय उपजे अथवा भीत प्रसुखे अथडायाथी क्रोध करी भिंताडीकने हणे १, पर प्रतिष्ठित ते परनां वचन सांभळीने क्रोध उपजे २, ए व भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः-ए० एम ने० नारकीन जा० यावत वे० वैमानिकने ॥ २ ॥

एवं नेरइयाणं जाव वैमाणियाणं ॥२॥

भावार्थः-एम नारकीथी मांडी वैमानीक मंडी चौवीस दंडके आत्म प्रतिष्ठित १, परप्रतिष्ठित २, ए वे प्रकारे क्रोध जाणवो ॥२॥

अर्थः-ए० एम जा० यावत मि० मिथ्या-द० दर्शन स० सत्यना वे भेद जाणवा ॥३॥

एवं जाव मिच्छादंसणसहे ॥ ३ ॥

भावार्थः-एम यावत मिथ्यात्व दर्शन शल्या-दिक अदार पापस्थानक लगी आत्म प्रतिष्ठित १, पर प्रतिष्ठित २, ए वे वे भेद जाणवा ॥३॥

अर्थः-दु० वे प्रकारे सं० संसार स० समापन्न जी० जीव पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं तं० वस चे० वळी था० थावर चे० वळी.

११ परा (उपर कहेल विगेषणवाळा पा-पस्थानको संसारी जीवोनाज होयछे तेथी नेनाज भेदो कहे छे)

दुविहा संसारममावन्नगा जीवा प-

न्नता । तं जहा । तमा चेव थावस चेव ॥

भावार्थः-वे प्रकारे संसारना जीव कहेल छे ते कहेछे, वसते वे इंद्रिथी मांडी पचेन्द्रि सुधीना जीव १, स्थावर ते प्रथ्वीयादीक एकं दिना जीव २, ए वे भेदछे

अर्थः-दु० वे भेदे स० सर्व जी० जीव पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं सि० सिद्ध चे० वळी अ० मोक्ष नथी गया ते चे० वळी ॥१॥

१२ परा (शुं संसारीक जीवोळे के वीजा पण जीवोळे ? एम उभयपणुं वताववाने तेरसुत्र कहेछे)

दुविहा सवजीवा पन्नता । तं जहा । सिद्धा चेव असिद्धा चेव ॥ १ ॥

भावार्थः-अथवा वे प्रकारे सर्व जीव कहे-लछे ते कहेछे, एक सिद्धना जीव मोक्ष पाम्या ते १, वीजा असिद्धना जीव मोक्ष पाम्या नथी ते २ ए वे भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः-दु० वे भेदे स० सर्व जी० जीव पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं स० इंद्रि सहित चे० वळी अ० अनिंद्रि ते सिद्ध चे० वळी ॥२॥

दुविहा सवजीवा पणता । तं जहा । संइन्दिया चेव अणिन्दिया चेव ॥२॥

भावार्थः-अथवा वे प्रकारे सर्व जीव कहेलछे ते कहेछे, इंद्रिय सहीत ते एकेंद्रीथी मांडी पचे-द्री सुधीना जीव १, वीजा अनिंद्रिय ते इंद्रिय रहीत सिद्धना जीव २, ए वे भेदछे ॥२॥

अर्थः-ए० एम ए० ए गा० गाथा फा० १३ वोलनी जाणवी जा० यावत स० शरीर सहित चे० वळी अ० मोक्षना जीव चे० वळी सि० सिद्ध स० संद्री का० सकाशी जो० जोगी वे० सवेदी क० कपाथी ने० लेशी य० वळी ना० ज्ञानी व० ज्ञानोपयोगी आ० आहारी भा० भाष्यवित च० चरिम य० वळी स० अद्विती ते संसारी ॥३॥

एवं एसा गाहा फासेयवा जाव
सरीरी चैव असरीरी चैव ।

सिद्धसइन्दियकाए

जोगे वेए कसायलेसा य ।

नाणुवओगाहारे

भासगचरिमे य सरीरी ॥ ३ ॥

भावार्थः—एम् गाथाने अनुसारे तेर बोल जाणवा ते कहेछे, सिद्ध असिद्ध १, सइंद्री अनिंद्री २, काया सहित काया रहित ३, योग सहित योग रहित ४, वेद सहित वेद रहित ५, कषाय सहित कषाय रहित ६, लेशा सहित लेशा रहित ७, ज्ञान सहित ज्ञान रहित ८, ज्ञानना उपयोगी दर्शनना उपयोगी ९, आहारि अणाहारि (विग्रह गतीवंत १, केवळी समुद्धात करे ते वखते २, चौदमे गुण ठाणे अयोगी होयते वखते ३, सिद्ध ४, ए चार अणाहारिछे) १०, भाष्या सहित भाष्या रहित ११, चरमते तेहज भवे मोक्षजाय अचरमते बीजा जीव १२, शरीरी अशरीरी १३, ए तेर वोलेमां पूर्वोक्त प्रमाणे वेवे भेद जाणवा ॥३॥

अर्थः—दो० वे म० मरण स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीरे स० श्रमणने नि० निग्रंथने नो० नथी नि० सदा व० वर्णव्यां वपाण्या नथी नो० नथी नि० सदैव कि० आदरवां कहां नथी नो० नथी नि० नित्ये पू० स्तव्यां प्रसंस्या नथी नो० नथी नि० नित्ये प० पुजा पामे नही नो० नथी नि० नित्ये अ० आज्ञादीधी नथी भ० भगवंते तं० ते ज० कहंछुं व० संयमथी पडतो जलमां बुडी मरे चे० वळी व० इंद्रिने परवश पणे मरे चे० वळी ॥ १ ॥

१३ परा—(आ मरण अने अमरण धर्मवाळा संसारी अने सिद्ध जीवो अप्रशस्त

अने प्रशस्त मरणथी थाय छे तेथी प्रशस्त अने अप्रशस्तनी निरूपणा नव सूत्रथी करेछे)

दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निगन्थाणं नो निच्चं वणिण्याइं नो निच्चं कित्थियाइं नो निच्चं पूइयाइं नो निच्चं पसत्थाइं नो निच्चं अब्भणुन्नायाइं भवन्ति । तं जहा । वलयमरणे चैव वसट्टमरणे चैव ॥ १ ॥

भावार्थः—शरिरिने मरण होय ते माटे मरणनो अधिकार कहेछे. श्रमण भगवंत महावीर देवे श्रमण तपश्चवी निर्ग्रंथते कर्मनी गांठ रहित एवां साधुने वे प्रकारना मरण नित्य सदाय वर्णव्या नथी, वखाणां नथी, नित्ये कित्यां नथी, नित्ये आदरवां कहां नथी, नित्ये पुजीत नथी, अर्थात् एथी पुजा न पामे, नित्ये प्रसंस्या स्तव्यां नथी, सदाय आज्ञा आपी नथी, जे करजो (कोइ शियलादि राखवाने कारणे वार्या नथी) वलयमर्ण ते संयमथी पडतो परिसहथी भागी मरे १, जेम दीवो देखी पतंगीयो मरे एम् इंद्रियने परवश पणे मरे २ ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम नि० नियाणुं करी मरे चे० वळी त० तेइज भवने योग्य आउणुं वांधी मरे चे० ते ॥ २ ॥

एवं नियाणमरणे चैव तव्भवमरणे चैव ॥ २ ॥

भावार्थः—एम् रिद्धिआदीकनुं नियाणुं करी मरे ते माहुं मर्ण कहेलछे ३, तेहज भवने योग्य आउखुं वांधीने मरे ते तदभव मर्ण ए संख्या ता वर्षना आउखावाळा मनुष्य तिर्यचने होय ४ ॥ २ ॥

अर्थः—गि० पर्वत उपर पडी मरते चे० वळी त० वृक्षथी पडी मरे चे० ते ॥ ३ ॥

गिरिपडणे चैव तरुपडणे चैव ॥ ३ ॥

भावार्थः—पर्वतधी अंपापात खाटने मरे ५,
ब्रह्मधी पडीमरे ६ ॥ ३ ॥

अर्थः—ज० पाणीमां अंपावे चे० वळी ज०
अग्नीमां अंपावी मरे चे० वळी ॥ ४ ॥

जलप्पवेसे चैव जलणप्पवेमे चैव ॥ ४ ॥

भावार्थः—पाणीमां अंपावी मरे ७, अग्निमां
पेसी मरे ८ ॥ ४ ॥

अर्थः—वि० विपपाई मरे चे० वळी स०
शस्त्र लई आपघात करे चे० वळी ॥ ५ ॥

विसभक्खणे चैव सत्थोवाडणे चैव
॥ ५ ॥

भावार्थः—विपखाटने मरे ९, कटारी तलवार
प्रमुख शस्त्र मारी मरे १० ॥ ५ ॥

अर्थः—दो० वे म० मर्ण जा० यावत नो०
नथी नि० नित्ये अ० आज्ञादीधी भ० भग-
वंते का० कारणे शीयलाटिक राखवा निमित्ते
पु० वळी अ० वार्या नथी तं० ते ज० कहुंछुं
वे० आकाश मरण वृक्षनी शाखाए गळो वांधी
चे० वळी गि० कलेवरमां पेसी गिध पंखी पासे
काया खवरावी मरे ते चे० वळी ॥ ६ ॥

(अप्रशस्त मरण यथा पळी ते भव्यने
प्रशस्त पण थायछे ते वतावे छे)

दो मरणाइं जाव नो निच्चं अब्भ-
णुन्नायाइं भवन्ति कारणेण पुण अ-
प्पडिकुट्टाइं । तं जहा । वेहाणसे चैव
गिद्धपट्टे चैव ॥ ६ ॥

भावार्थः—वळी वे मर्णनी भगवंते आज्ञा
दीधी नथी पण शिपळादि राखवाने कारणे
वार्या नथी ते वेनां नाम कहे छे, आकाशमर्ण
ते वृक्षनी शाखाये गळें वांधी मरे ते आका-
शमरण १, गृह पृष्ठ मरण ते उंट प्रमुखना
कलेवरमां पेसी गृह पंखी पासे खवरावे २,
ए १२ प्रकारना अकाममर्ण शिपळादी राख-

वाने कारणे निपेध्यां नथी पण अन्यथा नि-
पेध्यां छे, ए वार प्रकारनां अप्रशस्त (नहीं
वखाणवा लायक) मरण कथां छे ॥ ६ ॥

अर्थः—दो० वे म० मर्ण स० श्रमण भ०
भगवंत म० महावीरे स० तपस्वीने नि० नि-
ग्रंथने नि० नित्ये व० वर्णव्या छे जा० यावत
अ० आज्ञा भ० दीधी भगवन्ते तं० ते ज०
कहुंछुं पा० छेदी वृक्षनी डालनी पेरे चेष्टा र-
हित चे० वळी भ० भात पाणीना जावजीव सुधी
प० पचखाण करे पण हाले चाले ते चे० वळी ॥ ७ ॥
(अप्रशस्त मरण यथा पळी ते भव्यने प्रश-
स्त पण थाय छे ते वतावे छे.)

दो मरणाइं समणेणं भगवया महा-
वीरेणं समणाणं निगन्थाणं निच्चं व-
णिण्याइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवन्ति ।
तं जहा । पाओवगमणे चैव भत्तपच्च-
क्खाणे चैव ॥ ७ ॥

भावार्थः—हवे वे प्रकारनां प्रशस्त (वखा-
णवा लायक मरण) भव्यने होय ते श्रमण
भगवंत श्री महावीरदेवे श्रमण निग्रंथने सदाय
वखाण्यां छे यावत आज्ञा दीधी छे ने भलुं
छे ते करो ते वे मरणनां नाम कहे छे, एक
पाटोगमन मरण ते वृक्षनी कापी डालनी पेरे
चेष्टारहित रहेवुं ते १, वीजुं भक्तपचखाण ते
आहारपाणीनुं जावजीव सुधी पचखाण करवुं
पणट्टरवाफरवा चालवानो लुटी २, एवेभेदछे ॥ ७ ॥

अर्थः—पा० पाटोपगमन दु० वे प्रकारे प०
कथा तं० ते ज० कहुंछुं नी० शरीर संस्कार
नगर वाहेर काढे ते चे० वळी अ० गिरि गुफामां
जड करे चे० वळी नि० निश्चे अ० शरीरनी
सुश्रुषा रहित अने पडीकमणा रहितछे ॥ ८ ॥

पाओवगमणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
नीहारिमे चैव अनीहारिमे चैव ।

नियमं अप्पडिकम्मे ॥ ८ ॥

भावार्थः—पादोपगमन वे प्रकारे कहेलछे ते कहे छे, नीहारिम ते वस्तीमांही संधारो करे तो शवने गामनी वाहीर लइ जाय १, अनीहारिम ते गिरिगुफामां जइ करे तेहनं निहारण थाय नहीं, ए वे पादोपगमन निश्चे शरीरनी सुश्रुषा अने पडीकमणा रहीत होय ॥८॥

अर्थः—भ० भातपाणी दु० वे प्रकारे पं० कहुं तं० ते ज० कहुंछुं नी० वसतिमां चे० वळी अ० अटवीमां चे० वळी नि० निश्चे स० सुश्रुषा सहित अने पडिकमणा सहित छे ॥९॥

भक्तपञ्चस्त्राणे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । नीहारिमे चैव अनीहारिमे चैव । नियमं सप्पडिकम्मे ॥ ९ ॥

भावार्थः—भक्तप्रत्याख्यान मरण वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे एक नीहारिम १, वीजुं अनीहारिम २, ए निश्चे शरीरनी सुश्रुषा अने पडीकमणां सहीत होय ॥ ९ ॥

अर्थः—के० कोण अ० ए लो० लोक जी० जीव चे० वळी अ० अजीव चे० वळी ॥१॥

१४ पेरा (आ मरण आदीं स्वरूप भगवाने लोकनी अंदर परुपेळुं छे तेथी लोक स्वरूपनी प्ररुपणा करवाने माटे प्रस्न करीने कहे छे.)

के अयं लोए । जीव चैव अजीव चैव ॥ १ ॥

भावार्थः—ए मरणादी स्वरूप भगवंते लोकमांही कहेल छे ते माटे लोकनुं स्वरूप कहे छे, गुरु प्रत्ये शिष्य पुछतो हवो के हे गुरु ? कोण ए लोक कह्यो ॥ १ ॥

अर्थः—के० कोण अ० अंत नथीते लो० लोक जी० जीव चे० वळी अ० अजीव चे० वळी ॥२॥

के अणन्ता लोए । जीव चैव अजीव चैव ॥ २ ॥

भावार्थः—गुरु कहेता हवा के हे शिष्य वे प्रकारे लोक कह्यो ते कहे छे जीव १, अने अजीव २, छ द्रव्यरूप लोकछे ए वे भेद छे ॥२॥

अर्थः—के० कयो सा० साभवतो लो० लोक जी० जीव चे० वळी अ० अजीव चे० वळी ॥३॥

के साभया लोए । जीव चैव अजीव चैव ॥ ३ ॥

भावार्थः—गुरु प्रत्ये शिष्य पुछतो हवो के हे गुरु धर्मास्तिकायादीक जेहनो अंत नथी ते कोयो लोक, गुरु कहेता हवा के हे शिष्य ? एहज जीव १, अने अजीव २, ए छ द्रव्यनो अंत नथी, ए वे भेद छे ॥३॥

अर्थः—दु० वे भेदे वो० धर्म प्राप्ति पं० कही तं० ते ज० कहे छे ना० ज्ञाननी प्राप्ति चे० वळी दं० सम्यकत्वनी प्राप्ति चे० वळी ॥१॥

१५ पेरा (आजे अनंता शास्वता जीवोछे ते वोधीमोक्ष लक्षण धर्मना योगथी वद्ध अने मुक्त होय छे ते बताववाने चार सूत्र कहे छे.)

दुविहा वोही पन्नत्ता । तं जहा । नाणवोही चैव दंसणवोही चैव ॥ १ ॥

भावार्थः—गुरु प्रत्ये शिष्य पुछतो हवो के हे गुरु ? शास्वतो लोक कीयो ? गुरु उत्तर कहेता हवा हे शिष्य ? एहज जीव १, अने अजीव २, ए वे सदाय शास्वता छे ए वे भेद छे. ए छ द्रव्यमां जीव द्रव्यवोधि (ते जीनधर्मनी प्राप्ती) पामे ते वोधिना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे, ज्ञानवोधी ते ज्ञानावार्णि कर्मना क्षयथी अवधो ज्ञानादीकनी प्राप्ती १, दर्शनवोधी ते दर्शनमोहनी कर्मना क्षयथी समक्किमाप्ती २, ए वे भेद छे ॥१॥

अर्थः—दु० वे भेदे वु० वुद्ध पं० कया तं० ते ज० कहुंछुं ना० ज्ञानवुद्ध चे० वळी दं० दर्शनवुद्ध चे० वळी ॥ २ ॥

दुविहा बुद्धा पन्नत्ता । तं जहा ।
नाणबुद्धा चेव दंसणबुद्धा चेव ॥२॥

भावार्थः—ज्ञानदर्शन सहित होय ते बुद्ध कहीये, ते बुद्ध वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे. एक ज्ञानबुद्ध १, वीजो दर्शनबुद्ध २, ए ज्ञान-दर्शन मोटे वे कथा पण जीवआश्री. एकज ज्ञान-दर्शन एकमांज होय ए सहचारि(साथे) छे ॥२॥

अर्थः—ए० एम मो० ज्ञान मोह ॥ ३ ॥

एवं मोहे ॥ ३ ॥

भावार्थः—एमज मोह तेहना वे भेद ज्ञान-मोह ते ज्ञानमां मुंझाय १, दर्शनमोह ते सम-कितमां मुंझाय २, ए वे भेद छे ॥३॥

अर्थः—मू० मूर्धज्ञान मोह ॥ ४ ॥

मूढा ॥ ४ ॥

भावार्थः—एमज मुढमुख तेहना वे भेद सु-ख ज्ञानमोह १, मुख दर्शनमोह २ ॥४॥

अर्थः—ना० ज्ञानावरणि क० कर्म दु० वे प्रकारे प० कथा तं० ते ज० कहंछुं टे० म-ति ज्ञानादिकने ढांक्या ते चे० वळी स० सर्व ना० ज्ञान ते केवलज्ञान ढांके ते चे० वळी ॥१॥

१६ पेरा (वे प्रकारनो पण आ मोह ज्ञानावरणादी कर्म बांधवानुं कारण छे ते संबन्धी ज्ञानावरणादी कर्मनुं आठ सूत्रवडे द्वी विधपणुं कहे छे)

नाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
दंसणावरणिज्जे चेव चरित्त-
मोहणिज्जे चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—मोह (मुंझावुं-) ते ज्ञानावर्णिधी बांधाय छे, ते ज्ञानावर्णिना वे भेद ते कहे छे, एक देश ज्ञानावर्णि ते मति ज्ञानादिक ढांके १, वीजुं सर्व ज्ञानावर्णि ते केवलज्ञान ढांके २, ए वे भेद छे ॥१॥

अर्थः—द० दर्शनावरणीय क० कर्म ए० एम चे० वळी ॥ २ ॥

दरिसणावरणिज्जे कम्मे एवं चेव ॥२॥

भावार्थः—एमज दर्शनावर्णिना पण वे भेद कहेछे, देशधी ते चक्षु दर्शनावर्णिय अचक्षु दर्शनावर्णि, अवधी दर्शनावर्णि १, सर्वधी ते पांच निद्रा केवल दर्शनावर्णि ए वे भेद छे. २ ॥२॥

अर्थः—वे० वेदनीय क० कर्म दु० वे प्रकारे प० कथा तं० ते ज० कहंछुं सा० सा-ता सुखनुं कारण सर्व भातना चे० वळी अ० असाता वेदनी ते दुःख चे० वळी ॥ ३ ॥

वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
सायावेयणिज्जे चेव असाया-
वेयणिज्जे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थः—एम वेदनी कर्म ते मथ तथा अफीण खरडी खडगनी धारा जेवुं तेह वे प्रकारे कहेलछे ते कहेछे, एक शाता वेदनी ते सुख १, वीजुं अशाता वेदनी ते दुःख २, ए वे भेद छे ॥३॥

अर्थः—मो० मोहनी क० कर्म दु० वे प्रकारे प० कथा तं० ते ज० कहंछुं दं० दंसण मोहनी, मिथ्यात्व, मिश्रने समकित मोहनी चे० वळी च० चारित्र मोहनी ते चारित्रने मुंझवे १६ कपाय नोकपायरूप चे० वळी ॥ ४ ॥

मोहणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
दंसणमोहणिज्जे चेव चरित्त-
मोहणिज्जे चेव ॥ ४ ॥

भावार्थः—मोहनी कर्म मदीरापान कर्या जेवुं ते वे प्रकारे कहेलछे ते कहे छे, एक दर्शनमोहनी ते समकितने मुंझवे तेहना त्रण भेद सम कितमोहनी, मिथ्यात्वमोहनी, मिश्रमोहनी १, वीजुं चारित्रमोहनी ते सापायकादीक चारित्रने मुंझवे कपाय नोकपायरूप २, ए वे भेदछे ॥४॥

अर्थः—आ० आयु क० कर्म दु० वे भेदे पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं अ० कायस्थितिरुप नरतिर्यचने चे० वळी भ० भवस्थितिनुं देव नारकीने चे० वळी ॥ ५ ॥

आउकम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
अद्धाउए चेव भवाउए चेव ॥ ५ ॥

भावार्थः—आउखा कर्म ते राजानी हेडसमान ते वे प्रकारे कहेलछे ते कहेछे, अघायु ते काय स्थितीरुप मनुष्य तिर्यचने १, वीजुं भवायु ते भव स्थितीरुप देवता नारकीने २, ए वे भेदछे ॥५॥

अर्थः—ना० नाम क० कर्म दु० वे भेदे पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं सु० शुभ ना० नाम कर्म तिर्थकरादि चे० वळी अ० अशुभ ना० नाम कर्म अनादेय नाम जेनुं वचन सारं न लागे चे० वळी ॥६॥

नामकम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
सुभनामे चेव असुभनामे चेव ॥ ६ ॥

भावार्थः—नाम कर्म चितारा सरीखुं तेहना वे प्रकार कहेल छे ते कहे छे, एक शुभ नाम कर्म तिर्थकरादीक १, वीजुं अशुभ नाम कर्म ते अनादेय प्रमुख २, ए वे भेद छे ॥६॥

अर्थः—गो० गोत्र क० कर्म दु० वे भेदे पं० कहुं तं० ते ज० कहुंछुं उ० उच गो० गोत्र चे० वळी नी० नीच गो० गोत्र चे० वळी ॥७॥

गोत्तकम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा ।
उच्चागोत्ते चेव नीयागोत्ते चेव ॥ ७ ॥

भावार्थः—गोत्र कर्म कुंभार सरिखुं तेहना वे प्रकार कहेलछे ते कहेछे, उंच गोत्र ते पुजनीक १, नीच गोत्र ते नीदनीक २, ए वे भेदछे ॥७॥

अर्थः—अ० अंतराय क० कर्म दु० वे भेदे पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं प० उपजो अर्थ वि० विणसाडे (लाभनो नाश करे) चे० वळी पि० रुधे य० वळी आ० आवता अर्थ लाभने ॥ ८ ॥

अन्तराइए कम्मे दुविहे पन्नत्ते । तं जहा । पडुप्पन्नविणासिए चेव पिहइ य आगामिपहं ॥ ८ ॥

भावार्थः—अंतराय कर्म राजना भंडारी सरिखुं तेह वे प्रकारे कहेल छे, एक प्रत्युत्पन्न विनाशी ते उपनो अर्थ विणसाडे १, पिहित आगामी अंतराय ते आवतो अर्थ लाभ रुधे. २, ए वे भेद छे ॥८॥

अर्थः—दु० वे भेदे सु० मुच्छा प० कही तं० ते ज० कहुंछुं पे० रागनी मुच्छा पुत्रादिकनी चे० वळी दो० द्वेषथी मुच्छा वेरी प्रमुख चे० वळी ॥ १ ॥

१७ पेरा (आ आठ प्रकारनुं कर्म मुच्छा जन्य छे तेथी मुच्छानुं स्वरूप कहे छे)

दुविहा मुच्छा पन्नत्ता । तं जहा ।
पेज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव । १ ।

भावार्थः—ए आठ कर्म मुच्छा ते मोहथी उपजे ते माटे मुच्छानुं स्वरूप कहे छे, ते मुच्छा वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, एक प्रेमरागनी मुच्छा (ते अविवेकीपणुं करे) ते पुत्र धनादीक उपरे १, वीजी द्वेषथी मुच्छा ते वैरि प्रमुख उपरे २, ए वे भेद छे ॥१॥

अर्थः—पे० प्रेमनी सु० मुच्छा दु० वे भेदे पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं मा० कपटनी चे० वळी लो० लोभथी धनादिकनी चे० वळी ॥ २ ॥

पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पन्नत्ता । तं जहा । माया चेव लोभे चेव ॥ २ ॥

भावार्थः—प्रेमवती मुच्छा वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, एक माया कपटादीक १, वीजी लोभथी धनादीकनी मुच्छा २, ए वे भेद छे ॥२॥

अर्थः—दो० द्वेषवत्तिका सु० मुच्छा दु० वे भेदे

पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं को० क्रोधथी
चे० वळी मा० मानथी चे० वळी ॥ ३ ॥

दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । कोहे चैव माणे चैव ॥३॥

भावार्थः—द्वेषवती मुच्छा वे प्रकारे कहेल छे
ते कहे छे एक क्रोधथी १, बीजी मानथी २,
ए वे भेद छे ॥३॥

अर्थः—दु० वे भेदे आ० आराधना पं०
कही तं० ते ज० कहुंछुं ध० चारित्र धर्म
आ० आराधवो ते चे० वळी के० केवलिनी
आ० आराधना चे० वळी ॥ १ ॥

१८ पेरा (मुच्छाथी उत्पन्न थएला कर्मनो
नाश आराधनाथी थाय छे तेथी ते आराधना
त्रण सूत्र वडे कहे छे)

दुविहा आराहणा पन्नत्ता । तं जहा ।
धम्मियाराहणा चैव केवलियाराहणा
चैव ॥ १ ॥

भावार्थः—मुच्छादिक कर्मनो क्षय धर्म आ-
राधनथी होय ते माटे आराधना कहे छे, आ-
राधना वे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, चारित्र
रूप धर्म आराधवो ते धार्मिक आराधना १,
केवळीने श्रुत, अवधी, मनपर्यव, केवलज्ञानरूप
श्रुत आराधना २, ए वे भेद छे ॥१॥

अर्थः—ध० धर्म आ० आराधना दु० वे भेदे
पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं सु० सिद्धांतनी
आ० आराधना चे० वळी च० पांच महावृत्तनी
सेवना चे० वळी ॥ २ ॥

धम्मियाराहणा दुविहा पन्नत्ता । तं
जहा । सुयवम्माराहणा चैव चरित्तध-
म्माराहणा चैव ॥ २ ॥

भावार्थः—धार्मिक आराधना वे प्रकारे क-
हेल छे ते कहे छे, श्रुत धर्म ते सिद्धांतनी आ-

राधना १, चारित्र धर्म ते पंच महा व्रतादी-
कनी आराधना सेवना २, ए वे भेद छे ॥२॥

अर्थः—के० केवलीनी आ० आराधना दु० वे
प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुंछुं अ० भ-
वनो विछेद केवलज्ञानी मोक्ष जाय ते चे०
वळी क० नवधीवेग, पांच अणुत्तर वि० विमाने
उ० उपजे ते श्रुत केवलि प्रमुपने चे० वळी ॥३॥

केवलियाराहणा दुविहा पन्नत्ता । तं
जहा । अन्तकिरिया चैव कप्पविमाणो-
वत्तिया चैव ॥ ३ ॥

भावार्थः—केवळीनी आराधना वे प्रकारे
कहेल छे ते कहे छे, अंतक्रिया ते भवनो छेद
करी केवलज्ञानी मोक्ष जाय १, कल्पविमानो
ववत्तियाते जेहथी नव प्रैवेयक, पांच अनुत्तर
विमाने उपजे ते केवळी प्रमुखने २, ए वे
भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः—दो० वे ति० तिर्थकर नी० नीला
कमळ सरिषा सा० शाम व० वर्णछे पं० ते कहे
छे तं० ते ज० कहुंछुं मु० मुणिसुवृत्त वीसमा
तिर्थकर चे० वळी अ० नेमिनाथ वावीसमा
तिर्थकर चे० वळी ॥ १ ॥

१९ पेरा (उपर ज्ञानादी आराधना कही
तेना फळभुत तिर्थकरो होयछे अगर तेमनेज ते
रुढी रीते कहेलीछे तेथी तिर्थकरो विशे कहेछे)

दो तिर्थगरा नीलुप्पलसमा वर्णे-
णं पन्नत्ता । तं जहा । मुणिसुवए चैव
अरिड्डणेमी चैव ॥ १ ॥

भावार्थः—ए ज्ञान आराधनानुं फळ तिर्थ-
कर पद पण पामे ते माटे तिर्थकरना वर्ण
कहे छे, आ चौविसीमां वे तिर्थकर नीला क-
मळ सरिखा वर्णे शाम अंजनगिरि, शाम हस्ती,
मेघनी घटां, अळसीनां फुल तेहनां जेवा वर्णे

કહેલ છે, વીસમા સુતિસુત્રતસ્વામી ૧, સાર્ત્વી-
સમા અરિષ્ટ નેમીનાથ ૨, એ વે ભેદ છે ॥૧॥

અર્થ:-દો વે તિ૦ તિર્થંકર પિ૦ રાયણ વૃક્ષ
સરિષા વ૦ વર્ણે લીલા પં૦ કહ્યા તં૦ તે જ૦
કહુંહું મ૦ ૧૯ મા તિર્થંકર ચે૦ વલી પા૦
૨૩ મા તિર્થંકર ચે૦ વલી ॥ ૨ ॥

દો તિત્યગરા પિયદ્ગુસમા વર્ણેણં પ-
ન્નતા । તં જહા । મલી ચેવ પાસે
ચેવ ॥ ૨ ॥

ભાવાર્થ:-વે તિર્થંકર (તિર્થના કરનાર તે)
પિયંગુ વૃક્ષ સરિષા, નિલંબત પર્વત, શુક (પો-
પટ) અને નિલંબાસ પક્ષી સરિષા નીલાવર્ણે
કહેલ છે તે કહે છે, ઓગણીસમા મલીનાથ
૧, ત્રેવીસમા પાર્શ્વનાથ ૨, એ વે ભેદ છે ॥૨॥

અર્થ:-દો વે તિ૦ તિર્થંકર પ૦ રાતા કમલ
સરિષા ગો૦ ગોરા વ૦ વર્ણે પં૦ કહ્યા તં૦ તે
જ૦ કહુંહું પ૦ છઠા તિર્થંકર ચે૦ વલી વા૦
વારમા તિર્થંકર ચે૦ વલી ॥ ૩ ॥

દો તિત્યગરા પમગોરા વર્ણેણં પ-
ન્નતા । તં જહા । પમપ્પમે ચેવ વાસુ-
પુજ્જે ચેવ ॥ ૩ ॥

ભાવાર્થ:-વે તિર્થંકર રાતા કમલ સરિષા,
ગોરા તથા નિપથપર્વત, ઊગતો સૂર્ય, રાતાં ર-
તન, પરવાલ્કાં, જામુનાં ફુલ તે સરિષાં રાતા વર્ણે
વે તિર્થંકર કહેલ છે તે કહે છે, છઠા પદમખ્યુ ૧,
ઘારમા વાસુપુજ્ય ૨, એ વે ભેદ છે ॥૩॥

અર્થ:-દો વે તિ૦ તિર્થંકર ચ૦ ચંદ્રમા સ-
રિષા ગોરા વ૦ વર્ણે પં૦ કહ્યા તં૦ તે જ૦ કહુંહું
ચ૦ આઠમા તિર્થંકર ચે૦ વલી પુ૦ નવમા
તિર્થંકર ચે૦ વલી ॥ ૪ ॥

દો તિત્યગરા ચન્દગોરા વર્ણેણં પ-
ન્નતા । તં જહા । ચન્દપ્પમે ચેવ પુ-
પ્ફદન્તે ચેવ ॥ ૪ ॥

ભાવાર્થ:-વે તિર્થંકર ચંદ્ર સરિષા શ્વેત
(ધોલા) ગોરા તે રૂપી પર્વત, ક્ષીરસમુદ્ર, વૈતા-
હ્યપર્વત, મુક્તાફલ (મોતી), મચકુંડનાં ફુલ,
મુક્તિસિલ્લા સરિષા, ઊજવલ વર્ણે કહેલ છે,
તે કહે છે, આઠમા ચંદ્રમખ્યુ ૧, પુષ્પદંત વીજું
નામ નવમા સુવિધીનાથ ૨, એ વે ભેદ છે ॥૪॥

અર્થ:-સ૦ સત્યવાદ છે જિહાં પુ૦ છટું
પુર્વના પં૦ વલી દુ૦ વે વ૦ અધ્યયન પં૦ કહ્યાં.

૨૦ પેરા (ઉપર તિર્થંકરનું સ્વરૂપ કહું
અને તિર્થંકરોથીજ તિર્થંકરો, તીર્થ અને પ્રવ-
ચન જણાય છે તેથી પ્રવચનના એક દેશનો જે
પુર્વ વિશેષ તે કહે છે)

સચ્ચપ્પવાયપુવ્વસ્સ ણં દુવે વત્થૂ પ-
ન્નતા ॥

ભાવાર્થ:-છટું સત્યપ્રવાદ પુર્વ તેહમાં સત્ય-
વાદ છે તે પ્રવચન તેહનો એક પ્રદેશ તે ચડદહ
છે તે વતી પુર્વનો અધિકાર કહે છે તે સત્ય-
પ્રવાદ પુર્વનાં વે અધ્યયન કહ્યાં છે.

અર્થ:-પુ૦ પુર્વભદ્રપદ ન૦ નક્ષત્રના દુ૦
વે તા૦ તારા પં૦ કહ્યા

૨૧ પેરા (એ ઉપર છઠા પુર્વનું સ્વરૂપ
કહું. હથે પુર્વ શબ્દના શામ્યપણાથી પુર્વભદ્રપદા
નક્ષત્રનું સ્વરૂપ કહે છે)

પુવ્વમહવયાનક્ષત્તે દુત્તારે પન્નત્તે ।
ભાવાર્થ:-પુર્વાભાદ્રપદ નક્ષત્રના વે તારા
કહેલ છે.

અર્થ:-૩૦ ઉત્તર ભદ્રપદ ન૦ નક્ષત્રના
દુ૦ વે તા૦ તારા પં૦ કહ્યા ॥ ? ॥

૨૨ પેરા (નક્ષત્રના મહતાદથી વીજા
નક્ષત્રોનું સ્વરૂપ ત્રણ સૂત્રવડે કહે છે)

ઉત્તરમહવયાનક્ષત્તે દુત્તારે પન્નત્તે
॥ ? ॥

ભાવાર્થ:-એપજ ઉત્તરાભાદ્રપદ નક્ષત્રના
પણ વે તારા કયા છે ॥૧॥

अर्थः—ए० एम पु० पुर्व फालगुनीना वे तारा कह्या ॥ २ ॥

एवं पुवफगुणी ॥ २ ॥

भावार्थः—एमज पुर्वाफालगुणी नक्षत्रना वे वे तारा कह्या छे ॥२॥

अर्थः—उ० उत्तरा फ० फालगुनी नक्षत्रना वे तारा कह्या ॥ ३ ॥

उत्तरफगुणी ॥ ३ ॥

भावार्थः—उत्तराफालगुणी नक्षत्रना वे तारा कह्या छे ॥ ३ ॥

अर्थः—अ० माहि णं० वळी म० मनुष्य खे० क्षेत्रना दो० वे स० समुद्र पं० कह्या तं० ते ज० कहुंछुं ल० लवण समुद्र चे० वळी का० कालोदधी चे० वळी

२३ पेरा (द्वीप समुद्र नक्षत्रवाळो होय छे तेथी समुद्रने विषे कहे छे)

अन्तो णं मणुस्सखेत्तस्स दो समु-
द्दा पन्नत्ता । तं जहा । लवणे चैव
कालोदे चैव ॥

भावार्थः—नक्षत्र सहित द्वीपसमुद्र छे ते माटे पीस्तालीसलाख जोजन मनुष्यक्षेत्र छे तेहमां वे समुद्र छे ते कहे छे, एक लवणसमुद्र १, बीजा कालोदधी समुद्र २, ए वे भेद छे.

अर्थः—दो० वे च० चक्रवर्ति भरत क्षेत्रना अ० छांडया नहि का० कामभोग का० आ-
वखुं का० पूर्ण कि० करीने अ० हेठे स० सा-
तमी पु० पृथ्वीए अ० अपइठाण न० नरक
वासे ने० नारकीपणे उ० उपना तं० ते ज०
कहुंछुं सु० आठमो चक्रवर्ति चे० वळी व०
ब्रह्मदत्त वारमो चे० वळी.

२४ पेरा (मनुष्यक्षेत्रनो प्रस्ताव होवाथो भरतक्षेत्रमां उत्पन्न थएला उत्तम पुरुषोनुं नर-
कगामीपणुं होय के न होय ते विषे कहे छे)

दो चक्रवर्ती अपरिचितकामभोगा
कालमासे कालं किञ्चा अहे सत्तमाए
पुढ्वीए अप्पइठाणे नरए नेइयत्ताए
उववन्ना । तं जहा । सुभूमे चैव बम्भ-
दत्ते चैव ॥

भावार्थः—मनुष्यक्षेत्रना अधिकार माटे च-
क्रवर्तिनो प्रस्ताव आव्यो तेथी चक्रवर्तिनो
अधीकार कहे छे, भरतक्षेत्रमां वे चक्रवर्ति उ-
त्तम पुरुष कामभोग छांडया बीना कालने
अवसरे काल करी (आउखुं पुर्ण करी) हेठे
सातमी नरक पृथ्वीए अप्रतिष्ठान नामे नरका-
वासाने विषे नारकीपणे तेत्रीस सागरोपमने
आउखे उपना तेहनां नाम कहे छे, आठमो
सुभूम चक्रवर्ति १, अने वारमो ब्रह्मदत्त चक्र-
वर्ति २, ए वे भेद छे.

अर्थः—अ० चमरेंद्र बलेंद्र न० बर्जिने
भ० भवनपति दे० देवताने दे० कांइक ऊणी
दो०वे प० पल्योपमनी ठि० स्थिति पं०कही ॥१॥

२५ (ते वे तीर्थकरोनी नरकमां तेत्रीस
सागरोपमनी स्थीती तेथी अने नारकीना सं-
ख्याता काल सुधीनी पण स्थीती होय छे
तेथी भुवनपती वीगेरेनी स्थीती दरशावतां
पांच सूत्रो कहे छे)

असुरिन्दवज्जियाणं भवणवासीणं
देवाणं देसूणाइं दो पालिओवमाइं ठिई
पन्नत्ता ॥ १ ॥

भावार्थः—नारकीनी असंख्यात कालनी
स्थीति छे तेम भवनपतिनी पण कहे छे, असु-
रेंद्र ते चमरेंद्र अने बलेंद्र बर्जिने बीजा नाग-
कुमारेंद्रादीकनी जघन्य दशहजार वर्षनी उ-
त्कृष्टी देशे कांइकउणी वे पल्योपमनी आउ-
खानी स्थिति कही छे अने चमरेंद्र बलेंद्रनी
उत्कृष्टी सागरोपम झाझेरी स्थिति छे ॥ १ ॥

अर्थः—सो० सौधर्म क० देवलोक दे० दे-
वतानी उ० उत्कृष्टी दो० वे सा० सागरो-
पमनी ठि० स्थिति प० कही ॥ २ ॥

सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो
सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ २ ॥

भावार्थः—एम् सौधर्म देवलोक देवतानी
उत्कृष्टी वे सागरोपमनी स्थिति छे ॥ २ ॥

अर्थः—ई० ईसान देवलोक क० देवलोकना
दे० देवतानी उ० उत्कृष्टी सा० झाझेरी दो०
वे सा० सागरोपमनी ठि० स्थिति पं० कही ॥ ३ ॥

ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरे-
गाइं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ ३ ॥

भावार्थः—ईसान देवलोक उत्कृष्टी वे साग-
रोपम झाझेरी स्थिति कही छे ॥ ३ ॥

अर्थः—स० सनतकुमारे त्रीजे क० देव-
लोके दे० देवताने ज० जघन्य दो० वे सा०
सागरोपमनी ठि० स्थिति पं० कही ॥ ४ ॥

सणकुमारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं
दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ ४ ॥

भावार्थः—सनत्कुमार त्रीजे देवलोक देव-
तानी जघन्य वे सागरोपमनी स्थिति कहीछे ॥ ४ ॥

अर्थः—मा० चोथे क० देवलोक दे० देव-
तानी ज० जघन्य दो० वे सा० झाझेरी सा०
सागरोपमनी ठि० स्थिति पं० कही ॥ ५ ॥

माहिन्दे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दो
साइरेगाइं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता
॥ ५ ॥

भावार्थः—चोथे माहेंद्र देवलोक देवतानी
जघन्य वे सागरोपम झाझेरी स्थिति कहीछे ॥ ५ ॥

अर्थः—दो० वे क० देवलोकने विषे क०
देवांगना प० कही तं० ते ज० कहुंछुं सो०
सौधर्म चे० वळी ई० ईसाने चे० वळी ॥ १ ॥

२६ पेरा (देवलोकनो प्रस्ताव होवाथी
स्त्री वगेरे द्वारोथी देवलोक संबधी वीजुं ठाणुं
सात सूत्रथी कहे छे)

दोसु कप्पेसु कप्पथियाओ पन्नत्ता-
ओ । तं जहा । सोहम्मे चेव ईसाणे
चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—देवताना अधीकार माटे देवीनो
अधिकार कहे छे, वे देवलोकने विषे देवलो-
कनी स्त्री देवांगना छे ते कहे छे, सौधर्म
देवलोक १, ईसान देवलोक २, ए वे देवलोक
देवांगना छे ॥ १ ॥

अर्थः—दो० वे क० देवलोकने विषे दे०
देवताने ते० तेजु ले० लेस्या पं० कही तं०
त ज० कहुंछुं सो० सौधर्म देवलोक चे० वळी
ई० ईसाने चे० वळी ॥ २ ॥

दोसु कप्पेसु देवातेउलेसा पन्नत्ता ।
तं जहा । सोहम्मे चेव ईसाणे चेव ॥ २ ॥

भावार्थः—वे देवलोक देवताने तेजुलेश
कहीछे, सौधर्म देवलोक १, ईसान देवलोक २ ॥ २ ॥

अर्थः—दो० वे क० देवलोकने विषे दे०
देवताने का० कायाए भोग छे स्त्री साथे पं०
कह्यो तं० ते ज० कहुंछुं सो० सौधर्म देवलोक
चे० वळी ई० ईसान देवलोक चे० वळी ॥ ३ ॥

दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा
पन्नत्ता । तं जहा । सोहम्मे चेव ईसा-
णे चेव ॥ ३ ॥

भावार्थः—वे देवलोकने विषे देवता कायाये
करी देवांगनानी साथे मनुष्यनी पेरे भोग
भोगवे छे ते वेनां नाम कहे छे, सौधर्म देव-
लोक १, ईसान देवलोक २ ॥ ३ ॥

अर्थः—दो० वे क० देवलोक दे० देवने
फा० आलंगनादिके भोग स्त्रीनो पं० कह्यो
तं० ते ज० कहुंछुं स० त्रीजे चे० वळी मा०
चोथे चे० वळी ॥ ४ ॥

दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पन्नत्ता । तं जहा । सणकुमारं चैव माहिन्दे चैव ॥ ४ ॥

भावार्थः—वे देवलोकने देवताने फरसथी ते आलींगनादीकथी स्त्रीनो भोग कहेल छे ते कहे छे, वीजे सनत्कुमार देवलोके १, चोथे माहिंद्र देवलोके २ ॥४॥

अर्थ—दो० वे क० देवलोके दे० देवता रु० रूप दीठथी भोग पुर्ण करे पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं व० पांचमे देवलोके च० वळी ल० छठे देवलोके च० वळी ॥ ५ ॥

दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पन्नत्ता । तं जहा । वम्मलोए चैव लन्तगे चैव ॥ ५ ॥

भावार्थः—वे देवलोकं देवताने रूप दीठथी भोग पुर्ण थाय छे ते देवांगनानुं रूप देखी कामाभिलापनी इच्छा पुरी थाय छे ते कहे छे, पांचमे ब्रह्म देवलोके १, छठे लांतक देवलोके २ ॥ ५ ॥

अर्थः—दो० वे क० देवलोके दे० देवता स० शब्दथी प० भोग सेवे छे पं० एम कहुं तं० ते ज० कहुंछुं म० सातमे च० वळी स० आठमे च० वळी ॥ ६ ॥

दोसु कप्पेसु देवा सहपरियारगा पन्नत्ता । तं जहा । महासुके चैव सहससारे चैव ॥ ६ ॥

भावार्थः—वे देवलोकं देवता देवांगनाना शब्दथी भोग सेवे छे, सातमे महाशुक देवलोके १, आठमे सहस्रार देवलोके २ ॥६॥

अर्थः—दो० वे इ० इन्द्रने म० मनथी देवांगनाना भोग पं० कथा तं० ते ज० कहुंछुं पा० प्राणतेंद्रनो इंद्र च० वळी अ० अच्युतेन्द्रनो इंद्र च० वळी ॥ ७ ॥

दो इन्दा मणपरियारगा पन्नत्ता । तं जहा । पाणए चैव अच्चुए चैव ॥७॥

भावार्थः—वे इंद्रने मनथी देवांगनाना भोगथी सेवा कही छे, नवमा, दशमा, इग्यारमा, वारमा, ए चार देवलोकं देवता मनथी भोग भोगवे छे पण वे ठाणानो वोल छे तेथी इहां वे इंद्र कहा छे ते कहे छे, प्रणीतेंद्र ते नवमा दशमा देवलोकनो धणी १, अच्युतेंद्र ते इग्यारमा वारमा देवलोकनो धणी २ ॥७॥

अर्थः—जी० जीव पं० वळी दु० वे ठा० थानके नि० उपजे पो० पुद्गल पा० पाप कर्म चि० ग्रहता हवा अतीत काले वा० अथवा चि० ग्रहे छे वर्तमानकाले वा० अथवा चि० आगमिकाले ग्रहस्ये वा० अथवा तं० ते ज० कहुंछुं त० वे इंद्रियादिकर्मां नि० उपजाने भोगवे पापकर्म च० वळी था० पृ० ध्वी प्रभुल पांचमा नि० उपजाने भोगवे पापकर्म च० वळी ॥ १ ॥

२७ पेरा (आपरीचारणा कर्मथी होय छे, जीवो कर्म स्वहेतुथी त्रणे काले चीतनी अव्यवस्थपणाथी करे छे तेथी छ सूत्रो कहे छे)

जीवा पं दुट्टाणनिवत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंमु वा चिणन्ति वा चिणिस्सन्ति वा । तं जहा । तसकायनिवत्तिए चैव थावरकायनिवत्तिए चैव ॥ १ ॥

भावार्थः—ए भोगादीकनी इच्छा ते जीवने वे स्थानके उपकर्मथी उपजे छे ते माटे पापकर्मनुं स्वरूप कहे छे, जीव वे स्थानके करी पापकर्मनां पुगदळ अतित काले चिण्यां (ग्रहां) छे, वर्तमानकाले चिणे (ग्रहे) छे, आगमीयकाले चिणशे (ग्रहण करशे) ते कहे छे. त्रसकाय नियतित ते जे वे इंद्रियादीक त्रसकायमां उ-

पञ्जीने पापकर्मणुं भोगवतुं १, स्थावर कायनि-
वर्तित ते पृथ्व्यादी पांच स्थावरमां अवतरी
पापकर्मणुं भोगवतुं २, एवा कर्म पुद्गल ग्रहां
ग्रहे छे ने ग्रहशे, ए वे भेद छे ॥१॥

अर्थः—एम् उ० एहवा पुद्गल ग्रहे
एम् ग्रहा कर्मनो अवोधाकाल मुक्तीने थापतुं
विशेषथी तेहमांथी हीन करतुं एटले अवाधा
काल जेटळुं छे ते उपचय अतितकाले कीधो
वा० अथवा उ० वर्तमानकाले करेछे वा० अ-
थवा उ० अनागतकाले करस्ये वा० अथवा ॥२॥

उवचिणिंमु वा उवचिणन्ति वा
उवचिणिस्सन्ति वा ॥ २ ॥

भावार्थः—ग्रहां कर्मनो अवाधाकाल मुक्तीने
ते मांहीथी हीन करतुं एटले अवाधाकाल जे
टळुं ओळुं ते उपचय कहीए, पुर्वोक्त वे स्था-
नके भोगवत्तां पडे एवां कर्म पुद्गलनो अ-
तितकाले उपचय कर्यो १, वर्तमानकाले उप-
चय करेछे ने आगमीयकाले उपचय करशे ॥२॥

अर्थः—व० ते कर्मणुं कषायथी निकाचतुं
ते बांधतो हवो वा० अथवा व० बांधेछे वा०
अथवा व० बांधस्ये वा० अथवा ॥ ३ ॥

वन्धिंमु वा वन्धन्ति वा वन्धिस्स-
न्ति वा ॥ ३ ॥

भावार्थः—अतितकाले किधां कर्मणुं कषायथी
निकाचतुं (मजवुत करतुं) ते बांध कहीए,
पुर्वोक्त वे स्थानके भोगवत्तां पडे एवां कर्म
पुद्गल बांध्यां, बांधे छे ने बांधशे ॥३॥

अर्थः—उ० एमज उदीरणा जे उदय कर्म
नयी आच्युं ते कारणे बलात्कार उदय आणे
ते उदीरणा उदीरतो हवो वा० अथवा उ०
उदये छे वा० अथवा उ० उदीरस्ये ॥४॥

उदीरिंमु वा उदीरेन्ति वा उदीरि-
स्सन्ति वा ॥ ४ ॥

भावार्थः—जे कर्मउदय नयी आव्यां ते का-
रणथी बलात्कारे उदय आणे ते उदीरणा
कहीए, पुर्वोक्त वे प्रकारनां कर्म जीवे उदीर्यो
उदीरे छे ने उदीरशे ॥४॥

अर्थः—व० वेदवो ते भोगवतुं ते वेदतो हवो
वा० अथवा वे० वेदे छे वा० अथवा वे० वे-
दशे वा० अथवा ॥ ५ ॥

वेदिंमु वा वेदेन्ति वा वेदिस्सन्ति
वा ॥ ५ ॥

भावार्थः—एमज पुर्वोक्त वे प्रकारनां कर्म
वेदता (भोगवता) हुआ, वेदेछे ने वेदशे ॥५॥

अर्थः—नि० कर्म भोगव्या पछी उदय नही
ते निर्जरतो हवो वा० अथवा नि० निर्जरे छे
वा० अथवा नि० निर्जरशे वा० अथवा ॥६॥

निज्जरिंमु वा निज्जरेन्ति वा नि-
ज्जरिस्सन्ति वा ॥ ६ ॥

भावार्थः—एमज पुर्वोक्त वे प्रकारनां कर्मनी
निर्जरा जे कर्म भोगव्या पछी अकर्म थाय ते
निर्जरता हुआ, निर्जरेछे ने निर्जरशे ॥६॥ [चि-
णतुं १, उपचीणतुं २, बांधतुं ३, उदीरतुं ४,
वेदतुं ५, निर्जरतुं ६, ए छ वोल थया] ॥६॥

अर्थः—दु० वे प० प्रदेशिया खं० पंध अ०
अनंता पं० कथा ॥ १ ॥

२८ (द्रव्यक्षेत्र कालभावथी पुद्गलनी नी-
रूपणा कहे छे)

दुपएसिया खन्धा अणन्ता पन्नत्ता
॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण काले ए जीवन्नसस्थावर-
रणे कर्म ते पुद्गलरूप छे ते पुद्गलतुं स्वरूप
कहेछे, वे प्रदेशिया पुद्गलना खंध अनंतछे ॥१॥

अर्थः—दु० वे प० आकाशना प्रदेशने अ-
वगाही रखा एहवा पो० पुद्गल अ० अनंता
प० कथा ॥ २ ॥

दुपएसोगाढा पोग्गला अणन्ता प-
न्नत्ता ॥ २ ॥

भावार्थः—वे आकाशना प्रदेशने अवगाही
ते आश्रयी रक्षांछे एवां अनंता पुदगळ छे ॥२॥

अर्थः—दु० वीजा ठा० ठाणानो च०चोयो
उ० उद्देशो स० पुरो थयो.

दुद्विषणस्स चउत्थो उद्देशओ समत्तो॥

भावार्थः—एम यावत् वे गुणं लुख्खा पुद-
गळ अनंताश्री तिर्थकर देवे कक्षां छे)

अर्थः—दु० वीजुं ठा० ठाणुं स० पुरु थयुं.

॥ दुद्विषणं समत्तं ॥

भावार्थः—(इतिश्री वीजा ठाणाना चोया
उद्देशानो भावार्थं संपूर्णम्)

इतिश्री वीजा ठाणानो भावार्थं संपूर्णं.

[अह तिद्विषणं ।]

[अह तिद्विषणस्स पदमो उद्देशओ ।]

अर्थः—त० त्रण इ० इन्द्र पं० कक्षां तं० ते
ज० कहुं छुं ना० नामथी इन्द्र ठा० स्थापना
इन्द्र द० देवेद्र जे आवते भवे इन्द्र थाया ॥१॥

(वीजा अध्ययनना छेला उद्देशामां
जीव अने अजीवना पर्याय कक्षा अने आ अध्य-
यनना पेहेला उद्देशामां पण तेनाज पर्याय
कहे छे. छेला उद्देशाना छेला सुत्रमां पुदगळ
धर्म कक्षा हता अने आ उद्देशाना पेहेला सु-
त्रमां जीव धर्म कहे छे. आ प्रमाणे छेला ने
आ उद्देशानो संबंध छे.)

१. तओ इन्द्रा पन्नत्ता । तं जहा ।
नामिन्दे ठावणिन्दे दविन्दे ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारना इन्द्र श्री तिर्थकर
देवे कहेलछे ते कहेछे, नाम इन्द्र ते इन्द्रना गुण
रहित फक्त नामथोज इन्द्र जेम गोवालणीये
मोह घेलाइए पोताना पुत्रनुं नाम इन्द्र पाडयुं,
गोपेन्द्र, भुमीन्द्र, अक्षरथी इन्द्र, सिंह इत्यादि नाम
इन्द्र १, स्थापना इन्द्रते इन्द्रनो आकार वनावे २,

द्रव्य इन्द्र ते कोइ भव्यजीव आवते भवे इन्द्र
थवानो होयते ३, ए त्रण भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः—ते० त्रण इ० इन्द्र पं० कक्षा तं० ते ज०
कहुं छुं ना० ज्ञानेन्द्र केवळी दं० दर्शनेन्द्र क्षा-
यिक समकिति च० चारितेन्द्र यथाख्यात चा-
रित्रीयो ॥ २ ॥

(नाम इन्द्र, स्थापना इन्द्र अने द्रव्य इन्द्र
कक्षा, हवे भाव इन्द्र कहे छे)

तओ इन्द्रा पन्नत्ता । तं जहा ।
नाणिन्दे दंसणिन्दे चरित्तिन्दे ॥ २ ॥

भावार्थः—वळी त्रण प्रकारे इन्द्र कहेलछे ते
कहेछे, ज्ञानेन्द्रते पुर्ण ज्ञानवंत केवळी १, दर्श-
नेन्द्र ते क्षायिक समकितनो धणी २, चारितेन्द्र ते
यथाख्यात चारित्रनो धणी ३, ए त्रण भेदछे ॥२॥

अर्थः—त० त्रण इ० इन्द्र पं० कक्षां तं० ते
ज० कहुं छुं. दे० वैमानिकना अ० भवनप-
तिना म० चक्रवर्ति ॥ ३ ॥

(अध्यात्मिक ऐश्वर्यनी अपेक्षाए भावइन्द्र-
ना त्रण प्रकार कथा. हवे ऐश्वर्यनी अपेक्षाए
भाव इन्द्रना त्रण प्रकार कहे छे)

तओ इन्द्रा पन्नता । तं जहा ।
देविन्दे असुरिन्दे मणुसिन्दे ॥ ३ ॥

भावार्थः—वली त्रण प्रकारना इंद्र कहेलछे ते कहे
छे, देवेंद्र ते जोतिपी वैमानिकना इंद्र १, असुरेंद्र
ते भवनपती व्यंतरना इंद्र २, मनुष्येंद्र ते चक्रव-
र्त्यादीक मनुष्यनो इंद्र ३, ए त्रण भेदछे ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे वि० विकुर्वणा पं०
कही तं० ते ज० कहुंछुं वा० भवधारणी
शरीरने अवगाहिने जेटळुं क्षेत्र रहुं छे तेथी
अलगा क्षेत्रना पो० पुदगल प० (विक्रय स-
मुद्रघाते करी) ग्रहीने नवा रूपनी ए० एक
वि० विकुर्वणा ते वा० वाहिर क्षेत्रना पो०
पुदगल अ० अणलीधे ए० एक वि० विकुर्वणा
वा० बाह्य क्षेत्रना पो० पुदगल प० लेइने वि०
वली अ० लीधा विना एटले कांइक मुलगा
शरीरना केटलाक बाह्य पुदगल लेइने वि० वली
ए० एक वि० विकुर्वणाकरे ते ॥ १ ॥

२ पेरा (आ त्रणतुं इन्द्रपणुं वैक्रिय करवुं
विगेरे शक्ति सहितपणाने लीधेछे तेथी विकुर्व-
णातुं स्वरूप कहे छे).

तिविहा विउवणा पन्नता । तं जहा ।
वाहिरए पोग्गले परियादिइत्ता एगा वि-
उवणा । वाहिरए पोग्गले अपरियादिइत्ता
एगा विउवणा । वाहिरए पोग्गले परि-
यादिइत्ता वि अपरियादिइत्ता वि एगा
विउवणा ॥ १ ॥

भावार्थः—ए त्रण प्रकारना इंद्रने वैक्रेय
विकुर्वणा (धारे तेवुं रूप वनाववानी शक्ति)
होय ते माटे विकुर्वणानो अधिकार कहेछे,

त्रण प्रकारे विकुर्वणा कही ते कहेछे, भवधार-
णी जे मुळ शरिर अवगाही जेटळुं क्षेत्र रहुं
छे तेहथी अलगा क्षेत्रना पुदगल वैक्रेय समु-
द्रघाते करी ग्रहीने जे नवा रूपनी विकुर्वणा
करे ते एक विकुर्वणा १, जे बाह्यक्षेत्रना पुद-
गळ लीधा विना मुळगाज शरिर माहिलां
पुदगळ विशिष्ट ग्रहीने विकुर्वणा करे ते बीजी
विकुर्वणा २, बाह्य पुदगळ ग्रहीने केटलाएक
मुळ शरिरना पुदगळ ग्रहीने विकुर्वणा करते
त्रीजी विकुर्वणा ३, ए त्रण भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे वि० विकुर्वणा पं० कही
तं० ते ज० कहुं छुं अ० मुलगे शरीरे जे क्षेत्र
प्रदेशे अवगाहा पो० पुदगल प० लइने विकु-
र्वणा करे ते ए० एक वि० विकुर्वणा अ० अभ्यंतर
पो० पुदगल अ० अणग्रहे ए० एक वि०
विकुर्वणा अ० अभ्यंतर पो० पुदगल प०
कांइक ग्रहीने वि० वली अ० कांइक अणग्र-
हीने वि० वली ए० एक वि० विकुर्वणा ॥ २ ॥

तिविहा विउवणा पन्नता । तं जहा ।
अब्भन्तरए पोग्गले परियादिइत्ता एगा
विउवणा । अब्भन्तरए पोग्गले अपरि-
यादिइत्ता एगा विउवणा । अब्भन्तरए
पोग्गले परियादिइत्ता वि अपरियादिइत्ता
वि एगा विउवणा ॥ २ ॥

भावार्थः—वली त्रण प्रकारे विकुर्वणा श्रीभगवंते
कहेलछे ते कहेछे, अभ्यंतर पुदगळ ते भवधारणी
तथा उदारिक शरिरे क्षेत्र देशे अवगाहां जे
पुदगळ ते माहिज विकुर्वणा करे ते एकविकुर्वणा
१, अभ्यंतर पुदगळ अणग्रहीने विकुर्वणा करे
ते बीजी विकुर्वणा २, एम अभ्यंतर पुदगळ
कांइक ग्रहीने कांइक अणग्रहीने विकुर्वणा करे
त्रीजी विकुर्वणा ३ ए त्रण भेदछे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे वि० विकुर्वणा पं०

कही तं० ते ज० कहं छुं वा० बाह्य अ० अभ्यंतर पो० पुदगल प० ग्रहीने ए० एक वि० विकुर्वणा वा० बाह्य अ० अभ्यंतर पो० पुदगल अ० अणग्रहीने ए० एक वि० विकुर्वणा वा० बाह्य अ० अभ्यंतर पो० पुदगल प० ग्रहीने वि० वळी अ० कांडक अणग्रहीने वि० वळी ए० एक वि० विकुर्वणा ॥ ३ ॥

तिविहा विउवणा पन्नत्ता । तं जहा ।
बाहिरब्भन्तरए पोग्गले परियादिइत्ता
एगा विउवणा । बाहिरब्भन्तरए पोग्गले
अपरियादिइत्ता एगा विउवणा बाहिर-
ब्भन्तरए पोग्गले परियादिइत्ता वि अ-
परियादिइत्ता वि एगा विउवणा ॥३॥

भावार्थः—वळी त्रण प्रकारे विकुर्वणा कही छे ते कहेछे, बाह्य अने अभ्यंतर पुदगळ ग्रहीने एक विकुर्वणा १, बाह्य अभ्यंतर पुदगळ अणग्रहीने एक वीजी विकुर्वणा २, बाह्य अभ्यंतर पुदगळ कांडक ग्रहीने कांडक अणग्रहीने एक वीजी विकुर्वणा, इहां केटलाएक भाव बहुश्रुत गम्यछे ३, ए त्रण भेदछे ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे न० नारकी प० कहा तं० ते ज० कहं छुं क० एक समये संख्याता उपना ते अ० एक समये असंख्याता उपजे ते अ० समये एको उपजे ते ॥१॥

३ पेरा (उपर विकुर्वणा कही ते नारकने पण होय तेथी नारकोनुं स्वरूप कहे छे).

तिविहा नेरइया पन्नता । तं जहा ।
कइसंचिया अकइसंचिया अवत्तवग-
संचिया ॥ १ ॥

भावार्थः—विकुर्वणा नारकीने होय ते माटे नारकीनो अधिकार कहेछे, त्रण प्रकारे नारकी कहेछे ते कहेछे, नर्कमां उपजवानी वेळाए

एक समये एक वे त्रण यावत संख्याता सुधी जेटला साथे उपना ते कति संचिता नारकी १, एक समये असंख्याता सुधी जेटला साथे उपनाते अकति संचिता नारकी २, समये समये एको उपजे अवकतव्य संचिता नारकी ३, एक समये ए त्रण प्रकारछे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम ए० एकेद्री वजीने जा० यावत वे० वैमानिक लगे जाणवुं ॥२॥

(कति संचित विगेरे भेद असुर विगेरेना पण होय तेथी ते पण वतावे छे.)

एवं एगिन्दियवज्जा जाव वैमा-
णिया ॥ २ ॥

भावार्थः—एम एकेद्री वजीने वैमानीक सुधी चोविस दंडके कति संचिता १ अकति संचिता २ अवकतव्य ३ ए त्रणे प्रकारछे अने एकेद्रीमां एक समये असंख्याता अनंता उपजे पण वे यावत संख्याता न उपजे तेथी अरुति शब्द एकज आवे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे प० देवतानी मैथुन सेवा प० कही तं० ते ज० कहं छुं ए० कोइ एक दे० देव अ० थोडी रुद्धिनो दे० धणी ते अ० अनरा दे० देवतानी दे० देवीने अ० वश करीने अ० वश करीने प० भोगवे अ० पोतानी दे० देवीने अ० आलंगी अ० आलंगीने प० भोगवे अ० पोतज अ० आत्माने वि० विकुर्वी वि० विकुर्वीने प० भोगवे ए० कोइ एक दे० देवता नो० नही अ० वीजा रुद्धि-वंत दे० देवता नो० नही अ० वीजा दे० देवनी दे० देवीओ अ० आलंगी अ० आलंगीने प० भोगवे, अ० पोतानी दे० देवीने अ० आलंगी अ० आलंगीने प० भोगवे, अ० पोतानी मेळे अ० आत्माथी वि० विकुर्वी वि० विकुर्वीने प० भोगवे ए० एक दे० देवता नो० नही अ० अन्य दे० देव नो० नही अ० अन्य

दे० देवनी दे० देवी नो० नही अ० पोतानी
अ० पोतेज अ० आत्माथी वि० विकुर्वी वि०
विकुर्वीने प० भोगवे.

४ पेरा (उपरला सूत्रोमां वैमानिक दे-
वनो कति संचित त्रिगोरे धर्म कळो, हवे देवनो
सामान्य रीते परिचारणा धर्म कहे छे.)

तिविहा परियारणा पन्नत्ता । तं
जहा । एगे देवे अन्ने देवे अन्नेसिं
देवाणं देवीओ अभिजुञ्जिय अ-
भिजुञ्जिय परियारेइ, अप्पणिज्जिया-
ओ देवीओ अभिजुञ्जिय अभिजु-
ञ्जिय परियारेइ, अप्पाणमेव अप्पणा
विउव्विय विउव्विय परियारेइ । एगे
देवे नो अन्ने देवे नो अन्नेसिं देवाणं
देवीओ अभिजुञ्जिय अभिजुञ्जिय
परियारेइ, अप्पणिज्जियाओ देवी-
ओ अभिजुञ्जिय अभिजुञ्जिय परि-
यारेइ, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय
विउव्विय परियारेइ । एगे देवे नो
अन्ने देवे नो अन्नेसिं देवाणं देवीओ
नो अप्पणिज्जियाओ अप्पाणमेव
अप्पणा विउव्विय विउव्विय परियारेइ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे परिचारणा ते देव-
मैथुन (विषय) सेवा कहेलछे ते कहेछे,
सघळा नही पण कोइक देवता पोताथी घोडी
रुद्धीवाळा वीजा देवतानी देवीने वश करिने
भोग भोगवे एटले पारकी देवीने वश करिने
भोग भोगवे १, कोइक पोतानीज देवांगनाने
आश्रीने आळिगी आळिगीने भोगवे एटले
देवता पोतानीज देवीने भोगवे २, अथवा पो-

तेज आत्माथीज विकुर्विं भोग योग्य देवांग
नानुं शरीर करी पळी तेनी साथे भोग भोगवे
३, ए त्रण वोल मलीने एक परिचारणा कही १
कोइक देवता वीजाथी रुद्धिवंत वीजा देवता
नी देवीने वश करीने भोगवे ए प्रथम प्रकार
नथी पण पोतानी देवांगनाने भोगवे १, अने
आत्माथी विकुर्विंने भोगवे २, ए वे प्रकारछे
ए वीजा परिचारणा कही २, एरु देवता वी-
जाथी रुद्धिवंतछे तो पण अन्यदेवतानी देवीने
भोगववाने असमर्थ तेमज पोतानी देवीने पण
भोगववाने असमर्थ एटले ए वे भेद नथी पण
आत्माथी विकुर्वणा करी देवांगनाने भोगवे ३,
ए त्रीजा परिचारणा ते मैथुनसेवा कही छे ॥

अर्थः—ति० त्रण प्रकारे मे० मैथुन पं०
कळा तं० ते ज० कहुं छुं दि० देवतानुं मा०
मनुष्यनुं ति० तिर्यचनुं ॥१॥

५ पेरा (विशेषथी मैथुन विषे कहुं, हवे
सामान्यथी परूपणा करे छे.)

तिविहे मेहुणे पन्नत्ते । तं जहा ।
दिब्बे माणुस्साए तिरिक्खजोणिए ॥१॥

भावार्थः—देवताने पुर्वोक्त रीतीये त्रण प्र-
कारे मैथुन सेवा कही ते माटे ते मैथुनना
भेद कहेछे, त्रण प्रकारे मैथुन कहेल छे ते कहे
छे, देवतानुं १, मनुष्यनुं २, तिर्यचनुं ३, ए
त्रण अने नारकी नपुंसक छे तेथी तेहन
मैथुन नथी ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—त० त्रण मे० मैथुनना ग० सेवनार
छे तं० ते ज० कहुं छुं दे० देवता म० मनु-
ष्य ति० तिर्यच ॥ २ ॥

(मैथुन सेवनार कहे छे.)

तओ मेहुणं गच्छन्ति । तं जहा ।
देवा मणुस्सा तिरिक्खजोणिया ॥२॥

भावार्थः—त्रण मैथुनना सेवनारछे ते कहेछे, देवता
१, मनुष्य २, तिर्यच ३, ए त्रण भेदछे ॥२॥

અર્થ:-તં ત્રણ મેં મૈથુન સેં સેવે તં
તે જંકહું છું ઇંસ્ત્રી પુંપુરુષ નંનપુંસકા ॥૩॥
(મૈથુન સેવનારના ભેદ કહે છે.)

તઓ મેહુણં સેવન્તિ । તં જહા ।
ઇત્થી પુરિસા નપુંસગા ॥ ૩ ॥

ભાવાર્થ:-વહી ત્રણ મૈથુનના સેવનારછે, તે કહે
છે, સ્ત્રી ૧, પુરુષ ૨, નપુસક ૩, એ ત્રણ ભેદછે ॥૩॥

અર્થ:-તિં ત્રણ જોં જોગ (યોગ) પં
કહ્યા તં તે જં કહું છું મં મનયોગ વં
વચનયોગ કાં કાયયોગ ॥૧॥

૬ પેરા (મૈથુન સેવનાર યોગવાલા હોયછે
તેથી યોગની પરુપણા કહે છે.)

તિવિહે જોગે પન્નત્તે । તં જહા ।
મગજોગે વડ્જોગે કાયજોગે ॥ ૧ ॥

ભાવાર્થ:-એ ત્રણ યોગવંતછે તે માટે યોગ કહે
છે, ત્રણ પ્રકારે યોગ (તે આત્મ વીર્ય) કહેલછે
તે કહેછે, મનનો યોગ તે મનનો વ્યાપાર ૧,
વચનનો યોગ તે વચનનો વ્યાપાર ૨, કાયાનો
યોગ તે કાયાનો વ્યાપાર ૩, એ ત્રણ ભેદછે ॥૧॥

અર્થ:-એં એમ નેં નારકીને વિં વેન્દ્રિ
તેન્દ્રિ ચડરીન્દ્રિ વં વર્જીને જાં યાવત વેં
વૈમાનિકને ॥ ૨ ॥

(સામાન્યથી યોગની પરુપણા કરીછે, વિશે-
પથી નારક વિગેરે ૨૪ દંડકોમાં તે ફોરવેછે)

એવં નેરડ્યાણં વિગલિન્દિયવજ્જાણં
જાવ વેમાણિયાણં ॥ ૨ ॥

ભાવાર્થ:-એમ નારકીને ત્રણે યોગ કહેવા
અને પાંચ એકંદ્રી તથા વિગલેંદ્રી એ આઠ વર્જિને
વૈયાનીક મુથી ત્રણ-યોગ કહેવા, પાંચ સ્થાવર
ને એક કાયાનો યોગ છે અને ત્રણ વિગલેંદ્રી
ને વચન અને કાયા એ વે યોગ છે ॥ ૨ ॥

અર્થ:-તિં ત્રણ ભેદે પં ફોરવતું પં ક-
હું તં તેં જં કહું છું મં મનયોગ વં

વચનપ્રયોગ કાં કાયપ્રયોગ ॥૧॥

૭ પેરા (મન વિગેરેના સંવંધને લીધે આ
પ્રયોગની વાત કહે છે.)

તિવિહે પઓગે પન્નત્તે । તં જહા । મ-
ળપ્પઓગે વડ્પ્પઓગે કાયપ્પઓગે ॥૧॥

ભાવાર્થ:-ત્રણ પ્રકારે પ્રયોગ પ્રયુજવા રૂપ
તે ફોરવતું કહેલ છે તે કહે છે મનપ્રયોગ ૧,
વચન પ્રયોગ ૨, કાય પ્રયોગ ૩, ॥ ૧ ॥

અર્થ:-જં જેમ જોં યોગ વિં વિગલેં-
ન્દ્રિ વં વર્જીને જાં યાવત વેં વૈમાનિક
લગે તં તેમ પં પ્રયોગ વિં વહી ॥ ૨ ॥

જહા જોગે વિગલિન્દિયવજ્જાણં જા-
વ વેમાણિયાણં તહા પઓગે વિ ॥ ૨ ॥

ભાવાર્થ:-જેમ યોગ તેમ પ્રયોગ પણ જાણવા,
પાંચ સ્થાવર અને ત્રણ વિગલેંદ્રી એ આઠ વર્જિને
વૈયાનીક મુથી એ ત્રણે પ્રયોગ કહેવા, ॥૨॥

અર્થ:-તિં ત્રણ ભેદે કં કરણ ક્રિયા કરે
તે પં કહી તં તે જં કહું છું મં મને કરે તે
વં વચને કરે તે કાં કાયાએ કરે તે ॥ ૧ ॥

૮ પેરા-(મન વિગેરે સંવંધને લીધે કરણ-
ની વાત કહે છે)

તિવિહે કરણે પન્નત્તે । તં જહા ।
મળકરણે વડ્કરણે કાયકરણે ॥ ૧ ॥

ભાવાર્થ:-ત્રણ પ્રકારેકરણ તે જેહથી ક્રિયાદિ
કરીએ તે કહેછે, મન કરણ તે મનથી પાપપુન્ય કરે
૧, વચન કરણ તે વચનથી પાપ પુન્ય કરે ૨,
કાયા કરણ તે કાયાથી પાપ પુન્ય કરે ૩, ॥૧॥

અર્થ:-એં એમ વિં વિગલેન્દ્રિ વં વર્જીને
જાં યાવત વેં વૈમાનિક લગે ॥ ૨ ॥

એવં વિગલિન્દિયવજ્જં જાવ વે-
માણિયાણં ॥ ૨ ॥

ભાવાર્થ:-એમ જ પાંચ સ્થાવર અને ત્રણ વિગલેંદ્રી

ए आठ वर्जिने वैमानिक सुधी त्रण करणछे, पांच स्थावरमां एक काम करणछे, त्रण विगलें द्रीमां वचन अने काया ए वे करण छे ॥ २ ॥
अर्थः—ति० त्रण क० करण प० कथा तं० ते ज० कहुंछुं आ० छ कायने हणवी ते सं० छकायने हणवानो संकल्प करवो ते स० छकाय संताप करवो ते ॥ ३ ॥

(करणना वीजी रीते त्रण प्रकार बतावेछे.)

तिविहे करणे पन्नत्ते । तं जहा ।
आरम्भकरणे संरम्भकरणे समारम्भ-
करणे ॥ ३ ॥

भावार्थः—वली त्रण प्रकारे करण कहेल छे ते कहे छे, आरंभ करण ते छकायना जीवने हणवुं १, संरंभ करण ते पृथव्यादीक छ कायना जीवने हणवानो संकल्प करवो २, समारंभ ते छकायना जीवने संताप करवो ३, ॥ ३ ॥

अर्थः—नि० आंतरा रहित जा० यावत व० वैमानिक लगे २४ दंडके असंजीने पाछल्या भवनी अपेक्षाए ॥ ४ ॥

(आ आरंभादिक त्रणे करण नारकीथी मांडीने वैमानिक सुधी होय छे ते बतावे छे)

निरन्तरं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः—ए त्रण करण आंतरा रहित वैमा-
नीक सुधी चौबीस दंडके कहेवा अने असंजीने पाछला भवनी अपेक्षाए होय, ॥ ४ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० धानके जी० जीव अ० अल्प थोडा आ० आउखाने क० कर्म प० बांधे तं० ते ज० कहुं छुं. पा० जीवने अ० हणतो भ० थको सु० जुहुं व० बोलतो भ० थको त० तथा रु० रूप शुद्ध स० क्षमा-
वंत वा० अथवा मा० हिंसा रहित वा० अथवा अ० सचित्त अ० एपणा शुद्ध नहीं एहवे अ० अन्न पा० पाणी खा० सुखडी

सा० तंबोलादिक प० आपतो भ० थको इ० ए ति० त्रण ठा० धानके करीने जी० जीव अ० अल्प आउपुं क० कर्म प० बांधे ॥ १ ॥

९ पेरा—(आरंभादिक करणनुं तथा वीजी क्रियानुं फळ बतावे छे)

तिहिं ठणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए
कम्मं पगरेन्ति । तं जहा । पाणे अइ-
वाइत्ता भवइ मुसावइत्ता भवइ त-
हारुवं समणं वा माहणं वा अफासु-
एणं अणेसुणिज्जेणं असणपाणखाइ-
मसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ । इवेए-
हिं तिहिं ठणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए
कम्मं पगरेन्ति ॥ १ ॥

भावार्थः—आरंभादी करणनुं फळ कहे छे, त्रण स्थानके करी जीव अल्प ते थोडुं आउखुं कर्म बांधे अने म्होडुं आयुष्य न पामे ते कहे छे, जीवने हणतो १, जुहुं बोलतो २, तथा रूप शुद्ध श्रमण माहण हिंसारी निवर्त्या एहवा साधुने अफासुने सचित्त जीव सहित एपणा शुद्ध नहीं अल्पनीक अचित्त छे पण असुद्धतुं अन्न पाणी मेवो सुखवास ए चार प्रकारना आहार बोहरावे ते आपे ३, ए त्रण स्थानके करी जीव अल्प आयुष्य कर्म बांधे एटले थोडुं आयुष्य बांधे, इहां चार गती मांडी कई गतीनुं अल्प आयुष्य बांधे ए केवली गम्य छे ॥ १ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० धानके जी० जीव दी० थोडुं आ० आउपाने क० कर्म मते प० बांधे तं० ते ज० कहुंछुं. नो० नहीं पा० जीव अ० हिंसयां भ० करे नो० नहीं सु० जुहुं भ० बोलतो थको त० तथा रु० रूप शुद्ध स० साधु वा० अथवा मा० दयावंतने वा० अथवा फा० अचित्त ए० निरवद्य अ० अन्न

पा० पाणी खा० सुपडी सा० तंबोल प०
आपतो भ० थको इ० ए ति० त्रण ठा०
थानके जी० जीव दी० मोटुं आ० आऊपा
क० कर्म प० बांधे ॥ २ ॥

(अल्पायुशना कारण कहां, हवे दीर्घायु-
गना उपर कहांथी जुदा कारणो छे ते बतावेछे)

तिहिं ठणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए
कम्मं पगरेन्ति । तं जहा । नो पाणे
अइवाइत्ता भवइ नो मुसावइत्ता भ-
वइ तहारूवं समणं वा माहणं वा
फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइ-
मसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ । इवेएहिं
तिहिं ठणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए
कम्मं पगरेन्ति ॥ २ ॥

भावार्थः—तेमज वळी त्रण स्थानके जीव लांबु
आयुष्य कर्म बांधे ते कहे छे, जीव हिंसा नहीं
करवाथी १, जुटुं नहीं बोलवाथी २, तथा रूप
श्रमण माहणने फामुक ते अचित्त एपणीक
शुद्धमान निर्वध्य अन्न पाणी मेवा मुपवास ए
चार प्रकारना आहार बोहरावे एटले आपे ३,
ए त्रण स्थानके जीव दीर्घ (लांबु) आयु-
ष्य बांधे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके जी० जीव
अ० दुपनुं दी० मोटुं आ० आऊपा क० कर्म
प० बांधे त० ते ज० कहुंछुं पा० जीव अ०
हीस्यां भ० करतो मु० मृषावाद व० बोलतो
भ० थको त० तथा रू० रूप (शुद्ध) स०
साधु वा० अथवा मा० दयावंतने वा० अथवा
ही० हीणुं कुचन बोले नि० जाति उघाडे खि०
मने करी निंदे ग० दोष उघाडे लोक समक्ष
अ० साधुने देखाने उभो न थाय अ० कोई
जातने अ० माटो अ० अप्रीतिना करणहार
अ० अन्न वा० अथवा पा० पाणी वा० अथवा

खा० सुपडी वा० अथवा सा० तंबोल वा०
अथवा प० आपनारो भ० थाय इ० ए ति०
त्रण ठा० थानके जी० जीव अ० माटुं दी०
मोटुं आ० आऊपा क० कर्म प० बांधे (कहुं
आ तुवडाथी नागसिरिनी माफक) ॥ ३ ॥

(उपर दीर्घायुशना कारणो बताव्या ते
शुभ अने अशुभ बने प्रकारनुं होय तेथी
पहेला अशुभ दीर्घायुशना कारणो बतावेछे)

तिहिं ठणेहिं जीवा असुभदीहाउ-
यत्ताए कम्मं पगरेन्ति । तं जहा ।
पाणे अइवाइत्ता भवइ मुसावइत्ता भ-
वइ तहारूवं समणं वा माहणं वा ही-
लित्ता निन्दित्ता खिसित्ता गरहि-
त्ता अवमाणित्ता अन्नयरेणं अमग्गुन्नेणं
अपीइकारणं असणं वा पाणं वा
खाइमं वा साइमं वा पडिलाभेत्ता भ-
वइ । इवेएहिं तिहिं ठणेहिं जीवा
असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेन्ति
॥ ३ ॥

भावार्थः—वळी त्रण स्थानके जीव अशुभ
ते दुःखनुं लांबु आयुष्य कर्म बांधे ते कहे छे,
जीव हिंसा करवाथी १, जुटुं बोलवाथी २,
तथा रूप श्रमण माहणने वचने करी हिलना
करतो निंदे ने जाती प्रमुखना दोष उघाडे,
खीसना ते मने करीने द्वेष राखे, गरहा ते लोक
समक्ष दोष प्रगट करे, अपमान करे, ते साधुने
देखी उभो न थाय तथा अन्यतर कोई जातीनुं
अमनोज्ञ, रूपथी माटुं, अप्रीति, असंतोषनी
करनार नागेश्री ब्राह्मणीए साधुने कडवा तुंव-
डानुं शाक आप्युं एहनुं अशाता कारी अन्न
पाणी मेवा मुखवास ए चार प्रकारना आहार
बोहरावे ३, ए त्रण स्थानके करी जीव अशुभ

लांबुं आयुष्य कर्म वांधे ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके जी० जीव सु० भलु दी० मोहुं आ० आउपा क० कर्म प० वांधे त० तेज० कहुंहुं नो० नही पा० जीव अ० हीस्यां भ० करे नो० नही मु० जुहुं व० बोलतो भ० थको त० तथा रु० रूप (शुद्ध) स० साधु वा० अथवा मा० दयावंत वा० अथवा व० वांद्दे न० नमस्कार करे स० सत्कारे स० सन्मान करे क० कल्याणकारी मं० मंगलकारी दे० देव चे० ज्ञानवंत करीए तेम प० सेवा करवा योग्य म० मनोज्ञ पी० प्रीतकारी अ० अन्न पा० पाणी खा० सुपडी सा० मेवो प० आपतो भ० थको इ० ए ति० त्रण ठा० थानके जी० जीव सु० सुभ दी० मोहुं आ० आउखा क० कर्मने प० वांधे ॥४॥

(शुभ द्विर्वायुशना कारणो वतावेछे)

तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउय-
त्ताए कम्मं पगरेन्ति । तं जहा । नो
पाणे अइवाइत्ता भवइ नो सुसाव-
इत्ता भवइ तहारूवं समणं वा माहणं
वा वन्दित्ता नमंमित्ता सक्कारेत्ता स-
म्माणेत्ता कल्ल्राणं मङ्गलं देवथं चेइयं
पज्जुवासित्ता मणुत्तेणं पीइकारणं
असणपाणखाइमसाइमेणं पडिला-
भेत्ता भवइ । इत्थेएहिं तिहिं ठाणेहिं
जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरे-
न्ति ॥ ४ ॥

भावार्थः—बळी त्रण स्थानके जीव शुभते सुखनुं लांबुं आयुष्य कर्म वांधे ते कहे छे, जीव हिंसा नहीं करवाथी ?, जुहुं नहीं बोलवाथी?, तथा रूप श्रमण माहणने वंदन करे, नमस्कार करे, बह्नादीकथी सत्कार दीए, नन्मान ते आ-

सन आमंत्रे अने हे स्वामी ? तमे कल्याण (ते संपत्ती आपनार) कारी छो, मंगळ (बिघ्न निवारण करनार) कारी छो, धर्म देव छो, ज्ञानवंत छो, पुजवा योग्य छो इत्यादी स्तुति विनयकारी साधुनी सेवाकरे, बळी मनोज्ञ प्रीतीकारी अन्न पाणी मेवो मुखवास ए चार प्रकारना आहार प्रति लाभे ३, ए त्रण स्थान के करी जीव शुभ (सुखनुं) लांबुं आयुष्य कर्म वांधे, भरत चक्रवर्तिए पुर्व भवे पांचसो साधुने आहर आणी आप्यो तेना प्रतापे भरत चक्रवर्ति थयो तथा मरुदेवी मातानी परे सुखनुं लांबुं आयुष्य वांधे ॥ ४ ॥

अर्थः—त० त्रण गु० गुप्ती पं० कही त० ते ज० कहुंहुं म० मन गु० गुप्ती व० वचन गुप्ती का० काया गुप्ती ॥ ? ॥

१० पेश (प्राणातिपात न करवुं विगेरे गुप्ती होयतो थायछे माटे गुप्ती कहेछे)

तओ गुप्तीओ पन्नत्ताओ । तं जहा । मणगुप्ती वइगुप्ती कायगु-
त्ती ॥ १ ॥

भावार्थः—जीव हिंसादी न करे ते गुप्ती छे ते माटे गुप्ती कहे छे, त्रण प्रकारे गुप्ती कहेल छे ते कहे छे, मनगुप्ती ते माटा योगथी मन रोकवुं ?, वचन गुप्ती ते पापकारी वचन न बोलवुं २, काय गुप्ती ते काया पापमां प्रवर्तावे नहीं ॥ ? ॥

अर्थः—सं० संयमवंत म० मनुष्यने त० त्रण गु० गुप्ती पं० कही तं० ते ज० कहुंहुं म० मन व० वचन का० काया ॥ २ ॥

(आ गुप्तीओ २४ दंडकमां विचारीएतो फक्त मनुष्यनेज होय ने ते पण संयत मनुष्यने होय पण नारक विगेरेने न होय. तं वतावेछे)

संजयमणुस्साणं तओ गुप्तीओ प-

न्नत्ताओ । तं जहा । मणवइका-
यगुत्ती ॥ २ ॥

भावार्थः—चौविस दंडक मांही संयमवंत
मनुष्येने त्रण गुप्ती कहेल छे ते कहे छे, मन-
गुप्ती १, वचन गुप्ती २, कायगुप्ती ३, ए त्रण
भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः—त० त्रण अ० पापने योगे प्रवर्ते ते
पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं म० मने करी
पाप बांधे ते व० वचने पाप बांधे ते का०
कायाए पाप बांधे ते ॥ ३ ॥

(गुप्तीओ कही ह्वे अगुप्ती कहे छे)

तओ अगुत्तीओ पन्नत्ताओ । तं
जहा । मणअगुत्ती वइअगुत्ती काय-
अगुत्ती ॥ ३ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे अगुप्ती कहेल छे ते
कहे छे, मन अगुप्ती ते मनथी पाप बांधे १,
वचन अगुप्ती ते वचने करी पाप बांधे २, काय
अगुप्ती ते कायाए पाप बांधे ३, ए त्रण भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः—ए एम ने० नारकीने जा० यावत
थ०स्तानितकुमारने प०पंचेद्रि ति०तिर्यंच जो०
योनीने अ० असंजति म०मनुष्यने वा० वाण-
व्यंतरने जो० ज्योतिषीने वे० वैमानिकने अ-
गुप्ती होय ॥ ४ ॥

(ह्वे विशेषथी २४ ए दंडकना संबधमां
अगुप्तीयो विशेषे कहे छे)

एवं नेरइयाणं जाव थणियकुमाराणं
पञ्चिन्द्रियतिरिक्खजोणियाणं असंजय-
मणुस्साणं वाणमन्तराणं जोइसियाणं
वेमाणियाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः—एम नारकी, दस भवनपती ति-
र्यंच पंचेद्री, असंजती मनुष्य, वाणव्यंतर जो
तिषी, वैमानिक देवता ए सर्वेने त्रणे अगुप्ती

होय, पांच स्थावरने एक काय अगुप्ती छे, त्रण
विगलेंद्रीने वचन अने काय ए वे अगुप्ती छे ॥ ४ ॥

अर्थः—त० त्रण द० दण्ड पं० कहा तं०
ते ज० कहुं छुं म० मने करी कर्म बांधायते व०
वचने करी कर्म बांधते का० कायाए करी
पाप लागेते ॥ १ ॥

११ पेरा—(अगुप्तीयो पोताने अने पार-
काने दंडभूत थाय छे तेथी दंडनी परुपणा
कहे छे)

तओ दण्डा पन्नत्ता । तं जहा । म-
णदण्डे वइदण्डे कायदण्डे ॥ १ ॥

भावार्थः—अगुप्ती वंतने त्रण दंड (कर्म दं
डाय ते) कहेल छे ते कहे छे, मन दंड ते म-
नथी पाप बांधवे दंडाय १, वचन दंड ते व-
चने पाप बांधवे दंडाय २, काय दंड ते कायाए
पाप बांधवे दंडाय ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—वि० विगलेंद्रिय व० वर्जिने जा०
यावत वे० वैमानिक लगे ॥ २ ॥

विगलिन्द्रियवज्जं जाव वेमाणि-
याणं ॥ २ ॥

भावार्थः—नारकीने त्रण दंड कहेल छे ते
कहेछे, मन दंड १, वचन दंड २, काय दंड ३,
एम एकेंद्री अने त्रण विगलेंद्री वर्जिने वैमानिक
सुधी त्रण दंड छे, एकेंद्रीने एक काय दंड छे,
त्रण विगलेंद्रीने वचन अने काय ए वे दंड छे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे ग० निंदा पं० क-
ही तं० ते ज० कहुं छुं म० मने करी वे० एक
आत्माने तथा परने ग० निंदा व० वचने वे०
एक ग० निंदा का० कायाए करी वे० एक
ग० निंदा पा० पाप क० कर्मने अ० अण
करवे गर्हणा होय ॥ १ ॥

१२ पेरा (दंडछे ते निंदावा योग्यछे
तेथी गहा विशेषे कहेछे.)

तिविहा गरहा पन्नत्ता । तं जहा ।
मणसा वेगे गरहइ वयसा वेगे गरहइ
कायसा वेगे गरहइ पावाणं कम्माणं
अकरणयाए ॥ १ ॥

भावार्थः—दंड ते गर्हणीय एटले निंदनीक
छे ते माटे त्रण प्रकारे गर्हा कहेल छे ते कहे
छे, एक मनथी आत्माने तथा परने
गर्हे एटले पापकर्म भुंडुं छे तेथी हवे हुं पाप-
कमे नहीं करु एहवो पोताना म-मां पस्तावो
करे तथा बीजाने पण कहे १, एक पोताना
मनमां पापकर्मनो पस्तावो करतो नथी पण
फक्त वचनथीज आत्माने तथा परने गर्हे (निंदे)
२, एक पाप कर्म अणकरवे कायाए ग्रहे ३,
ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—अ० अथवा ग० गर्हणा ति० त्रण
पं० कही तं० ते ज० कहुंछु दी० घणा पं०
एक अ० काळनी ग० गर्हणा करे द० थोडा
पे० एक अ० काळनी ग० गर्हणा करे का०
कायाने पे० एक पं० वर्तमान काळे गर्हणा
करे पा० पाप क०कर्म अ० अणकरवेकरी ॥२॥

अहवा गरहा तिविहा पन्नत्ता । तं
जहा । दीहं पेगे अळं गरहइ हस्मं
पेगे अळं गरहइ कायं पेगे पडिसाह-
रइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए ॥२॥

भावार्थः—बळी त्रण प्रकारे गर्हा कहेल छे
ते कहे छे. एक घणा काळनी गर्हा करे एटले
घणां काळ उपर पाप कर्म करेल होय तेहनो
पस्तावो करे १, एक थोडा काळनी गर्हा करे २,
एक वर्तमान काळे पाप अणकरवे कायाने संवरी
(रोकती) राखे ३, ए त्रण प्रकारे गर्हा कही ॥२॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे पं० पचखाण पं०
कहया तं० ते ज० कहुंछुं म० मनेकरी वे०

एक पं० पाप त्यजे व० वचनेकरी वे० एक
पं० पाप निषेधे का० कायाए करी वे० एक
पं० पाप न करे ॥ १ ॥

१३ पेरा (पचखाण विषे कहेछे)

तिविहे पचखाणे पन्नत्ते । तं जहा ।
मणसा वेगे पचखाइ वयसा वेगे प-
चखाइ कायसा वेगे पचखाइ ॥१॥

भावार्थः—अनागत (भविष्य) काळनां
पचखाण कहे छे, त्रण प्रकारे पचखाण क-
हेल छे, ते कहे छे, एक मनथी पचखाण करे
छे १, एक वचनथी पचखाण करे छे २, एक
कायाथी पाप कर्म अणकरवे पचखाण करे
छे ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम ज० जेम ग० गर्हणाकरी
त० तेम पं० पचखाणने विपे वि० पण दो०
वे आ० आलावा भा० जाणवा ॥ २ ॥

एवं जहा गरहा तहा पचखाणे वि
दो आलावगा भाणियवा ॥ २ ॥

भावार्थः—एम जेम ग्रहणा कहेल छे तेम पच-
खाणने विपे पण वे आलावा कहेवा. पाप
कर्मनुं पचखाण ते परोपकारी छे जने वृक्ष
पण परोपकारी छे ते माटे वृक्षनुं द्रष्टांत कहे छे ॥२॥

अर्थः—त० त्रण रु० वृक्ष पं० कया तं०
ते ज० कहुंछुं पं० पत्र सहित एक पु० एक
फुल सहित फ० एक फल सहित ॥ १ ॥

१४ पेरा (पाप कर्मनुं पचखाण करनारा
परोपकारी होयछे तेथी उदाहरण रूप वृक्षोनुं
तथा तेना उपनय पुरुषोनी परुषणा करेछे)

तओ रुक्खा पन्नत्ता । तं जहा । प-
त्तोवए पुक्कोवए फलोवए ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे वृक्ष कहेल छे ते कहे
छे, एक पत्र सहित १, एक फुल सहित २, एक
फल सहित ३ ॥ १ ॥

अर्थः—ए० वृक्षनी ए० परे त० त्रण पु० पुरुष जा० जात पं० कही तं० ते ज० कहेंछुं पं० पत्र ३० सहित रु० वृक्ष स० सरिषाते विशेष उपगारी वचनादिके सूत्र सिद्धांत संभळावे पु० फुल उ० सहित रु० वृक्ष स० सरिषा ते अर्थ धर्मना १, स्तान पु० फल सहित रु० वृक्ष स० सरिषा ते सूत्र अर्थ वेना आपनारा ॥ २ ॥

एवमित्थं तत्रो पुरिसज्जाया पन्नत्ता ।

तं जहा । पत्तावगुरुखसभाणे पुष्पो-
खिंधसंभलावगुरुखसभा-
ः ॥ २ ॥

अर्थः—ए० वृक्षनी परे त्रण प्रकारना लो-
कोत्तर पुरुष कहेल छे ते कहे छे, पत्र सहित
वृक्ष सरिषा ते विशेष उपकारी वचनादिक
सूत्र संभळावे १, फुल सहित वृक्ष सरिषा ते
धर्म अर्थना आपनार २, फल सहित वृक्ष सरिषा
ते सूत्रार्थ वेना आपनार ३, ए त्रण प्रकारना
पुरुष कहा ॥ २ ॥

अर्थः—त० त्रण पु० पुरुष जा० जाती पं०
कही तं० ते ज० कहेछे ना० नाम पु० पुरुष
ते नाम ठा० थापना पु० पुरुष ते पुरुषनी छवी
द० द्रव्य पु० पुरुष ते पुरुषपणे उपजशेते ॥१॥

१५ परा (हवे पुरुषनो प्रस्ताव होवाथी
पुरुष विशेषे सात सूत्रो कहेछे)

तत्रो पुरिसज्जाया पन्नत्ता । तं ज-
हा । नामपुरिसे ठावणपुरिसे द्वपु-
रिसे ॥ १ ॥

भावार्थः—पुरुषना प्रस्तावथी पुरुषनुं लक्षण
कहे छे, त्रण पुरुषनी जाति कहेलछे ते कहेछे,
एक नाम पुरुष ते पुरुषनुं नाम १, एक स्थापना
(आकार)पुरुष २, एक द्रव्य पुरुष ते(भविष्यमां)
पुरुषपणे उपजशे ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—त० त्रण पु० पुरुषनी जा० जाती
पं० कही तं० ते ज० कहेंछुं ना० ज्ञान स-
हित पु० पुरुष दं० समकितवंत पु० पुरुष
च० चारित्र सहित पु० पुरुष ॥ २ ॥

तत्रो पुरिसज्जाया पन्नत्ता । तं ज-
हा । नाणपुरिसे दंसणपुरिसे चरित्त-
पुरिसे ॥ २ ॥

भावार्थः—वळी त्रण भाव पुरुषनी जाति
कहेल छे ते कहे छे, ज्ञान पुरुष ते ज्ञान सहीत
१, दर्शन पुरुष ते समकित सहित २, चारित्र
पुरुष ते चारित्र सहित (३), ए त्रण भेद छे।२॥

अर्थः—त० त्रण पु० पुरुष जा० जाती पं०
कही तं० ते ज० कहेंछुं वे० वेद (पुरुष स्त्री
नपुंसक) पु० पुरुष (पुरुष वेदने अनुभवे
ते चि० दाढी मुछ सहित स्त्री पु० पुरुष वेप
धरे अ० पुरुष नामे बोलावे ते पु० पुरुष
घडो कुओ इत्यादि ॥ ३ ॥

तत्रो पुरिसज्जाया पन्नत्ता । तं ज-
हा । वेदपुरिसे चिन्धपुरिसे अभिलाव-
पुरिसे ॥ ३ ॥

भावार्थः—वळी त्रण जातिना पुरुष कहेल
छे ते कहे छे, वेद पुरुष ते पुरुष वेदने अनुभवे
ते स्त्री पुरुष नपुंसक ए त्रणमां थाय छे १,
चीन्ह पुरुष ते दाढी मुछ सहित स्त्री पुरुष वेप धरे
पावइवत २, अभिलाष पुरुष ते पुरुषने नामे
बोलाय ते घडो, कुवो, आवो इत्यादि ३, ए
त्रण भेद छे, ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण पु० पुरुष पं० कहा तं०
ते ज० कहेंछुं उ० एक उत्तम पु० पुरुष म०
मध्यम पु० पुरुष ज० जघन्य पु० पुरुष ॥४॥

तिविहा पुरिसा पन्नत्ता । तं जहा ।
उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा जहन्नपु-
रिसा ॥ ४ ॥

भावार्थः—वली-त्रण जातिना पुरुष कहेल छे ते कहेछे, उत्तम पुरुष १, मध्यम पुरुष २, जघन्य (नानो) पुरुष ३, ए त्रण भेदछे ॥४॥

अर्थः—उ० उत्तम पु० पुरुष ति० त्रण भेदे पं० कथा तं० ते ज० कहं हं ध० धर्मना दातार पु० पुरुष भ्ने० भोगना भोगवनार पु० पुरुष क० आरंभकारी पु० पुरुष ध० धर्म पु० पुरुष अ० अरिहंतदेव भो० भोग पु० पुरुष च० चक्रवर्ति क० कर्म पु० पुरुष वा० वासुदेव ॥५॥

उत्तमपुरिसा तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । धम्मपुरिसा भोगपुरिसा कम्म-पुरिसा । धम्मपुरिसा अरहन्ता भोगपुरिसा चक्रवट्टी कम्मपुरिसा वासु-देवा ॥ ५ ॥

भावार्थः—उत्तम पुरुष त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, एक धर्म पुरुष ते क्षायिक समकि-ना उपार्जनार १, बीजा भोग पुरुष ते मनोहर भोगना भोगवनारा २, बीजा कर्म पुरुष ते महा आरंभना करनारा नर्कमां जानारा ३, ए त्रण भेद छे, धर्म पुरुष ते अरिहंत १, भोग पुरुष ते चक्रवर्ति २, कर्म पुरुष ते नियाणा बंध वासुदेव ३, ए त्रण भेद छे ॥ ५ ॥

अर्थः—म० मध्यम पु० पुरुष ति० त्रण भेदे पं० कथा तं० ते ज० कहं हं उ० उग्र-कुलना भो० भोगकुलना रा० राजन्यकुलना ॥६॥

मज्झिमपुरिसा तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । उग्गा भोगा राइत्ता ॥ ६ ॥

भावार्थः—मध्यम पुरुष त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, उग्र कुलना ते रुषभदेवे कोटवाळ पणे स्थाप्या १, भोग कुलना ते गुरु स्थानके स्थाप्या २, राजन्य कुलना ते क्षत्रीय पोताना सरखा ३, ए त्रण भेद छे ॥ ६ ॥

अर्थः—ज० जघन्य पु० पुरुष ति० त्रण

प्रकारना पं० कथा तं० ते ज० कहं हं दा० दास भा० मुलये काम करे ते भा० कामाणीमां चौथो भाग लइ काम करे ते ॥७॥

जहन्नपुरिसा तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । दासा भायगा भाइलगा ॥७॥

भावार्थः—जघन्य पुरुष त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, दास ते दासीना पुत्र १, भूतक ते मुख्यथी काम करे २, चौथो भाग भागलइ काम करे ३, ए त्रण भेद छे ॥ ७ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे म० मच्छ पं० कथा तं० ते ज० कहं हं अ० इंडाथी उपन्या ते पो० वस्त्र वीटिया जेणे ते सं० गर्भ विना उपजे ते ॥ १ ॥

१६ पेरा (मनुष्य पुत्रपना त्र० प्रकार कथा हवे सामान्यथी तिर्यचोता जलन-विना त्रण प्रकार कहे छे.)

तिविहा मच्छा पन्नत्ता तं जहा । अण्डया पोयया मं पुंसिप्रा ॥ १ ॥

भावार्थः—ए मनुष्य त्रण प्रकारे कहेल छे, त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, अण्डया पोयया मं पुंसिप्रा १, पोतज ते वस्त्र वीटिया जेणे ते सं० गर्भ विना उपजे ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—अ० अण्डज म० मच्छ ति० त्रण प्रकारे पं० कथा तं० ते ज० कहं हं इ० स्त्री पु० पुरुष न० नपुंसक ॥२॥

अण्डया मच्छा तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । इत्थी पुरिमा नपुंसगा ॥ २ ॥

भावार्थः—अण्डज मच्छ त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहेछे, स्त्री १, पुरुष २, नपुंसक ३ ॥ २ ॥

अर्थः—पो० पोतज म० मच्छ ति० त्रण भेदे पं० कथा तं० ते ज० कहं हं इ० स्त्री पु० पुरुष न० नपुंसक ॥३॥

पोयया मच्छा तिविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥३॥

भावार्थः—एमज पोतज मच्छना पण त्रण भेद ते स्त्री, पुरुष, नपुंसक, समुच्छिम मच्छ एक नपुंसकज छे तेमांही स्त्री पुरुषपणुं नथी ॥३॥

अर्थः—ति० त्रण प्रकारे प० पंखी प० कथा तं० ते ज० कहुं छुं अ० हंस प्रमुख प० वागुल प्रमुख सं० खंजन प्रमुख ॥४॥

तिविहा पक्खी पन्नत्ता । तं जहा
अण्डया पोयया समुच्छिमा ॥ ४ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे पक्षी कहल छे ते कहे छे, अंडज ते हंस प्रमुख १, पोतज ते वागुल प्रमुख २, समुच्छिम ते खंजन प्रमुख ए सर्व पंचेदो ३, ए त्रण भेद छे ॥ ४ ॥

अर्थः—अ० अंडज प० पंखी ति० त्रण प्रकारे पं० कथा तं० ते ज० कहुं छुं इ० स्त्री पु० पुरुष न० नपुंसक ॥५॥

अण्डया पक्खी तिविहा पन्नत्ता ।
तं जहा । इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥५॥

भावार्थः—अंडज पक्षी त्रण प्रकारे कहलछे ते कहे छे, स्त्री १, पुरुष २, नपुंसक ३ ॥५॥

अर्थः—पो० पोतज प० पंखी ति० त्रण प्रकारे पं० कथा तं० ते ज० कहुं छुं इ० स्त्री पु० पुरुष न० नपुंसक ॥६॥

पोयया पक्खी तिविहा पन्नत्ता । तं
जहा । इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥६॥

भावार्थः—एमज पोतज पक्षीना पण त्रण भेद ते स्त्री, पुरुष, नपुंसक, ए त्रण भेदछे ॥६॥

अर्थः—ए० एम ए० एणे अ० आलावे उ० हेर चाले ते वि० पण भा० जाणवा (७-९) ॥७॥

एवं एणं अभिलावेणं उरपरिसप्पा
वि भाणियवा [७-९] ॥ ७ ॥

भावार्थः—एम एणे अभीलावे करी हैया भेर चाले ते उरपरी सर्प ते पण त्रण प्रकारे कहेवा ॥ ७ ॥

अर्थः—शु० शुजाए चाले ते वि० पण भा० जाणवा नोळीया प्रमुख (१०-१२) ॥८॥

भुयपरिसप्पा वि भाणियवा ॥
[१०-१२] ॥ ८ ॥

भावार्थः—एमज शुजाथी चाले ते भुजपरी सर्प ते पण त्रण प्रकारे जाणवा ॥ ८ ॥

अर्थः—ए० एम चे० वळी ति० त्रण भेदे इ० स्त्रीओ पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं ति० तिर्यचनी जो० योनीनी इ० स्त्रीओ म० मनुष्यनी इ० स्त्रीओ दे० देवतानी इ० स्त्रीओ

१७. एवं चेत्र तिविहाओ इत्थीओ पन्नत्ताओ । तं जहा । तिरिक्खजोणित्थीओ मगुस्सित्थीओ देवित्थीओ

भावार्थः—एवीज गीते त्रण प्रकारनी स्त्री कहेअछे ते कहे छे, तिर्यचनी स्त्री १, मनुष्यनी स्त्री २, देवनी स्त्री ३, ए त्रण भेद छे.

अर्थः—ति० तिर्यचनी जो० योनी नी इ० स्त्रीओ ति० त्रण प्रकारे पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं ज० माछलीओ थ० गाय प्रमुख ख० पंखीणीओ ॥११॥

१८. पेरा (तिर्यचना त्रण प्रकार कथा, ह्वे स्त्री पुरुष नपुंसकना त्रण प्रकार कहे छे.)

तिरिक्खजोणित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । जलचरीओ थलचरीओ खहचरीओ ॥ १ ॥

भावार्थः—तिर्यचनी स्त्री त्रण प्रकारे कहलछे, जलचरी ते माछली प्रमुख १, थलचली ते गाय भेंस घोडी प्रमुख २, खचरी ते चकली, हंगली, मोरली प्रमुख ३, ए त्रण भेदछे, ॥१॥

अर्थः—म० मनुष्यनी इ० स्त्रीओ ति० त्रण भेदे पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं क० भरत

ऐरवतः महाविदेह क्षेत्रनी अ० त्रीस अकर्म भु-
मिनी अ० छप्पन अंतर द्वीपनी ॥२॥

मगुस्सित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ता-
ओ । तं जहा । कम्मभूमियाओ अ-
कम्मभूमियाओ अन्तरहीवियाओ ॥२॥

भावार्थः—मनुष्यनी स्त्री त्रण प्रकारे कहेल
छे ते कहे छे, असी ते तरवार प्रमुख शस्त्र
वांधीने आजीवीका करे १, मसी ते लेखण
रुखनाइए लखवानी आजीविका करे २,
कृषी ते कोस, कोदाळी, पावडो प्रमुखथी
खेतीनो धंधो करी आजीवीका करे ३, ए
त्रण प्रकारे आजीवीका करे ते पांच भरत,
पांच इरवत, पांच महावीदेह ए पंनर क्षेत्रना कर्म
भूमी मनुष्यनी स्त्री १, पुर्वोक्त त्रण प्रकारनां
कर्म रहित अने दश प्रकारनां कल्प वृक्षेकरी जीवे
ते पांच हेमवय, पांच एरणवय, पांच हरिवास,
पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु, पांच उत्तरकुरु,
ए त्रीस क्षेत्रनां अकर्म भूमी युगलीयां मनु-
ष्यनी स्त्री २, छप्पन अंतर द्विपनां युगलीया
मनुष्यनी स्त्री ३, ए त्रण भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे पु० पुरुष पं० कथा
तं० ते ज० कहंछं ति० तिर्यच जो० योनिना
पु० पुरुष म० मनुष्य पु० पुरुष दे० देवता
पु० पुरुष ॥३॥

तिविहा पुरिसा पन्नत्ता । तं जहा ।
तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा
देवपुरिसा ॥ ३ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारना पुरुष कहेलछे, ति-
र्यच योनिना पुरुष १, मनुष्य पुरुष २, देव-
पुरुष ३, ए त्रण भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० तिर्यच जो० योनिना पु० पु-
रुष ति० त्रण प्रकारे पं० कथा तं० ते ज०
कहंछं ज० माललां य० हाथी स० पंखीया ॥४॥

तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा प-
न्नत्ता । तं जहा । जलचरा थलचरा
खहचरा ॥ ४ ॥

भावार्थः—तिर्यच योनिना पुरुष त्रण प्रकारे
कहेलछे, जलचर पुरुष ते मच्छ प्रमुख १, थल
चर पुरुष ते हाथी, घोडा प्रमुख २, खेचर
(पक्षी) पुरुष सुडा, हंस, मोर प्रमुख ३, ए
त्रण भेद छे ॥ ४ ॥

अर्थः—म० मनुष्य पु० पुरुष ति० त्रण
भेदे पं० कथा तं० ते ज० कहंछं क० पंनर
कर्म भूमिना अ० त्रीस अकर्म भूमिना युग-
लीया अ० ५६ अंतर द्वीपना युगलीया ॥५॥

मगुस्सपुरिसा तिविहा पन्नत्ता । तं
जहा । कम्मभूमिया अकम्मभूमिया
अन्तरहीवगा ॥ ५ ॥

भावार्थः—मनुष्य पुरुष त्रण प्रकारे कहेल
छे, कर्म भूमिना १, अकर्म भूमिना २, अंतर
द्विपना ३, ए त्रण भेद छे ॥ ५ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे न० नपुंसक पं०
कथा तं० ते ज० कहंछं ने० सात नरकना
नपुंसक ति० तिर्यच जो० योनिना न० नपुं-
सक म० मनुष्य नपुंसक ॥६॥

तिविहा नपुंसगा पन्नत्ता । तं जहा ।
नेरइयनपुंसगा तिरिक्खजोणियनपुंस-
गा मणुस्सनपुंसगा ॥ ६ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे नपुंसक कहेल छे,
साते नरकना नारकी नपुंसक १, तिर्यच योनि
ना नपुंसक २, मनुष्य नपुंसक ३, [देवता न-
पुंसक थाय नहीं] ए त्रण भेद छे ॥ ६ ॥

अर्थः—ति० तिर्यच जो० योनिना न० न-
पुंसक ति० त्रण भेदे पं० कथा तं० ते ज०
कहंछं ज० जलचर थ० थलचर थ० पंखीना ॥७॥

तिरिक्खजोणियनपुंसगा तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । जलचरा थलचरा खहचरा ॥ ७ ॥

भावार्थः—तिर्य्यच योनीना नपुंसक कहेल छे ते कहे छे, जलचर नपुंसक १, थलचर नपुंसक २, खेचर नपुंसक ३, ए त्रण भेद छे ॥७॥

अर्थः—मनुष्य न० नपुंसक ति० त्रण भेदे पं० कह्या तं० ते ज० कहुं छुं क० कर्म भुमिना अ० अकर्म भुमिना अ० अंतरद्वीपना ॥८॥

मगुस्सनपुंसगा तिविहा पन्नत्ता । तं जहा । कम्मभूमिया अकम्मभूमिया अन्तरद्वीपगा ॥ ८ ॥

भावार्थः—मनुष्य नपुंसक त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, कर्म भूमिना नपुंसक १, अकर्म भूमिना नपुंसक २, अंतर द्विपना नपुंसक ३, ए त्रण भेद छे ॥ ८ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे ति० तिर्य्यच जो० योनी पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं इ० स्त्री पु० पुरुष न० नपुंसक ॥९॥

तिविहा तिरिक्खजोणिया पन्नत्ता । तं जहा । इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥ ९ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे सामान्य भावे तिर्य्यच कहेल छे ते कहे छे, स्त्री १, पुरुष २, नपुंसक ३, ए त्रण भेद छे ॥ ९ ॥

अर्थः—ने० नारकीने तं० त्रण ले० लेश्या पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं क० कृष्णलेशा नी० नीललेशा का० कापोतलेशा ॥१॥

१९ पेरा (जीवोनी स्त्री विगेरे परिणीति लेशाना वशपणाने लीये थाय छे तेथी नारक विगेरे पद्दोमां लेशा त्रण स्थानकवडे कहेवामां आवे छे.)

नेरइयाणं तओ लेसाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । किण्हलेसा नीललेसा काउलेसा ॥ १ ॥

भावार्थः—स्त्रीयादीक वेद ते लेशाथी वंधाय ते माटे लेशा कहे छे, नारकीने त्रण लेशा कही ते कहे छे, कृष्ण १, नील २, कापोत ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—अ० असुरकुमारने तं० त्रण ले० लेशा सं० माठी पं० कही तं० ते ज० कहे छे क० कृष्णलेशा नी० नीललेश्या का० कापोतलेशा ॥ २ ॥

असुरकुमाराणं तओ लेसाओ संकिलिद्धाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । किण्हलेसा नीललेसा काउलेसा ॥२॥

भावार्थः—असुरकुमारने त्रण लेशा संकिलिष्ट (झुंडी) कहेल छे [चौथी तेजुलेशा असुरकुमारने छे पण ते संकिलिष्ट नथी] ते कहे छे, कृष्ण १, नील २, कापोत ३, ए त्रण ॥२॥

अर्थः—ए० एम थ० स्थनितकुमारने ॥३॥

एवं थणियकुमाराणं ॥ ३ ॥

भावार्थः—एय यावत् स्तनित कुमार लगे ए त्रण संकिलिष्ट लेशा जाणवी ॥ ३ ॥

अर्थः—ए० एम पु० पृथ्वीकायने आ० अपकायने व० वनस्पतीकायने वि० पण ते० तेउकायने वा० वायुकायने वे० वेइन्द्रिने ते० तेइन्द्रिने च० चउरिन्द्रिने वि० पण तं० त्रण ले० लेशा ज० जेम ने० नारकीने ॥४॥

एवं पुढविकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाण वि तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वेइन्द्रियाणं तेइन्द्रियाणं चउरिन्द्रियाण वि तओ लेसाओ जहा नेरइयाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः—एष पृथ्वी, पाणी, वनस्पतिक्राने कृष्ण १, नील २, कापोत ३, ए त्रण लेशा जाणवी एहमां देवता आवी उपजे ते माटे ते जुलेशा पण छे ते माटे असुरकुमारना सुत्रमां कहुं एय तेउकाय, वायुकाय, वेडंद्रीने तेडंद्री, चोरिंद्रीने कृष्ण १, नील २, कापोत ३, ए त्रण लेशा होय ॥ ४ ॥

अर्थः—पं० पंचेन्द्रि ति० तिर्यच जो० योनिनी तं० त्रण ले० लेशा सं० पापनी पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं क० कृष्णलेशा नी० नीललेशा का० कापोतलेशा ॥ ५ ॥

पञ्चिद्वियतिस्त्रिखजोणियाणं तओ लेसाओ संकिलिद्धाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । किण्हलेसा नीललेसा काउलेसा ॥ ५ ॥

भावार्थः—पंचेद्री तिर्यच योनियाने त्रण लेस्या संकिलिष्ट (सुंडी) कही ते कहे छे, कृष्ण १, नील २, ने कापोत ३ ॥ ५ ॥

अर्थः—पंचेन्द्रि ति० तिर्यच जो० योनिनी तं० त्रण ले० लेसा अ० रुडी पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं ते० तेजुलेशा पं० पन्नलेसा सु० शुक्ललेशा ॥ ६ ॥

पञ्चिन्द्रियतिस्त्रिखजोणियाणं तओ लेसाओ असंकिलिद्धाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । तेउलेसा पन्हलेसा सुक्कलेसा ॥ ६ ॥

भावार्थः—पंचेद्री तिर्यच योनिना जीवने त्रण लेसा असंकिलिष्ट ते रुडी कहेल छे ते कहे छे तेजु १, पन्न २, शुक्ल ३ ॥ ६ ॥

अर्थः—ए० एम स० मनुष्यने वि० पण वा० व्यंतरने वि० पण ज० जेम अ० असुरकुमारने ॥ ७ ॥

एवंमणुस्साण वि वाणमन्तराण वि जहा असुरकुमारणं ॥ ७ ॥

भावार्थः—एष मनुष्यने पण जाणवी [संज्ञी तिर्यच पंचेद्री तथा संज्ञी मनुष्यने छलेशा छे पण इहां त्रणनो बोल होवाथी त्रण उत्तम लेशा कहेल छे]. वाणव्यंतरने असुर कुमारनी पेरे त्रण संकिलिष्ट ते माठीज लेशा होय ॥ ७ ॥

अर्थः—त्रे० वैमानिकने तं० त्रण लेशा पं० कही तं० ते ज० कहुं छुं ते० तेजुलेशा पं० पद्म लेशा सु० शुक्ललेशा ॥ ८ ॥

वैमाणियाणं तओ लेसाओ पन्नत्ताओ । तं जहा । तेउलेसा पन्हलेसा सुक्कलेसा ॥ ८ ॥

भावार्थः—वैमानिक देवने त्रण असंकिलिष्ट (मली) लेस्या कही छे ते कहे छे, तेजुलेशा १, पन्नलेसा २, शुक्ललेशा ३, ए त्रण भेद छे. ए पुर्योक्त प्रमाणे चौविस दंडके लेसा कही अने जोतिपीने एक तेजुलेशा छे ते माटे इहां कहेल नथी तेहने चालवानो स्वभाव छे ते कहे छे ॥ ८ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके ता० तारा रु० रूप च० चले तं० ते ज० कहुं छुं वि० विकुर्वणा करतो वा० अथवा पं० मैथुन सेवा करवाने वा० अथवा ठा० पोताना थानकथी वा० बळी ठा० बीजे थानके सं० जातो ता० तारा रु० रूपे ज्योतिपी च० चले

२० पेरा (उपर वैमानीकनुं लेस्या द्वारवडे त्रण प्रकारे वर्णन कर्युं. जोतीपीयोने त्रण प्रकारे लेशा नही होवाथी चलण थर्मवडे तेनुं वर्णन करेछे)

तिहिं ठाणेहिं ताराखे चलेज्जा । तं जहा । विउवमाणे वा परियारेमाणे वा ठाणाओ वा ठाणं संकममाणे ताराखे चलेज्जा ॥

भावार्थः—त्रणप्रकारे स्वस्थानकथी जोतिपी

तारा चले ते कहेछे, वैक्रेय विकुर्वणा करतां १, देवांगना साथे भोग करतां २, पोताना स्थानकी वीजे रथानके जातां अथवा कोइक महर्षिक देवता वैक्रेयरूप करतो होय तेने मार्ग आपवाने चले ३, ए त्रण भेद छे

अर्थ:—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवता वि० विजलीनी पेरे उद्योत क० करे तं० ते ज० कहुंछुं वि० वैकिय रूप करतो वा० अथवा प० देवांगना साथे भोग करतो वा० अथवा त० तथा रू० रूप (शुद्ध) वा० अथवा स० साधुने वा० अथवा मा० मोटा महानुंभावने वा० अथवा इ० रुद्धि जु० आभरणनी ज्योती ज० कोर्ति व० बल वी० वीर्य पु० अभिमान प० पराक्रम उ० देपाडतो दे० देवता वि० वीजलीनीपरी झाटको विद्युतकार क० करे. ॥१॥

२१ पेरा (उपर ताराना देवनी चलण नी क्रीयाना कारणो कहा, हवे देवोना विद्युतना (वीजलीना) तथा स्तनीत (गर्जना) नी क्रीयाना कारणो कहेछे.)

तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुयारं करेज्जा । तं जहा । विउवमाणे वा परियारेमाणे वा तहारुवस्स वा समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढिं जुइं जसं बलं वीरियं पुरिसकारपरकमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुयारं करेज्जा ॥ १ ॥

भावार्थ:—त्रण स्थानेक देवता दर्पवंत विजलीनी पेरे उद्योत करे ते कहे छे, वैक्रेय रूपादी विकुर्वणा करतो १, देवांगना साथे भोग करतो २, तथारूप जे श्रमणने माहणने महानुंभावने रुद्धि, परिवार, विमानादीकं, शरिर, आभरणादीकनी ध्युती (कांती), जशकीर्ति, बल ते शरीरनी शक्ति १, वीर्य ते जीवनी हींमत २, पुरिमकार ते अभिमान ३, पराक्रम ते

उध्यम ४, ए सर्व देखाडतो वीजलीनी पेरे उद्योत करे ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थ:—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवता थ० मेघनीपरे गाजवुंते क० करे तं० ते ज० कहुंछुं वि० विकुर्वणा करतो ए० एम ज० जेम वि० विध्युतकार त० तेम थ० गर्जारव (गाजवुं) पि० पण ॥ २ ॥

तिहिं ठाणेहिं देवे थणियसहं करेज्जा । तं जहा । विउवमाणे एवं जहा विज्जुयारं तहेव थणियसहं पि ॥ २ ॥

भावार्थ:—त्रण प्रकारे देवता मेघनी पेरे गर्जना करे छे ते कहे छे, विकुर्वणा करतो १, एम यावत जेम वीजली करे तेमज मेघनी पेरे गर्जना पण त्रण प्रकारे जाणवी ॥ २ ॥

अर्थ:—ति० त्रण ठा० थानके लो० लोकमां अ० अंधकार सि० होय० तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंत वो० मोक्षजाते अ० अरिहंत प० भाष्यो ध० धर्म वो० विच्छेद जाते पु० द्रष्टि वाद प्रमुख सिद्धांत वो० विच्छेद जाते ॥१॥

२२ पेरा (लोकना अंधकार विगेरे दुर करवारूप उत्पात विगेरे पंदर सुत्रोथी कहेछे.)

तिहिं ठाणेहिं लोगन्धयारे सिधा । तं जहा । अरहन्तेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहन्तपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे ॥ १ ॥

भावार्थ:—त्रण प्रकारे लोकमां अंधकार थाय ते कहे छे, अष्टमहाप्रतिहार्यवंत, अतिशयवंत एवा अरिहंत मोक्षमां जातां लोकमां अंधकार थाय, भावथी ज्ञानी गया माटे १, अरिहंतनो भाष्यो धर्म विच्छेदजातां २, भरत, ऐरवत आश्री पुर्वगत द्रष्टीवादादी सिद्धांत विच्छेद जातां ३ अंधकार देखाय, ए त्रण भावथी कहा अने द्रव्यथी पण राजानुं मर्णथाय तथा देश नग-

रनो भंग थातां अंधकार देखाय ३, ए त्रण भेद छे ॥ १ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके लो० लोकमां उ० अजवाळं सि० थाय तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंतनो जा० जन्मथाते अ० अरिहंत प० दिक्षा लेता अ० अरिहंतने ना० ज्ञान उ० उपजवाना म० ओछवने विषे ॥ २ ॥

तिहिं ठणेहिं लोगुज्जोए सिया । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं अरहन्तेसु पवयमाणेसु अरहन्ताणं नाणुपायमहिमासु ॥ २ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे मनुष्य लोक मांडी अजवाळं थाय ते कहेछे, अरिहंतनो जन्म थातां १, अरिहंत दिक्षा लिए त्यारे २, अरिहंतने ज्ञान उपजवाना महोत्सवन विषे ३, ए त्रण भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवताना भुवन प्रमुखने विषे अ० अंधकार सि० थाय तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंत वो० मोक्षजाते अ० अरिहंत प० परंपल ध० धर्म वो० विच्छेद जाते थके पु० द्रष्टिवाद सिद्धांत वो० विच्छेद जाने थके ॥ ३ ॥

तिहिं ठणेहिं देवन्धयारे सिया । तं जहा । अरहन्तेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहन्तपन्नने धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वमाणे वोच्छिज्जमाणे ॥ ३ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे देवताना भवनादिकने विषे अंधकार थाय ते कहे छे, अरिहंत मोक्ष जाता १, अरिहंतनो धर्म विच्छेद (नाथ पांमतां) जानांसे भरत परब्रह्मने आश्री जाणवुं २, पुर्वगत द्रष्टीनादादी सिद्धांत विच्छेद जाता ३, ए त्रण भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवताने उ० उद्योतं सि० थाय तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाते अ० अरिहंत प० दीक्षालेते अ० अरिहंतने ना० ज्ञान उ० उपजवाना म० ओछवने विषे ॥ ४ ॥

तिहिं ठणेहिं देवुज्जोए सिया । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं अरहन्तेहिं पवयमाणेहिं अरहन्ताणं नाणुपायमहिमासु ॥ ४ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे देवताना भवनादिकने विषे अजवाळं थाय ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थाय त्यारे १, अरिहंत दिक्षा लिए त्यारे २, अरिहंतने ज्ञान उपजे ते महिमाने विषे ३, ए त्रण भेद छे ॥ ४ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवताने सं० एकटा मल्लुं सि० थाय मनुष्यमां तं० ते ज० कहेछे अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाता अ० अरिहंत प० दीक्षालेता अ० अरिहंतने ना० ज्ञान उ० उपजवाना म० ओछवने विषे ॥ ५ ॥

तिहिं ठणेहिं देवसंनिवाए सिया । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं अरहन्तेहिं पवयमाणेहिं अरहन्ताणं नाणुपायमहिमासु ॥ ५ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे पृथ्वीमा सर्व देवता एकटा मले ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थातां १, अरिहंत दिक्षा लिए त्यारे २, अरिहंतने केवल ज्ञान उपजे तेहना महोत्सवने विषे सर्व देवता एकटा थाय ३, ए त्रण भेद छे ॥ ५ ॥

अर्थः—ए० दे० देवता उ० समवाय ॥ ६ ॥

देवुकलिया ॥ ६ ॥

भावार्थः—ए० दे० देव समवाय ते उत्कृष्टता विगण ॥ ६ ॥

अर्थः—ए० दे० देवतानो क० हर्षना शब्द ॥ ७ ॥

एवं देवकहकहए ॥ ७ ॥

भावार्थः—देवतानो हर्षनो कलकल शब्द
थाय ते पुर्वोक्त त्रण प्रकारे जाणवुं ॥ ७ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० इन्द्र मा०
मनुष्य लो० लोकमांही ह० शिघ्र आ० आवे तं०
ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाते
अ० अरिहंत प० दीक्षाले तेवारे अ० अरिहंतने
ना० ज्ञान उ० उपजवाना म० महिमानेविपे ॥८॥

तिहिं टाणेहिं देविन्दा माणुसं लोगं
हवमागच्छन्ति । तं जहा । अरहन्ते-
हिं जायमाणेहिं अरहन्तेहिं पवयमाणे-
हिं अरहन्ताणं नाणुप्पायमहिमासु ॥८॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे सर्व चोसठ देवैद्र म-
नुष्य लोकमां आवे ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म
थाय त्यारे १, अरिहंत दिक्षा लीए त्यारे २,
अरिहंतने केवळ ज्ञान उपजवाना महोत्सवने
विपे ३, ए त्रण भेद छे ॥ ८ ॥

अर्थः—एम सा० इन्द्र सरिषा रुद्धिना धणी ॥९॥

एवं—सामाणिया ॥ ९ ॥

भावार्थः—एम सामानीक देवता ते इद्र स-
रिषी रुद्धिना धणी ॥ ९ ॥

अर्थः—ता० महत्तर सरिषा थानके ॥१०॥

तायत्तीसगा ॥ १० ॥

भावार्थः—त्रायत्रीसक ते गुरु तथा पीता
सरिषा ॥ १० ॥

अर्थः—लो० इन्द्रना लोकपाल दे० देवता ॥११॥

लोगपाला देवा ॥ ११ ॥

भावार्थः—चार लोकपाल ॥ ११ ॥

अर्थः—अ० अग्र म० महिषी दे० देवीओ ॥१२॥

अग्गमहिषीओ देवीओ ॥१२॥

भावार्थः—अग्र महिषी ते इद्राणीयुं ॥१२॥

अर्थः—प० त्रण पर्यदाना दे० देवता ॥१३॥

परिसोववन्नगा देवा ॥१३॥

भावार्थः—त्रण पर्यदाना देवता ॥ १३ ॥

अर्थः—अ० सातकटकना अधिपति दे०
देवता ॥ १४ ॥

अणियाहिवई देवा ॥ १४ ॥

भावार्थः—कटकना अधिपति देवता ॥१४॥

अर्थः—अ० अंग र० रक्षक दे० देवता मा०
मनुष्य लो० लोकमां ह० शिघ्र आ० आवे ॥१५॥

अङ्गरक्खा देवा माणुसं लोगं

हवमागच्छन्ति ॥ १५ ॥

भावार्थः—अंगरक्षक देवता ए सर्व इन्द्रनो
परिवार ते पुर्वोक्त त्रण कारणे मनुष्य लोकमां
जलदी आवे ॥ १५ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवता
अ० सिंहासनथी उठे तं० ते ज० कहुंछुं अ०
अरिहंतनो जा० जन्म थाता जा० यावत तं०
तेम चे० वळी ॥ १ ॥

२३ पेरा (मनुष्य लोकमां देवोने आव-
वाना कारणो क्हाते कारणो देवोने नमस्कार
विगेरे करवाना कारण रुपछे ते पांच सुत्रो कहेछे.)

तिहिं टाणेहिं देवा अब्भुट्टेज्जा ।
तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं जाव
तं चेव ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे देवता सिंहासनेथी
उठे ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थाय त्यारे १,
अरिहंत दिक्षा लिये त्यारे २, अरिहंतने केवळ
ज्ञान उपजे त्यारे ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम आ० आसन्न च० चाले ॥२॥

एवं—आसणाइं चलेज्जा ॥ २ ॥

भावार्थः—एमज एह त्रण कारणे आसन्न
चाले ॥ २ ॥

अर्थः—सी० सींहनाद क० करे ॥ ३ ॥

सीहणायं करेज्जा ॥ ३ ॥

भावार्थः—एमज ए त्रण कारणे देवता विमानमां तथा पृथ्वीमां सिंहनाद करे ॥ ३ ॥

अर्थः—चे० वस्त्रनी उ० वृष्टि क० करे ॥४॥

चेष्टुकरेवेवं करेज्जा ॥ ४ ॥

भावार्थः—एमज ए त्रण कारणे देवता वस्त्रनी वृष्टि करे ॥ ४ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके दे० देवता ना चे० चैत्य रु० वृक्ष च० चले तं० ते ज० कहुंछुं अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाता जा० यावत त० तेम चे० वळी ॥ ५ ॥

तिहिं ठणेहिं देवाणं चेइयरुखा चलेज्जा । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव ॥ ५ ॥

भावार्थः—त्रण कारणे देवातानां वृक्ष चळे (हाले) ते वृक्ष सुधर्मा सभाने वारणे होय ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थाय त्यारे १, अरिहंत दीक्षा लिये त्यारे २, अरिहंतने केवळ ज्ञान उपजे त्यारे ३, ए त्रण वखते महोत्सव करवा आवे ॥ ५ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० थानके लो० लोकांतिक दे० देवता मा० मनुष्य लो० लोकमां ह० गिघ्र आ० आवे तं० ते ज० कहुं छुं अ० अरिहंतनो जा० जन्म थाता अ० अरिहंत प० दीक्षा लेता थका अ० अरिहंतने ना० ज्ञान उ० उत्तपनना म० ओळवने विषे.

२४ पेरा (स्वाम करीने लोकान्तीक देवता मनुष्य क्षेत्रमां आववाना कारणो कहे छे)

तिहिं ठणेहिं लोगन्तिया देवा माणुमं लोगं हवमागच्छन्ति । तं जहा । अरहन्तेहिं जायमाणेहिं अरहन्तेहिं प-

वयमाणेहिं अरहन्ताणं नाणुप्पायमहिमासु ॥

भावार्थः—पांचमा ब्रह्मदेव लोकनी पासे कृष्ण राजी छे तिहां लोकांतिक देवता वसे छे, ते देवता त्रण कारणे मनुष्य लोकमां आवे ते कहे छे, अरिहंतनो जन्म थाय त्यारे १, अरिहंत दीक्षा लीये ज्यारे २, अरिहंतने केवळ ज्ञान उपजे त्यारे ३, ए त्रण वखते महोत्सव करवा आवे

अर्थः—ति० त्रण दु० दुखे ओसिंगण थाय स० हे श्रमण आ० आयुपमन तं० ते ज० कहेछे अ० माता पि० पितानो ओसिंगण न थाय भ० भरणपोषण करे ते शेट स्वामीनो घ० धर्मना दातारनो ॥१॥

२५ पेरा (अरिहंत भगवान धर्माचार्य तथा महा उपकारी होवाथी अने तेमना उपकारनो बदलो वाळी शकाय तेम नही होवाथी भगवाननी पुजा विगरे अर्थे देवो अत्रे आवेछे)

तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो । तं जहा । अम्मापिउणो भट्टिस्स धम्मायरियिस्स ॥ १ ॥

भावार्थः—भगवंत कहे छे ते श्रमण आयुष्यन त्रण जणाना उपकारनो बदलो मुस्केल थी वाळी शकाय ! ते कहे छे माता पितानो १, भरण पोषण करे ते (मालीक) स्वामीनो २, जेणे धर्म पमाडेल होय ते धर्माचार्यनो ३ ॥१॥

अर्थः—सं० नित्ये प्रभाते वि० य० णं० वळी के० कोड कुळवंत पु० पुरुष अ० माता पि० पिताने स० सो ओपधे पा० पाकुं स० हजार ओपधे पा० पाकुं ते० तेले करी अ० मर्दन करे सु० सुरभि ग० गन्ध उ० उगटणु करे चोळावने नि० त्रण उ० पाणीए म० नवरावने स० सर्व अ० अळंकार वि० सोभित फ० करीने म० मनोत्र था० हांडळीए पा० नीपत्तु

सु० शुद्ध काचुं दाइल नही अ० अढार जा-
तिना व० शाक तेणे आ० सहित भो० भोजन
भो० जमाडीने जा० जावजीव सुधी पि०
वांसे व० उपाडीने प० चाले एटला वाना
करे ते० तोहि अ० पण त० ते पुत्र अ० मा-
ता पि० पितानो दु० ओसिंगण न भ० थाय ॥२॥

संपाओ वि य णं केइ पुरिसे अम्मा-
पियरं सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अ-
व्वङ्गेत्ता सुरभिणा गन्धट्टणं उव्वट्टि-
त्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावित्ता सवा-
लंकारविभूसियं करेत्ता मणुञ्जं थाली-
पागसुद्धं अट्टारसव्वज्जणाउलं भोयणं
भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवडिसिया-
ए परिवहेज्जा; तेणावि तस्स अम्मा-
पिउस्स दुप्पडियारं भवइ ॥ २ ॥

भावार्थः—(हवे केटलुं करता छतां पण
ओसिंगण थाय नहीं ते कहे छे) कोइ कुळ-
पुरुष नित्य प्रभाते माता पीताने शतपाक ते
(सो औपथ मेळवी तेल काढेलुं होय ते)
सहस्र पाक (ते हजार औपथ मेळवी तेल का-
ढेलुं होय ते) तेले करी मर्दन करी सुगंध उश्न
शितळ (ताढा) पाणीए स्नान करावी पछी
वाचना चंदन सुगंध पवित्र पाणीमां घसी शरिरे
विलेपन करे पछी सर्व अलंकार आभरणे
करी विहुपा (शोभा) वंत शरिर करे, बहु
मुल्य देवदुष्य वस्त्र पहरावे इत्यादी भक्ति भाव
सहित करीने पछी मनोज्ञ (मनने गमतुं)
मनोहर हांडलीमां पाकेलुं शुद्ध नीपजेलुं पण
दाइलुं नहीं तेम काचुं नहीं एहवुं अढार जा-
तिना अंजने (जाक) करी सहित भोजन
जमाडीने जावजीव लगे वांसे (खभे) उपाडी
चाले एटला वानां करे तो पण ते पुत्र माता

पितानो ओसिंगण न थाय एम श्री भगवंते
कहुं ॥ २ ॥

अर्थः—अ० हवे णं० वळी से० ते पुत्र तं० ते
अ० माता पि० पिताने के० केवलिनो प०
भाण्यो ध० धर्म आ० कहीने प० समजाविने प०
भेद भेदांतर कहीने ठा० धर्मने विपे स्थापीने
भ० थाय ते० ते धर्मनी करणीए त० ते अ०
माता पि० पितानो सु० ओसिंगण भ० थाय ॥३॥

अहे णं से तं अम्मापियरं केवलि-
पन्नते धम्मि आघवइत्ता पन्नवइत्ता
परुवइत्ता ठावइत्ता भवइतेणामेव तस्स
अम्मापिउस्स सुपडियारं भवइ ॥३॥

भावार्थः—(ते वारे शिष्य पुञ्जता हयो हे
प्रभु ? ते पुत्र माता पिताना गुणनो ओसिंगण
शीरीते थाय ? त्यारे प्रभु उत्तर कहुता हवा
के हे शिष्य ?) हवे जो ते पुत्र माता पीताने
कदापी केवळीनो भाण्यो धर्म कहे नमजावे
समजावीने परुपीने भेद भेदांतर कहीने धर्ममां
स्थापी धर्ममां स्थिर करी धर्म करावे तां तेणे काी
ते पुत्र माता पितानो ओसिंगण थाय, ए प्रथम
प्रकार कह्यो ? ॥ ३ ॥

अर्थः—स० हे श्रमण आ० आउंखावंत के० को
इक म० सोटो धनवंत ढ० दरिद्रीने स० उ-
त्तकृष्टो करे धन आपीने त० ते वार णं०
पछी से० ते ढ० दरिद्री स० धने उत्तकृष्टो
स० थयो थको प० पछी पु० धन पाम्या
केडे च० णं० वळी वि० घणा भो० भोगने
स० समुदाए करी स० सहित थको या० ते
वि० विचरे त० तेवार णं० पछी से० ते म०
स्वामी शेट अ० एकदा क० समये ढ० दरिद्री
हू० थयो स० थको त० ते धनवंत थयो
छे ते ढ० दरिद्रीने अ० पाने ह० शिघ्र आ०
आवे त० ते णं० नारे से० ते ढ० दरिद्री
ते० ते भ० स्वामीने स० समये द्रव्य अ०

पण ह० देतो थको एटले पोते कांइ न रांपतो थको ते० ते स्वामीने अ० वळी त० तेनो दु० ओसिंगण भ० थाय (नही) — ॥४॥

समणाउसो केइ महचे दरिदं समु-
कसेज्जा तए णं से दरिद्वे समुक्किडे
समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोग-
समिइसमन्नाणए यावि विहरेज्जा, तए
णं से महचे अन्नया कयाइ दरिदीहूए
समाणे तस्स दरिद्वस्स अन्तियं हवमाण-
च्छेज्जा, तए णं से दरिद्वे तस्स भट्टिस्स
सवस्समवि दलयमाणे तेणावि तस्स
दुप्पाडियारं भवइ ॥ ४ ॥

भावार्थः—हवे वाजो अधिकार कहेछे, भग-
वंत कहेता हवा के हे श्रमण आयुष्पन, कोइक
म्होटो द्रव्यवंत पुरुष होय तेणे कोइक दरिद्री
पुरुषने द्रव्य दइने उत्कृष्टो धनवंत करे ने दरिद्री
पुरुषने द्रव्य करी उत्कृष्टो कीभा पळी ते पूर्व
काले धन पाम्याथी घणा भोगने समुदाए क-
रीने विचरे रह, तेवार पळी ते म्होटो स्वामी
जेणे दरिद्रीने धन दइने धनवान कीथो हतो
ते जेठ एकदा सपए दुष्ट कर्मना योगे दरिद्री
थयो. धन रहित थयो तेवार ते निर्धन थइ
ते पोताना करला धनवाननी पासे आवे
तेवार ते दरिद्री ते स्वामीने सघळं द्रव्य आपे
पाते कांइ नराखे तोपण ते दरिद्री ते स्वामीनो
ओसिंगण न थाय ॥ ४ ॥

अर्थः—अ० हवे णं० जो से० ते तं० ते
दरिद्री भ० जेठने के० केवळीनो प० भाख्यो
ध० धर्म आ० ते आगल कहीने प० भेद क-
हीने समजाविने प० पत्तापिने ठा० धर्मनेविषे
र मापनो भ० थको ते० तेणे ए० करी त० ते
भ० स्वामीनो सु० ओसिंगण भ० थाय ॥५॥

अहे णं से तं भट्टिं केवलिपन्नत्ते
धम्मि आधवइत्ता पन्नवइत्ता परुवइत्ता
अवइत्ता भवइ; तेणामेव तस्स भट्टिस्स
सुपडियारं भवइ ॥ ५ ॥

भावार्थः—(ते वारे शिष्य पुछतो हवो के
हे प्रभु तो ते शीरीते ओसिंगण थाय ? ते
वारे प्रभु कहेता हवाके हे शिष्य) ते दरिद्री
पोताना स्वामीनी पासे केवळी परुष्यो धर्म
कहे, प्रजाए करी समजाविने धर्मने विषे स्थापे,
द्रढ करी धर्म करावे एटले धर्म पमाडे तो तेणे
करी ते स्वामिनो ओसिंगण थाय, ए वीजो
प्रकार कहो ॥ ५ ॥

अर्थः—के० कोइक त० तथा रू० रूप पु-
रुष स० साधु वा० अथवा मा० कोईने हण-
तो नथी तेहने वा० वळी अ० पासे ए० एक
अ० पण आ० आर्याने ध० धर्मतुं सु० भळं
व० वचन सो० सांभळीने नि० हृदए धारीने
का० आउखु पुर्ण थके का० काळकि० करीने
अ० कोइक दे० देव लो० लोकनेविषे दे० दे-
वतापणे उ० उपजे ते० ते णं० वारे से० ते
दे० देवता तं० ते ध० धर्माचार्य प्रत्ये दु०
दुष्कालना वा० वळी दे० देशमांथी सु० सु-
गाल दे० देशमां सा० मुके कं० अटवीमांथी
वा० वळी नि० वसतीगां क० मुके दी० घणा
का० काळना वा० वळी रो० रोगनी पीडाए
करीने अ० पराभव्यो छे ते रोग प्रति वि०
मुकवे ते० एटले अ० प्रकारे त० ते ध० ध-
र्मना आ० आपनारने दु० ओसिंगण भ० न
थाय तो केम थाय ॥ ६ ॥

केइ तहाख्वस्स समणस्स वा माह-
णस्स वा अन्तियं एगमवि आरियं ध-
म्मियं सुवयणं मोच्चा निसम्म का-

लमासे कालं किञ्चा अन्नयरेसु देव-
लोएसु देवत्ताए उववन्ने, तए णं से देवे
तं धम्मायरियं दुब्भिकखाओ वा दे-
साओ सुभिकखं देसं साहरेज्जा क-
न्ताराओ वा निकन्तारं करेज्जा दी-
हकालिएणं वा रोगायङ्केणं अभिभूयं
विमोएज्जा; तेणावि तस्स धम्मायरि-
यस्स दुप्पडियारं भवइ ॥ ६ ॥

भावार्थः—हवे त्रीजो धर्माचार्यनो प्रकार
कहे छे, कोइक पुरुष तथारूप महोटा श्रमण
साधु माहनने पासे एक पण आर्य निष्पाप ते
जीव दयामय धर्मनां शुभ वचन प्रत्ये सांभ-
ळीने सम्यक प्रकारे धर्म करी आयुष्य पुर्णकरी
काळ करीने अनेरा कोइक देवलोकने विपे दे
वता पणे उपजे ते वारे ते धर्माचार्यने दुर्भिक्ष
दोहिली भीक्षा छे जे देशमां एटले दुकालमांथी
जीहां सुभिक्ष ते सुकाळ होय सोहीली भीक्षा-
लाभे ते देशमां आणी मुक्के अथवा अटवीमां
भुला पड्या होय तिहांथी वस्तीमां आणीमुक्के
अथवा घणा काळनो रोग होय ते रोगनी
पीडायी पराभव्यो होय तेवारे देवशक्तिये करी
ते रोगथी मुक्कवे तो पण ते धर्माचार्यनो धर्मना
आपनारनो ओसिंगण थाय नहीं ॥ ६ ॥

अर्थः—अ० हवे णं० जो से० ते देवता ते० ते
ध० धर्माचार्यने के० केवली प० भाषित ध०
धर्मथकी भ० पड्या स० थको ते प्रते भु०
फरीने वि० वळी के० केवली य० भाषित ध०
धर्म आ० समजावने जा० यावत ठा० (धर्ममांही)
स्थापतो भ० थको ते० तेणे ए० करी त० ते
ध० धर्माचार्यनो मृ० ओसिंगण भ० थाय ॥७॥

अहे णं से तं धम्मायरियं केवलि-
पन्नत्ताओ धम्माओ भइं समाणं भुज्जो

वि केवलिपन्नत्ते धम्मे आववइत्ता जाव
ठावइत्ता भवइ; तेणामेव तस्स धम्मा-
यरियस्स सुपडियारं भवइ ॥ ७ ॥

भावार्थः—[ते वारे शिष्य पुछतो हवो के
हे प्रभु त्यारे ते धर्माचार्यनो ओसिंगण शी-
रीते थाय ? ते वारे प्रभु कहेता हवा के हे
शिष्य ?] जो कदापि ते धर्माचार्य केवळी
भाषित धर्मथी पड्या होय, भ्रष्ट थया होय
तेहने फरी केवळी भाषित धर्म हेतु युक्तिये करी
समझावी पाछो धर्ममां स्थापे [जेम अपाढा-
चार्यने देवता थयेला चेलाए समझावी करी
धर्ममां स्थीर कर्या तेहनी पेर तथा तेतली प्र-
धानने जेम पोडोलोए प्रतिबोध्या तेहनी पेरे]
तो ते धर्माचार्यनो ओसिंगण थाय, ए सिवाय
वीजी रीते थाय नहीं ३, ए त्रण भेद छे ॥७॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० स्थानके सं० सहीत
अ० साधु अ० (जे संसारनो) अंत नथी
अ० जेहनी आदी नथी दी० मोटो म० मार्ग
छे जेहनो चा० चारगतिरूप सं० संसार कं०
अटवीने प्रते वी० अतिक्रमे तं० ते ज० कहे
छे अ० (रुद्धीयादीकनुं) न करीने णि० नि-
याणुं दि० समकीत सं० सहीतपणे जो०
जोग वा० वेहवे (श्रुत समाधी रापवे)

२६ (संसारमांथी तरवाने धर्मना त्रण
स्थान उतारी वतावे छे)

तिहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अ-
णाइयं अणवयग्गं दीहमच्छं चाउरन्त-
संसारकन्तारं वीतीवएज्जा । तं जहा ।
अणियाणयाए दिट्ठिसंपन्नयाए जोग-
वाहियाए ॥

भावार्थः—हवे संसार तरवाना भेद कहे छे,
त्रण स्थानके सहीत अणगार साधु, ते जेहनी
आदी नथी, जेहनो अंत नथी, जेहनो लांवा

म्होटो मार्ग छे एहवीचार गती संसार रूपणी अटवी अतिक्रमे (ओलंधी जाय) पार पामे ते त्रण स्थानक कहे छे, धर्म करी रुद्धि प्रमुखनुं नियाणुं न करे १, समकित सहित पणे २, योग उपध्यान तप करे, श्रुत समाधी राखे एहवा साधु होय ते संसारनो पार पामे ३, ए त्रण भेद छे,

अर्थः—ति० त्रणभेद ओ० अवसर्पिणी पं० कही तं० ते ज० कहेछे उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ॥ १ ॥

पेरा २७ (जुदा जुदा प्रकारनां काळ १४ सूत्रथी कहे छे)

तिविहा ओसर्पिणी पन्नत्ता । तं जहा ।
उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना ॥ १ ॥

भावार्थः—संसार तरवो ते भवस्थीति काळ पुर्ण थयेल होय तो तेथी तराय ते माटे काळ विपेपनुं स्वरुप कहे छे, त्रण प्रकारे अवसर्पिणी काळ कहेल छे ते कहे छे, उत्कृष्ट १, मध्यम २, जघन्य ३ ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम छ० छ प्पि० य० वळी स० आराओ भा० जाणवा जा० ज्यां लगे दू० दुखमां दू० दुख (२-७) ॥ २ ॥

एवं छ प्पि य समाओ भाणिय-
वाओ जाव दूसमदूसमा ॥ [२-७] ॥ २ ॥

भावार्थः—एवीरीते छए आरा पडता पडता जाणवा, पहेलो आरो सुखम सुखमा ते उत्कृष्टो ओसर्पिणी काळ १, बीजा आराथी चोथा आरासुधी मध्यम २, पांचमो, छठो आरो ते जघन्य ३, ए त्रण भेद छे ॥ २ ॥

अर्थः—ति० त्रण उ० उत्सर्पिणी पं० कही तं० ते ज० कहे छे उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ८ ॥ ३ ॥

तिविहा उस्सर्पिणी पन्नत्ता । तं

जहा । उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना
॥ [८] ॥ ३ ॥

भावार्थः—एम त्रण प्रकारे उत्सर्पिणी काळ कहेल छे ते कहे छे, उत्कृष्ट १, मध्यम २, जघन्य ३ ॥ ३ ॥

अर्थः—ए० एम छ० छ प्पि० य० वळी स० आरा भा० जाणवा जा० ज्यां लगे सु० सुपमा सु० सुप (९-१४) ॥ ४ ॥

एवं छ प्पि य समाओ भाणियवा-
ओ जाव सुसमसुसमा [९-१४] ॥ ४ ॥

भावार्थः—एम छए आरा चढता चढता जाणवा, पहेलो बीजा आरो जघन्य १, बीजा, चोथो, पांचमो मध्यम २, सुखमा सुखमा छठो आरो ते उत्कृष्टो काळ जाणवो ३, ए त्रण भेद छे ॥ ४ ॥

अर्थः—ति० त्रण ठा० स्थानके अ० अण-
छेद्यो पो० पुदगल (पोताना मेले) च० चळे तं० ते ज० कहे छे आ० आहार लेता (जी-
वताणी ले) वा० वळी पो० पुदगल च० चळे वि० विक्रीयरुप करता वा० वळी पो० पुदगल च० चळे ठा० एक स्थानकथी ठा० बीजे स्थानके सं० संक्रामता वा० वळी पो० पुदगल च० चळे ॥ १ ॥

२८ पेरा (अचेतन द्रव्यना धर्मना समान-
पणाथी पुदगळ धर्म पांच सूत्रथी कहेछे)

तिहिं ठणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले च-
लेज्जा । तं जहा । आहारिज्जमाणे
वा पोग्गले चलेज्जा विउवमाणे वा
पोग्गले चलेज्जा ठणाओ ठाणं सं-
कामेज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा ॥ १ ॥

भावार्थः—काळ ते अचेत कद्यो, तेहनां सर-
खाइपणामाटे पुदगळ धर्म कहे छे, त्रण प्रकारे

खड्गादीके अणुछेद्यो पोतानी मेले समुदाय माहीधी पुदगळ चळे ते कहे छे, जीव आहार पणे लेते स्वस्थानकधी पुदगळ चळे ते जीव ताणीले १, देवता मनुष्य वेक्रेय करे, पुदगळ ताणे ते वारे चळे, केपके वेक्रेयने वशवर्ति पुदगळ छे ते माटे २, एक स्थानकधी वीजे स्थानके संक्रम ते हस्तादीके करी मुक्तां थकां घणां होय ते माहीधी पुदगळ चळे ३, ए त्रण भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे उ० उपधी पं० कही तं० ते ज० कहे छे क० आठ कर्म उ० उपधी स० पांच शरीरनी उ० उपधी वा० वाह्य (परिग्रह) भं० पात्रां म० माटी प्रमुखनी उ० उपधी ए० एम अ० असुर कुमारने भा० जाणवुं (एटले तेनेपण त्रण उपधी होय) ए० एम ए० एकेन्द्री ने० नारकी व० वरजीने जा० ज्यालगे वे० वैमानीकने त्रण उपधी होय ॥ २ ॥

तिविहा उवही पन्नत्ता । तं जहा । कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभण्डमत्तोवही । एवं असुरकुमारणं भाणियवं । एवं एगिन्दियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ २ ॥

भावार्थः—पुदगळ ते उपधी ग्रहण रूप परिग्रह छे ते उपधीतुं स्वरूप त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, कर्मोपधी ते आठ कर्म १, शरिर उपधी ते उदारिकादीक पांच प्रकारे २, वाहीर उपधी ते माटीनां कांसांनां पात्रादिक अथवा वस्त्रा भरण्णादिक उपधी ३, ए त्रण भेद छे, एम असुरकुमारादी दसने ए त्रण प्रकारनी उपधी होय, एम एकेन्द्री अने नारकी वरिजे एहने भांडादी उपधी नथी, वे इन्द्रीयधी मांडी वमानीक सुधी त्रण प्रकारे उपधी जाणवी तेमांडी एटलो विशेष जे कोडक वेइंद्रीयदीकने ए त्रण प्रकारनी उपधी होय, ॥ २ ॥

अर्थः—अथवा ति० त्रण भेदे उ० उपधी पं० कही तं० ते ज० कहे छे स० सचित (पापाणादीक) अ० अचित (वस्त्रादीक) मी० मिश्र (शरीरादीक) ए० एम ने० नारकीने जा० ज्यालगे वे० वैमानीक ॥ ३ ॥

अहवा तिविहा उवही पन्नत्ता । तं जहा । सचित्ते अचित्ते मीसए । एवं नेरइयार्णं जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥

भावार्थः—वली त्रण प्रकारे उपधी कहेल छे ते कहे छे, सचित्त उपधी १, अचित्त ते वस्त्रादीक उपधी २, मिश्र ते सचित्ताचित्त उपधी ३, ए त्रण प्रकारनी उपधी आंतरा रहीत वैमानीक चौवीस दंडके होय ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे प० परिग्रह पं० कहा तं० तेज० कहे छे क० आठकर्मनो प० परिग्रह स० शरीरनो प० परिग्रह वा० वाह्य भं० भांड म० पात्रादीक प० परिग्रह (वस्त्रादिक) ए० एम अ० असुरकुमारनो परिग्रह जाणवी ए० एम ए० एकेन्द्रीने ने० नारकी व० वरिजे (एकेन्द्रीने नारकीने भांडादी नथी) जा० ज्यालगे वे० वैमानीक ॥ ४ ॥

तिविहे परिग्गहे पन्नत्ते । तं जहा । कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिरभण्डमत्तपरिग्गहे । एवं असुरकुमारणं । एवं एगिन्दियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे परिग्रह कहेल छे ते कहे छे, कर्म परिग्रह ते आठ प्रकारे १, शरिर परिग्रह ते पांच प्रकारे २, वाहीर भांड पात्र वस्त्र आभरणादीकनो परिग्रह ३, ए त्रण भेद छे, एम असुरकुमारादी दसने त्रण प्रकारनो परिग्रह जाणवो, एम एकेन्द्री अने नारकी वरिजे

वे इंद्रियथी मांडी वैमानीक सुधी त्रण प्रकारनो परिग्रह जाणवो ॥ ४ ॥

अर्थः—अ० अथवा ति० त्रण भेदे प० परिग्रह पं० कहां तं० ते ज० कहेछे स० सचित अ० अचित मी० मिश्र ए० एम ने० नारकीने नि० वीजो एसर्वेने जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक ॥ ५ ॥

अहवा तिविहे परिग्रहे पन्नते । तं जहा । सचित्ते अचित्ते मीसए । एवं नेरइयाणं निरन्तरं जाव वेमाणिया णं ॥ ५ ॥

भावार्थः—अथवा वळी त्रण प्रकारे परिग्रह कहेल छे ते कहेछे, सचित परिग्रह १, अचित्त वस्त्राभरणादी परिग्रह २, मिश्र सचित्ताचित्त परिग्रह ३, ए त्रण प्रकारनो परिग्रह आंतरा रहीत वैमानिक सुधी चौवीस दंडके होय ॥५॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे प० एकाग्रपणुं करवुं ते पं० कहुं तं० तेज० कहे छे म० मननुं प० एकाग्रपणुं व० वचननुं प० एकाग्रपणुं का० कायानुं प० एकाग्रपणुं (कायाए पाप नकरे ए० एम पं० पंचेन्दीने होय जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक त्यांलगे (एकेन्दीने पूरी ३ नहोय) ॥१॥

२९ परा (जीवधर्मनुं त्रिविधपणुं कहेछे)

तिविहे पणिहाणे पन्नत्ते । तं जहा । मणप्पणिहाणे वइप्पणिहाणे कायप्पणिहाणे । एवं पञ्चिन्दियाणं जाव वेमाणियाणं ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे प्रणिधान ते मन प्रमुखनुं एकाग्रपणुं करवुं कहेल छे ते कहे छे, मन प्रणिधान ते मननुं एकाग्र पणुं १, वचन प्रणि-

धान ते वचननुं एकाग्रपणुं २, काय प्रणिधान ते कायानुं एकाग्रपणुं ३, एम वैमानीक सुधी चौवीस दंडक मांडी जेटला संज्ञी पंचेद्री होय तेहने ए त्रणे प्रकारनुं प्रणिधान होय (एकेद्री, त्रण विगलेंद्री, असंज्ञी पंचेद्रीने त्रण पुरां प्रणिधान न होय, तेहथी इहा संज्ञी पंचेद्रीनेज त्रण प्रणिधान कहेल छे) ॥ १ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे सु० शुभ प० प्रणीधान प० कहां तं० ते ज० कहे छे म० मन सु० शुभ प० प्रणीधान व० वचन सु० शुभ प० प्रणीधान का० काय सु० शुभ प० प्रणीधान ॥ २ ॥

(प्रणिधान शुभ अने अशुभ एम वे भेदछे) तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते । तं जहा । मणसुप्पणिहाणे वइसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे ॥ २ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे शुभ प्रणिधान कहेल छे ते कहे छे, मनसुप्रणीधान ते भहुं धर्ममां मननुं एकाग्रपणु १, वचनसुप्रणीधान ते सत्य वचन बोलवामां एकाग्रपणुं २, कायसु प्रणीधान ते कायाए पाप नकरे अने धर्ममां प्रवर्ताववा एकाग्रपणुं ३, ए त्रण भेद छे ॥२॥

अर्थः—सं० संजमवंत म० मनुष्यने (साधुने) ति० त्रण भेदे सु० शुभ प० प्रणीधान पं० कहां तं० ते ज० कहेछेम० मन सु० शुभ प० प्रणीधान व० वचन सु० शुभ प० प्रणीधान का० काया सु० शुभ प० प्रणीधान ॥ ३ ॥

संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते । तं जहा । मणसुप्पणिहाणे वइसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे ॥३॥

खड्गगादीके अणुछेद्यो पोतानी मेले समुदाय मांहीथी पुद्गळ चळे ते कहे छे, जीव आहार पणे लेते स्वस्थानकथी पुद्गळ चळे ते जीव ताणीले १, देवता मनुष्य वक्रेय करे, पुद्गळ ताणे ते वारे चळे, केयके वक्रेयने वशवर्ति पुद्गळ छे ते माटे २, एक स्थानकथी वीजे स्थानके संक्रम ते हस्तादीके करी मुक्तां यकां घणां होय ते मांहीथी पुद्गळ चळे ३, ए त्रण भेदछे ॥ १ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे उ० उपधी प० कही तं० ते ज० कहे छे क० आठ कर्म उ० उपधी स० पांच शरीरनी उ० उपधी वा० वाह्य (परिग्रह) भं० पात्रा म० माटी अमुखनी उ० उपधी ए० एम अ० असुर कुमारने भा० जाणवुं (एटले तेनेपण त्रण उपधी होय) ए० एम ए० एकेन्द्री ने० नारकी व० वर्जनीने जा० ज्यांलगे वे० वैमानीकने त्रण उपधी होय ॥ २ ॥

तिविहा उवही पन्नत्ता । तं जहा । कम्मोवही सरीरोवही वाहिरभण्डमत्तोवही । एवं असुरकुमाराणं भाणियवं । एवं एगिन्दियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ २ ॥

भावार्थः—पुद्गळ ते उपधी ग्रहण रूप परिग्रह छे ते उपधीतुं स्वरूप त्रण प्रकारे कहेल छे ते कहे छे, कर्मोपधी ते आठ कर्म १, शरिर उपधी ते उदारिकादीक पांच प्रकारे २, वाहीर उपधी ते माटीनां कांसांनां पात्रादिक अथवा वस्त्रा भ्रण्णादिक उपधी ३, ए त्रण भेद छे, एम असुरकुमारादी दसने ए त्रण प्रकारनी उपधी होय, एम एकेन्द्री अने नारकी वर्जि एकेने भांडादी उपधी नथी, वे इन्द्रियथी मांडी वैमानीक मुथी त्रण प्रकारे उपधी जाणवी तेमांडी एटलो विशेष जे कोडक वेइंद्रीयादीकने ए त्रण प्रकारनी उपधी होय, ॥ २ ॥

अर्थः—अथवा ति० त्रण भेदे उ० उपधी प० कही तं० ते ज० कहेछे स० सचित (पापाणादीक) अ० अचित (वस्त्रादीक) मी० मिश्र (शरीरादीक) ए० एम ने० नारकीने जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक ॥ ३ ॥

अहवा तिविहा उवही पन्नत्ता । तं जहा । सचित्ते अचित्ते मीसए । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥

भावार्थः—वळी त्रण प्रकारे उपधी कहेल छे ते कहे छे, सचित्त उपधी १, अचित्त ते वस्त्रादीक उपधी २, मिश्र ते सचित्ताचित्त उपधी ३, ए त्रण प्रकारनी उपधी आंतरा रहीत वैमानीक चौवीस दंडके होय ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे प० परिग्रह प० कदा तं० ते ज० कहे छे क० आठकर्मनो प० परिग्रह स० सर्गरेनो प० परिग्रह वा० वाह्य भं० भांड म० पात्रादीक प० परिग्रह (वस्त्रादिक) ए० एम अ० असुरकुमारनो परिग्रह जाणवी ए० एम ए० एकेन्द्रीने ने० नारकी व० वर्जनीने (एकेन्द्रीने नारकीने भांडादी नथी) जा० ज्यांलगे वे० वैमानीक ॥ ४ ॥

तिविहे परिग्गहे पन्नत्ते । तं जहा । कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे वाहिरभण्डमत्तपरिग्गहे । एवं असुरकुमाराणं । एवं एगिन्दियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे परिग्रह कहेल छे ते कहे छे, कर्म परिग्रह ते आठ प्रकारे १, शरिर परिग्रह ते पांच प्रकारे २, वाहीर भांड पात्र वस्त्र आभरणादीकनो परिग्रह ३, ए त्रण भेद छे, एम असुरकुमारादी दसने त्रण प्रकारनी परिग्रह जाणवो, एम एकेन्द्री अने नारकी वर्जि

वे इंद्रियथी मांडी वैमानीक सुधी त्रण प्रकारनो परिग्रह जाणवो ॥ ४ ॥

अर्थः—अ० अथवा ति० त्रण भेदे प० परिग्रह पं० कहां तं० ते ज० कहेछे स० सचित अ० अचित मी० मिश्र ए० एम ने० नारकीने नि० वीजो एसेवेने जा० ज्यालगे वे० वैमानीक ॥ ५ ॥

अहवा तिविहे परिग्रहे पन्नते । तं जहा । सचित्ते अचित्ते मीसए । एवं नेरइयाणं निरन्तरं जाव वेमाणिया णं ॥ ५ ॥

भावार्थः—अथवा वळी त्रण प्रकारे परिग्रह कहेल छे ते कहेछे, सचित परिग्रह १, अचित्त वस्त्राभरणादी परिग्रह २, मिश्र सचित्ताचित्त परिग्रह ३, ए त्रण प्रकारनो परिग्रह आंतरा रहीत वैमानिक सुधी चौवीस दंडके होय ॥५॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे प० एकाग्रपणुं करवुं ते पं० कहुं तं० तेज० कहे छे म० मननुं प० एकाग्रपणुं व० वचननुं प० एकाग्रपणुं का० कायानुं प० एकाग्रपणुं (कायाए पाप नकरे ए० एम पं० पंचेद्रीने होय जा० ज्यालगे वे० वैमानीक त्यालगे (एकेद्रीने पूरी ३ नहोय) ॥१॥

२९ पेरा (जीवधर्मनुं त्रिविधपणुं कहेछे)

तिविहे पणिहाणे पन्नते । तं जहा । मणप्पणिहाणे वइप्पणिहाणे कायप्पणिहाणे । एवं पत्तिन्दियाणं जाव वेमाणियाणं ॥ १ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे मणिधान ते मन प्रमुखनुं एकाग्रपणुं करवुं कहेल छे ते कहे छे, मन मणिधान ते मननुं एकाग्र पणुं १, वचन मणि-

धान ते वचननुं एकाग्रपणुं २, काय मणिधान ते कायानुं एकाग्रपणुं ३, एम वैमानीक सुधी चौवीस दंडक मांडी जेटला संज्ञी पंचेद्री होय तेहने ए त्रणे प्रकारनुं मणिधान होय (एकेद्री, त्रण विगलेंद्री, असंज्ञी पंचेद्रीने त्रण पुरां मणिधान न होय, तेहथी इहा संज्ञी पंचेद्रीनेज त्रण मणिधान कहेल छे) ॥ १ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे सु० सुभ प० प्रणी धान प० कहां तं० ते ज० कहे छे म० मन सु० शुभ प० प्रणीधान व० वचन सु० सुभ प० प्रणीधान का० काय सु० शुभ प० प्रणीधान ॥ २ ॥

(मणिधान शुभ अने अशुभ एम वे भेदछे)
तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नते । तं जहा । मणसुप्पणिहाणे वइसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे ॥ २ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे शुभ मणिधान कहेल छे ते कहे छे, मनसुप्रणीधान ते भलुं धर्ममां मननुं एकाग्रपणुं १, वचनसुप्रणीधान ते सत्य वचन बोलवामां एकाग्रपणुं २, कायसु प्रणीधान ते कायाए पाप नकरे अने धर्ममां प्रवर्तावना एकाग्रपणुं ३, ए त्रण भेद छे ॥२॥

अर्थः—सं० संजमवंत म० मनुष्यने (साधुने) ति० त्रण भेदे सु० शुभ प० प्रणीधान पं० कहां तं० ते ज० कहेछे म० मन सु० शुभ प० प्रणीधान व० वचन सु० शुभ प० प्रणीधान का० काया सु० शुभ प० प्रणीधान ॥ ३ ॥

संजयमगुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नते । तं जहा । मणसुप्पणिहाणे वइसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे

भावार्थः—संयमवन्त मनुष्य ते साधुने त्रण प्रकारे सुप्रणीधान कहेल छे ते कहे छे, मनसु प्रणीधान १, वचन सुप्रणीधान २, कायसु प्रणीधान ३, ए त्रण भेद छे ॥ ३ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे दु० माहुं प० प्रणीधान पं० कहुं तं० ते ज० कहे छे म० मन दु० माहुं प० प्रणीधान व० वचन दु० माहुं (असत्य) प० प्रणीधान का० कार्या दु० माहुं (पाप करे ते) प० प्रणीधान ए० एम प० पचेन्द्रिने जा० ज्यां लगे वे० वैमानीकने ॥४॥

तिविहे दुःपणिहाणे पन्नत्ता । तं जहा । मणदुःपणिहाणे वइदुःपणिहाणे कायदुःपणिहाणे । एवं पञ्चिन्दियाणं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥

भावार्थः—त्रण प्रकारे दुष्ट प्रणीधान कहेल छे ते कहे छे, मनदुष्ट प्रणीधान ते मन पापमां प्रवर्ताववामां एकाग्रपणुं १, वचन दुष्ट प्रणीधान ते असत्य वचन बोलवामां एकाग्रपणुं २, काय दुष्ट प्रणीधान ते कायाए पाप करवामां एकाग्रपणुं ३, ए त्रण भेद छे, वैमानीक सुधी चोबिस दंडक मांही जेइला संझी पचेंद्री जीव होय तेइलानेज ए त्रण प्रकारनां दुष्ट प्रणीधान होय, (एकेंद्री त्रण विगलेंद्री असंझी पचेंद्रीने मननथी तेथी इहां गणेल नथी) ॥४॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे जो० योनी पं० कही तं० ते ज० कहे छे सी० टाही उ० उनी सी० मिश्र योनी ए० एम ए० एकेंद्रिने वि० वेन्द्रियादीकने ते० तेउ कायने व० वर्जिने (तेउकायने १ उष्ण योनी होय) सं० समुच्छिम पं० पंचेंद्री ति० तिर्यच जो० योनियाने सं० समुच्छिम म० मनुष्यने य० संचये ॥ १ ॥

३० पेरा (योनी स्वरूप कहे छे)

तिविहा जोणी पन्नत्ता । तं जहा । सीया उसिणा सीयोसिणा । एवं एगिन्दियाणं विगलिन्दियाणं तेउकाइयवज्जाणं समुच्छिमपञ्चिन्दियतिरिखजोणियाणं समुच्छिममणुस्साण य ॥ १ ॥

भावार्थः—जीवनो अधिकार माटे त्रण प्रकारे योनी (जीवने उत्पन्न थवानुं स्थानक) शित (ताही) योनी १, उस्न (उनी) योनी २, शितोस्न (काईक ताही काईक उनी) योनी ३, ए त्रण भेद छे, अग्निने उस्न योनि, बीजा चार स्थावर, त्रण विगलेंद्री, नारकी, समुच्छिम तिर्यच पचेंद्री, समुच्छिम मनुष्य पचेंद्री, एटलाने त्रण योनी, सर्व देवता, गर्भज तिर्यच पचेंद्री, गर्भज मनुष्य पचेंद्रीने एक शितोस्न योनी जाणवी ॥१॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे जो० योनी पं० कही तं० ते ज० कहे छे स० सचित्त अ० अचित्त मी० मिश्र ए० एम ए० एकेंद्रिने वि० विगलेंद्रीने सं० समुच्छित पं० पचेन्द्रीने ति० तिर्यच जो० योनियाने सं० समुच्छित म० मनुष्यने य० वळी (नारकीने आचित होय, गर्भजने मिश्रयोनी होय) ॥ २ ॥

तिविहा जोणी पन्नत्ता । तं जहा । सचित्ता अचित्ता मीसिया । एवं एगिन्दियाणं विगलिन्दियाणं समुच्छिमपञ्चिन्दियतिरिखजोणियाणं समुच्छिममणुस्साण य ॥ २ ॥

भावार्थः—बीजी पण त्रण योनी कहेल छे ते कहे छे, सचित्त (जीव सहित) योनी १, अचित्त (जीव रहीत) योनी २, मिश्र (कांडक जीव सहित ने कांडक जीव रहीत) योनी ३, ए त्रण भेद छे, एकेंद्री, समुच्छिम तिर्यच पचेंद्री

संयुलिम मनुष्य पंचेद्री, एटलाने त्रण योनी होय, देवता नारकीने एक अचित्त योनी होय, गर्भज मनुष्य तिर्यचने एक मिश्र योनी होय ॥२॥

अर्थ:-ति० त्रण भेदे जो० योनी पं० कही तं० ते ज० कहेछे सं० सांकडी वि० मोकळी सं० सांकडी वि० मोकळी ॥ ३ ॥

तिविहा जोणी पन्नत्ता । तं जहा ।
संबुडा वियडा संबुडवियडा ॥ ३ ॥

भावार्थ:-वळी त्रण प्रकारे योनी कहेल छे ते कहे छे, संवृत योनी ते संकीर्ण सांकडी घडीना घर सरखी १, विवृत योनी ते मोरळी २, संवृत विवृत योनी ते कांइक सांकडी, कांइक मोकळी ३ ए त्रण भेदे छे, एकेंद्रीने नारकीने संवृत योनी १, देवताने त्रण विगलेंद्रीने विवृत योनी २, गर्भज मनुष्य तिर्यचने संवृत विवृत योनी ३ ॥ ३ ॥

अर्थ:-ति० त्रण भेदे जो० योनी पं० कही तं० ते ज० कहेछे कु० काळवानी माफक उन्नत सं० संपनी माफक आवृत वं० वांसना पत्र सरिपी ॥ ४ ॥

तिविहा जोणी पन्नत्ता । तं जहा ।
कुम्मुन्नया सङ्गावत्ता वंसीवत्तिया ॥४॥

भावार्थ:-वळी त्रण प्रकारे योनी कहेल छे छे ते कहे छे, कुर्मोनत योनी ते काळवानी पेरे उची १, शंखावर्त योनी ते शंखनी पेरे आवर्त (वळीयां) फरती होय २, वंशी पत्ता योनी ते वांसना पत्र सरखी लांबी होय ३, ए त्रण भेद छे ॥ ४ ॥

अर्थ:-कु० काळवा सरिपी पं० वळी जो० योनी उ० उत्तम पु० पुरुषनी मा० मानाने कु० कुर्मोनत पं० वळी जो० योनीने विषे ति० त्रण प्रकारना उ० उत्तम पु० पुरुष ग० गर्भे व० उपजे तं० ते ज० कहेछे अ० अरिहंत च० चक्रवर्ती व० बलदेव वा० वासुदेव ॥५॥

कुम्मुन्नया णं जोणी उत्तमपुरिस-
माऊणं । कुम्मुन्नयाए णं जोणीए
तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमन्ति ।
तं जहा । अरहन्ता चक्रवट्टी बलदेव-
वासुदेवा ॥ ५ ॥

भावार्थ:-कुर्मोनत योनी ते उत्तम पुरुषने उपजवानुं स्थानक छे, ए कुर्मोनत योनीने विषे त्रण प्रकारना उत्तम पुरुष गर्भमां उपजे ते कहे छे, अरिहंत १, चक्रवर्ति २, बळदेव वासुदेव एवे साथे उपजे ते माटे एकठां कर्हा ३ ॥५॥

अर्थ:-सं० संषावत्त पं० वळी जो० योनीने विषे इ० चक्रवर्तीनी पटराणी स्त्री र० रत्नने होय सं० संषावत्त पं० वळी जो० योनीने विषे वं० घणा जी० जीव य० वळी पो० पुदगळ य० वळी व० उपजे वि० विणसे च० चवे उ० उपजे नो० नही चे० निश्चेणं० वळी नि० नीपजे नहीं ॥ ६ ॥

सङ्गावत्ता णं जोणी इत्थिरयण-
स्स । सङ्गावत्ताए णं जोणीए बहवे
जीवा य पोग्गला य वक्कमन्ति विउ-
क्कमन्ति चयन्ति उववज्जन्ति नो चैव
णं निप्फज्जन्ति ॥ ६ ॥

भावार्थ:-शंखावर्त योनी चक्रवर्तीनी स्त्री रत्नने होय, ए शंखावर्त योनीने विषे घणा जीव अने जीवने ग्रहवा योग्य पुदगळ ते जीव पुदगळ घणा उपजे अने विणसे चवे अने उपजे पण निपजे नहि एटले जन्म थाय नहीं ॥६॥

अर्थ:-वं० वंसीपत्र पं० वळी जो० योनी पि० सामान्य ज० पुरुषने होय वं० वंसीपत्र पं० वळी जो० योनीने विषे वं० घणा पि० सामान्य जन ग० गर्भे व० उपजे ॥ ७ ॥

वंसीवत्तिया णं जोणी पिहज्जण-

स्स । वंसीवत्तियाए णं जोणीए बहवे
पिहज्जणे गव्भं वक्कमन्ति ॥ ७ ॥

भावार्थः—वशीपत्र योनी वीजा सामान्य
मनुष्येने होय, ए वंशीपत्र योनीने विषे घणा
सामान्य मनुष्य गर्भपणे उपजे, ए त्रण योनी
मनुष्येने होय ॥ ७ ॥

अर्थः—ति० त्रण भेदे त० तृण व० वन-
स्पती का० काया प० कक्षा तं० तेज० कहेछे
सं० संख्यात जी० जीव त्रणयोनी अ० असंख्या-
त जी० जीव त्रणयोनी अ० अनंत जी० जीवनी
३१ पेरा (पहेला योनिथी मनुष्य कक्षा अने
वाटर वनस्पति कायना अने मनुष्यना समान
धर्मछे तेथी वाटर वनस्पति काय प्ररूपेछे)

तिविहा तणवणस्सइकाइया पन्नत्ता ।
तं जहा । संखेज्जजीविया असंखेज्ज-
जीविया अणन्तजीविया ॥

भावार्थः—मनुष्यनां स्वरूप सरस्वी वाटर
तृण वनस्पतिकाय छे ते कहे छे, त्रण प्रकारे
वनस्पतिकाय कहेल छे ते कहे छे, संख्यात
जीववाली ते जाइनां फुल प्रमुख १, असंख्यात
जीववाली ते कमळ प्रमुखने कंद, मुळ, खंथ,
छालगां असंख्याता जीव होय २, अनंताजी-
ववाली निल फुल प्रमुख ३, ए त्रण भेद छे.

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपने
विषे भा० भरत वा० क्षेत्रे त० त्रण ति०
तिर्य पं० कक्षा तं० ते ज० कहेछे मा० माग-
ध व० वरदाम प० प्रभास तिर्य ॥ १ ॥

३२ पेरा (वनस्पतिकाय कक्षा ते जला
श्रयमां घणा होयछे ते संवन्धथी जलाश्रय
वाळा तीर्थनी परूपणा करेछे)

जम्बुद्वीवे दीवे भारहे वासे तओ
तित्था पन्नत्ता । तं जहा । मागहे व-
रदामे पमासे ॥ १ ॥

भावार्थः—जंबुद्विपना भरतक्षेत्रमां त्रण तिर्य
कहेल छे ते कहे छे मागध १, वरदाम २, प्र-
भास ३ ॥ १ ॥

अर्थः—ए० एम ए० एरवते पण वि० ए तिर्य ॥ २ ॥

एवं एरावए वि ॥ २ ॥

भावार्थः—एम एरवत क्षेत्रमां पण त्रण
तिर्य जाणवां ॥ २ ॥

अर्थः—ज० जम्बुद्वीप नामना दी० द्वीपे
म० महाविदेह वा० क्षेत्रे ए० एकेक च०
चक्रवर्ती वि० विजयने विषे त० त्रण ति०
तिर्य पं० कक्षा तं० ते ज० कहेछे मा० माग
ध व० वरदाम प० प्रभास ॥ ३ ॥

जम्बुद्वीवे दीवे महाविदेहे वासे ए-
गमेगे चक्रवट्टिविजए तओ तित्था प-
न्नत्ता । तं जहा । मागहे वरदामे प-
भासे ॥ ३ ॥

भावार्थः—जंबुद्विपना महाविदेह क्षेत्रमां एक
चक्रवर्तिनी विजयमां त्रण तिर्य कहेल छे ते
कहे छे मागध १, वरदाम २, प्रभास ३ ॥ ३ ॥

अर्थः—ए० एम धा० धातकीपंड दी० द्वीपे
पु० पूर्वदीगे वि० वली ए त्रण तिर्य प०
पश्चिमदीगे वि० वली ए त्रण तिर्य पु० पु-
श्करवर दी० द्वीपने विषे पु० पूर्वदीसे वि०
वली त्रण तिर्य प० पश्चिमदीसे वि० वली
त्रण तिर्य ॥ ४ ॥

एवं धायईखण्डे दीवे पुरत्थिमद्धे
वि पच्चत्थिमद्धे वि । पुक्खस्वरदीवड्ड-
पुरत्थिमद्धे वि पच्चत्थिमद्धे वि ॥ ४ ॥

भावार्थः—एम धातकीखंड द्विपमां पुर्व दी-
शाए तथा पश्चिम दीगाए पुर्वोक्त त्रण त्रण
तिर्य जाणवां, एम पुक्करार्थने विषे पुर्वार्थमां
तथा पश्चिमार्थमां पण पुर्वोक्त त्रण त्रण तिर्य
जाणवां ॥ ४ ॥



૩૧. જીવરાજ ઘેલાભાઈએ શ્રી હરમન જોકોખી પાસે સુધરાવી
ત્રગટ કરેલાં પુસ્તકો.

૧. શ્રી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર	(હાલ શીલીક નથી)	
૨. શ્રી દશવૈકાલીક સૂત્ર	કી. ૩ ૩-૦-૦
૩. શ્રી બૃહત્ કલ્પ સૂત્ર.	૧-૪-૦
૪. શ્રી વ્યવહાર સૂત્ર.	૩-૦-૦
૫. શ્રી ઉપાસક દશાશ્રુત સ્કંધ	૩-૪-૦
૬. શ્રી ઉત્તરાધ્યયન મૂળ પાઠ	૧-૪-૦
૭. શ્રી દશવૈકાલીક મૂળપાઠ	૦-૮-૦
૮. શ્રી બૃહત્કલ્પ મૂળપાઠ	૦-૮-૦

આ સૂત્રો ઇંગ્રેજ કૂટનોટવાળા શ્રી હરમન જોકોખી સાહેબે સુધારેલા છે જીજ નકલો રહી છે. તાકીદ મંગાવો.

તે સિવાય

૧. શ્રી નરચંદ્ર જૈન જ્યોતિષ ખીજ આવૃત્તિ ઘણાજ સુધારા વધારા સાથે બહાર પડેલ છે.	...	કીમત	૩. ૨-૮-૦
૨. શ્રી ઉપદેશ સાગર ૨-૦-૦
૩. શ્રી સુબોધ જૈન સ્તુતિ ૧-૪-૦
૪. ઈકારનો નકશો ૦-૮-૦
૫. શ્રી લક્ષ્મીદેવી ચંત્રનો નકશો (સમજણ સાથે) ૦-૮-૦

પુસ્તક મંગાવવાનાં ઠેકાણાં:—

- | | |
|---|--|
| ૧ ડૉ. જીવરાજ ઘેલાભાઈ દોશી.
હા. સંઘવી મોહનલાલ પ્રાગજી.
નવા દરવાજા—અમદાવાદ. | ૩ ત્રીભોવનદાસ રૂગનાથદાસ શાહ.
આકાશીક કુવાની પોળ—અમદાવાદ. |
| ૨ સંઘવી વાણીલાલ કાકુભાઈ.
સારંગપુર, તળીઆની પોળ—અમદાવાદ. | ૪ ભાવસાર જમનાદાસ ઇશ્વરદાસ.
વસ્ત્રા. (નડીઆદ.) |

આ પુસ્તકનો અંદરનો ભાગ શ્રી પ્રભાકીનાથ ત્રીનીન પ્રેમ શાહપુર-અમદાવાદમાં
પ્રેસ ડાહ્યાભાઈ દવપતરામે છાપ્યો.

